।। ओ३म् ।।

COMPUTERISED

विजयेश्वर जन्त्री

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय (रजि.)

संस्थापक

स्व. काशीनाथ ज्योतिषी, विजबिहारा, कश्मीर.



Free !

Rs. 20/-
Pocket Jantrie
with
Vijayeshwer Jantrie

प्रवर्तक

स्व. ज्यो. आप्ताभ शर्मा

संस्थापक

स्व. काशीनाथ ज्योतिषी



॥ ॐ ॥

सप्तर्षि सं० 5091

विक्रमी सं० 2072

विजयेश्वर गणित सं० 233

ईस्वी सं० 2015-2016



विजयेश्वर जन्त्री

काश्मीरी पण्ड़ित निर्वासन सं. 26

सम्पादक
डॉ० मनमोहन ज्योतिषी

गणितकर्ता: पुनीत ज्योतिषी

प्रकाशक
सुनीत ज्योतिषी

नोटः इस जन्त्री के तिथि, योग, नक्षत्रादि के समाप्ति काल पुनीत ज्योतिषी द्वारा कम्प्यूटर प्रोग्राम से लिए गए हैं।

मूल्य : Rs. 100.00

सनातन धर्म में आस्था और उच्छृंखल जीवन को तिरस्कृत
करने वाले काश्मीरी पण्डित समुदाय को

विजयेश्वर
जन्त्री

सादर समर्पित

नामः-____________________

गोत्रः-____________________

निवासः-____________________

फोन/ ई-मेलः-

विजयेश्वर परिवार की ओर से नव वर्ष की शुभकामनाए।
यह वर्ष आपके समस्त परिवार के लिए मंगलमय सिद्ध हो।

आईये! नव संवत्सर के प्रथम दिवस पर हम सब काशमीरी पण्डित राष्ट्र के कल्याण के लिये सम्मिलित स्वर से यजुर्वेद की यह प्रार्थना करें।

ओं यमाम यमसूमथर्वभ्योऽवतोका संवत्सराय पर्य्यायिणीम् परिवत्सरायाविजातामिदावत्सरायातीत्वरीमिद्वत्सरायातिष्कद्वरीं वत्सराय विवर्जरा संवत्सराय पलिवनीमृभभ्योंऽजिनसन्धरँ साधेभ्यश्चर्मम्नम्।।

अर्थ :- हे राजन। तुम अपने राष्ट्र में अच्छे अनुशासन के लिए न्यायधीशों, वृद्धि व समृद्धि के लिए विद्वानों, सुखपूर्वक निवास के लिए कालानुसार परिवर्तनों तथा वर्ष में उन्नति के लिए अनेक प्रगतिमय योजनाओं का निर्माण करो और देशद्रोही व्यक्तियों को बाहर कर दो।

विजयेश्वर जन्त्री विक्रमी 2072 की विषय सूची

श्रद्धांजली

धर्मशास्त्र के अनुसार 'पितुर्दशगुणामाता गौरवेण अतिरिच्यते' अर्थात् पिता से माता का गौरव दस गुणा अधिक होता है। कदाचित् इसी कारण पिता जी के देहान्त के पश्चात् भी मैंने अपने आप को इतना असहाय महसूस नहीं किया था जितना कि 19 सितम्बर 2014 की रात जब माता श्री पंचतत्व में विलीन हुई। उनके अन्तिम श्वास लेते ही मैं बेबस अनाथ हो गया।वे हमारे विजयेश्वर परिवार की 'शोभा' थीं जिसे हम 'जिगरी' कहकर पुकारते थे। वे न केवल हमारे परिवार के बीते कल की पीढ़ी तथा आज और कल की पीढ़ी के बीच की अन्तिम कड़ी थीं बल्कि विजयेश्वर परिवार को संघठित रखने की मूल भित्ति भी थीं। उदात्त मूल्यों से सम्पन्न 'जिगरी' हमारे जीवन में प्रेरणा स्रोत थीं। वे शुचिता, नैतिकता, वत्सलता, स्नेह तथा सौहार्द की प्रतिमूर्ति थीं। संयुक्त परिवार के प्रबन्धन में वे कुशल तथा सिद्धहस्त थीं। गृहस्थ पालन में वे बहुत ही संवेदनशील थीं। परिवार के किसी भी सदस्य की बाहरी चेष्टा या मुख की आकृति से ही वे उसके मन के भाव को भांप लेती थीं। उनका सहज मिलनसार व्यवहार सनातन परंपराओं को प्रतिबिम्बित करता था। वे बड़ों के साथ नम्र, सम आयु वालों के साथ मित्रवत् तथा छोटों के प्रति ममतामयी थीं। वे सब को आत्मीय लगती थीं।

यद्यपि अब वे हमारे समक्ष देहस्थ नहीं हैं परन्तु उनके द्वारा प्रदत्त संस्कारों और उदात्त मूल्यों के रूप में हमारे आसपास सदा विद्यमान रहेंगी। उनकी स्मृतियां अमूल्य पूँजी है जिसे मैं जीवनपर्यन्त संजोकर रखूंगा। मुझे पूरा विश्वास है कि उनका स्नेहसिक्त हाथ वरमुद्रा में सदा विजयेश्वर परिवार पर बना रहेगा।। 'जिगरी' के दिवंगत होने से जो शून्य उत्पन्न हुआ है वह दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जाता है, कम नहीं होता। इन्हीं शब्दों के साथ विजयेश्वर परिवार की 'शोभा' तथा वत्सलरूपा 'जिगरी' को मैं अश्रुपूर्ण श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ।

'पूछता है जब कोई, दुनिया में मुहब्बत है कहाँ?
मुस्करा देता हूँ और याद आ जाती है माँ।

सम्पादक



ब्राह्मी विद्या



ॐ ॐ ॐ त्रिगुणपुरुष क्षेत्रचर, मोहं भिन्धि, रजस्तमसी भिन्धि, प्राकृत-पाशजाल-सावरण परिहर, सत्वं ग्रहाण-पुरुषोत्तमोसि, सोम-सूर्यानल, प्रवर, परमधामन् ब्रह्म विष्णुमहेश्वरस्वरूप,, सृष्टिस्थिति-संहारकारक, भ्रू-मध्य-निलय, तेजोसि-धामासि-अमृतात्मन् ॐ तत्सत् हँसः, शुचिषत्, वसुरन्त-होता वेदिषत् अतिथि-दुरोणसत्, नृषत्-वरसत्-ऋतसत्-व्योमसत्, अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं, परंब्रह्म-स्वरूप, सर्वगत सर्वशक्ते, सर्वेश्वर, सर्वेन्द्रिय-ग्रन्थि भेदं कुरु, परमं-पदं परामर्शय परमार्ग ब्रह्म-द्वारं सर, कुमार्ग-जहि-षट्-कोशिकं शरीरं-त्यज, शुद्धोसि बुद्धोसि विमलोसि क्षमस्व स्वपदम्-आस्वादय स्वाहा।

सर्वतोमुखी अभ्युदय के लिए नित्य प्रार्थना

सूर्योदय से पहले शय्या त्याग कर सर्वप्रथम अपने दाहिने हाथ को देख कर पढ़ें :

कराग्रे वसति लक्ष्मी कर मध्ये सरस्वती,

करमूले तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम्।

स्नान आदि से निवृत होकर महा गायत्री यज्ञोपवीत) को अभिषेक देते हुए तीन बार पढ़ें :

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

यज्ञोपवीत को गले में फिर से धारण करते हुए पढ़ें :

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्,

आयुष्यम् अग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलम् अस्तु तेजः।।

श्री गणेश जी का ध्यान करते हुए पढ़ें :

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् प्रसन्न वदनं ध्याये सर्वविघ्नोपशान्तये। अभिप्रीतार्थ सिद्ध्यर्थं

पूजितो यसुरैरअपि सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।

नव ग्रहों की शान्ति के लिए यह मन्त्र नो बार पढ़ें :

ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरान्त कारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च, गुरुश्च शुक्रःशनि राहु केतवः, कुर्वन्तु सर्वेमम सुप्रभातम।।

सुख व मंगल प्राप्ति मन्त्र पढ़ें :

सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सवार्थ साधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोस्तुते।

सभी उलझनों से छुटकारा पाने का मन्त्र पढ़ें :

सर्वाबाधा विनिर्मुक्ते, धनधान्य समन्वितः, मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविष्यति न संशयः।

अपने गुरूदेव को स्मरण करते हुए पढ़ें:

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः, गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्री गरुवे नमः । अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्, तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः । हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन, सर्वदेव स्वरूपाय तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥ नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरुपिणम्, शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थ सिद्धये।।

गुरुस्तुति

ॐ शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्, प्रसन्न वदनं ध्याये सर्वविघ्नोपशान्तये।

अभिप्रीतार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यःसुरैरपि, सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।।१।।

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति, द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।

एकं नित्यं विमलमऽचलं सर्वधीसाक्षिभूतं, भावातीतं त्रिगुणरहितं स तं नमामि ।।२।।

स्मारं स्मारं जनिमृतिभयं जातनिर्वेदवृत्ति- र्ध्यायं ध्यायं पशुपतिमुमाकान्तमन्तर्निषणम् ।

पायं पायं सपदि परमानन्दपीयूपधारां, भूयो भूयो निजगुरुपदाम्भोजयुग्मं नमामि ।।३।।

गुरुब्रह्मा गुरुविष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः,गुरुरेव जगत्सर्व तस्मै श्री गरुवे नमः ।।४।।

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्, तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।५।।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशिलाकया, चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।६।।

श्लोकत्रयं पेठत्प्रातः गुरुपादाम्बुजं स्मरन् । त्रिवर्गफलभागत्र मृतौ मोक्षपदं व्रजेत् ।।

हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन। सर्वदेवस्वरूपाय तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।७।।

स्थावरं जङ्गमं व्याप्तं यत्किंचित्सचराचरम् । तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।८।।

चिन्मयं व्यापितं सर्वं यत्किंचित्सचराचरम् । तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।९।।

सर्वश्रुतिशिरोरत्नविराजितपदाम्बुजः। वेदान्ताम्बुजसूर्यो यः तस्मै श्रीगुरुवे नमः ।।१०।।

चैतन्यः शाश्वतः शान्तो व्योमातीतो निरञ्जनः । बिन्धुनादकलातीतः तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।११।।

ज्ञानशक्तिसमारूढः तत्वमालाविभूषितः। भुक्तिमुक्तिप्रदाता च तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।१२।।

अनेकजन्मसंप्राप्यतकर्मबन्धविदाहिने । आत्मज्ञानप्रदानेन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।१३।।

शोपणं भवसिन्धोश्च ज्ञापनं सारसम्पदः। गुरोः पादोदकं सम्यक् तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।१४।।

न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः। तत्त्वज्ञानात्परं नास्ति तस्मै श्रीगुरुवे नमः ।।१५।।

मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मद्गुरुः श्रीसद्गुरुः। मदात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरुवे नमः ।।१६।।

गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परमदैवतम् । गुरोः परतरं नास्ति तस्मै श्रीगुरुवे नमः ।।१७।।

नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम् । शिरसा योगपीटस्थं धर्मकामार्थसिद्धये ।।१८।।

श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दाम्यानन्दविग्रहम् । यस्य सान्निध्यमात्रेण चिदानन्दायते पुमान् ।।१९।।

नमोस्तु गुरवे तस्मा इष्टदेवस्वरूपिणे । यस्य वागमृतं हन्ति विपं संसारसंज्ञकम् ।।२०।।

श्रीगुरुं ज्ञानसत्सिन्धुं दीनबन्धुं दयानिधिम् । देवीमन्त्रप्रदातारं ज्ञानानन्दं नमाम्यहम् ।।२१।।

नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुरूपिणे । विद्यावतारसंसिद्ध्यै स्वीकृतानेकविग्रह ।।२२।।

नवाय नवरूपाय परमार्थैकरूपिणे । सर्वाज्ञानतमोभेदभानवे चिद्घनाय ते ।।२३।।

स्वतन्त्राय दयाक्लृप्तविग्रहाय परात्मने । परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्यरूपिणे ।।२४।।

विवेकिनां विवेकाय प्रकाशाय प्रकाशिनाम् । ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय विमर्शाय विमर्शिनाम् ।।२५।।

पुरस्तात्पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यामुपर्यधः । सच्चिदानन्दरूपेण विधेहि भवदासनम् ।।२६।।

ध्यानमूलं गुरोमूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम् । शास्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा ।।२७।।

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ । तस्यैत कथिता ह्यर्थाः प्रकाश्यन्ते महात्मनः ।।२८।।

अहं देवो न चान्योस्मिब्रह्मैवाहं न शोकभाक् । सच्चिदानन्दरूपोहं नित्यमुक्तस्वभाववन् ।।२९।।

संसार सागर मुत्तरणैकमन्त्रं । ब्रह्मादियोगिमुनिपूजितासिद्धिमन्त्रम् ।

दारिद्यदुःखभयरोगविनाशमन्त्रं,वन्दे महाभयहरं गुरुराजमन्त्रम् ।।३०।।

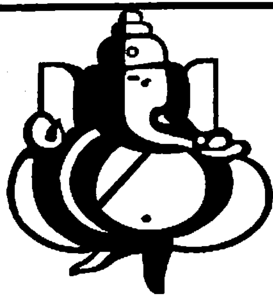
।।इति गुरुस्तुतिः।।

119

ॐ

।।श्री गणेश प्रार्थना।।

हेमजा सुतं भजे गणेशं ईशनन्दनम् ।एकदन्त वक्रतुण्ड नागयज्ञ सूत्रकम्।।
रक्तगात्र धूम्रनेत्र शुक्लवस्त्र मण्डितम् । कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ।।
पाशपाणि चक्रपाणि मूषकादि रोहिणम् । अग्निकोटि सूर्य ज्योति वज्र कोटि निर्मलम् ।।
चित्र माल भक्तिजाल भालचन्द्र शोभितम् । कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ।।
भूतभव्य हव्यकव्य भृगु भार्गवार्चितम् । दिव्य वह्नि कालजाल लोकपाल वन्दितम् ।।
पूर्णब्रह्म सूर्यवर्ण पुरुषं पुरान्तकम् । कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ।।
विश्ववीर्य विश्व सूर्य विश्वकर्म निर्मलम् । विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम् ।।
चतुर्मुखं चतुर्भुजं सेवितुं चतुर्युगम् । कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ।।
ऋद्धि बुद्धि अष्ट सिद्धि नवनिधान दायकम् । यज्ञ कर्म सर्वधर्म सर्ववर्ण अर्चितम् ।।
भूतधूत दुष्ट मुष्ट दान्वै सर्दार्चितम् । कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ।।
हर्ष रूप वर्ष रूप परुष रूप वन्दितम् । शोर्प कर्ण रक्त वर्ण रक्त चंदन लोपितम्।।
योग इष्ट योग सृष्ट योग दृष्टि दायिकम । कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ।।



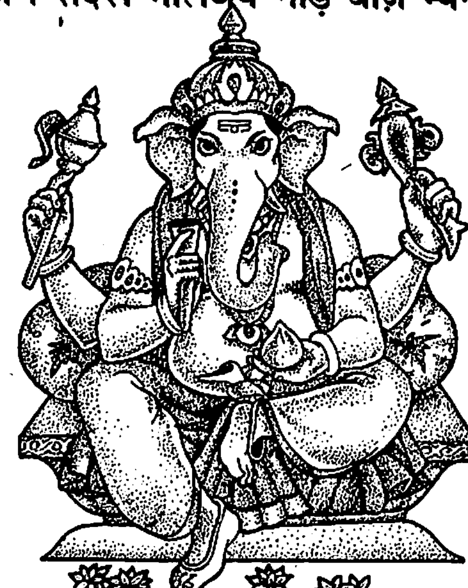
आसय शरण करतम दया,
ॐ श्री गणेशाये नमः



आसय शरण करतम दया, ॐ श्री गणेशाये नमः। गणपथ गणेश्वर हे प्रभो, कलिराज़ राज़न हुन्द वैभौ पज़ि लोल पादन तल नमः, ॐ श्री गणेशाये नमः। गुडनी च्यछु आधिकार, कलिकालकुयु च्य ताजदार पज़ि लोल पादन तल प्यॅमा, ॐ श्री गणेशाये नमः। मूषक च्य वाहन शूभवुन, त्रन लूकनय मेज़ फेरुवुन सहायक म्यॅ रोज़तम हरदम, ॐ श्री गणेशाये नमः। यज्ञस ज़पस व्यवहारसुय,गुड़ छि सुरॉन प्रथ कारसय कारस अन्नान छुकॅ च्य जमः ॐ श्री गणेशाये नमः। सुन्दर लम्बोधर एकदन्त, स्मरन च्यबतियन म्ये अन्द रति वेल सुन्दर छुस समः, ॐ श्री गणेशाये समः। स्मरण यिचॅन यिम करान, भवसागरस अपोर तरान रट् सानि नावे चय नमा, ॐ श्री गणेशाये नमः। रमरन यि चानि भक्ति ज़न, पूरण गछन तमॅसुन्द छुप्रना चरणोदकुक अमृत चमा, ॐ श्री गणेशाये नमः। ज़गतुक महेश्वर च्य पिता, सीता रूप सितधर्मच सत्ता माता च्य गौरी श्री वुमा, ॐ श्री गणेशाये नमः। बाह नाव सुन्दर शूभवन, स्वर्ग गस गछन तिम बोलवन

पूरण करुम पूरण तमहः, ॐ श्री गणेशाये नमः। आमुत भक्त च्य छुस शरण, प्योमुत खोरनतल छुय परण वर दिथ कास्तम च्य गमा, ॐ श्री गणेशाये नमः। सुबह प्यठ भक्त, छि लारान प्रेम पोश हथ छिय प्रारान छुयख च्य पूजि लागनुक तमा, ॐ श्री गणेशाये नमः। गण्शिबल प्यठ आख चीलथअय

अंग अंग सेंदरा मीलथय गोड़ बोज़ म्यन प्रार्थना



ॐ श्री गणेशाये नमः।

ॐ श्री गणेशाये नमः।

ॐ श्री गणेशाये नमः।

ॐ श्री गणेशाये नमः।

ॐ श्री गणेशाये नमः।

ॐ श्री गणेशाये नमः।

ॐ श्री गणेशाये नमः।

ॐ श्री गणेशाये नमः।



शारदा वंदना

नमामि त्वां शारदा देवीं, महाभागीं भगवतीम्, काशमीर पुरवासिनीं, विद्या दायिनीम्

रक्ष माम् रक्ष माम्। नमामि त्वाम् ।।ॐ।।

नमामि त्वां शारदा देवीं, पीतवस्त्र धारिणीम्, श्वेताम्बुज विहारणीम्, चतुर्-भुज धारिणीम्

रक्ष माम् रक्ष माम्। नमामि त्वाम् ।।ॐ।।

नमामि त्वां शारदा देवीं, शततंत्रीवीणावादिनीम्, मोक्षदायिनीं, पापनाशनीम्

रक्ष माम् रक्ष माम्। नमामि त्वाम् ।।ॐ।।

नमामि त्वां शारदा देवीं, वितस्ता रूपिनीम्, हिमाच्छादित गिरिशोभनीम्, कलशमृत धराय

रक्ष माम् रक्ष माम्। नमामि त्वाम् ।।ॐ।।

सरस्वति का ध्यान करें

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वति भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।
शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणा पुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।।
हस्ते स्फाटिकमालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ।।
सरस्वती महाभागे विद्ये कमललोचने।
विश्वरूपे विशालाक्षि विद्यां देहि सरस्वति ।।।



महालक्ष्मी का ध्यान करते हुए पढ़ें:

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते। शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥१॥ नमस्ते गरुडारूढ़े कोलासुरभयंकरि । सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥२॥ सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि । मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥३॥

माँ जगदम्बा या इष्ट देवी का ध्यान करते हुए पढें



लीलारब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां, लोकातीतै-योर्गिभिर्-अंतर्-हृदि-मृग्याम् ।
बालादित्य श्रेणी समान द्युति पुञ्जां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ॥
आशा-पाश-क्लेश-विनाशं विदधानां, पादाम्भोज-ध्यान-पराणं पुरुषाणम् ।
ईशीम्-ईशाड् गार्ध हरां तां तनुमध्यां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ॥

प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां, नित्यं चित्ते निवृतिकाष्ठां कलयन्तीम ।
सत्य-ज्ञान-आनन्दमयीं तां तडित्-आभां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडये ॥
चन्द्रापीडा-नन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां, चन्द्रापीडा-लंकृत-लोला लकभाराम् ।
इन्द्रोपेन्द्रा-द्यर्चित-पादाम्बुजयुग्मां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडये ॥
नाना-कारैः शक्ति-कदम्बै-र्भुवनानि, व्याप्यत स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका ।
कल्याणीं तां कल्पलताम्-अनतिभाजां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडये ॥
मुलाधारात्-उत्थित-वन्तीं विधिरन्ध्रं, सौरं-चान्द्रं धाम विहाय ज्वलितांगीम् ।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्-अभिवन्द्यां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडये ॥
आदि-क्षन्ताम्-अक्षर मूर्त्या विलसन्तीं, भूते भूते भूत-कदम्बं प्रसवित्रीम् ।
शब्द-ब्रह्मानन्दमयीं ताम्-अभिरामां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडये ॥
यस्याः कुक्षौ लीनम्-अखण्डं जगत्-अण्डं, भूयो भूयः प्रादुर-अभूत- अक्षतमेव ।
भर्त्रा सार्धं तां स्फुटिकाद्रौ विहरन्तीं, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडये ॥

यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेषं मणिमाला, सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च ।
ताम्-अध्यात्म-ज्ञानपदव्या-गमनीयां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ॥

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः, साक्षी यस्याः सर्गविधौ संहरणे च ।
विश्वत्राण-क्रीडन शीलां शिवपत्नीं, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ॥

प्रातः काले भावविशुद्धिं विदधानो, भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः ।
वाचां सिद्धिं सम्पतिम्-उच्चैः शिवभक्तिं, तस्या-वश्यं पर्वत-पुत्री विदधाति ॥

परूहूतप्रिया कान्ता कामिनी पदमलोचना, प्रह्लादिनी महामाता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी।
अघोर व्याधिनाशी च घोरदुःख निवारिणी, अष्टा दशभजा दुर्गा शारिका श्याम सुन्दरी।
निर्गुणे निष्क्रिये नित्ये सच्चिदानंन्द रूपिणि, नमोस्तुते महाराज्ञि पाहिमाम् शरणगतम्।
ज्वालामुखी महाज़्वाले ज्वाला पिंगललोचने, ज्वालातेज़े महातेज़े ज्वालामुखि नमोस्तुते।
शारदे वरदे देवि मोक्षदात्रिसरस्वति, नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमोनमः।
या देवी सर्व भूतेषु दया रूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।
सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सवार्थ साधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोस्तुते।



।। इन्द्राक्षी स्तोत्रम् ।।



अस्य श्री इंद्राक्षी स्तोत्रमन्त्रस्य, पुरंदर ऋषिः, अनुष्टप्-छन्दः, इन्द्राक्षी देवता, ह्रीं बीजम्, श्री शक्तिः, क्लीं कीलकम्। सकलकामना सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

अथ-ध्यानम्

इन्द्राक्षी द्विभुजां देवीं पीत वस्त्राधरां शुभाम् वामे हस्ते वज्रधरां दक्षिणे चाभय प्रदाम्। सहस्र नेत्रां सूर्याभां नानालंकार भूषिताम्, प्रसन्न वदनां नित्यम् वदनां नित्यम् अप्सरो गणसेविताम्। श्री दुर्गा सौम्य वदनां पाशांकुशधरां परां, त्रैलोक्य मोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम। ॐ श्री ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षीं श्री प्री स्वाहा।

इन्द्र उवाच

इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता, गौरी शाकंभरी देवी दुर्गानाम्नीति विश्रुता ।१।
कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपः, गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ।२।
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला, अग्निज्वाला रौद्रमुखी काल रात्रि-स्तपस्विनी ।३।
मेघश्यामा सहस्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी, महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ।४।
आनन्दा भद्रजा नंदा रोगहर्त्री शिवप्रिया, शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी ।५।
इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्र-शक्ति परायणा, महिषासुर संहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता ।६।
वाराही नारसिंही च भीमा भैरव नादिनी, श्रुतिः स्मृति-धृति मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ।७।
आनन्दा विजया पूर्णा मानस्तोकाऽ पराजिता, भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंम्बिका शिवा ।८।
शिवा भवानी रुद्रानी शंकरार्ध शरीरिणी, एतैःनाम-पदै-र्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ।९।
आयुर् आरोग्यम् ऐश्वर्यसुख संपतिकारकम, क्षय-पस्मार-कुष्ठादिताप ज्वर निवारणम् ।१०।

अपराधक्षमास्तोत्र

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदापि च न जाने स्तुतिमहो,न चाह्वानं ध्यानं तदापि च न जाने स्तुतिकथाः ।
न जाने मुद्रास्ते तदापि च न जाने विलपनं, परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ।१।
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया, विधेयाशक्यत्वातव चरणयोर्या च्युतिरभुत् ।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।२।
पृथव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः, परं तेषां मध्ये विलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।३।
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता, न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।४।
परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया, मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता, निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ।५।
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा, निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।

तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं, जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ।६।

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो, जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।

कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं, भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥७॥

न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववाञ्छापि च-न मे, न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।

अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै, मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ।८।

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः, किं रूक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।

श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे, धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।

नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननी स्मरन्ति ॥१०॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।

अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम्॥११॥

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।

एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ।१२।

अथ राज्ञीस्तोत्रम्

ॐ शीतांशुबालार्ककृशातुनेत्रां चतुर्भुजामेणत्वगासनस्थाम्। शंखाब्जशूलासिधरां सहेशीं राज्ञीं भजेऽहं तुहिनाद्रिरूपाम्। स्मृतैवान्तर्गता पुंसां हरन्ती सकलं मलम्। जयत्येषा महाराज्ञी भक्तानां क्षेमदायिनी।२। त्रिजगन्मोहिनीमड्डि मयूरीभूतसन्दुणे। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि० ।३। शेषाशेषमुखैर्गुण्ये गुणिगुणगणप्रिये। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि० ।४। सुरा सुर मुनी इन्द्राद्यैर्वन्दनीयपदाम्बुजे। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि० ।५। चराचरजगत् सृष्टिस्थितिसंहृतिकारिणि। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि० ।६। भक्तकल्पलतेऽ नल्पवा ङ्माधुर्याजिताखिले। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि० ।७। ब्रह्मा विष्णु महेशादिवन्दिते गिरिनन्दिनि। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि ० ।८। भक्तानां भीमसंसारपारावारप्रतारिणि। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि ० ।९। निर्गुणे निष्क्रिये नित्ये सच्चिदानन्दरूपिणि। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि ० ।१०। राज्ञीस्तोत्रमिदं पुण्यं त्रिसन्ध्यं प्रयतः पठन्। असंशयं विशेषेण वशयेदखिलं जगत।११। इति राज्ञीस्तोत्रम्।।

अथ शारिकास्तोत्रम्।

बीजैः सप्तभिरुज्ज्वलाकृतिरसौ या सप्तसप्तिद्युतिः सप्तर्षिप्रणताङ्घ्रिपङ्कजयुगा या सप्तलोकार्तिहृत्। कश्मीरप्रवरेशमध्यनगरीप्रद्युम्नपीठे स्थिता देवी सप्तकसंयुता भगवती श्रीशारिका पातु नः।। जय भगवति विन्ध्यवासिनि श्मशानवासिनि कैलासवासिनि हुङ्कारिणि कालायनि कात्यायनि हिमगिरितनये कुमारमातःगोविन्दभगिनि शितिकण्ठकण्ठाभरणे अष्टादशभुजे भुजगवलय मण्डिते केयूरहाराभरणे जय खड्ग त्रिशूल डमरु मुद्गरपरशु शशिकला शरचाप वरा भय पाश पुस्तक कपाल खट्वाङ्ग गदा मुसल तोमर वरहस्ते कृपापरे प्रभूतविविधायुधे चण्डिके चण्डघण्टे किरातवेषे ब्रह्माणि रुद्राणि नारायणि ब्रह्मचारिणि वेदमातः गायत्रि सावित्रि सरस्वति सर्वाधारे सर्वेश्वरि विश्वेश्वरि सर्वकर्त्रि समाधिविश्रान्तिमये चिन्मये चिन्तामणिस्वरूपे कैवल्ये कैवल्यस्वरूपे शिवे निराश्रये निरुपाधिमये ब्रह्मविष्णुमहेश्वरनमिते मोहिनि तोषणि भयङ्करनाशिनि दितिसुतप्रमथिनि काले

कालाग्निशिखे कालरात्रे अजे नित्ये सिंहरथे योगरते योगीश्वरनमिते भक्तजनवत्सले सुरप्रिये कारुण्ये दुर्गे दुर्जये शरण्ये कुरु मे जयम्।। प्रद्युम्नशिखरासीनां मातृचक्रोपशोभिताम्। पीठेश्वरीं शिलारूपां शारिकां प्रणमाम्यहम्। अमा माऽवतु कामा च चार्वङ्गी टङ्कधारिणी। तारा च पार्वती चैव यक्षिणी शारिकाष्टमी।

इति शारिकास्तोत्रम्।।

अथ त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम्

ॐ श्वेतपद्मासनारूढां शुद्धस्फटिकसन्निभाम्। ध्यात्वा वाग्देवतां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ।१। सर्वलोकप्रियकरीं सर्वलोकेषु संस्थिताम्। सर्वैश्वर्यप्रदां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ।२। पद्मालयां पद्मपीठां पद्मासेवितपत्कजाम्। पद्मरागनिभां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ।३। पञ्चबाण-धनुर्बाणन्पाशाङ्कुशधामिमाम्। पञ्चब्रह्ममयीं वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ।४। हृत्पुण्डरीकनिलयां षडास्यजननीमिमाम्। षट्कोणेषु स्थितां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ।५।

अष्टैश्वर्यमयाकारामष्टबाहुयुतायुधाम्। अष्टमूर्तिमयीं वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ।६।

नवमाणिक्यमुकुटां नवमाणिक्यसेविताम्। नवयौवनगां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ।७।

काञ्चीधाममनोरम्यां काञ्चीधामविभूषिताम्। काञ्चीपुरीश्वरीं वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ।८।

हरार्धभागनिलयामम्बाभिष्टार्थ- दायिनीम्। हरप्रियां निजां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम्।।

त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम् ।।

अथ ज्वालास्तोत्रम्।

ॐनताः स्तुतिपराः सर्वे यस्या नित्यं दिवौकसः। तमो हत्वा शंकरस्य भूयात्सदाशिवा।१।

श्रीसुन्दरीं जगद्धात्रीं ज्वालाव्याप्तदिगन्तराम्। सुरै सिद्धैः स्तुतां भूपैः सुमुखीं नौम्यहं शिवाम्।२।

दैत्यानां भटकोटिको टिमुकुटाटोपानधः कुर्वतीं विघ्नानां कटकान्यतीव कटुकान्यापाटयन्तीं स्फुटम्।

भक्तानामभयं वरं च दधतीं शान्तात्मनां सर्वदा षड्वक्रेण जितां क्रियाविरहतो ज्वालामुखीं

नौम्यहम्।३। ब्रह्माणं मधुकैटभौ वधपरौ सन्त्रासयन्तौ परं नानारूपधरावतीव भयदौ स्थूलोन्नतौ

संयुगे। तौ हत्वा विनिवर्तितां कृतवतीं तन्मेदसा मेदिनीं सर्वेषां शुभदायिनीं भगवतीं ज्वालामुखीं नौम्यहम्।४। सैन्यानां महिषासुरस्य मृतिदां सिंहाधिरूढां च तां नाना काविशंष सौख्यजननी देहान्तरे संस्थिताम् बालामध्यमवृद्धरूपरमणीं श्रीसुन्दरीं वैष्णवीं स्त्रीरूपेण जगद्विमोहनकरीं ज्वालामुखीं नौम्यहम्।५। देवानां भयदायकौसुकठिनौ शुम्भो निशुम्भस्तथा नानाशस्त्रधरौ रिपू धृतिहरौ तौ चण्डमुण्डाकिंतौ। सङ्ग्रामे ऽप्यपराजितौ रिपू धृतिहरौ द्वौ रक्तबीजान्वितौ हत्वैवं सुबलां प्रसन्नवदनां ज्वालामुखीं नौम्यहम्।६। संसारार्णवतारिणीं रविशशिकोटिप्रभां सुप्रभां पापातंकनिवारिणी हरिहरब्रह्मादिभिः संस्तुताम्। दारिद्र्यस्य विनाशिनीं सुकृतिनां जाड्यं हरन्तीं भृशमज्ञानान्धमतेः कवित्वजननीं ज्वालामुखीं नौम्यहम्।७। रत्नपञ्चकनामानं श्रीसुन्दर्याः स्तवं वरम्। अव्याकुलं यः पठति सोऽभीष्टां सिद्धिमाप्नुयात्।८। ज्वालामुखी महाज्वाले ज्वाला पिङ्गललोचने। ज्वालातेजी महातेजी ज्वालामुखि नमोऽस्तु ते।।

इति ज्वालामुखीस्तोत्रम्।।



।। ओ३म् नमः पराशक्तये ।।

आदिक्षान्त समस्तवर्णविभवा यामातृकारूपिणी, मंत्रवीर्य परामृतरसा स्वादात्सुख दायिनी।
भाववात समुद्गगर्भलहरी शब्दार्थतत्वव्यापिनी, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराज राजेश्वरी।।१।।
वाच्य वाचक सारपूर्ण विभवा देवी षडध्वाश्रया, श्री चक्रान्तरवह्निकोण निलयाया बिंन्दुमात्रात्मिका
सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरा परामृतमयी नित्यं जगत्तर्पिनी, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी।।२।।
पूर्णाहन्त्वविमर्श पावनकरी निंत्यं मलक्षालिनी, भक्तानां भवभीति भञ्जनकरी हृत्पंकजे संस्थिता।
बाह्याभ्यन्तरचारिणी सुरस्तो हंसेनया सेविता, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी।।३।।
उर्ध्वाधः स्थितनाडिवृन्दविभवे संजीविकामध्यमा, स्वात्मामर्शन तत्परैश्च सततं भक्तैः खलु प्राप्यते।

मूलाद्व ब्रह्मबिलावधितडिदिवया ब्रह्मनाडी स्मृता, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी॥४॥

वर्णावर्णनिवर्ण भेद निबहातत्राप्यभेदात्मिका, वेदान्तागमतन्त्र सार महिमाषड् दर्शनोल्लंधिनी।

सर्वाचार विचार पालन परायानिर्गता चारका, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी॥५॥

ओं तत्सदितिनामभिर्निगदिता सर्वागमे योगिभिः, तत्प्राणान्त विचार्यभक्त निबहैः हीतमिव शष्यवत्।

ऐन्द्रं-धाम विहाय क्षीणकलुषैर्मोक्षाय या स्वीकृता, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी॥६॥

सौरं ज्योतिरिद्मपि परिमितंह्नीतं तथा यत्पदात, ओं मित्येतद्विमर्शनेन सततं सर्वमिदं स्वात्मनि।

रक्तेस्तत्पद प्रेप्सुभिञ्च मुनिभिःस्वस्थै सदास्वीकृतम्, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी॥७॥

तैस्तैर्योगिवरैः सदा कवियशोनक्तं दिनं यत्पद-ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा प्राप्तं महत् निर्मलम्

मोक्षं भोगं ददाति या प्रभुदिता विद्याधरैर्वदिंता, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी॥८॥

इति श्रीराज राजेश्वर्याः स्तुतिः राजानक

विद्याधर विरचिता शुभायास्तु।

इति शिवम्

विष्णु स्तुति

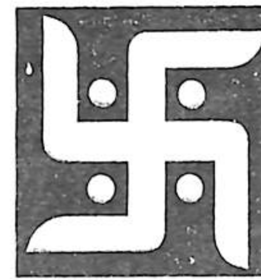
अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्। श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं, जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे।। अच्युतं केशवं सत्य-भा-माधवं, माधवं, श्रीधरं राधिकाऽराधितम्। इन्दिरा मन्दिरं चेतसा सुन्दरं, देवकी नन्दनं नन्दनं सन्दधे।। विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे, रुक्मिणी रागिणे जानकी जानये। वल्लवी-वल्लभा-याऽर्चिता-यात्मने, कंस-विध्वंसिने-वंशिने-ते-नमः।। कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण, श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे। अच्युतानन्त हे माध्वाधोक्षज, द्वारका नायक द्रौपदी रक्षक।। राक्षस-क्षोभितः-सीतया-शोभितो, दण्डकारण्य-भू-पुण्यता-कारणः। लक्ष्मणेनाऽन्वितो-वानरैः-सेवितो-गस्त्य-सम्पूजितो-राघवः-पातु-माम्।। धेनुकारिष्टको-ऽनिष्टकृत्-द्वेषिणां, केशिहा-कंसहृत्-वंशिका-वादिकः। पूतना कोपकः सूरजा खेलनो, बाल गोपालकः पातु मां सर्वदा।। विद्युत-द्योतवान्-प्रस्फुरत्-वाससं, प्रावृडम्-भोदवत्-प्रोल्लसत्-विग्रहम्। वन्यया मालया शोभितोरः स्थल, लोहितांघ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे।। कुञ्चितैः-कुन्तलैः-भ्राजमा-नानं, रत्न-मौलिं-लसत्-कुण्डले-गण्डयोः। हारकेयूरकं-कंकण-प्रोज्जवलं, किंकिणीं-अंजुलं-श्यामलं-तं-भजे।। अच्युतस्याष्टकं-यः-पठेत्-इष्टदं, प्रेमतः-प्रत्यहं-पूरुषः-सस्पृहम्। वृत्ततः सुन्दरं कर्तृ विश्वम्भरं तस्य वश्यो हरिजर्यायते सत्त्वरम्।।

।। विष्णु प्रार्थना ।।

जय नारायण जय पुरुषोतम जय वामन कंसारे, उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोहं संसारे। घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं, माम अनुकम्पय दीनम् अनाथं कुरु भव सागरपारम्। घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ॥१॥ जय जय देव जया सुरसूदन जय केशव जय विष्णो, जय लक्ष्मीमुख कमल मधुव्रत जयदशकन्धर जिष्णो। घोरं हर मम नरकरिपो केशवकल्मषभारं ॥२॥ यद्यापि सकलम् अहं कलयामि हरे, नहि किम् अपि स सत्वम्। तत् अपि न मुञ्चति माम इदम् अच्युत, पुत्रकलत्र ममत्वं। घोरंहर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ॥३॥ पुनर् अपि जननं पुनर् अपि मरणं, पुनर अपि गर्भ निवासम्। सोढुम् अलं पुनर अस्मिन् माधव, माम् उद्धर निजदासम्। घोरंहर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ॥४॥ त्वं जननी जनकः प्रभुर अच्युत, त्वं सुहृत् कुलमित्रम। त्वं शरणं शरणा गतवत्सल, त्वं भव जलधि वहित्रं। घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ॥५॥ जनक सुता पति चरण परायण शंकर मुनिवर गीतं। धारय मनसि कृष्ण पुरुषोतम, वारय संसृति भीतिम्। घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ॥६॥







भागवान शंकर का ध्यान करते हुए पढ़ें :

प्रणतोस्मि महादेव प्रपन्नोस्मि सदाशिव, निवारय महामृत्युं, मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ।१। मृत्युंजय महादेव, पाहि मां शरणागतम, जन्ममृत्यु-जरारोगैः, पीडितं भवबन्धनात् ।२। कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्रं हारम्। सदा रमन्तं हृदयारबिन्दं, भवं भवानी सहितं नमामि ।३। हर शम्भो महादेव विश्वेशामरवल्लभ शिव शंकर सर्वात्मन् नीलकण्ठ नमोस्तु ते ।४। तव तत्वं न जानामि, कीदृशोसि महेश्वर,यादृशोसि महादेव, तादृशाय नमो नमः। आधीनाम अगदं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम् उपद्रवाणां दलनं महादेवम् उपास्महे ।६। आत्मा त्वं गिरिजा मतिः परिजनाः प्राणाः शरीरं गृह, पुजा ते विषयोपभोगरचना, निद्रा समाधिस्थितिः। संचारोऽपि परिक्रमः पशुपते, स्तोत्राणि सर्वा गिरो, यत् यत् कर्म करोमि देव भगवन् तत् तत् तवाराधनम् ।७। नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय, भस्मांग रागाय महेश्वराय । देवाधि देवाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय ।८। मातंग चरमाम्बर भूषणाय, समस्त गीर्वाण गणार्चिताय, त्रैलोकनाथाय पुरान्तकाय, तस्मै मकाराय नमः शिवाय ।९। शिवा मुखाम्भोजविकासनाय, दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय, चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय, तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ।१०। वशिष्ठ कुम्भोत् भव गौतमादि, मुनीन्द्र वन्द्याय गिरीश्वराय,

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय ।११। यज्ञ स्वरूपाय जठाधराय, पिनाक हस्ताय सनातनाय, नित्याय शुद्धाय निरंजनाय, तस्मै यकाराय नमः शिवाय ।१२। वपुष्प्रादुर्भावात् अनुमितम् इदं जन्ममनि पुरा । पुरारे नैवाहं क्वचित् अपि भवन्तं प्रणतवान् नमन्मुक्तः सम्प्रत्यतनुर् अहम् अग्रेप्यनतिमान्, महेश क्षन्तव्यं तत् इदम् अपराध द्वयम् अपि ।१३। करचरणकृत वाक् कायजं कर्मजं वा, श्रवण नयनजं वा, मानसं वाऽपराधम् । विदितम् अविदितं वा, सर्वम् एतत् क्षमस्व, जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ।१४।

लिंगाष्टकम्

ब्रह्मा मुरारिः सुरार्चित लिंगं, निर्मल-भासित-शोभित-लिंगम ।

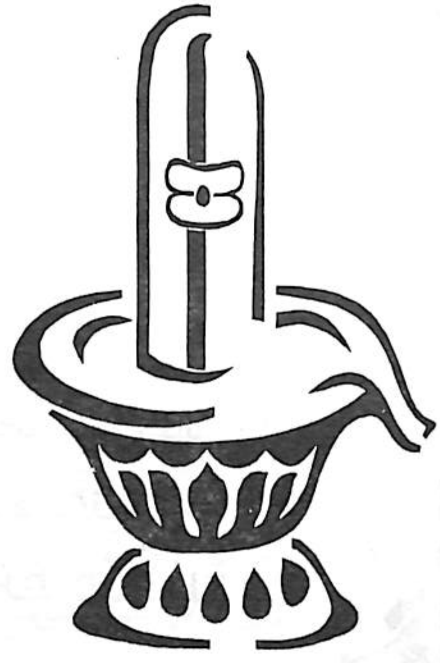
जन्मज- दुःख-विनाशक-लिंगं, तत्प्रणमामि सदा शिव-लिंगम्।।१।।

देव-मुनि-प्रवरा-र्चितलिंगम्, कामदहं करुणाकर-लिंगम् ।।

रावणदर्प-विनाशित-लिगं, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ।।२।।

सर्व-सुगन्धि सुलेपित-लिगं, बुद्धिविवर्धन-कारण-लिगंम्।।

सिद्ध-सुरासुर-वंदित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥३॥
कनक-महामणि-भूषित-लिंगं, फणिपति वेष्टित-शोभित-लिगंम् ॥
दक्ष-सुयज्ञ-विनाशक लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥४॥
कुकुम चंदन लिपितिंगं, पंकज हार सुशोभित लिंगम् ॥
संचित पाप विनाशन लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥५॥
देव गणार्चित सेवित लिंगम्, भावेर्भक्तिभिरेव च लिंगम् ॥
दिनकर-कोटिप्रभाकर लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम ॥६॥
अष्ट-दलोपरि वेष्टित-लिंगम्, सर्व-समुद्भ-भव-कारण-लिंगम् ॥
अष्ट दरिद्र विनाशित लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥७॥
सुरगुरु-सुरवर-पूजित-लिंगम्, सुरवन-पुष्प-सदा-र्चित-लिंगम् ॥
पारत्परं-परमात्मक-लिंगम् तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥८॥



शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं

मनो बुद्धि अहंकार चित्तानि नाहं, नच श्रोत्र जिह्वे नच घ्राण नेत्रे।
नच व्योम भूमिर्न तेजो न वायुः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।१।
नच प्राण संज्ञो न वै पंचवायु, न वा सप्त धतुर्न वा पंचकोशः।।
न वाक् पाणिपादं न चोपस्थ पायुः,चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।२।
नमे द्वेषरागौ न मे लोभ मोहौ, मदो नैव मात्सर्य भावः।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।३।
न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं, न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भुक्ता, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।४।
न मृत्युर्न शंका न मे जातिभेदः, पिता नैव मे नैव माता च जन्म।

न बन्धुर्न मित्रं गुरु नैव शिष्यः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।५।

अहं निर्विकल्पी निराकार रूपो, लघुत्वात् च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।

न चा संगतं नैव मुक्ति र् न मेयः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।६।

शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं, शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं

इति श्रीमत् शङ्कराचार्य विरचितं निर्वाणषटक् सम्पूर्णम्

शिव चामर स्तुति

ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिंकर पटली, कृत ताडन परिपीडन मरणागम समये।

उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्, शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ।।१।।

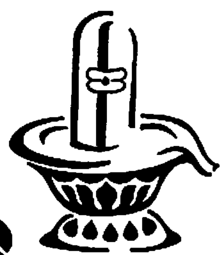
अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु सञ्चय दलिते, पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण चलिते।

शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्, शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ।।२।।

भव भञ्जन सुर रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्, दनुजान्तक मदनान्तक रतिजान्तक भगवन्।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्, शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ।।३।।

शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये, कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये।
द्विज क्षत्रिय वनिता शिशुदर कम्पित हृदये, शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ।।४।।

भवसम्भव विविधामय परिपीडितवपुषं, दयितात्मज ममताभर कलुषी कृत हृदयम्।
करु मां निजचरणार्चन निरतं भव सततं, शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ।।५।।



शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम्,
शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम्

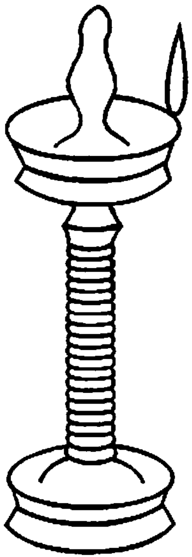
इति श्रीमत् अभिनव गुप्त विरचितं शिव चामर स्तुतिः सम्पूर्णम्

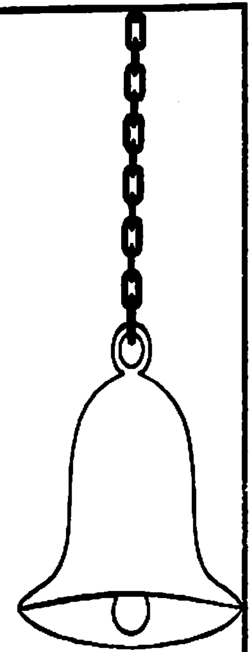


ॐ नमः शिवाय

भैरवस्तुति

ॐ व्यापत-चराचर-भाव-विशेषं, चिन्मयम्-एकम्-अनन्तम्-अनादिम् ।
भैरव नाथम् अनाथ शरणयम्, तन्मय-चित्ततया-हृदि-वन्दे ।।१।।
त्वन्मयम्-एतत्-अशेषम्-इदानीं, भाति मम त्वत्-अनुग्रह शक्त्या ।
त्वं च महेश सदैव ममात्मा, स्वात्ममयं मम तेन समस्तम् ।।२।।
स्वात्मानि-विश्वगते त्वयि नाथे, तेन न संसृति-भीतेः कथास्ति ।
सत्-स्वपि दुर्धर-दुःख-विमोह, त्रास-विधायिषु कर्म-गाणेषु ।।३।।
अन्तक! मां प्रति मा दृशम्-एनां, क्रोध-कराल-तमां विदधीहि ।
शंकर-सेवन-चिन्तन-धीरो, भीषण-भैरव-शक्ति-मयोस्मि ।।४।।
इत्थम्-उपोढ-भवन्मय-संवित्, दीधिति-दारित-भूरि-तमिस्त्रः।
मृत्यु-यमान्तक कर्म-पिशाचै, र्नाथ! नमोस्तु न जातु बिभेमि ।।५।।
प्रोदित-सत्य-विबोध-मरीचि-प्रोक्षित-विश्व-पदार्थ-सतत्वः ।
भाव-परामृत-निर्भरपूर्णे, त्वय्यऽहं-आत्मनि निर्वृतिम्-एमि ।।६।।





मानस-गोचरम्-एति, यदैव-क्लेश-दशा-तनु-ताप-विधात्री
नाथ! तदैव मम-त्वत्-अभेद, स्तोत्र-परामृत-वृष्टिर्-उदेति।।७।।
शंकर! सत्यम्-इदं व्रत-दान-स्नान-तपो-भव-ताप विनाशि ।
तावक शास्त्र परामृत- चिन्ता सिन्ध्यति चेतसि निर्वृति धारा ।।८।।
नृत्यति गायति हृष्यति गाढं, संवित् इयं मम भैरवनाथ ।
त्वां प्रियं आप्य सुदर्शनम् एकं, दुर्लभम् अन्यजनैः, समयज्ञम् ।।९।।
वसुरसपौषे कृष्णदशम्यां, अभिनवगुप्त स्तवम् अकरोत् ।
येन विभु भव मरु सन्तापं, शमयति झटिति जनस्य इमम् दयालुः।।१०।।
हरिरेव जगज्जगदेव हरिः, हरितोजगतो न हि भिन्नमणु।
इति यस्यमतिः पमार्थगति, स नरो भवसागरमुत्तरति ।। ११।।
आदावन्ते चिन्द्रस रूपं, मध्येचिद्रस बुदबुदरूपम् ।
भातं भातं भा रूपं स्यात् नो, भातं चेतिन्नतरां न स्यात् ।।१२।।
।। इति अभिनवगुप्त शिव स्तुति।।

श्री रुद्राष्टकम्

नमामि-ईशं-ईशान-निर्वाण-रूपं, विभुं-व्यापकं-ब्रह्म-वेद-स्वरूपम्।
अजं-र्निगुणं-निर्विकल्पं-निरीहं, चिदा-कारम्-आकाशवासं-भजेऽहम्।।
निराकारं-ओंकार-मूलं-तुरीयं, गिरा-ज्ञान-गोतीतं-ईशं-गिरीशम्।
करालं-महाकाल-कालं-कृपालं, गुणा-गार-संसार-पारं-नतोऽहम्।।
तुषाराद्रि-सङ्काश-गौरं-गभीरं, मनो-भूत-कोटि-प्रभाश्री-शरीरम्।
स्फुरन्-मौलि-कल्लोलिनी-चारु-गङ्गा, लसत्-भाल-बालेन्दु-कण्ठे-भुजङ्गा।।
चलत्-कुण्डलं-भुसुनेत्रं-विशाल-प्रसन्नाननं-नीलकण्ठं-दयालम्।
मृगाधीश-चर्माम्बर-मुण्डमालं, प्रियं-शङ्करं-सर्वनाथ-भजामि।।
प्रचण्डं-प्रकृष्टं-प्रगल्भं-परेशं, अखण्डं-अजं-भानु-कोटि-प्रकाशम्।
त्रयः-शूल-निर्मूलनं-शूल-पाणिं, भजेऽहं-भवानीपतिं-भाव-गम्यम्।।

कलातीत-कल्याण-कल्पान्त-कारी, सदा-सज्जना-नन्ददाता-पुरारिः।
चिदानन्द-सन्दोह-मोहाप-हारी, प्रसीद-प्रसीद-प्रभो-मन्मथारिः।।
न-यावत्-उमानाथ-पादार-विन्दं, भजन्तीह-लोके-परे-वा-नराणाम्।
न-तावत्-सुखं-शान्ति-सन्ताप-नाशं, प्रसीद-प्रभो-सर्व-भूताधिवासं।।
न जानामि-योगं-जपं-नैव-पूजां, नतोऽहं-सदा-सर्वदा-देव-तुभ्यम्।
जरा-जन्म दुखौघ तातप्यमानं, प्रभो-पाहि-शापात्-नमामीश-शम्भो।।
रुद्राष्टकं-इदं प्रोक्तं, विप्रेण हर तुष्टये।
ये पठन्ति नरा-भक्तया, तेषां शम्भुः प्रसीदति।।

ॐ नमः शिवाय

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्र हाराय त्रलिोचनाय, भस्मङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय।१।
मन्दाकिनी-सलिल-चन्दन-चर्चिताय, नन्दीश्वर-प्रमथनाथ-महेश्वराय।
मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय, तस्मै म काराय नमः शिवाय।२।
शिवाय-गौरी-वन्दनाब्ज-वृनद, सूर्याय-दक्षाऽध्वर-नाशकाय।
श्रीनीकलण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।३।
वसिष्ठ-कुम्भोद्भव-गौतमार्य, मुनीन्द्र-देवाऽर्चित-शेखराय।
चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय।४।
यक्षस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै यकाराय नमः शिवाय।५।
पंचाक्षरम्-इदिं पुण्यं यः पठेत्-शिव-सन्निधौ।
शिवलोकम्-अवाप्नोति-शिवेन-सह-मोदते।।

शिव षडक्षरस्तोत्रम्

ॐकारं बिन्दुसंयुक्त नित्यं धयायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः।१।
नमन्ति ऋषयो देवा, नमन्ति-अप्सरसां गणाः।
नरा नमन्ति देवेश न काराय नमो नमः।२।
महादेवं महात्मानं महाधयानं परायणम्।
महापापहरं देवं मकाराय नमो मः।३।
शिवं-शान्तं-जगन्नाथं, लोका-नुग्रह-कारकम्।
शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः।४।
वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्।
वामे शक्तिधरं देवं वकाराय नमो नमः।५।
यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः।
यो गुरुः सर्वदेवानां यकाराय नमो नमः।६।
षड्-अक्षरं-इदं-स्तोत्रं-यः-पठेत्-शिव-सन्निधौ।
शिव-लोकं-अवाप्नोति, शिवेन-सह-मोदते।७।

* * *

अनुवाद :- आनन्द स्वामी प्राणनाथ भट्ट ''गरीब''

अभिनव गुप्त कृत शिवस्तुतिः

ॐ व्याप्त-चराचर भाव-विशेष,
चिन्मयम्, एकं अनन्तम-अनादिम।
भैर-व-नाथम-अनाथ-शरण्यम-
वन्मय-चित्तया-हृदि वन्दे।। (1)

अनुवाद:-वॅरिथ प्रक्रम शिवस छुय वश करान मन, वन्दान तस पान करान सोरुय बु अर्पण, येमिस गर्भस अन्दर सृष्टी छि रोज़ान, छु बोड ज्ञॉनी अनन्त रूप पानु ईशान, चॆ भैरवनाथु भॉरव छीय चॆ पूज़ान, यिमन छुनु कांह तिमन नखि डखि चु रोज़ान, बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

त्वन्मयम-एतत-अशेषम इदानी,
भाति मम त्वत्-अनुग्रह शक्तया।
त्वं च महेश सदैव ममात्मा,
स्वातममयं मम तेन समस्तं।। (2)

अनुवाद:- यि छुय कुल कायनातस रूप चोनुय, कोरुथ अनुग्रेह में गव आभास चोनुय, ज़गत पननुय सरूपा छुममे बासान, योहय अनुभव में द्रह रात छालु मारान, बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

स्वातमनि-विश्वगते त्वयि नाथे,
तेन न संसृति -भीतेः कथास्ति।
सत्-स्वपि दुधर्र-दुःख विमोह,
त्रास विद्यायिषु कर्म गणेषु।। (3)

अनुवाद:- भयंकर द्वख तु मुह पैदा करान नाथ, फ़सेमुत्य बॅखुत्य चान्य ज़ालस छि शिवनाथ, मगर सोरुय ज़गत चोनुय स्वरूप छुय, यिमन समसॉर्य द्वखन छुख ना चटान चुय, तवय शिव लोलु वाल्यन भय चलान छुय, यि म्योनुय रूप शिव-सॅदुरस रलान छुय, दुयुत त्रॉविथ कुनुय सम्भाव आसान, दोयिम छुनु कांह तु त्येलि क्युथ भयि छु बासान, बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

अन्तक मा प्रति मा दृशम-एना,
क्रोध-कराल-तमां विदधीहि।
शंकर-सवेत-चिन्तन-धीरो,
भीषण-भैरव-शक्ति-मयोस्मि।। (4)

अनुवाद:- हतो यमराज़ क्रूधुच मो नज़र कर, फ़ना यिनु करि नज़र मो बन भयंकर, बु छुस दोह रात शिवस कुर्बान सपदान, करान तन-मन बु सेवा तस वन्दान प्राण, करान ध्यान भैरवी बल छुम मे वरदान, यमो चॉन्य कालु दृष्टी नो मे गोरान, बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

इत्थम्-उपोढ-भवन्मय-संवित,
दीधिति-दारित-भूरि-तमिस्त्र:।
मृत्यु-यमान्तक कर्म-पिशाचै: नाथ,
नमोस्तु न जातु बिभेमि।। (5)

अनुवाद:-यि कुलहम बस ज़गत चोनुय स्वरूप छुम, न्यॅन्दुर मुहची गॅज़ुम अज्ञानुय चोलुम, सिर्यि ह्युव ज्ञानु प्रकाश व्वदय सपदुम, भूत-पेशाच़ भय चोलुम मन शान्त सपदुम, अयाल यमुराज़ सुन्द कति खोचुनावान, बु बारम्बार प्रणाम पादन चे सोज़ान बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

प्रोदित-सत्य-विबोध-मरीचि,
प्रोक्षित-विशव-पदार्थ-सतत्व:।
भाव-परामृत-निभर्रपूर्षे,
त्वय्यहम-आत्मनि निर्वृतिम-एमि।। (6)

अनुवाद:-योहय ज्ञान येलि मे प्यव थनु शांत गॅयि प्राण, चु रूदुख यड बॅरिथ अमृयत मे चावान, चु अवनॉशी अमर चोन रूप आसान, यि चोनुय कुल सोरूप अॅन्दरी बु डेशान, बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

मानस-गोचरम्-एति-यदैव,
क्लेश-तनु-ताप-विधात्री।
नाथ! तदैव मम-त्वत्-अभेद,
स्तोत्र-परामृत-वृष्टिर्-उदेति।। (7)

अनुवादः- शरीरुचि व्यॉज़ येलि मन काँपुनावान, तमी विज़ि चोन अनुग्रेह गाश हावान, गलान द्वख दॉद्य मन छुम शांत सपदान, स्वखानन्द सिर्यि ह्युव ज़न गर्भ नेरान बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्‌यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

शंकर! सत्यम् इदं व्रत-दान,

स्नान-तपो-भव-ताप-विनाशि।

ताबक-शास्त्र-परामृत-चिन्ता,

सिध्यति-चेतसि-निर्वृति-धारा।। (8)

अनुवादः- हतो शिवनाथ तिमन द्वख दूर सपदान, दरान वृत, तप, हवन बेयि छी करान दान, मगर यिम चॉन्य शिवलीला छि स्मराण, व्यतस्ता अमृयतुच छख ग्रायि मारान बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्‌यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

नृत्यति तायति हृष्यति गाढं,

संवित-इय मम भैरवनाथ।

त्वां प्रियं आप्य सुदर्शनम एकं,

दुर्लभम-अन्यजैनः समयज्ञम।। (9)

अनुवादः- चु भैरवनाथ अनाथन हुन्द कुनुय नाथ, सुदृढ यज़ि-वृच़ वज़ान द्वह तु बेयि राथ, कॅरिथ च्योनुय मे दर्शुन मन छु हरशान, वृँचुन हुन्ज़ पॅरियि छम वुछ डालु मारान, मोदुर मेछर बॅरिथ वुछ लोलु इरफान, गछ़ान हरशस यि क्युथ नाटुक छु सपदान बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्‌यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

वसु-रस-पौषै-कृष्ण-दशम्यां,

अभिनव-गुप्तः स्तवम-इमम अकरोत्।

येन विभु-भव-मरू संतापं,

शामयति-झटिति जनस्य दयालु।। (10)

अनुवादः- यि अभिनवगुप्त कोताह रुत तु बेयि जान, यि छुम ना लोलु वाल्यन प्यठ दयावान, गटु पछ दॅहम पोह सनु ६८ आसान, यि अभिनवगुप्त शिव ग्वन आव लेखान, करव चिन्तन-मनन शोद पॉठय करव ज़ान, कठिन्यि-भवसरु पनुन शिव रोज़ि तारान, 'गरीबस' सार च्यतुक आकाश प्रज़लान, यि वन कुस लोलु कौस्तूर वर्गु बोलान।

* * *

शिव आरती

जय शिव ओंकारा, भज जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धांगी धारा, ओ३म् हर हर महादेव।।
एकानन चतुरानन पंचानन राजे, स्वामी पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे, ओ३म् हर हर महादेव।।
दो भुज चारु चतुर्भुज दश भुज अति सोहे, स्वामी दस भुज अति सोहे।
तीनों रूप निखरत, त्रिभुवन-जन मोहे, ओ३म् हर हर महादेव।।
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी, स्वामी मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी, ओ३म् हर हर महादेव।।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे, स्वामी बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरुड़ादिक भूतादिक संगे, ओ३म् हर हर महादेव।।
कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूल धारी, स्वामी चक्र त्रिशूल धारी।
सुखकारी दुखहारी जग-पालन कारी, ओ३म् हर हर महादेव।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका, स्वामी जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका, ओ३म् हर हर महादेव।।
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे, स्वामी जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे, ओ३म् हर हर महादेव।।

शिव भजन

आधार ज़गतुक कुनॅय छु मन्त्र शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।
त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो, जटा मकुट छुयॅ गंडिथ च्य दीवो।
चन्द्रं अर्द्ध शेखर, त्रिलोचनाय, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।।
च्य नील कंठो जटन छय गंगा च्य मोक्षदायक गुसोज्य नंगा।
अलक्ष अगोचर छयपन गुफाये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।।
बिहिथ छय गौरी च्य सूत्थ नालय वलिथ छुस सर्पन हुंदुय दुशालै।
सहस्त्र सूर्यि तीज़ च्य मंज़ जटाये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।।

अथस च्य डाबर चू बीन वायान, कपाल माल त्रिशूल धारान।
भक्तयन अभय छुख दिवान यछाये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।।
रटिथ चू अंकुश खडगधारिथ, धनुर धनन मंज़ पिनाक चारथि।
वुदनि बू डंडवथ करय हा माये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।।
भवाय दीवो शर्वाय दीवो, भस्माय दीवो सुरान च्य ज़ीवो।
च्य जीव पूज़ान छिय भावनाये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।।
संसार सुदरस म्य तार तारुम अमर बनावुम शिव मार्ग हावुम।
वोलुस कुकर्मव कुवासनाये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।।
अनाथ बन्धो दयायि सागर संसारकी दुख म्य यिम छि तिम चठ।
जगतस दया कर च हथ्थ ओमाये शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।।

गायत्री महामन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

ओ३म्	सबकी रक्षा करने वाला।
भूःर्भुवः	जो सब जगत के जीवन का आधार, प्राण से भी प्रिय और स्वयंभू है।
स्वः	जो नानाविध जगत् में व्यापक हो के सबका धारण करता है।
तत्	उसी परमात्मा के स्वरूप को हम लोग,
सवितुः	जो सब जगत का उत्पादक तथा सब ऐश्वर्य का दाता है।
वरेण्यम्	जो स्वीकार करने योग्य अति श्रेष्ठ,
भर्गो	शुद्धस्वरूप और पवित्र करने वाला चेतन ब्रह्मस्वरूप है।

देवस्य	जो सब सुखों को देने वाला तथा जिसकी प्राप्ति की कामना सब करते हैं।
धीमहि	धारण करें किस प्रयोजन के लिये कि,
धियो	बुद्धियों को,
यो	जो सविता देव परमात्मा,
नः	हमारी,
प्रचोदयात	प्रेरणा करें अर्थात् बुरे कामों से छुडाकर अच्छे कामों में प्रवृत्त करें।

मानव को चाहिये कि सत् चित् आनन्दस्वरूप, नित्यज्ञानी, अजन्मा, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, व्यापक, कृपालु सारे जगत् के जनक और धारण करने वाले परमेश्वर की सदा गायत्री महामन्त्र से उपासना करें। जिस से धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष (मनुष्य शरीर रूपी वृक्ष के चार फल) ईश्वर भक्ति एवं कृपा से सर्वथा मनुष्यों को प्राप्त हो। (यहीं गायत्री मन्त्र का संक्षिप्त अर्थ है)

गायत्री चालीसा

ॐ भूर्भवः स्वः ॐ युतजननी, गायत्री नितकलिमल दहनी।

अक्षर चौबीस परम पुनिता, इनमें बसे शास्त्र श्रुति गीता।

शाश्वत सतोगुणी सत् रूपा, सत्य सनातन सुधा अनूपा।

हंसारूढ सितम्बर धारी, स्वर्णकान्ति, शुचि गगन बिहारी।

पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला, शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला।

ध्यान धरत पुलकित हियहोई, सुख उपजल दुख दुरमति खोई।

कामधेनु तुम सुर तरु छाया, निराकर ही अद्भुत माया।

तुम्हरी शरण गहै जो कोई, तरै सकल संकट सो सोई।

सरस्वती लक्ष्मी तुम काली, दिपै तुम्हारी ज्योति निराली।

तुम्हरीं महिमा पार न पावै, जो शारद शत मुख गुन गावै।
चार वेद की मातु पुनीता, तुम ब्रह्माणी गौरी सीता।
महा मन्त्र जितने जग माही, कोऊ गायत्री सम नाहीं।
सुमरत हिय में ज्ञान प्रकासै, आलस्य पाप अविद्या नासै।
सृष्टि बीज जग जननि भवानी, कालरात्रि वरदा कल्याणी।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते, तुमसों पावें सुरता तेते।
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे, जननि हिं पुत्र प्राण ते प्यारे।
महिमा अपरम्पार तुम्हारी, जै जै जै त्रिपदा भय हारी।
पूरित सकल ज्ञान–विज्ञाना, तुम सम अधिक न जग में आना।
तुमहि जानि कछू रहे न शेषा, तुमहिं पाय कछू रहै न कलेषा।
जानत तुमहिं तुमहिं है जाई, पारस परसि कुधातु सुहाई।
तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं, माता तुम सब ठौर समाई।

ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेर, सब गतिवान् तुम्हारे प्रेरे।

सकल सृष्टि की प्राण विधाता, पालक पोषक नाशक त्राता।

मातेश्वरी दया व्रतधारी, तुम सम तेर पालकी भारी।

जा कर कृपा तुम्हारी होई, ता पर कृपा करे सब कोई।

मन्द बुद्धि ते बुद्धि बल पावें, रोगी रोग रहित है जावें।

दारिद्र मिटै कटै सब पीरा, नासै दुख हर भव भीरा।

गृह क्लेश चित चिन्ता भारी, नासै गायत्री भय हारी।

सन्तति हीन सुसन्तति पावें, सुख सम्पत्ति युत मोद मनावें।

भूत पिशाच सबै भय खावें, यम के दूत निकट नहीं आवें।

जो सधवा सुमिरै चितलाई, अछत सुहाग सदा सुखदाई।

घर बर सुख प्रबल हैं कुमारी, विधवा रहें सत्य व्रत धारी।

जयति जयति जगदम्ब भवानी, तुम सम और दयालु न दानी।

जो सद्गुरु से दीक्षा पावैं, सो साधन को सफल बनावें।

सुमिरन करै सुरुचि बडभागी, लहैं मनोरथ गृही विरागी।

अष्ट सिधि नव निधि की दाता, सब समर्थ गायत्री माता।

ऋषि मुनि तपस्वी योगी, आरत अर्थी चिन्तित भोगी।

जो जो शरण तुम्हारी आवैं, सो सो निज वांछित फल पावैं।

बल विद्या शील सुभाऊ, धन वैभव यश तेज उछाहू।

सकल बढ़ें सुख नाना, जो यह पाठ करै धर ध्याना।

यह चालीसा भक्तियुत, पाठ करै जो कोय,

तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय ॥

* * *

देवी प्रार्थना

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमःप्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः। ज्योत्स्नायै चेन्दुरुपिण्यै सुखायै सततं नमः।
कल्याण्यै प्रणतां वृद्धयै सिद्धयै कुर्मो नमो नमः। नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः।
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै। ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः।
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः। नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्य-भिधीयते, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यैं नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या। भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः।

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्। नमस्तयै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता। करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।

या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै, रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते। या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः, सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः।।

* * *

दुर्गा सप्तशती का सारभूत मंत्र

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः

पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः,

श्रद्धा सत्तां कुलजन प्रभवस्य लज्जा,

त्वां त्वां नताःस्म परिपालय देवि! विश्वम्।

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार।।

चौपाई

जय हुनमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि- पुत्र पवन सुत नामा।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुण्डल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै।।
संकर सुवन केसरी नन्दन।
तेज प्रताप महा जग बन्दन।।
बिद्यावान गुनी अति चातुर।
राज काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनबि को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रुप धरि सियहिं दिखावा।
बिकट रुप धरि लंक जरावा।।

भीम रुप धरि असुर सँहारे।

रमचन्द्र के काज सँवारे।।

लाय सजीवन लखन जियाये।

श्री रघुबीर हरषि उर लाये।।

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।

तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।

अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।

नारद सारद सहित अहीसा।।

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।

कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।

राम मिलाय राज पद दीन्हा।।

तुम्हारो मंत्र बिभीषन माना।

लंकेस्वर भए सब जग जाना।।

जुग सहस्र जोजन पर भानू।

लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।

जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं।।

दुर्गम काज जगत के जेते।

सुगम अनुग्रह तुम्हारे तेते।।

राम दुआरे तुम रखबारे।

होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।

तुम रच्छक काहू को डर ना।।

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक तें काँपै।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै।
महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोइ लावै।
सोइ अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु संत के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै।
जनम जनम के दुख बिसरावै।।
अंत काल रघुबर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरि- भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई।।

संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जै ज़ै जै हनुमान गोसाईं।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महा सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
'तुलसीदास' सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

एक श्लोकी रामायण

आदौ राम- तपोवनादि-गमनं,
हत्वा मृगं कांचनं,
वैदेही- हरणं जटायु- मरणं
सुग्रीव सम्भाषणम्।।
बाली निर्दलनं समुद्र तरणं
लंकापुरी- दाहनं,
पश्चात् रावण कुम्भकर्ण-
हननं चैतत्- हि- रामायणम्।।

श्री हनुमान आरती

आरती कीजै हनुमान लला की,
दुष्टदलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गिरिवर काँपै,
रोग-दोष जाके निकट न झाँकै।
अंजनि पुत्र महा बलदाई,
संतन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीरा रघुनाथ पठाये,
लंका जारि सिया सुधि लाये।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई,
जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारि असुर संहारे,
सीयारामजी के काज सँवारे।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे,
आनि सजीवन प्रान उबारे।
पैठि पताल तोरि जमकारे,
अहिरावन की भुजा उखारे।
बायें भुजा असुर दल मारे,
दहिने भुजा संतजन तारे।
सुर पर मुनि आरती उतारें,
जै जै जै हनुमान उचारें।
कंचन धार कपूर लौ छाई,
आरती करत अंजना माई।
जो हनुमान जी की आरति गावै,
बसि बैकुंठ परमपद पावै।
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई,
'तुलसीदास' प्रभु कीरति गाई।

आरती को 'आरात्रिका' अथवा आरार्तिक और निराजन भी कहते हैं। पूजा के अन्त में आरती की जाती है। पूजन में जो त्रुटि रह जाती है, आरती से उसकी पूर्ति होती है। स्कन्दपुराण में कहा गया है **मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् पूजनं हरेः। सर्वे सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे।।** पूजा मन्त्रहीनं और क्रियाहीन होने पर भी आरती करलेने से उसमें सारी पूर्णता आ जाती है। यथार्थ में आरती पूजन के अन्त में इष्टदेव की प्रसन्नता के हेतु की जाती है।'इसमें इष्टदेव को दीपक दिखाने के साथ ही उनका स्तवन तथा गुणगान किया जाता है।

आरती गणेश जी

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।

एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी। मस्तक पर सन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।।

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।

अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया। बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया।।

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।

हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा। लडडुअन का भोग लगे, संत करे सेवा।।

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।

आरती श्री रामचन्द्र जी की

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं।

नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारुणं।।

कंदर्ष अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुंदरं।

पटपीत मानहु तड़ित रुचि सुचि नौमी जनक सुता वरम्।।

भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं।

रघुनंद आनँदकंद कौशलचंद दशरथ-नंदनं।।

सिर मुकुट कंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं।

आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं।।

इति वदति 'तुलसीदास' शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं।

मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनं।।

आरती ज्येष्ठा माता की

ओ३म् जय ज्येष्ठा माता, जय जय ज्येष्ठा माता।
तू ही कष्ट निवारे, हे माँ सुख दाता।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।

श्रद्धा भक्ति बढ़ाकर, तुम दारिद्र हरो।
सकल काम प्रदायिनी, दुःख माँ दूर करो।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।

महा दैत्य संहारी, तू माँ दुर्गति हारी।
महामोह हटा दो, ज्येष्ठेश्वर प्यारी।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।

माता खप्पर धारी, मेरी विपदा सारी।
दूर करो हे माता, प्रिय भक्तन प्यारी।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।

अमृत कुंड विराजे, कमल हाथ में साजे।

करे हित सभी का, निर्धन या राजे।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।

झूठी माया सारी, हम को लगती प्यारी।

अविद्या दूर करो, हे पीताम्बर धारी।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।

भक्ति बढ़ाने वाली, कोई युक्ति करो।

भयहारिणी माता तुम, भव भय सदा हरो।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।

हम अति दीन दुःखी माँ, तेरी आस खड़े।

जाने न विद्या कोई, तेरी शरण पड़े।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।

ओम् जय ज्येष्ठा माता, जय जय ज्येष्ठा माता।

तू ही कष्ट निवारे, हे माँ सुख दाता।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।

ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।

ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।

श्री लक्ष्मी जी की आरती

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु दाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तु ही जग माता, मैया तु ही जग माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता, मैया तु ही सुख-सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता, मैया तु ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।
जिस घर में तुम रहती, सब सद्गुण आता, मैया सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता, मैया वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।
शुभ-गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता, मैया क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता, मैया जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।

श्री लक्ष्मी-वन्दना

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।।

आरती श्री गंगा जी

ओ३म् जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता, ओ३म् जय गंगे माता।।
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता, मैया जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता, ओ३म् जय गंगे माता।।
पुत्र सागर के तारे, सब जब को ज्ञाता, मैया सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता, ओ३म् जय गंगे माता।।
एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता, मैया शरण जो तेरी आता।
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता, ओ३म् जय गंगे माता।।
आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता, मैया जो नर नित गाता।
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता, ओ३म् जय गंगे माता।।

नवग्रहपीडाहर स्तोत्रम्

सूर्य	ग्रहाणाम्-आदिर्-आदित्यो-लोकरक्षण-कारकः, विषमस्थान-सम्भूतां-पीडां-हरतु-मे रविः।।
चन्द्रमा	रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः, विषमस्थान-सम्भूतां-पीडां-हरतु-मे विधुः।।
भौम	भूमिपुत्रो महातेजो जगतां भयकृत् सदा, वृष्टिकृद्-वृष्टि-हर्ता च पीडां हरतु मे कुजः।।
बुध	उत्पातरूपो जगतां चन्द्र पुत्रो महाद्युतिः, सूर्यप्रिय करो विद्वान, पीडां हरतु मे बुधः।।
बृहस्पति	देवमन्त्री विशालाक्षः, सदा लोकहिते रतः, अनेक शिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः।।
शुक्र	दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः, प्रभुस्तारा ग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः।।
शनि	सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः, मन्दाचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः।।
राहु	महाशिरो महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः, अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखीः।।
केतु	अनेक-रूप-वर्णश्च शतशोथ सहस्त्रशः, उत्पादरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः।।

एक-श्लोकी- नवग्रहस्तोत्रम्

ब्रह्मा- मुरारिः- त्रिपुरान्त- कारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च, गुरुश्च शुक्रः शनि- राहु केतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे

भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे, ॐ जय जगदीश हरे

जो ध्यावे फल पावे दुखविनशे मन का

सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का, ॐ जय जगदीश हरे

मात पिता तुम मेरे शरण पडों किसकी

तुम बिन और न दूजा आस करू जिसकी।। ॐ जय जगदीश हरे

तुम-पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यमी

पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी। ॐ जय जगदीश हरे

तुम करूणा के सागर तुम पालन कर्ता
में सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्ता। ॐ जय जगदीश हरे
तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपति
किस विधि मिलों दयामय तुमको में कुमति। ॐ जय जगदीश हरे
दीन बन्धु दुख हर्ता रक्षक तुम मेरे
अपने चरण लगाओ द्वार पडा तेरे। ॐ जय जगदीश हरे
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा
श्रद्धा भक्ति बढाओ सन्तन की सेवा। ॐ जय जगदीश हरे
ॐ जय जगदीश हरें ।
ॐ जय जगदीश हरें।   ॐ जय जगदीश हरें।



'बोड दरबार'

-डॉ. रोशन सराफ (रोशि रोशि)

ओंम नमो भगवते गोपीनाथाय, चानि पूज़ये वंदव मन तॅ प्राण,
बजि बारगाहे आमुत्य पज़ि श्रदाये, चानि पूज़ाये वंदव मन तॅ प्राण।।
भक्त्यन आश चान्य, चान्यी, छख सथा, वथा असलुच्य हावतख कॉंह,
तार दितॅ भवसर पनुनि यछायें, चानि पूज़ाये ।।

केंचन रूगन शफा, केंचन दाद्यन दवा, केंचन ख़ा गोंछ लोलु अमरयथ,
सूर मनकलि हुंद सारिनय बलरावे, चानि पूज़ाये ।।
डॉल्या ह्यथ यिवान लोलुच्य हतुबद्य, वद्य-वद्य बोजनावान हाल दिलकुय,
अशि सूत्य गौड दिवान न्र्यमल ख़्रावे-चानि पूज़ाये ।।
सदॅराह कठिन छुख-वोरू वोर करान, तुलान गतु ग्यूर आवलुन छुख,
नम रठतु पानय यथ भवसर नावे-चानि पूज़ाये ।।
मोल चुय मॉज्य चुय-चुय छख भगवान, बखशान चु पापन तु शापन छुख,
अनुग्रह चोन वातान जायि जाये- चानि पूज़ाये ।।
व्यचारन शौंद्धि- वेकलस बौंद्धि, खौंद्धि दितु पथर प्येमुत्यन,
अथुरोट कर पनुन पनिने प्रजाये -चानि पूज़ाये ।।
चोन नाव सुबु शाम स्वखना पखना, जखना लोल सूत्य समरण चॉन्य,
रोशि-रोशि युथ खसि खुमार ग्रायि ग्राये-चानि पूज़ाये ।।

जन्म दिन पूजा

प्रातः काल स्नान करके नये अथवा स्वच्छ वस्त्र धारण करें। पवित्र आसन इस प्रकार बिछायें कि बैठने पर आप का मुख पूर्व दिशा की ओर रहे। एक कम्बल (चादर) बिछायऐ जिस पर पूजा समग्री रखें। एक थाली में साफ चावल, नमक तथा दक्षिणा सजा कर रखें। नया यज्ञोपवीत (जनेऊ), सात गॉठ लगा हुआ नारीवन, अर्घ्य, पुष्प, धूप, तिलक (संभव हो तो केसर का) थोड़ा सा दूध और दही, स्वच्छ जल से भरा पानी का लोटा, एक दो कटोरियॅ आसन पर तैयार रखें। पवित्र या अंगूठी अथवा दर्भ के दो तिनके भी रखें। पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें, रत्नदीप और धूप जलायें। नया यज्ञोपवीत (जनेउ) धोते हुए गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयो नः प्रचोदयात् ।।

तीन बार पढ़ें। फिर इसे गले में डालते हुए पढ़ें

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्, आयुष्यं अग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः, यज्ञोपवीतं असि यज्ञस्यत्वा उपवीतेन उपनह्यामि । *इसके बाद पढ़ें*

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्याये सर्व विघ्नोपशान्तये। अभिप्रेतार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैर्अपि सर्व-विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः। गुरुब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः। गुरुरेव जगत् सर्वम् तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

पानी की छीटें (लवह) हृदय और मुख को छिड़कते हुए पढ़ें

तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति। मा नः शंस्योर् अरूरूषो धूर्तिः प्राणङ्. मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते। *अनामिका उंगली में पवित्र या अंगूठी या दर्भ के दो तिनके या कोई फूल धारण करके अपने आप को तिलक, अर्घ्य और फूल लगाते हुए पढ़ें ।*

परामत्मने पुरुषोतमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

रत्नदीप और धूप को तिलक, अर्घ्य और पुष्प अर्पण करें। सूर्य भगवान का ध्यान करते हुए तिलक, अर्घ्य और फूल अर्पण करते हुए पढ़ें । **नमो धर्म-निधानाय नमः स्वकृतसाक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय्र श्री भास्कराय नमो नमः।** *खाली रखी हुई थाली में नारीवन को रखें और उस पर कटोरी से जल की धारा डालते हुए पढ़ें।*

यत्रास्ति-माता न पिता न बन्धु-र्भ्रातापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रि-स्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय-आधारशक्त्यै धूपदीपसङ्.-कल्पात् सिद्धिर्-अस्तु धूपो नमः दीपो नमः।

कटोरी में जल डालें और उसमें तिलक और पुष्प डालते हुए पढ़े

सं वः सृजामि हृदयं, संसृष्टं मनो अस्तु वः, संसृष्टः तन्वः सन्तु वः, संसृष्टः प्राणाः अस्तु

वः, संयावः प्रियास्तन्वः, संप्रिया हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियस्तन्वो मम।

अब इस कटोरी में रखा हुआ जल नारीवन पर डालते हुए पढ़ें

अश्विनोः प्राणस्तो ते प्राणं दतां तेन जीव । बृहस्पते प्राणः सते प्राणं ददातु तेन जीव जन्मोत्सव देवताभ्यः जीवादानं परिकल्पयामि नमः।

चावल के साथ दर्भ के दो तिनके या दो फूल हाथ में रखते हुए तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ें

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयो नः प्रचोदयात् ।।

ॐ जन्मोत्सव देवतानां अर्चाम् अहं करिष्ये ॐ कुरूष्व।

हाथ में लिए हुए फूल या दर्भ आदि निर्माल्य में डालें। पुनः नारीवन के सामने दो पुष्प डालते हुए पढ़ें

सप्तचिर जन्मोत्सव देवतानां आसनं नमः

हाथ में चावल सहित दर्भ या फूल लें और फिर कन्धें से सिर्फ चावल फैंकते हुए पढ़ें

सप्तचिर जन्मोत्सव देवताभ्यः युष्मान् पूजयामि ॐ पूजय *दो फूल हाथ में पकड़ते हुए पढ़ें* सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। सभूमिम् विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठत् दशांगुलम् जन्मोत्सव देवताः आवाहयिष्यामि ॐ आवाहय।

पहले से रखे हुए दर्भ के दो तिनके निर्माल्य में डालकर नारीवन पर फूल डालते हुए तीन बार पढ़ें

भगवन् पुण्डरीकाक्ष भक्तानुग्रह कारक अस्मात् दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो।

अपने दोनों कन्धों के ऊपर चावल फैंक कर प्राणायाम करें। फिर कटोरी में जल डालते हुए पढ़ें

पाद्यर्थम् उदकम् नमः शन्नो देवीरभिष्ठय आपो भवन्तु पीतये। शंयोर अभिस्नवन्तु नः।

फूल, दूध, तिलक, दर्भ तथा जल कटोरी में डालकर नारीवन पर यह सब मिश्रण डालते हुए पढ़ें

अश्वत्थामने बलये व्यासाय हनुमते कृपाचार्याय मार्काण्डेयाय परशुरामाय सप्तचिरजीवेम्यः पाद्यं नमः *कटोरी में बचा हुआ मिश्रण निर्माल्य में डालें। दुबारा कटोरी में पानी डालते हुए पढ़ें*

शन्नो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये। शंयोर् अभिस्नवन्तु नः। *दूध, दही, जल, घी, तिलक, चावल, और दर्भ कटोरी में डालें और यही मिश्रण नारीवन पर डालते हुये पढ़ें*

अश्वत्थामन बलये व्यास हनुमते कृपाचार्य मार्काण्डेय परशुरामाय सप्तचिरजीविनः इदं वो अर्घ्यं नमः *केवल पानी डालते हुए पढ़ें* प्रजापते जन्मोत्सव देवताभ्यः आचमनीयं नमः *दूध, जल, अर्घ्य और पुष्प आदि का मिश्रण डालते हुए पढ़ें* तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततम् तत् विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत् परमं पदम्। प्रजापति जन्मोत्सव देवताभ्यः स्नानं नमः। *किसी अन्य कटोरी में नारीवन के लिए फूलों से आसन बनाते हुए पढ़ें*

आसनाय नमः गरुडासनाय नमः पद्मासनाय नमः शतदल पद्मासनाय नमः, सहस्त्रदल पद्मासनाय नमः। किमासनं ते गरुढासनाय, किं भूषणं ते कौस्तुभ भूषणाय, लक्ष्मीकलत्राय, किम् अस्ति, देयं वागीश किं ते वचनीयम् अस्ति।। *नारीवन को आसन पर बिठाते हुए पढ़ें*

उत्तिष्ठ भगवान् विष्णो उत्तिष्ठ कमलापते। उत्तिष्ठ त्रिजगन्नाथ त्रैलोकी मंगलं कुरु।।

नारीवन के सात गाठों को तिलक लगाते हुए पढ़ें अश्वत्थाम्ने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मार्कण्डेयाय, परशुरामाय सप्तचिर-जीवेभ्यः समालभनं गन्धो नमः।

इन्ही सात नामों का उच्चारण करते हुए नारीवन पर अर्घ्य और पुष्प चढ़ाते हुए पढ़ें अश्वत्थाम्ने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मार्कण्डेयाय, परशुरामाय सप्तचिर-जीवेभ्यः:अर्घो नमः:पुष्पं नमः

रत्नदीप और धूप नारीवन के इर्द-गिर्द घुमाते हुए (आलहनाव) पढ़ें

तेजसो शुक्रमसि ज्योतिरसि धामसि प्रियं देवानाम अनादृष्टं देवयजनं देवताभ्यस्तवा देवताभ्यो गृहणामि यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञिभ्यो गृहणामि जन्मोत्सव देवताभ्यः रत्नदीपं कर्पूरं च परिकल्पयामि नमः

नारीवन को नमस्कार करते हुए पढ़ें

जय नारायण जय पुरुषोतम जय वामन कंसारे, उद्धर मामसुरेश विनाशिन् पतितोहं संसारे । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं, माम अनुकम्पय दीनम् अनाथं कुरु भव सागरपारम्, घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।१।। जय जय देव जया सुरसूदन जय केशव जय विष्णो, जय लक्ष्मीमुख कमल मधुव्रत जयदशकन्धर जिष्णो। घोरं हर मम नरकरिपो केशवकल्मषभारं ।।२।। यद्यापि सकलम् अहं कलयामि हरे नहि किम् अपि स सत्वम् । तत् अपि न मुञ्चति माम इदम् अच्युत पुत्रकलत्र ममत्वं । घोरंहर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।३।। पुनर् अपि जननं पुनर् अपि मरणं पुनर अपि गर्भ निवासम् । सोढुम् अलं पुनर अस्मिन् माधव माम् उद्धर निजदासम् । घोरंहर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।४।। त्वं जननी जनकः प्रभुर अच्युत त्वं सुहृत् कुलमित्रम । त्वं शरणं शरणा गतवत्सल त्वं जलधि वहित्रं । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।५।। जनक सुता पति चरण परायण शंकर मुनिवर गीतं । धारय मनसि कृष्ण पुरुषोतम वारय संसृति भीतिम् । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।६।। भगवते वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय

सप्तजन्मोत्सव देवताभ्यः चामरं छत्रं परिकल्पयामि नमः

नारीवन पर फूल चढाते हुए पढ़ें

ध्येयं सदा परिभवघ्नम् अभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिव विरञ्चि नुतं शरण्यम्। भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं। वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्

नारीवन को नमस्कार करते हुए पढ़ें

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा च अष्टांग-नमस्कारं करोमि नमः *कटोरी में थोड़ा दूध, शहद, या खाण्ड रख कर अर्पण करते हुये पढ़ें*

वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय प्रजापति-जन्मोत्सवदेवताभ्यः मात्रामधुपर्क ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः। *नारीवन पर दक्षिणा डालते हुये पढ़ें* जनमोत्सव देवताभ्यः दक्षिणायै तिल हिरण्य रजत निष्कर्ष ददानि। *दक्षिणा अर्पण करते हुये पढ़ें* एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु ॥ *फूल चढ़ाते हुये पढ़ें* ओं तद्विष्णोः परम पदं सदापश्यन्ति-सूर्यः दिवीव चक्षुर-आततम्। तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्। *अब नैवेद्य तहर या क्षीर थाली में लाकर एक पात्र में अलग चट़ू और पांच म्यचिर्यां रखें, नैवेद्य के साथ ही मिसरी भी रखें। नैवेद्य की थाली को दोनों हाथों से पकड़कर सारा प्रप्युन*

पढ़ें (प्रेप्युन विजयेश्वर जन्त्री में अलग से लिखा है, वहीं से पढ़े)। प्रेप्युन के बाद पढ़ें **आज्ञा मे दीयतां नाथ नैवैद्यस्यास्य भक्षणे। शरीरयात्रा सिद्ध्यर्थ भगवन क्षन्तुम अर्हसि।।** *नारीवन पर पुष्प चढाते हुए पढ़ें* **आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम ।** *पवित्र निकालकर दाईं कलाई में नारीवन बांधिए। चृटू को बाहर कहीं साफ स्थान पर रखें। निर्माल्य को नदी या पेड़ के नीचे या किसी गमले में डाल कर नैवेद्य के साथ दही, मिश्री या चीनी दाईं हथेली में रखकर मुँह में डालते हुए पढ़ें* **माकार्डण्डेय नमस्तुभ्यं सप्तकलपान्त जीवन, आयुर्-आरोग्य सिद्ध्यर्थ प्रसीद भगवन मुने। मार्काण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्त-जीवन, चिरन्जीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवरद्विज, कुरुष्व मुनिशार्दूल, तथा मां चिरजीविनम् ।।**

शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

इति जन्मदिन पूजा विधि

प्रेप्युन

।। अथ नैवेद्य मन्त्राः ।।

एक थाली में नैवेद्य तथा दूसरी थाली में चट्टू और उसकी पांच म्यचियां या टुकडे रखें। चट्टू को तिलक, अर्घ्य और फूल अर्पण करें। शुद्ध पानी अपने आप पर छिडकें, दोनों हाथों से नैवेद्य ग्रहण करते हुये पढ़ें

अमृतेश मुद्रयाऽमृतीकृत्य अमृतमस्य अमृतायतां नैवेद्य। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामाददे।। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वारर्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वरदेवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञ-पुरुषाय अग्निष्वातादिभ्यः पितृगणदेवताभ्यः। ॐ भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी सहिताय नारायणाय, भवाय देवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय विनायकाय वल्लभासहिताय श्रीगणेशाय । क्लीं कां कुमाराय भगवते हां हीं सः सूर्याय प्रभासहिताय आदित्याय भगवत्यै अमायै कामायै

चार्वङ्ग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका भगवत्यै श्री शारदा भगवत्यै श्री महाराज्ञी भगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै श्री व्रीढा भगवत्यै श्री वैखरी भगवत्यै वितस्ता भगवत्यै गंगा भगवत्यै यमुना भगवत्यै कालिका भगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरासुन्दर्यै सहस्त्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभयंकरी देव्यै भवान्यै क्षेमंकरी भगवत्यै सर्वशत्रुघातिण्यै इहराष्ट्राधिपतये अमुकभैरवाय इन्द्रदिभ्यो शलोकपालेभ्यः आदित्यादिभ्यो नवग्रहदेवताभ्यः ब्रह्मधुवाभ्यां अनन्तागस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिख्यादिभ्यः पञ्च चत्वारिंशिंद्वास्तोष्पतियागदेवताभ्यः ब्राह्मयादिम्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यः मातृभ्यः ललितादिभ्यः मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्रा गणेश्वरदेवताभ्यः राकादेवता भ्यः त्रिकादेवताभ्यः सिनी वालीदेवताभ्यः यामीदेवताभ्यः रौद्रीदेवताभ्यः वारुणीदेवताभ्यः वार्हस्पत्य देवताभ्यः। ॐ भूर्देवताभ्यः ॐ भुवो देवताभ्यः ॐ स्वर्देवताभ्यः ॐ भूर्भुवस्वर्देवतभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्डयागदेवताभ्यः महागायत्र्यै सावित्र्यै हेरकादिभ्यः वटुकादिभ्यः उत्पन्नमतृं दिव्यं प्राक्रक्षी-रोदधिमन्थनात् अन्नामृतरूपेण नैवेद्यं प्रति गृह्यताम् ॥ *अपने इष्ट देवता का ध्यान करते हुये पढ़ें :* ॐ तत्सद् बृह्म अद्यतावात् तिथौ अद्य अमुक मासस्य, अमुक पक्षस्य, तिथौ अमुकायां, आत्मनो वाङ्गमनः कायोपार्जितपाप निारणार्थम ॐ

नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः। *चट्टु को हाथ से स्पर्श करते हुए पढ़ें* या काचित् योगिनी रौद्रा सौम्या घौरतरा परा, खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा, *चट्टु को तिलक लगाते हूये पढ़ें* आकाश मातृभ्यः अन्नं नमः आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः। *चट्टू की सात म्यचियॉं बनाकर हर एक मिची के सात सपर्ष करते हूये पढ़ें* 1. भगवते वासुदेवाय अन्नं क्षीरं मोदकादीन् समर्पयामि नमः। 2. भगवते भवाय देवाय अन्नं समर्पयामि नमः। 3. भगवते विनायकाय अन्नं समर्पयामि नमः4. ह्रीं ह्रीं सूर्याय अन्नं समर्पयामि नमः। 5.इष्टदेवी भगवत्यै अन्नं मोदकान् मिष्ठानं क्षीरं समर्पयामि नमः। *अंतिम दो म्यचियों को स्पर्श करे तथा अर्घ, फूल व पानी डालते हूये पढ़ें* योस्मिन् निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपालः सकिंकरः तस्मै निवेदयाम्यद्यबलिं पानीय संयुतं क्षां क्षेत्राधिपतयेऽन्नं नमः, राराष्ट्राधिपत येऽन्नं नमः सर्वा भयवरपदो मयि पुष्टिं पुष्टि पति र्दधातु । *नमस्कार करते हुए पढ़ें* नमामि नारायण पादपंकजं, करोमि नारायणपूजनं सदा वदामि नारायण नामनिर्मलं स्मरामि नारायण तत्वम् अव्ययम् । उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा उरसा नमस्कारं कारोमि नमः। शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

श्राद्ध संकल्प विधि

'श्रद्धया दीयते यस्मात् तस्मात् श्राद्धं निगद्यते'। अर्थात जो वस्तु श्रद्धा से दी जाती है उसे 'श्राद्ध' कहते हैं। देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण से मुक्ति पाने के लिए श्राद्ध आवश्यक है। श्राद्ध संकल्प के लिए पहले यह सामग्री इक्कठी कीजिए:
एक थाली में चावल (साफ किए हुए) नमक, फल तथा दक्षिणा सजा कर रखें। आसन इस तरह बिछायें कि आप का मुख पूर्व दिशा की ओर रहे। सामग्री से सजी थली आसन पर रखें, ताज़ा पानी का लोटा, थोडा सा तिल, धूप, अर्घ्य फूल और तिलक भी आसन पर रखें। जिस पितृ का श्राद्ध हो उसके फोटो पर फूल माला लगायें। पद्मासन लगा कर पूर्व दिशा की तरफ मुँह करके बैठें, धूप जला कर रखें। यज्ञोपवीत को दाहिनी तरफ रखते हुए नमस्कार करें और पढ़ें

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् प्रसन्नवदनं ध्याये सर्व-विघ्नोपशान्तये।। अभिप्रीतीर्थ-सिद्धयर्थ पूजितो यःसुरैर्-अपि। सर्व-विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपत्ये नमः। गुरुब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः। गुरुरेव जगत् सर्वम् तस्मै श्री गुरुवे नमः।। परम गुरूवे नमः

पानी की छीटें लवह मुहँ और पैरों को डालते हुए पढ़ें तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मा नः शंस्योर अररुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

पवित्र या अंगूठी अनामिका नामक उंगली में पहनकर अपने को मध्यमा उंगली से तिलक लगायें। थोड़ा सा अर्घ्य और फूल अपने

सिर पर डालें। आसन पर रखी हुई खाली थाली में थोड़ा तिलक, अक्षत, (चावल के साबूत दाने) और फूल डालें। सूर्य भगवान् का ध्यान करके थोड़ा सा तिलक अर्घ्य सूर्य की तरफ डालते हुए पढें

नमो धर्मनिधनाय नमः

स्वकृत साक्षिणे, नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः *हाथ में अर्घ्य रखकर एक कटोरी से पानी ऐसे डालें कि वह पानी उंगलियों की तरफ से थाली में गिरना चाहिए और साथ-साथ पढ़ें*

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धु भ्रातापि न यत्र सुहृतजनश्च न ज्ञायते

यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्म दीपं शरणं प्रपद्ये ॐ तत् सत् ब्रह्मा अद्य तावत् तिथौ *जो महीना है उसका नाम लें जैसे वैशाख* **मासस्य** *शुक्ल या कृष्ण जो भी पक्ष हो* **पक्षस्य** *जो भी तिथि हो जैसे प्रतिपदा अथवा द्वितीया आदि* **तिथौ** *जो भी वार हो जैसे रविवार अथवा सोमवार आदि* **वासरान्वितायां विष्णु प्रीत्यर्थम दीप धूप संकल्पात् सिद्धिर् अस्तु दीपो नमः धूपो नमः।** *यज्ञोपवीत को बाईं-भुजा में धारण करके तिल हाथ में रखकर पानी डालते हुए अंगूठे की ओर से थाली में गिरना चाहिए पढ़ें* **ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् ,,,, मासस्य ,,,, पक्षस्य ,,,,तिथौ** *यदि श्राद्ध तिथि देवा हो तो तिथि बोलकर अगली तिथि भी 'परत' के साथ पढ़ें* **वासरान्वितायां** *गोत्र*

सहित नाम लें **पित्रे** *पिता का नाम लें* **मात्रे** *माता का नाम लें* **पितामहाय** *दादा का नाम लें* **प्रपितामहाय** *पडदादा का नाम लें* **मातामहाय** *नाना का नाम लें* **प्रमातामहाय** *माता के दादा का नाम लें* **वृद्धप्रमातामह** *माता के पढदादा का नाम लें* **मातामह्यै** *नानी का नाम लें* **प्रमातामह्यै** *मां की दादी का नाम ले* **वृद्ध प्रमातामह्यै** *मां की पढदादी का नाम लें* **समस्त माता पितृभ्यः द्वादयश दैवतेभ्यः पितृभ्यः दीपः स्वधः धूपः स्वधः**:*जिस पितृ का श्राद्ध हो उसका नाम गोत्र के साथ लेकर मुठठी में पानी रखकर थाली में रखे हुए चावल, नमक, फल, दक्षिणा आदि पर छिड़कते हुए पढें* **ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत्,,,तिथौ अद्य,,,मासस्य,,,पक्षस्य ,,,, तिथौ,,,वासरा सांवत्सरिके श्राद्धे** *यदि पितृपक्ष हो तो पढें* **आपरपक्षे कन्यार्कगते पितृ पक्ष श्राद्धे इदं अन्नं सलवणं सवस्त्रं फलमूलसहितं सदक्षिणां संकल्पयामि संकल्पयामि** *फिर दायें वाजू में यज्ञोपवीत रखकर पढ़ें*

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ॥

पत्र कथा

एक समय नैमिषारण्य तीर्थ में ऋषियों ने श्रीसूत जी से पूछा, हे मुनिश्रेष्ठ। कोई ऐसा व्रत अथवा उपाय बतलाइये जिससे संसार की सभी मानवजाति थोडे से ही समय में किसी सरल उपाय से मनोवांच्छित फल तथा मानिसक शान्ति प्राप्त कर सके। सर्वशास्त्रज्ञाता श्री सूत जी बोले हे ऋषियो। आप ने मानवजाति के हित की बात पूछी अब मैं उस व्रत को आप लोगों में कहूँगा – अत: आप ध्यान से सुनिये – काशी नगरी में एक निर्धन ब्रह्मण रहता था। वह अति निर्धन होने के कारण भूख और प्यास से पीडित घूमता रहता था। पूर्वजन्म के किसी शुभ संस्कार से भगवान् आदि देव श्री गणेश जी का स्मरन प्राय: करता ही रहता था, उस ब्राह्मण को इस दुर्दशा से मुक्त करने के निमित्त सभी दु:खों तथा विघ्नों को दूर कने वाले श्री गणेश जी ने ब्राह्मण का रूप धारण कर उस के पास आकर आदर के साथ पूछा – हे ब्राह्मण देवता! आप ऐसी शौचनीय तथा दु:खी दशा में क्यों घूमते हैं, ब्राह्मण बोला मैं बहुत निर्धन हूँ, तथा मेरा कोई पुत्र भी नहीं है जो मेरी कुछ सेवा करता, मेरा शरीर भी रोगी है तथा मेरी पत्नी भी शरीर के रोगों और धन के अभाव से दू:खी रहती है। हे दयालु, ब्राह्मण देवता! यदि आप इस कष्ट से हमें निकालने का कोई उपाय जानते हैं तो कृपा कर के मुझे बताइये। वृद्ध ब्राह्मण बोला – गणेश जी, जो ऋद्धि सिद्धि के स्वामी है तथा जो विघ्नहर्ता माना जाता है – उसी आदिदेव गणेश जी का व्रत धारण करने से आपको अवश्य मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी। यह गणेश जी का व्रत जिसको ''सिद्धि विनायक व्रत'' कहते हैं भाद्रशुक्लपक्ष चतुर्थी को किया जाता है। यदि इस चतुर्थी के दिन रविवार या मंगलवार हो तो इस व्रत को महाचतुर्थी व्रत कहते हैं। यह व्रत ''गणंपति चतुर्थी'' या विनायक चतुर्थी के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह भाद्रपक्ष मास गणेश जी द्वारा ऋद्धि सिद्धि बाँटने का मास है। अत: इस मास में शुक्लपक्ष में किसी शुभ दिन पर गणेशपूजन तथा मोदक आदि गणेश जी को अर्पण करने से भक्तों की हर एक मनोकामना सिद्ध होती है यह पर्व कश्मीरी पण्ड़ित बडे घूमधाम तथा श्रद्धा से मनाते है। महराष्ट्र में भी यह त्यौहार मनाया जाता है। कश्मीर में इस व्रत को ''पत्रदान व्रत'' कहते हैं। काश्मीरी पण्ड़ित इस शुभ दिन पर लडकी के हाथ से काता

हुआ कपास का धगा कलश के घडवे को बान्धते हैं। धागे को कश्मीर में ''पन्न'' कहते है, चूंकि इस गणेश पूजन में धागा (पन्न) का प्रयोग किया जाता है अत: इस पूजा को ''पन्नदान व्रत'' भी कहते हैं। हे ब्राह्मण देवता तुम भाद्रशुकलपक्ष में विध्यनुसार तथा श्रद्धा से गणेश जी की पूजा कर के, अपनी शक्ति के अनुसार शुद्ध घी से पूडियाँ ''सवासेर'' आदि बनाकर भगवान् को अर्पण करने के पश्चात् आपका दारिद्रय समाप्त होगा और मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी। ब्राह्मण को सारे व्रत का विधान बतलाकर बूढ़े ब्राह्मण ने यह ''पन्नदान व्रत'' करने का दृढ़ संकल्प किया, चूंकि यह मास भाद्रमास का चल रहा था अत: मैंने शीघ्रातिशीघ्र यह व्रत मनाना है। इस भवाना से ब्राह्मण भिक्षा के लिये निकला, गणेश जी की कृपा से भिक्षा में उसको पर्याप्त धन मिला, उसने आने वाले शुभ मुहूर्त पर ही भाई-बन्धुओं तथा मित्रों को एकत्रित करके यह पन्नदान व्रत किया और हर वर्ष भाद्र शक्लपक्ष में इस ''पन्नदान व्रत'' को करने की प्रतिज्ञा की। गणेश जी कीं कृपा से वह ब्राह्मण धनधान्य से सम्पन्न हुआ और उसकी सभी मनोकामनायें सिद्ध हुई सर्वशास्त्र ज्ञाता तपस्वी सूत जी कहते है जो मनुष्य इस ''पन्नदान व्रत'' को करेगा। गणेश जी की कृपा से उसे धनधान्य की प्राप्ति होगी, निर्धन धनी होगा, बन्दी बन्धन से मुक्त हो जायेगा, सन्तानहीनों को सन्तान प्राप्ति होगी, रोगी निरोगी होंगे। विशेषता इस ''पन्नदान व्रत'' के करने से उलझनों में उलझे हुये गृहस्थियों की हर एक उलझन सुलझ जायेगी और हर एक मनोकामना सिद्ध होगी। पन्न कथा के अन्त में हाथ में ली हुई द्रमन फूल आदि कलश के घडवे पर डालते हुये पढें : **''उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा च नमस्कार करोमि नम:।''** पूडी सवासेर आदि सामने सभी सदस्य प्रसाद की थालियों को स्पर्श करें : **''अमृतेश मुद्रया अमृतीकृत्य अमृतम् अस्तु अमृतायतां नैवेद्यम्। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितु: प्रसवे श्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णों हस्ताभ्याम् आददे महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्मयै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्य: प्रजापतये ब्राह्मणकलशदेवताभ्य: ब्रह्म विष्णु महेश्वर – देवताभ्य: चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतु – पतये नारायणाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्ता दिभ्य: पितृगणदेवता भ्य:। भगवते वासुदेवाय संकर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सहस्त्र नाम्ने विष्णवे लक्ष्मी सहिताय नारायणाय। भवाय देवाय शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय पशुपतये देवाय उग्राय देवाय भीमाय देवाय महादेवाय ईशानाय देवाय**

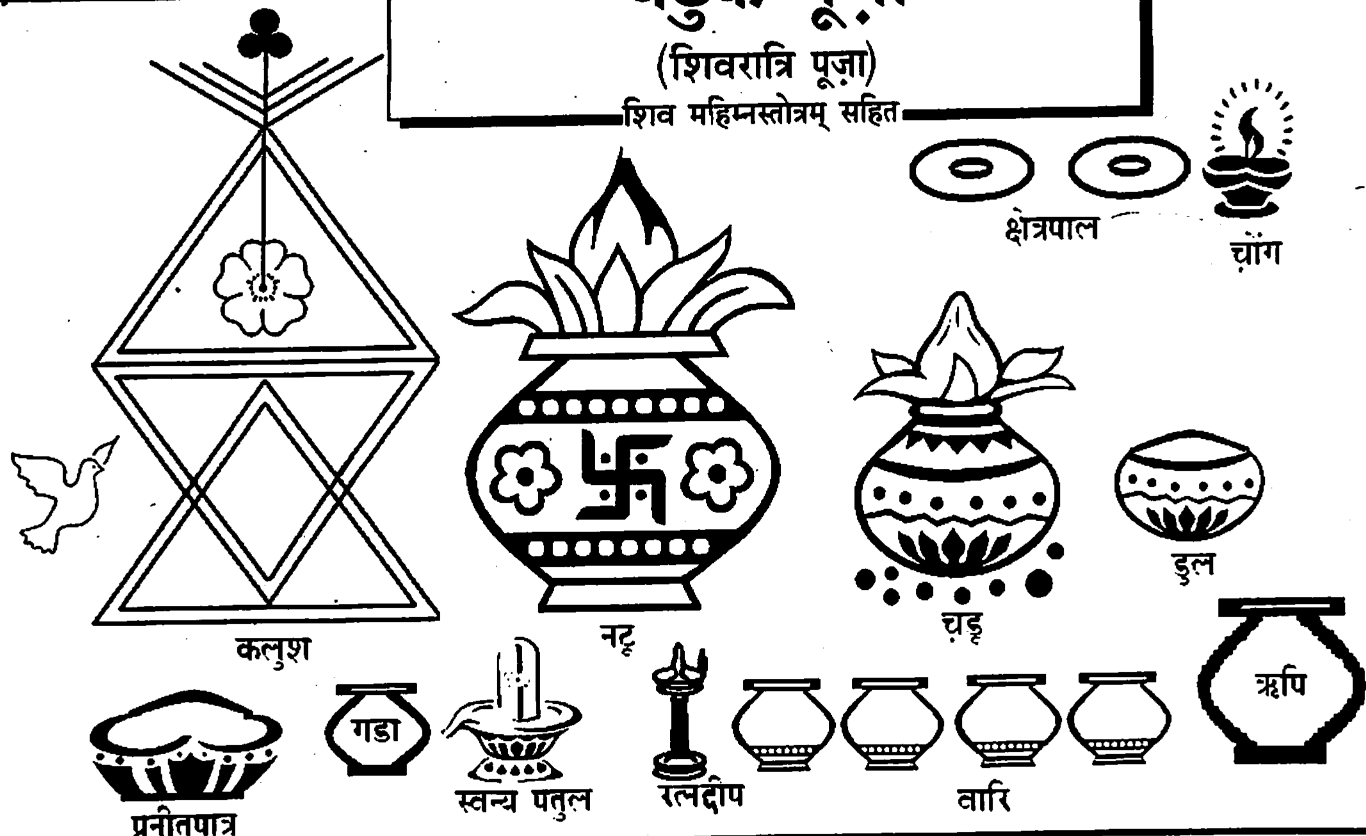
ईश्वराय देवाय उमा – सहिताय शिवाय – पार्वता सहिताय परमेश्वराय। विनायकाय एकदन्ताय कृष्ण – पिंगलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हे रम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय वल्लभासिहताय श्रीमहागणेशाय। कलीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूर – वाहनाय सेनाधि – अना श्वाय एका श्वाय, नीलाश्वाय प्रत्यक्ष देवाय परमार्थ साराय तेजोरूपाय प्रभासिहताय आदितया। भगवत्यै आमयै कामायै वार्वग्यै टंकधारिण्यैतारायै पार्वत्यै भगवत्यै ज्वाला भगवत्यै व्रीडा – भगवत्यै वैखरी भगवत्यै वितस्य भगवत्यै गंगा भगवत्यै यमुना भगवत्यै कालिका भगवत्यै सिद्ध – लक्ष्म्यै महात्रिपुर सुन्दर्यै सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभंयकरी – देव्यै क्षेमं करी भगवत्यै सर्व शुत्रु घातिन्यै इह राष्ट्राधिपतये आनन्देश्वर – भैखाय इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्ति हस्ताय, यमाय दण्ड हस्तायनैऋतये खड्गहस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजहस्ताय कुवेराय गदा – हस्ताय ईशानाय त्रिशूलहस्ताय, ब्रह्मणे पद्महस्ताय विष्णवे चक्र हस्ताय अनन्तातिदभ्य: अष्टाभ्य: कुल नाग देवताभ्य: अग्न्या दित्याभ्यां वरुण चन्द्रमोभ्यां कुमार भौमाभ्यां विष्णु बुधाभ्यां इन्द्रा बृहस्पतिभ्यां सरस्वती शुक्राभ्यां प्रजापति शनैरचराभ्यां गणपति राहुभ्यां रूद्र – केतुभ्यां ब्रहा-धुवाभ्यां अनन्ता – गस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूमार्य धुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिखादिभ्य: पंच चत्वा रिशंत् वास्तोष्पति याग देवताभ्य: ब्राह्मादिभ्यो मातृभ्य: गौयार्दिभ्यो देवताभ्य: राका देवताभ्या: त्रिका देवताभ्या: सिनीवाली देवताभ्य: ब्रार्हस्पत्य देवताभ्य: ॐ भू देवताभ्या: ॐ भूवो देवताभ्य: ॐ स्व र्देवताभ्य: रौद्री देवताभ्य: ॐ भूर्भव स्वर्देवताभ्य: अखण्ड ब्रह्माण्ड याग देवताभ्य: धूर्म्य: उपधर्म्य: महागात्र्यै सर – स्वत्यै हरे – कादिभ्यो वटुकादिभ्य:। उत्पन्नम् अमृतं दिव्यं प्राक् क्षीरो दधि मन्थनात् अन्नम् अम्त रूपेण नैवेधं प्रति गृह्यताम्। सामूहिक आरती "जय जगदीश" करें फिर से हाथ में फूल लेकर पढ़ें :-

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दु:ख भा भवेत्॥
असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योति र्गमय मृत्योर्माऽ मृतंगमय।
ॐ शान्ति शान्ति शान्ति।।

वटुक पूज़ा

(शिवरात्रि पूज़ा)

शिव महिम्नस्तोत्रम् सहित



कलश की सामग्री

चूना या चावल का आटा (मुटठी भर), गणेश, कुमार, लक्ष्मी, सरस्वती, विश्वकर्मा की तसवीरें या प्रतिमा, एक घडा जिस में ज़रुरत के मुताबिक कलश के अखरोट रहें, तिलक, फूल, अर्घ्य, धूप, पानी, प्रणीतपात्र के लिये थाली।

वटुक सामग्री

बरतनों की सामग्रीः एक नोट (शिव रुप), चार डुलिजियाँ (गण), चार वारि (छोटी घड़वियाँ), एक नारीकचलू या खोसु, दो छोटी घड़वियाँ (सत्रवारि), एक रत्नदीप, एक दीपक, एक डुल (चिलमची)

पूजा की सामग्री

सत्रपुतुल, सिन्दूर, कर्पूर, धूप, अगरबत्ती, कण्ठगण, घी, रूई, कन्द, फूल, (ब्यल वथर), चावल अर्घ्य के लिए, रूप वर्क (चान्दीवर्क), अखरोट, नाबद, किशमिश, नया यज्ञोपवीत, दूध, दही, ज़ंग के लिए एक थाली में चावल, नमक, सिक्का, एक अखरोट, नाबद, मधु, कण्ठघण, सुखे धान्य का घास, आसन बनाने के लिए आरियाँ लगभग १३, दर्भ, वुसर्य बनाने के लिए रक्षा सूत्र (नाखिन) फूलों की मालायें, माचिस सर्षप।

कलश पूज़ा

कलश को फूलों से सजा कर उसपर तिलक से ॐकार बनाऐं और पढें.

ॐकारो यस्य मूलं क्रम-पद-जठर-च्छन्द-विस्तीर्ण-शाखा, ऋक्पत्रं सामपुष्पं यजुर उचित फलः स्यात-अथर्व:प्रतिष्ठा। यज्ञच्छाया सुशीतो दि्वजगण-मधुपै:-र्गीयते यस्य नित्यं शक्तिः सन्धया-त्रिकालं दुरितभयहरः पातु नो वेदव्रक्षः।। मुक्ता-विद्रुम-मुकटां तत्वात्मवर्णोत्मिकाम। गायत्रीं वरदाभयोङ्कुशकरां शूलं कपालं गुणं शङ्ख चक्रम अधार-बिन्द-युगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे।। आयातु वरदा देवी

त्र्यक्षरा ब्रह्मवादिनी। गायत्री च्छन्दसां मातर्ब्रह्मयोने नमोस्तु ते।। भद्रं पशयेम प्रचरेम भद्रं भद्रं वदेम श्रृणुयाम भद्रम। तत्रो मित्रो वरुणो मामहन्ताम-अदितिः सिन्धुः पृथिवीर-उत-द्यौः। अभि नो देवीरवसा, महः शर्मणा नृपत्नीं :, अच्छित्रपत्राः सचन्ताम। इहेन्द्राणीमुपहवये, वारुणानीं स्वस्तये, अग्नायीं सोमपीतये।। मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम, पिपृतां नो भरीमभिः।। तयोर-इत घृतवत पयो विप्रा रिहन्ति धीतिभिः, गन्धर्वस्य ध्रुवे पदे। स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी, यच्छाऽन शर्म सप्रथः।। अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णु-विचक्रमे, पृथिव्याः सप्त-धामभिः।। इंद विष्णु- विचक्रमे त्रेधा निदेधे पदम । समूह्यस्य पांसुरे ।। त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः , अतो धर्माणि धारयन। विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पृशे, इन्द्रस्य युज्यः सखा। तत् विष्णोः परमं पंद सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततम।। तत विप्रासो विपन्यवो जागृवांस समिन्धते विष्णोर्यत परमं पदम ।। ॐ गायत्र्यै नमः ॐ भूर्भुवः-स्वः-तत-सवितु-र्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात।।

क्षेत्रपालो(डुलिजियो) को अर्घ्य डालते हुए पढ़ें

अश्वमेधे घोराणामार्षम।। ॐ द्रष्ट्रे नमः उपद्रष्ट्रे नमोऽनुद्रष्ट्रे नमः ख्यात्रे नम उपख्यात्रे नमो, नुक्शास्त्रे नमः, श्रृण्वते नमः उपश्रृण्वते नमः, सते नमोऽसते नमो जाताय नमो जनिष्यमानाय नमो भूताय नमो भविष्यते नमः चक्षुषे नम श्रोत्राय नमो मनसे नमो वाचे नमो ब्रह्मणे नमः शान्ताय नमः तपसे नमः।।

कलश पर फूल चडाते हुए पढ़ें

ॐ आब्रह्मन ब्राह्मणो ब्रह्म-वर्चस्वी जायताम-अस्मिन राष्ट्रे राजन्य इषव्यः शूरो महारथो जायतां, दोग्ध्री धेनु र्वोढा ऽनड्वान् आशुः सप्ति-र्जिष्णू-रथेष्ठः, पुरन्धि-र्योषा

सभेयो, युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे न: पर्जन्यो वर्षतु फलवतीर्न ओषधय: पच्यन्तां योगक्षेमो न: कल्पताम।।

अब विष्टर वाले प्रणीतपात्र में अर्घ्य, पुष्प, पानी, तिलक तथा तीन फूल चडाते हुए निम्नलिखित तीन मंत्र पढ़ें

1.संव्व: सृजामि ह्रदयं संसृष्टं मनो अस्तु व:।

2.संसृष्टास्तन्व: सन्तु व: संसृष्ट प्राणो अस्तु व:।

3.संय्याव: प्रियास्तन्व: संप्रिया ह्रदयानि व:।

4.आत्मा वो अस्तु सं प्रिय: संप्रियास्तन्वो मम।

(ज़ीवाधान)

प्रणीतपात्र के विष्टर से कलश, क्षेत्र पालों को पानी छिडकते हुए पढ़ें

१.अश्विनो प्राणस्तौ ते प्राणं दतां तेन जीव।

२.मित्रावरुणयो: प्राणस्तौ ते प्राणं दतां तेन जीव।

३.बृहस्पते:प्राण: स ते प्राणं दतांतु तेन जिव।

कलश के पूर्व में अर्घ्य फेकते हुए पढ़ें

ये देवा: पुर: संदोग्निनेत्रा रक्षोहणस्ते न: पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्य: स्वाहा। *कलश के दिक्षण में अर्घ्य फेकते हुए पढ़ें*

यं देवा दक्षिणात सदो यमनेत्रा रक्षोणस्ते न: पान्तु तं नोऽवन्तु तेभ्य: स्वाहा। *कलश के पश्चिम में अर्घ्य फेकते हुए पढ़ें*

ये देवा: पश्चात सदो मरुत नेत्रा रक्षोहणस्ते न: पान्तु तं नोऽवन्तु तेभ्य: स्वाहा।

कलश के उत्तर दिशा की ओर अर्घ्य फेक्ते हुए पढ़ें

ये देवा उतरात् सदो मित्रावरुण-नेत्रा रक्षोहणस्ते न: पान्तु तं नोऽवन्तु तेभ्य: स्वाहा। *अपने आप को तिलक लगाते हुए पढ़ें* अध्वर्योयं यज्ञो अस्तु देवा ओषधीभ्य: पशुभ्यो मे धनाय। विश्र्वस्मै भुताय ध्रुवो अस्तु देवा: स पिन्वव घटवत-देवयज्ञ। *अर्घ्य और फूल चढाते हुए पढ़ें*

इहैवैधि मा पच्योष्ठाः पर्वता इवाविचाचलत। इन्द्र इवेह ध्रव-तिष्ठेह ज्ञमुदारय। *दो दर्भ के तिनके अपने आसन के रुप में रखते हुए पढ़ें* इमम-इन्द्रो अदीधरत-ध्रुवं ध्रवेण हविषा हविः। तस्मै सोमो अधिब्रवतस्मा उ ब्रह्मणस्पतिः। *कलश के सामने दो तिनक दर्भ के छोड़ते हुए पढ़ें* ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं, जगत ध्रुवो राजा विशामसि। *पृथ्वी माता को तिलक फूल तथा अर्घ्य लगाते हुए पढ़ें* मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम । पिपृतां न भरीमभिः। *आकाश की ओर अर्घ्य फेकते हुए पढ़ें*

बडित्था पर्वतानां क्षेत्रं बिभर्षि पृथिवि प्रया भूमिं प्रवत्वति महना जिनोषि महिनि। *आटे या चूने से लिखे अष्टदल के उत्तर पश्चिम कोने (गणेश) पर पुष्प, अर्घ्य, तिलक आदि लगाते हुए पढ़ें*

निषुसीद गणपते गणोषुत्वामाहु-विर्प्रतमं कवीनाम। न ऋते त्वत्क्रियते किंचारे महामर्कं मघवंश्चित्रमर्च। *अष्टदल के पश्चिम दक्षिण कोने पर पुष्प, अर्घ्य, तिलक आदि लगाते हुए पढ़ें (कुमार जी)*

कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे। अनीकमस्य नमिनज्जनासः पुरा पश्यन्ति निहितमरतौ। *अष्टदल के पूर्वोत्तर के कोने पर (लक्ष्मी) पर पुष्प, अघर्य, तिलक आदि लगाते हुए पढ़ें*

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मां देवी जुषताम। *अष्टदल के उत्तर के कोने पर (सरस्वती) पर पुष्प, अघर्य, तिलक आदि लगाते हुए पढ़ें* इयं शुष्मेभि विसखा इवारुजत-सानुर्गिरीणान्त-विंश्वभिर-ऊर्मिभिः।पारावतघ्नीम-अवसे सुवृक्तिभिः सरस्वतीम - आविवासेम धीतिभिः। *अष्टदल के बीच में (लक्ष्मी) पर अघर्य, तिलक आदि लगाते हुए पढ़ें*

कांस्यस्मितां हिरण्य प्राकाराम- आर्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां

तर्पयन्तीम। पद्मवर्णां ताम-इहोपहवये श्रियम। *पूर्व दक्षिण कोने पर (विश्वकर्मा) पुष्प, अर्घ्य, तिलक आदि लगाते हुए पढ़ें*

विश्ववकर्मा विश्ववदेवो विश्व ज़ित विश्वदर्शित:। ते त्वा घृतस्य धारया श्रैष्ठाय समसूषत।- *बीच में रखें हुए कलश (गडवे) में अर्घ्य, तिलक लगाते हुए पढ़ें* ब्रह्मा देवानां पदवी: कवीनाम - ऋषिर्विप्राणां महिषो मृगानाम। श्येनो गृदध्रणां स्वधिति:- वनानां सोम:पवित्रम- अत्येति रेभन। प्रेतत-विष्णु: स्तवते वीर्येण मृगो न भीम: कुचरो गिरिष्ठ:। यसयोरुषु त्रिषु विक्रमणेष्व-धिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा। यो रुद्रो अग्नौ योऽप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु। योरुद्रा विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवा:।। अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवम -ऋत्विजम्। होतारं रत्नधातमम ।। इषे त्वोर्जे त्वा वायव: स्थो, पायव: स्थ देवो वं: सविता प्रार्पयत, श्रेष्ठतमाय कर्मणे ।। अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये निहोता सत्सि बर्हिषि।। शन्नो देवीर -अभीष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरऽभि स्त्रवन्तु न: ।। आहं पितृन सुविदत्रां अवित्सि न पातञ्च विक्रमणं च विष्णो:।। बर्हिषदो ये सुधया सुतस्य भाजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठा:।। वषटते विष्णवास आकृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम। वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभि: सदान:।। फाल्गुने शक्ति सहिताय चक्रिणे नम:, क्रियासहिताय दामोदराय नम:। दुर्गायै त्रयमबकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्तदिभ्य: पितृगणदेवताभ्यो नम: ।। (प्रधान) रात्रीं प्रपद्ये जननीं सर्वभूत-निवेशिनीम । भद्रां भगवतीं कृष्णां विश्ववस्य जगतो निशाम।। संवेशिनीं संयमनी ग्रहनक्षत्रमालिनीम। प्रपन्नोहं शिवां रात्रीं भेद्र पारमशीमहि नम:। कालरात्र्यै नम: तालरात्र्यै नम: राज्ञिरात्र्यै नम: शिवरात्र्यै नम:। यो रद्रो अग्नौ य अप्सु य ओषधीषु यो वनस्पषि। यो रुद्राय विश्वाभुवना विवेश तस्मै

रुद्राय नमो अस्तु देवाः। *सभी क्षेत्रपालों (बुलिजियों) पर अर्घ्य, डालते हुए पढ़े)* क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जयामसि गामश्वं पोषयित्वा स नो मृडातीदृशे नमः हेरंकादिभ्यो नमः बटुकादिभ्यो नमः।। यौ ते श्वानौ यमरक्षतारौ चतुरक्षौ पथिरक्षी नृचक्षसौ । ताभ्यामेनं परिदेहिराजं - स्वस्ति चास्मा अनमीवञ्च धीहि।। यत्र वेत्थ वनस्पते देवानां गुह्या नामानि तत्र हव्यानि गन्तय।। मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञात-यक्ष्माद उत्त राजयक्ष्मात। ग्राहि जग्राह यदि वैतदेनन्तस्या इन्द्राग्नी प्रमुक्तम एनम। । आत्मनस्-तम्-इंद विवृहामि ते।। तद्विष्णु परमं पदं सदा पश्यन्ति सूर्यः दिवीव चक्षुराततम्। तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवासंः समिन्धते, विष्णोर्यत्परमं पदम्।। *कलश के समीप नैवेद्य रखकर निम्मिलिखित (नैवेद्य) मन्त्र पढ़ें*

सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्यामादधे। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय।। ऋतुपतये नारायणाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्तादिभ्यः पितृगणयागदेवताभ्यः भगवते भवायदेवाय शर्वायदेवाय रुद्रायदेवाय पशुपतयेदेवाय उग्रायदेवाय भीमायदेवाय महादेवाय ईशानायदेवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय।। अजैकपर्दिने अहिर्बुध्नयाय कृत्तिवाससे पिनाकभृते सिन्धवे बहुरूपाय हराय त्र्यम्बकाय त्रिनेत्राय वृषभ-वाहनाय शत-रुद्रेश्वराय मृत्युञ्जयभट्टारकाय। विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिङ्गलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय वल्लभासहिताय महागणेशाय। क्लींकां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधियतये कुमाराय। भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै

सहस्त्रनाम्नयै देव्यै भवान्यै। विष्णुपञ्चयतनदेवताभ्य: अभयङ्करीदेव्यै क्षेमङ्करीभवान्यै सर्वशत्रुघातिन्यै इह राष्ट्राधिपतये *(अपने भैरव का नाम लें)* अमुकभैरवाय हेरकादिभ्यो वंटुकादिभ्य: *(तिल, चावल, दूध, मुधु से मिलाया, हुआ)* तिलतण्डुलमात्रं दधिमधुमिश्रं ॐ नमो नैवेधं निवेदयामि नम:।।

कलश पर पुष्प, अर्घ्य, चडाते हुए पढ़ें हिरण्यगर्भ: समवर्त-नाग्ने भूतस्य जात: पतिर्-एक आसीत्। स दाधार पथिवीं द्याम्-उतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। य: प्राणतो निमिषतश्च राजा पतिर्विश्र्वस्य जगतो बभूव। ईशेयो अस्य द्विपदश्-चतुष्पद: कस्मै देवाय हविषा विधेम।। ये ओजदा बलदा यस्य विश्र्व उपासते प्रशिषं यस्य देवा:। यस्य छायामृतं यस्य मृत्यु: कस्मै देवाय हविषा विधेम।। येन द्यौर्-उग्रा पृथिवी दृढा येन सुस्तम्मितं येन नाकम।। यो अन्तरिक्षं विममे-वरीय: कस्मै देवाय हविषा विधेम।। य इमे द्यावा पृथिवी तस्तभाने आधारय द्रोधसी रेजमाने। यस्मिन्-नधि वितता: सूर एति कस्मै देवाय हविषा विधेम। यस्येमे विश्र्वे गिरयो महित्वा समुद्रं यम्य रसया सहाहु:। दिशो यस्य प्रदिश: पञ्चदेवी कस्मै देवाय हविषा हविषा विधेम। आपो ह यन्महती विश्र्वम्-आयु:- गर्भं दधाना जनयन्तीर्-अग्निम्।। ततो देवानां निरवर्त तासुर्-एक: कस्मै देवाय हविषा विधेम।। आ न: प्रजाञ्-जनयतु प्रजापति धार्ता दधातु सुमनस्यमान:। संवत्सर तृ्ऋतुभिश्चाक्लृपानो मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु।। अर्चन्तर्स्वा हवामहे अर्चन्त: समिधीमहि, अग्नेर्-अर्चत ऊतये अर्चत प्रार्चत प्रियमेधसो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णाम्-अर्चत अर्चत।।

।।इति कलशस्थापनम्।।

वटक पूज़ा

परिवार में जिस सदस्य ने शिवरत्रि व्रत रखा होगा वह नए अथवा स्वच्छ वस्त्रों को धारण कर परिवार के अन्य सदस्यों के सहयोग से सामग्री एकित्रत करते हुए भगवान् शंकर का ध्यान करें और 'ओ३म् नमः शिवाय' का उच्चारण करते रहें। अपनी-अपनी रीति के अनुसार वटुक को सजा कर आसन (आरियों) पर रखें। यजमान नया यज्ञोपवीत धारण करें। परिवार के अन्य सदस्य भी नया यज्ञोपवीत धारण करें। यज्ञोपवीत धारण करते हुए 'ज़ंग' भी रखें और गायत्री मन्त्र पढ़ें। थाली में अथवा भद्रपीठ पर सञ्पतुल या पार्थिश्वर रख कर नारीकचलू या खोसू से पात्र में जल की धारा डालते हुए पढ़ें।

अस्य श्री आसन शोधन मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन शोधने विनियोगः।

पृथ्वी को तिलक लगा कर फूल चावल चढ़ाते हुए पढ़ें

प्रीं पृथिव्यै आधार शक्त्यै समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः।

हाथ जोड़ कर पढ़ें पृथवी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु च आसनम्। *दर्भ के दो तिनके दोनों हाथों की अनामिका अंगुलियों में रख कर गणेश जी का ध्यान करते हुए पढ़ें*

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्याये-सर्वविघ्नोपशान्तये नमः। अभिप्रतार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैर् अपि सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपते नमः। कर्पूरगौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेद्रं हारम्। सदा रमन्तं हृदयारबिन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः, गुरुदेव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरुवे नमः। गुरवे नमः। परम गुरवे नमः परमेष्ठ गुरवे नमः, परमाचार्याय नमः, आदि सिद्धेभ्यो नमः।

दर्भ के दो तिनके पकड़ कर इस तरह अङ्गन्यास कीजिए

हृदय को दोनों हाथों से छूते हुए पढ़ें
ॐ यो रुद्रो अग्नौ हृदयाय नमः *सिर को स्पर्श करते हुए पढ़ें* यो अप्सु य औषधीषु शिरसे स्वाहा, *चोटी को छूते हुए पढ़ें* यो वनस्पतिषु शिखायै वषट् *कानों को छूते हुए पढ़ें* यो रुद्रो विश्वाभुवना विवेश कवचाय हुम्। *आखों को छूते हुए पढ़ें* तस्मै रुद्राय नेत्राभ्यां वौषट् *चुटकी मार कर प्राणायाम करते हुए पढ़ें* नमो अस्तु देवा अस्त्राय फट् *चारों ओर तिल फैकते हुए पढ़ें* अपसर्पन्तु ते भूता ये भुवि संस्थिताः, ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया। *प्राणायाम करके हृदय और मुख को जल की छीटें देते हुए पढ़ें*
तीर्थे स्नेयं तीर्थम् एव समानानां, भवति मानः शंस्यो अरुरुषो धूर्तिः प्राणड् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।
अनामिका अंगुली (पहले पर्व अर्थात् गण्ड) पर पवित्र धारण करें और पढ़ें शतधारं वसूनां पवित्रम् असि सहस्त्रधारम अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्ति। *यजमान को तिलक लगाते हुये (ज़ंग भी लगायें) पढ़ें* मन्त्रार्थाः सफलता सन्तु पूर्णा सन्तु मनोरथा शत्रुणां बुद्धि नाशो अस्तु मित्राणाम् उदयः तव आयुर् आरोग्यम् ऐश्वर्यम् एतत् त्रतियम् अस्तु ते! जीव त्वं शरदः शतम। *यजमान नारियल को बांध कर अपनी मध्यमा अंगुली से अपने आपको तिलक पुष्प लगाते हुये पढ़ें* परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंच भूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधार शक्तयै समालभनं गन्धोनमः। अर्घनमः। पुष्पं नमः।
दीपक को तिलक लगाते पढ़ें स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतः तिमरा अपहः, प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पिपतः।
धूप को तिलक अर्घ पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्ध-उत्तमः, आहवानं सर्वदेवानां धूपोयं प्रति गृह्यताम् परिकल्पितः। *सूर्य देवता को निर्माल्य के थाल में अघर्य चावल, फूल चढ़ाते हुये पढ़ें* नमो धर्म

निधानाय, नमः स्वकृत साक्षिणे, नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः। *दर्भ सहित कटोरी से शिवलिंग अथवा सञ्पुतलू पर जलधारा डालते हुये पढ़ें* यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुर् भ्रातापि नो यत्र सुहृत् जनश्च, न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्र आत्मदीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय आधार शक्तयै धूप दीप संकल्पात् सिद्धिर अस्त धूपो नमः, दीपो नमः।

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुण मासस्य कृष्णापक्षस्य तिथौ द्वादश्यां *(यदि द्वादश्यां दिवा हो)*/ परतः *त्रयोदश्यां (जो भी वार हो)* वासरा नित्वायां महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वारदेवताभयः प्रजापतये ब्राह्मणे कलश देवताभ्यः ब्रह्म-विष्णु-महेश्वर देवताभ्यः चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय मासपतये नारायणाय फाल्गुने शक्ति-साहिताय चक्रिणे क्रिया-सहिताय गोविन्दाय दुर्गायै त्रयम्बकाय वरुणाय यज्ञ-पुरुषाय अग्नि ष्वातादिभ्यः पितृगण देवताभ्यः भगवते भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय ह्रीं श्रीं देवीपुत्राय वटुकनाथाय कालरात्र्यै तालरात्र्यै राज्ञिरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त क्षेत्रपालेभ्यः धूपदीप संकल्पात् सिद्धिर् अस्तु धूपो नमः दीपो नमः।

बायां यज्ञोपवीत रखकर तिल सहित पानी से पितरों को जल देते हुये सञ्पुतलू पर जलधारा डालते हुये पढ़ें (धारा अंगूठे की तरफ से गिरनी चाहिए)

समस्त माता पितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्यः पितृभ्यो शिवरात्रिवृतनिमित्तं-धूपः स्वधा दीपः स्वधा

दाईं भुजा में यज्ञोपवीत धारण करके विष्टर अथवा दर्भ के जल से पूर्ण खोसू या नारी कचलू में तिलक और तीन पुष्प डालते हुये पढ़ें

सं वः सृजामि हृदयं, संसृष्टं मनो अस्तुवः संसृष्टा तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणोऽस्तु वः। संख्या वः प्रियास्तन्वः

संप्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियाः तन्वोमम। *इसी खोसू के जल से सञ्युतलू अथवा शिवलिंग या पार्थिवेश्वर और सारे वटुक नाथ को जल की छींटें दर्भ के तिनकों अथवा विष्टर से देते हुये पढ़ें*

अश्विनोः प्राणः तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव, मित्रा वरुणयोः प्राणः तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव बृहस्पतेः प्राणः सते प्राणं ददात् तेन जीव। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः जीवादानं परिकल्पयामि नमः। *गायत्री मन्त्र तीन बार पढ़ें*

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।। *अब पढ़ें*

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य कृष्णपक्षस्य तिथौ महापर्वणि द्वादश्यां परतः त्रयोदश्यां *(जो भी वार हो)* वासरान्वितायां, भगवतः भवस्य देवस्य, ईशानस्य देवस्य, महादेवस्य पार्वती सहितस्य परमेश्वरस्य देवीपुत्र वटुक नाथस्य कालरात्र्याः तालरात्र्याः शिवरात्र्याः समस्त शिवरात्रि देवतानां अर्चाम् अहं कारिष्ये ॐ कुरुष्व।

हाथ में पहले से पकड़े हुए दर्भ के दो तिनके निर्माल्य में छोड़कर थोड़ा तिल सर्षप और जव को लेकर कंधो पर से फेंकें, अब शंकर की मूर्ति के सामने दर्भ के दो तिनके (दर्भ के अभाव में दो फूल) आसन के रूप में डालते हुए पढ़ें ॐ

विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वर श्वर आसनं दिव्यम् ईशान दास्यामि अहं परमेश्वर भगवतः भवस्य देवस्य महादेवस्य पार्वती सहितस्य परमेश्वरस्य इदम् आसनं नमः।

चावल सहित दर्भ के दो तिनके अनामिका और मध्यमा अंगुलि पर अँगूठे से दबा कर यदि घंटी आपके पास हो बाएँ हाथ से बजाते हुए पढ़ें भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, पशुपतये देवाय रुद्राय देवाय भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय, ईश्वराय देवाय महादेवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय देवी पुत्र वटुक नाथाय कालरात्र्यै समस्त्

शिवरात्रि देवताभ्यः युष्मान् पूजामि ॐ पूजय।

चावलों को कंधों पर से फेंक कर दर्भ के पहले से रखे हुए दो तिनकों को हाथ में रख कर नए चावल के दानों के सहित पकड़ कर पढ़ें

भगवन्तं भवं देवं, शर्वं देवं, रुद्रं देवं, पशुपतिं देवं, उग्रं देवं, भीमं देवं, ईशानं देवं, ईश्वरं देवं, महादेवं, पार्वतीसहितं परमेश्वरं देवीपुत्र वटुक नाथं कालरात्री तालरात्री शिवरात्री समस्त शिवरात्रि देवता आवाहयिष्यामि, ॐ आवाहय।।

भगवान् शंकर की मूर्ति पर फूल चढ़ाते हुए पढ़ें

लिंगेऽद्य भक्त-दयया क्षणमात्रम् एकं स्थानं निधाय भव मत विहितां पुरारे। सर्वेश विश्वमय। हृत् कमलादि रूढ पूजां गृहाण भगवन् भव मे अद्य तुष्टः। भूमेर् जलात् च पवनात् अनलात् हिमांशोर् उष्णार्चिषो हृदयतो गगनात् समेत्य, लिंगद्य सन्मणिमये मत् अनुग्रहार्थं भक्तयैक लभ्य। भगवन् कुरु सन्निधानम् भगवन् पार्वतीनाथ भक्तानुग्रह कारक अस्मत् दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो।। *दोनों हाथों में मुट्ठी भर फूल उठाकर तीन बार गायत्री पढ़ कर भगवान् शंकर पर चढ़ाते हुए पढ़ें* इति आहूय तु गायत्रीं त्रिसम् उच्चार्य तत्त्ववित्, मनसा चिन्तितैर् द्रव्यै देवम् आत्मनि पुनर्यजेत्। पूजयेत्, तेजोरूपं ततः क्षिप्तवा प्रतिमायां पुनर्यजेत् *दोनों कन्धों से जव फेंक कर प्राणायाम करें और खोसू में जल डालते हुए पढ़ें* पाद्यार्थम् उदकं नमः, शन्नो देवीर् अभिष्टये आपो भवन्तु पीतये, शंयोर् अभि स्रवन्तु नः। *अब यही खोसू हाथ में लेकर पढ़ें*

भगवन्तः पाद्यं पाद्यम् *खोसू का जल भगवान् शंकर पर डालते हुए पढ़ें* महादेव महेशान महानन्द परात् पर गृहाण पाद्यं मत् दत्तं पार्वती परमेश्वर। भगवते भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय देवीपुत्र वटुक नाथाय, कालरात्र्यै तालरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः पाद्यं नमः।। *इस पाद्य से बचा हुआ जल निर्माल्य पात्र में*

डालकर खोसू में फिर से जल डालते हुए पढ़ें शन्नो देवीर् अभीष्टय ।ापो भवन्तु पीतये शंयोर् अभि स्रवन्तुन:

दर्भ, जल, दूध, घी, दही, चावल से बने अर्घ्य को जल में डाल कर शंकर भगवान् पर अथवा ससज्युतलू पर डालते हुए पढ़ें भगवन्तो अर्ध्यम् अर्घ्यम्। त्र्यम्बकेश सदाचार विपदां प्रतिघातक अर्घ्यं गृहाण देवेश सम्प्त् सर्वार्थ साधक। भगवन् भवदेव पार्वती सहित परमेश्वर देवीपुत्र वटुक नाथ कालरात्रि तालरात्रि राज्ञिरात्रि शिवरात्रि समस्त शिवरात्रि देवता: इदं वोऽर्घ्यं नम:।

अब भगवान् शंकर को पंच दश स्नान इस प्रकार कीजिए, जल, दूध, दही, शहद, घी, फूल, सर्षप इन सब को मिलाकर शिवलिंग पर जल की धरा डालते हुए पढ़ें

1. असंख्याता: सहस्त्राणि ये रुदा अधिभूम्यां, तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि

2. योस्मिन् महति अर्णवे अन्तरिक्षे भवा अधि। तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि

3. ये नीलग्रीवा: शतिकण्ठा दिवं रुद्रा उपाश्रिता, तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि

4. ये नीलग्रीवा शिति कण्ठा शर्वा अध: क्षमा चरा तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि

5. ये वनेषु शिषिपिंजरा नीलग्रीवा विलोहिता: तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि

6. ये एतावन्तो वाभूयां सो वा दिशो रुद्रा वितिष्ठिरे तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि

ॐ यो रुद्रो अग्नौ यौ अप्सु य औषधीषु यो वनस्पतिषु। यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवा:। भगवते भवाय देवाय उमा सहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय पंचदश स्नानं परिकल्पयामि नम:।

देवता तथा पितरों के लिए चावल, दही, तिल और घी सहित जल से तर्पण करते हुए पढ़ें ब्रह्मादया देवा:

तृप्यन्ताम् *गले में यज्ञोपवीत रखकर पढ़ें* सनकादय: ऋषय: तृप्यन्ताम्

यज्ञोपवीत बाएँ तरफ रख कर पढ़ें

अग्नि ष्वात्ता दय: पितर: तृप्यन्ताम् तृप्यन्ताम् तृप्यन्ताम्।

यज्ञोपवीत दायाँ रख कर पढ़ें ॐ नमो देवेभ्य:।

यज्ञोपवीत गले में रख कर पढ़ें स्वाहा ऋषिभ्य:

बायाँ यज्ञोपवीत रखकर पढ़ें स्वधापितृभ्य:,

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें आब्रह्म स्तम्ब पर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं जगत् तृप्यतु तृप्यतु तृप्यतु।

शंकर भगवान् या सञ्चुतलू पर फिर से स्नान के निमित्त जलधारा डालते हुए पढ़ें

त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकम् इव बन्धनात् मृत्योर मुक्षीय मामृतात्। शिवरात्रि देवताभ्य: मन्त्रगुडकं नम:।

बाईं हथेली के मध्य में थोड़ा सा चावल सहित जल और उसी हाथ की तर्जनी और अँगूठी में थोड़ा सा चावलों सहित जल लेकर उसी हाथ को देवताओं यानी वटुक राज के चारों ओर घुमाकर उस जल और चावलों को बाएँ कंधे पर से फेंकते पढ़ें (यानी आलथ निकालते हुए पढ़ें)

रक्षोहणं वाजिनम् आजिघर्मि मित्रं पृथिष्ठम् उपयामि शर्म। शिशानो अग्नि: क्रतुभि: समिद्ध: सनो देव: सरिष: पातु नक्तम्। शिवरात्रि देवताभ्य: आरात्रिकां परिकल्पयामि नम:।

दाएँ अँगूठे तथा तर्जनी यानी अँगूठे की साथ वाली अंगुलि से सञ्चुतलू शिव मूर्ति का स्पर्श करके अपने नेत्रों से लगाते हुए पढ़ें।

भवाय देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय नेत्र स्पर्शनं नम:।

अब जहाँ शंकर की मूर्ति कौ बिठाना हो वहाँ फूलों से आसन सजाते हुए पढ़ें

आसनाय नम: वृषभासनाय नम: शतदल वृषभ आसनाय

पद्मासनाय नमः सहस्त्रदल पद्मासनाय नमः।
अब सोने के वर्कों और मालाओं से शंकर भगवान् तथा वटुक नाथ को सजाकर महिम्नापार तथा देवी के श्लोक पंचस्तवी आदि के श्लोक पढ़ते हुए फूल चढ़ाते जायें। भगवान् शंकर पर वस्त्र के रूप में फूल चढ़ाते हुए यह श्लोक पढ़ें कालाग्निरुद्र सर्वज्ञ वरदाऽभयदायक वस्त्रं गृहाण देवेश दिव्य वस्त्रोप शोभितम्। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः वस्त्रं परिकल्पयामि नमः।
यज्ञोपवीत के रूप में पुष्प चढ़ाते हुए पढ़ें
यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्, आयुष्यम् अग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीत् बलम् अस्तु तेजः। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः यज्ञोपवीतं परिकल्पयामि नमः।। *शंकर की मूर्ति वटुक नाथ को तिलक, सञ्जुतलू को चन्दन तथा बाक़ी पात्रों को सिंदूर लगाते हुए पढ़ें*

त्रिपुरान्तक देवेश पार्वती प्राण वल्लभ। गृहाण गन्धं काश्मीर चन्द्रचन्दन कल्पितम्। भगवते भवाय देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय, उमासहिताय शिवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय देवीपुत्र वटुकनाथाय कालरात्र्यै तालरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः अर्घोनमः पुष्पं नमः।
(धूप आलनावुन)
महादेव मृढानीश जगत ईश निरंजन धूपं गृहाण देवेश साज्यं गुग्गुल कल्पितम्। *(रत्न दीप और काफ़ूर आलनावुन)*
ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य कृष्णपक्षस्य तिथौ समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः रत्नदीपं परिकल्पयामि नमः *'दर्भ हुड़' से चामर करते हुए आरती करें* ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिङ्कर पटली, कृत ताडन परिपीडन मरणागम समये। उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्। अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु सञ्चय दलिते,

पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण चलिते। शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्। भव-भञ्जन सुर-रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्, दनुजान्तक मदनान्तक रविजान्तक भगवन्। गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम। शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये, कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये। द्विज क्षत्रिय वनिता शिशुदर कम्पित हृदये, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम। भवसम्भव विविधामय परिपीडितवपुषं, दयितात्मज ममताभर कलुषी कृत हृदयम्। करु मां निजचरणार्चन निरतं भव सततं, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्। शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्।।

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुनमासस्य कृष्णपक्षस्य द्वादश्यां परतः त्रयोदश्यां तिथौ समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः चामरं परिकल्पयामि नमः।

फूल चढ़ाते हुए पढ़ें नवरत्नमयं दिव्यं मुक्ता जाल विभूषितम् गृहाण छत्रं भगवान् शिव भद्रासन प्रद। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः छत्रं परिकल्पयामि नमः। *आईना दिखाते हुए पढ़ें*

एताभ्यः समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः आदर्शं परिकल्पयामि नमः *फिर से वटुक नाथ आदि को फूल चढ़ाते हुए पढ़ें*

एताभ्यः समस्त शिरात्रि देवताभ्यः वासो नमः

नमस्कार करते हुए पढ़ें एतासां देवतानाम् अर्घ्यदानादि अर्चन विधि सर्वः परिपूर्णः अस्तु।

दूध कन्द या नाभद आदि वटुक में डालते हुए पढ़ें

क्षीराज्य मधु सम्मिश्रं शुभ्रदध्ना समन्वितम्। षड् रसैश्च समायुक्तं गृहाण अन्नं निवेदये। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः मात्रा मधुपर्क चरुं नैवेधं समर्पयामि नमः।

फूलों की अंजलि चढ़ाते हुए पढ़ें

हर विश्वा खिलाधार निराधार निराश्रय पुष्पाँजलिम् इमं शम्भो गृहाण वरदो भव। समस्त शिवरात्रि देवताभ्य: पुष्पाँजलिम् समर्पयामि नम:। *मन से अर्ध परिक्रमा करते हुए पढ़ें*

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्या-दिकानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति शिवस्यार्ध प्रदक्षिणात्

भगवान् शंकर पर फूल चढ़ाते हुए पढ़ें

नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय, भस्मांग रागाय महेश्वराय। देवधि देवाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय ॐ नम: शिवाय। मातङ्ग-चरमाम्बर-भूषणाय, समस्त-गीर्वाण-गणार्चिताय। त्रैलोक्य नाथाय पुरान्तकाय, तस्मै मकाराय ॐ नम: शिवाय। शिवा-मुखाम्भोज-विकासनाय दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय। चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय तस्मै शिकाराय ॐ नम: शिवाय। वशिष्ठ-कुम्भोत्-भव गौतमादि-मुनीन्द्र-वन्द्याय गिरीश्वराय। श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै वकाराय ॐ नम: शिवाय। यज्ञ-स्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय। नित्याय शुद्धाय निरंजनाय तस्मै यकाराय ॐ नम: शिवाय।

आत्मा त्वं गिरिजा मति: सहचरा: प्राणा: शरीरं गृहं पूजा ते विषय उपभोग रचना, निद्रा समाधि स्थिति:। संचार: पदयो: प्रदक्षिण विधि: स्त्रोत्राणिसर्वा गिर:। यत् यत् कर्म करोमि तत् तत् अखिलं शम्भो: तव आराधनम।

उभाभ्यां जानुभ्यां शिरसा उरसा वचसा नमस्कारं करोमि नम:।

चावल (ज़ंग) आदि को (लव देते हुए) संकल्प करते हुए पढ़ें

अन्नं नम:अन्नं नम: आज्यं अन्नम् अद्य दिने अद्य यथा संकल्पात् सिद्धिर् अस्तु। अन्न हीनं विधि-हीनं द्रव्य-हीनं यत् गतं तत्सर्वम् अछिंद्र सम्पूर्णम् अस्तु एवम् अस्तु

खोसू में दाएँ हाथ की अंगुलियों के ऊपर से जल डाल कर उसी जल से शंकर भगवान तथा वटुक नाथ आदि को जल आचमन के रूप में देते हुए पढ़ें

शं नो देवीर् अभिष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभि स्रवन्तु नः, समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः अपोशानं नमः आचमनीयं नमः *फिर से दायें हाथ की अंगुलियों के ऊपर से खोस में जल डालकर उस में सिक्के के रूप में कुछ दक्षिणा भी डालें, वह दक्षिणा सभी वटुक नाथ आदि को अर्पण करते हुए पढ़ें*

शंनो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभिस्रवन्तु नः समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः दक्षिणायै तिल हिरण्य रजत निष्कर्णं ददानि। *फिर से कुछ सिक्के आदि अर्पण करते हुए पढ़ें* एता देवताः सदक्षिणान् अनेन प्रीयन्तां प्रीतांः सन्तु।

वटुक नाथ को फूल चढ़ाते हुए पढ़ें

नाथं नाथं त्रिभुवन नाथं भूति सितं त्रिशूल धरं उपवीती कृतं भोगिनम् इन्दु कलाशेखरं वन्दे।

वैश्वदेव विधि

(अपनी रीति के अनुसार वेश्वदेव विधि की जिए) वटुक नाथ के सामने ही अग्नि जलाकर, उस अग्नि के दक्षिण पश्चिम कोण पर विष्टर (दर्भ) तिल और चावल पानी सहित एक कटोरी रखें (यह प्रणीत पात्र कहलाता हैं) इस प्रणीत पात्र में तीन बार फूल डालते हुए पढ़ें

1. संवः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः
2. संसृटा तन्वः सन्तु वः, संसृष्टः प्राणो अस्तु वः
3. संय्यावः प्रिया स्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः,

आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रिया स्तन्वो मम

दर्भ के दो तिनके अग्नि में जलाकर दाएँ ओर फेंकते हुए पढ़ें निर्दग्धं रक्षो निर्दग्धा रातिर् अपाग्ने, अग्नि मामाद जहि निष्क्रव्या दं देवयजनं वह *प्राणायाम करके अग्नि के दाएँ ओर रखें हुए प्रणीतापात्र में से नौ बार दर्भ से पानी*

छिड़कते हुए पढ़ें

1. ऋतंत्वा सत्येन परिसमू ह्यामि।
2. सत्यं त्वर्तेनं परिसमूह्यामि।
3. ऋत्त सत्याम्यां त्वा परिसमूह्यामि।
4. ऋतं त्वा सत्येन पर्युक्षामि।
5. सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि।
6. ऋत सत्याभ्यां त्वा पर्युक्षामि।
7. ऋतं त्वा सत्येन परिषिंचामि।
8. सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि।
9. ऋत सत्याभ्यां त्वा परिषिञ्चामि।

अग्नि के चारों ओर दर्भ के चार तिनके पूर्व, दक्षिण, उत्तर और पश्चिम से छोड़ते हुए पढ़ें यज्ञस्य सन्ततिर्-असि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै स्तृणामि। *अग्नि को तिलक फूल चढ़ाते हुए पढ़ें*

अग्नये शुकारूढाय स्वाहासहिताय त्रिनेंत्राय तेजोरूपाय सभालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः *घी सहित पकाए हुए अन्न या रोटी पर दर्भ के दो तिनके लगाते हुए पढ़ें* वैश्वदेवस्य सिद्धस्य सर्वगतोग्ग्रस्य अन्नस्य जुहोति पाकस्य घृतेन संलिप्य यजमानाय स्वस्ति अस्तु श्रृतम-अभिघार्य। *इसी अन्न या रोटी (चोचवोर) से अग्नि में आहुतियाँ डालते हुए पढ़ें* सोमय स्वाहा, मित्राय स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, अनुमत्यै स्वाहा, ध्वान्वन्तरये स्वाहा, वास्तोष्पतये स्वाहा, वासुदेवाय स्वाहा, सङ्कर्षणाय स्वाहा, प्रद्युम्नाय स्वाहा, अनिरुद्धाय स्वाहा, सत्याय स्वाहा, पुरुषाय स्वाहा, अष्युताय स्वाहा, माधवाय स्वाहा, गोविन्दाय स्वाहा, सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मी सहिताय नाराणाय स्वाहा। *किसी थाली आदि में सिलोना, चावल आदि रख कर सभी परिवार के सदस्य उस थाली को हाथों से स्पर्श करते हुए प्रेप्युन पढ़ें*

।।अथ नैवेद्य मन्त्रा:।।

प्रेप्युन

दोनों हाथों से नैवेद्य ग्रहण करते हुए पढ़ें।

अमृतेश मुद्रया-अमृतीकृत्य अमृतम-स्तु अमृतायतां नैवेद्यं सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य-त्वा-सवितु: प्रसवेऽश्विनो-र्बाहुभ्यां पूष्णो-हस्ताभ्याम्-आदधे, महागणपतये कुमाराय श्रियै सेस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वादेवताभ्य: प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्य: ब्रह्मविष्णु-महेश्वर-देवताभ्य: चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञ-पुरुषाय अग्निष्वात्तादिभ्य: पितृगणदेवताभ्य: ॐ भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी सहिताय नारायणाय, भवाय देवाय पार्वतीसहिताय नारायणाय, भवाय देवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय विनायकाय वल्लभासहिताय श्रीगणेशाय क्लीं कां कुमाराय भगवते ह्रां ह्रीं स: सूर्याय प्रभासहिताय आदित्याय भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका भगवत्यै श्री शारदा-भगवत्यै श्री महाराज्ञी-भगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै व्रीढा-भगवत्यै वैखरी-भगवत्यै वितस्ता-भगवत्यै गंगा-भगवत्यै यमुना-भगवत्यै कालिका-भगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महात्रिपुरासुन्दर्यै सहस्रनाम्नयै देव्यै भवान्यै अभयंकरी देव्यै भवान्यै क्षेमंकरी भगवत्यै सर्वशत्रु-घातिण्यै इहराष्ट्राधिपतये *(जिस भैरव से आप के कुल का संबंध है उसका नाम ले)* भैरवाय इन्द्रादिभ्यो दशलोक पालेभ्य: आदित्यादिभ्यो नवग्रह देवताभ्य: ब्रह्मादिभ्य: मातृभ्य: गौर्यादिभ्य: मातृभ्य: ललितादिभ्य: मातृभ्य: बार्हस्पत्य देवताभ्य:। ॐ भूर्देवताभ्य: ॐ भुवो देवताभ्य: ॐ स्वर्देवताभ्य: ॐ भूर भुव: स्व: देवताभ्य: अखण्ड ब्रह्माण्डयागदेवताभ्य: महागायत्र्यै सावित्र्यै हेरकादिभ्य: वटुकादिभ्य: उत्पन्नम् अमृतं दिव्य प्राक् क्षीरो दधिमन्थनात्

अन्नं अमृतं रूपेण नैवेद्यं प्रति गृह्यताम्।

अपने इष्ट देवता का ध्यान करते हुए पढ़ें।

ॐतत्सद् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य, कृष्ण पक्षस्य द्वादश्यां परतः त्रयोदश्यां तिथौ अमुकायां, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पापनिवारणार्थं शिरात्रि व्रत निमितम् ॐनमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

अग्नि के दाईं ओर पूर्व की ओर सिर वाले दर्भ बिछाकर उसी बिछाई हुई दर्भ पर दक्षिण पश्चिम कोण से पंक्ति में (लाईन) में साँप आकार में रोटी के तीन टुकड़े देवताओं को बलि देते हुए आगे लिखे छत्तीस नामों से रोटी के टुकड़े या अन्न डालते हुए पढ़ें

ताक्षाय नमः, उपतक्षाय नमः, अम्बा-नामासि नमस्ते, दुला-नामासि नमस्ते, नितंत्री नामासि नमस्ते, चुपनीका-नामासि नमस्ते, अभ्रयन्ती नामासि-नमस्ते, मेघयन्ती नामासि नमस्ते, वर्षयन्ती नामसि नमस्ते, नन्दिनि नमस्ते, सुभगे नमस्ते, सुमङ्गिल नमस्ते, भद्रं-करि नमस्ते, श्रियै हिरण्य केश्यै नमः, वनस्पतिभ्यो नमः, धर्माय नमः, अधर्माय नमः, मृत्यवे-नमः मरुत्भ्यो नमः, वरुणाय नमः, विष्णवे नमः वैश्रवणाय-राज्ञे-नमः, भूतेभ्यो नमः, इन्द्राय नमः, इन्द्र-पुरुषेभ्यो नमः, सोमाय-नमः, सोम पुरुषेभ्यो नमः, वरुणाय नमः, वरुण पुरुषेभ्यो नमः, ब्रह्म-नमः, ब्रह्म पुरुषेभ्यो नमः ऊधर्वं आकाशाय नमः, स्थण्डिले-दिवंचरेभ्यो भूतेभ्यो-नमः, नक्तं चरेभ्यो नमः, षट्-त्रिंशत् तक्षादिभ्यो अन्नं नमः।

पानी डालते हुए पढ़ें आचमनीयं नमः

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर दर्भ बिछाते हुए दर्भ पर तिल और जल से छींटे देते हुए पढ़ें

समस्त माता पितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्यः पितृभ्यो भूपृष्ठे दर्भास्तरणे तिलोदकेन अवने-जनं स्वधा।

इसी बिछाई हुई दर्भ को अँगूठे से स्पर्श करते हुए पढ़ें

उशन्तस्त्वा हवामह उशन्तः समिधीमहि, उशन्न-उशत आवह पितृन् हविषे अत्तवे।

तिल, पानी, दूध, दीप, धूप, अन्न, घी और शहद (यह पितरों का अन्न) एक पात्र में रखें और पढ़ें

तिलास्तोयं तथा क्षीरं दीपधूपौ बलिस्तथा। मधु-सर्पिः समायुक्तम् अष्टांगम् अन्न सम्भवम्।

बायाँ घुटना पृथवी पर रखकर पितरों का नाम उच्चारण करते हुए पात्र में रखा हुआ यह अन्न दर्भ पर रखते हुए पढ़ें

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महा योगिभ्य एवच। नमः स्वधा च स्वाहा च नित्यम्-एव भवतु इह

ॐतत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य कृष्णापक्षस्य तिथौ द्वादश्यां वासरान्वितायां

पितरों का नाम लेते हुए अन्न दर्भ पर डालते जाए,

पितामह एतत् ते अन्नं ये च त्वानु, प्रपितामह एतत् ते अन्नं ये च त्वानु मात एतत् ते अन्नं याश्च त्वानु।

इसी तरह मृत स्त्रियों के नाम लेते हुए अन्न रखते जाएँ और सभी मृत पितरों को अन्न डालकर जिन के नाम याद न हों रोटी के टुकड़े अन्नादि हाथ में लेकर यह मंत्र पढ़ें

मातृपक्ष्यास्तु ये केचित् ये चान्ये पितृपक्षजाः गुरु श्वशुर बन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः, ये प्रतेभावम् आपन्ना ये चान्ये श्राद्ध वर्जिताः अन्न दानेन ते सर्वे लभन्ताम् तृप्तिम् उत्तमाम्। समस्त माता पितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्यः पितृभ्योऽन्नं स्वधा।

अन्न का लेप साफ़ करके हाथ धोकर तिलक तथा फूल चढ़ाते हुए पढ़ें **समस्त माता पितृभ्यः समालभनं गन्धः स्वधा, समस्त माता पितृभ्यः अर्घ्यः स्वधा, धूपः स्वधा।**

तर्पण करते हुए पढ़ें

समस्त माता पितृभ्यः दीपः स्वधा, धूपः स्वधा।

भक्ष्य भोज्य रखते हुए पढ़ें

समस्तमाता पितृभ्यः भक्ष्य भोज्य फल मूल बलि नैवेद्यम् आहरादि अन्नं स्वधा। *तिल, पानी, शहद डालते हुए पढ़ें*

समस्त माता पितृभ्य: तिल मधु मिश्रमुदक पात्रम् आचनीयं जलं स्वधा *तर्पण करते हुए पढ़ें*

समस्त माता पितृभ्य: हिमपानं स्वधा क्षीरपानं स्वधा मधुपानं स्वधा तिलोदकं स्वधा उदक तर्पणं हिमं हिमं रजतं रजतम्।

दायाँ यज्ञोपवीत रखते हुए पढ़ें

वसन्ताय नम:, ग्रीष्माय नम:, वर्षाभ्यो नम:, शरदे नम:, हेमन्ताय नम:, शिशराय नम:, षड् ऋतुभ्यो नम:।

अग्नि में अन्न की आहुति डालते हुए पढ़ें

अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। *हाथ धोकर प्राणायाम करके अग्नि को प्रणेतपात्र से पानी छिड़कते हुए पढ़ें*

1. ऋतुंत्वा सत्येन विमुंचामि।
2. सत्यं त्वर्तेन विमुंचामि।
3. ऋत सत्याभ्यां त्वा बिमुंचामि।

अग्नि के चारों तरफ़ छोड़ी हुई दर्भ उत्तर दिशा से उठाते हुए पढ़ें

यज्ञस्य सन्ततिर असि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै नयामि।

फूल हाथ में लेते हुए अग्नि देवता से आर्शीवाद मागँते हुए पढ़ें

धर्मं देहि, धनं देही, पुत्रपौत्रान् च देहि मे, आयुर् आरोग्यम् ऐश्वर्यम् देहि मे, हव्य वाहन तेजोसि तेज मयि देहि।

अग्नि की ज्योति हाथ से अपनी ओर लेते हुए पढ़ें

इत्यात्मानं देहि भगवन् सन्निधत्सु।

पृथ्वी पर थोड़ा सा अन्न फिर से डालते हुए पढ़ें

भगवन् यक्ष्म एतत्तेऽन्नं नम:, एतत् ते आचमनीयं नम:।

यज्ञोपवीत गले में रखते हुए पढ़ें

हन्त मनुष्यभ्य:, सनकादिभ्य: ऋषिभ्य: अन्नं नम: आचमनीयं नम:

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर 'चटू' को हाथों से पकड़ कर तिलक पुष्प लगाते हुए पढ़ें

या काचित् योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा, खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवतु मे सदा, आकाश मातृभ्यो अन्नं नमः, समालभनं गन्धोनमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

भगवान् शंकर का ध्यान मन में रख कर किसी पात्र में थोड़ा सा अन्न रखते हुए पढ़ें

शिवरात्रि देवताभ्यः बलिं समर्पयामि नमः

अब जो दर्भ पर अपने अन्न कण रखे है उनके पास ही पृथ्वी पर और प्राणियों को अन्न डालते हुए पढ़ें (गोग्रास)

सौर भेय्याः स्वर्ग हिताः पवित्रा पुण्यराशयः प्रति गृहणन्तु मे ग्रासं गावः त्रैलोक्य मातरः। गोभ्योऽन्नं नमः, ऐन्द्र वारुण वायव्या याम्या नैऋति काश्च ये वायसाः प्रति गृहणन्तु इमं पिण्डं मयोद्धृतम्, काकेभ्यः अन्नं नमः, श्वानौ द्वौ शाव शवलौ वैवस्वत कुलोद्भवौ, ताभ्यां पिण्डं प्रदस्यामि स्याताम् एतौ अहिंसकौ श्वभ्यः श्वानकेभ्यः अन्नं नमः

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें

रौरवाधीन सत्वानां प्रेत द्वार निवासिनाम्, अर्थिनां याचमानानाम् अक्षय्यम् उपतिष्ठतु।

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें

शुनां च पतितानां च श्वपचां पाप रोगिणाम्। वातसानां क्रिमीणां च शनकैर् निक्षिपेत् भुवि, देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाः सयक्षोरग दैत्यसंघाः, प्रेता पिशाचाः तरवः समस्ता ये चान्नम् इच्छन्ति मया प्रदत्तम्। पिपीलिकाः कीट पतंग काद्या बुभुक्षिताः कर्मणि बद्धाः, प्रयान्तु ते तृप्तिम् इंद मयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु। येषां न माता न पिता न बन्धुर् नैवान्न सिद्धिर् न तथान्नम् अस्ति तत् तृप्तयेऽन्नं भुवि दत्तम् एतत् ते यान्तु तृप्तिं मुदिता भवन्तु, भूतानि सर्वाणि तथाननम् एतत् अयं चरिष्णुर् न ततोन्यत् अस्ति तस्मात् अहं भूत निकाय भूतम् अन्नं प्रयच्छामि भवाय तेषाम्। चतुर्दशो भूतगणो य एष तत्र स्थिता येऽखिल भूत संघाः, तृप्त्यर्थम् अन्नं हि मया विसृष्टं, तेषाम् इंद ते मुदिता भवन्तु, इत्युच्चार्य

नरो दद्यात् अन्नं श्रद्धा समन्वित:, भुवि भूतोप काराय गृही सर्वाश्रयो यत:।

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर अँगूठे की तरफ़ से अन्न सलोना डालते हुए पढ़ें

यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च, वैवस्वताय कालाय। सर्वप्राणहराय च, औदुम्बराय नीलाय ब्रघ्नाय परमेष्ठिने, वृकोदराय भीमाय चित्रगुप्ताय वै नम:, पाशहस्त कृतान्ताय प्रेताधिपतये नम:, श्रीयमराज धर्मराज चित्रगुप्त तृप्तयेऽस्तु।

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर 'पवित्र' निकाल कर ऋष डुलिजी को छोड़कर अन्य सभी क्षेत्र पालों (डुलिजियों) में अन्न सलोना डालते हुए पढ़ें

ये विश्व भाविन भूता ये च तेषु अनुयायिन:, आहरन्तु बलिं तुष्टा: प्रयच्छन्तु शिवं मम। योऽस्मिन् निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपाल सकिंकर:, तस्मै निवेदयामि अद्य बलिं पानीय संयुतम्। क्षां क्षेत्राधिपतये बलिं नम:, रां राष्ट्राधिपतये बलिं नम:, सर्वे अभय वरप्रदा मह्यं पुष्टिं पुष्टिपतयो ददातु ।।

इस के बाद अपनी रीति के अनुसार ऋषि डुलिजि में वैष्णव भोजन ही डालें बायाँ यज्ञोपवीत रखकर अन्न कणों पर फूल चढ़ाते हुए पढ़ें

1. आयु: प्रजां धनं विद्यां स्वर्गमोक्षौ सुखानि च, प्रयच्छन्तु तथा राज्यं नृणां प्रीता: पितामहा:

2. एष पिण्डो मया दत्त: तव हस्ते जनार्दन, गयायां पितृरूपेण स्वयं एवोपगृहताम्

3. आत्मनश्चार्थ लाभाय क्षेमाय विजयाय च, शत्रूणां बुद्धिं नाशाय पितृन् उद्धरणाय च

4. पंचक्रोशं गयाक्षेत्रं क्रोशम् एकं गयाशिला, यत्र तत्र स्मरेत् नित्यं पितृणां दत्तम् अक्षयम्।

।। इति वैश्वदेव विधि ।।

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर देवताओं का विसर्जन दर्भ के दो तिनके चावल सहित हाथ में रखकर इस तरह करें

ॐ भूः पुरुषं विसर्जयामि नमः, ॐ भुवः पुरुषं विसर्जयामि नमः, स्वः पुरुषं विसर्जयामि नमः
ॐ तत् पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुणमासस्य कृष्णपक्षस्य द्वादश्यां वारान्वितायां भवस्य देवस्य उग्रस्य देवस्य भीमस्य देवस्य कालरात्र्यः तालरात्र्यः शिवरात्र्यः समस्त शिवरात्रि देवतानाम् पूजनमऽच्छिद्रं सम्पूर्णम् अस्तु एवम् अस्तु। *चावल सहित जल से तर्पण करते हुए पढ़ें*

एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकं नमः उदक तर्पण नमः आज्ञा मे दीयतां नाथ नैवेद्यस्य अस्य भक्षणे, शरीर यत्रा सिद्धयर्थं भगवन् क्षन्तुम् अर्हसि आपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्।
शब्द ब्रह्मये स्वच्छे देवि त्रिपुर सुन्दरि, यथा शक्ति जपं पूजां गृहाण परमेश्वरि। दर्शनात् पाप शमनी, जपात् मृत्यु विनाशिनी, पूजिता दुःख दौर्भाग्य हरा त्रिपुर सुन्दरी।

आहवानं नैव जानामि क्षम्यतां परमेश्वर।
प्रणाम करते हुए पढ़ें
उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा नमस्कारं करोमि नमः। *तर्पण करते हुए पढ़ें*
नमो ब्रह्मणे, नमो अस्त्वग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषधीभ्यः, नमो वाचे, नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते कृणोमि इति एतासाम् एव देवतानां सामीप्यं सारिष्टतां सायुज्यं सलोकतां आप्नोति य एवम् एव विद्वान् स्वाध्यायम् अधीते। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

शिव महिम्नस्तोत्रम्

काऽशुर अनुवाद सहित :-

आनन्द स्वामी प्राणनाथ भट्ट "गरीब" भाईजी

अगले पृष्ठ से

श्री पुष्पदन्त उवाज

१.

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशी स्तुतिरब्रह्मा दीनामपि
तदवसन्नात्वयि गिरः अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि
-गृणन ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः।

काऽशुर तरजमुँ

महिम्ना शिव स्तोत्र असि छु तारान
छु पुष्पय दन्त महिम्ना–पार भावान।
ब्रह्मा दिवता नुँ ज़ानान तुहुँज़ लीला
छु अपरम्पार आसान तुहन्द महिमा।
हेंक्या तेंलि अंख मनुष्य ग्वंन चाऽन्य भाऽविथ
ब्रहमा तान्य चाऽन्य लीला ह्योंक नुँ ज़ाऽनिथ।
यथा शक्ती मनुष्य दिवता छि साऽरी
करान चेंय शंकरस छिय आहुज़ाऽरी
यथा शक्ती छि ग्वन चाऽन्य व्यछुँनावान
ध्यखन–दाध्यन चुँ सान्यन मूल प्राटान।
बुँ पुष्पयदन्त छुस चाऽन्य ग्वन व्यचारान
बुँ छुस निष्पाप न्यरदोष अस्तोंती मान।।

अतीतः पन्थानं तवच महिमा वाड़मन
सयोरअततवृत्या यंचकितमभिधते श्रुतिरपि
स कस्य स्तोतव्य कतिविधगुणः कस्य विषय
पदे तर्वाचीने पतित न मनः कस्य न वचः।

काऽशुर तरजमुँ

बजर तय ब्ययि थज़र चान्यन ग्वनन क्या
हेंक्या मन ज़्यव व्यचाऽरिथ चाऽन्य ग्वन ज़ाँह
छि दोनुँवुँन्यि हुँज़ रूची सम्साऽर्य भूगन
यिमन भूगन मंजुँय आवुँर्य छि रोज़ान।
च्ये निश शंकर यि केंछा येंत्यि नयबर छुनुँ
ह्यकान सोंय शय ति ज़ाऽनिथ कांह अखा छुनुँ
छि चोंनुँवय वीद योंद ग्वन चाऽन्य ललुँवान
ग्वनन ललुँवान लोंलि छिनुँ तोति ज़ानान
लबान छिनुँ वीद अन्द या वोन्त चोनुय
बजर या च्योन थज़र कऽम्य अऽक्य सअ ज़ोनुय।।

३.

मधुस्फीता वाचः परमममृत निंमितवतस्तव
ब्राह्मणं कि वागपि सुरगुरोविर्समय पदम
मम त्वेतां वाणी गुणकथन पुण्येन भक्तः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन पुरमथना बुर्दिव्यवसिता

काऽशुर तरजमुँ

ब्रहस्पत पायि बऽड्य गोंरूँ दीवताहन,
यसुँन्ज़ वाऽणी अन्दर अमृत छु आसन।
अलंकारन ग्वनन हुन्द युस छु भगवान
ग्यवान ग्वन चाऽन्य तस गलिज़्यव छि सपदान।
बुँ छुस अधुना मनुष्य क्या पाय म्योनुय,
अवय रोंटमुत छुमय दामानुँ च्योनुय।
फिरान गोंणुँ माल चाऽन्यी पाप वसनम
छयेंट्योमुत मन अवय मां श्रूच सपुँदयम।।

४.

तवैर्श्वंय यतज्जगदुदय रक्षा प्रलयकृत
त्रऽयीवस्तु व्यस्तं तिसृषुगुणभिन्नासु तनुषु
अभव्यानामस्मिन वरद। रमणीयामरमणीं
विहन्तु व्याक्रोशीं विदधत दहैकेजड़धियः।

कोशुर तरजमुँ

चुँ छुख शंकर वरद म्योन टोठ भगवान
मऽनदिथ वेद अमृतुक चुँय सार न्येरान
करान छुख पाऽदुँ ज़गतस बेंयिचुँ पालान
करान अथ राऽछ्य रावठ पतुँ करान फान
छि चान्ये ऐश्वरी हुँन्ज़ थऽज़ यि लीला
छुना कांह अख ति ज़ानान गुपिथ खेला
शरीरस मँज़ खऽटिथ गोंण तारुँ आसान
तमोगोंन रज, सतोगोंण छालुँ मारान
ब्रह्मा विष्णो तुँ शिव किथुँ पाऽदुँ सपदान
अपार शक्ती यिमन चाऽन्य ज़न्म ध्यावान
कऽरिथ पाऽदा तुँ ठहराव पतुँ करान नाश
छु सोंन अख राज़ अथ मां ज़ांह ति गव फाश
छि केंह सम्साऽर्य मूर्ख तोंहि नुँ ज़ानान
बुछान बल ऐश्वरी चाऽन्य छिनुँ व्यचारान।।

५.

किमीहः किंकाय न खलु किमुपायस्त्रिमुभवंन
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इतिच
अतर्क्येश्वर्ये त्वरूयनवसर दुस्थो हत धियः
कुतर्कोयं कांश्चित्मुखरयति मोहाय जगतः।

कोशुर तरजमुँ

छि कैंह जाऽहिल नुँ यिम धाऽन्य तत्व ज़ानान
करान अपुँजुँय बहस पान सर्वुँ–रावान
दपान ब्रह्मा छु कुन्यि उपाय सूँत्यन
करान कुन्यि कारणय पाऽदा छु त्रिभुवन
छि ड़ऽलिमित्य कति तिमन रोज़ान पहचान
शिवय आगुर छु शक्ती हुन्द परम थान
अपार छय एश्वरी ज़गतस चलाथान
छि कुलहम सामग्री अम्यि शक्ति न्येरान।।

६.

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता
माधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति
अनीशो वा कुर्यात भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दा स्त्वां प्रत्यमखर संशेरत इमे

काऽशुर तरजमुँ

छि पृथ्वी सान सथ लूक पाऽदुँ गाऽमुँत्य
यिथय छा बारसस यिम लूक आमुँत्य
ति छा मुमकिन यिमन हुन्द ज़न्म दाता
यिमन पालान तुँ प्यत्रान आसि नुँ काछ़ा
युहुन्द कर्ता अजन्मा अमर भगवान
ववान यैलि ब्योल वोंत्पथ तैंलि छि सपदान
अगर कर्ता वराऽय सम्सार बनिहे
बनावनुक साज़ुँ सामान माँ सअ नन्यिहे
चुँ छुख भगवान धाऽन्यी साऽर सृष्टी
म्यें छम यछ़ पछ़ चुँ ईश्वर दिम म्यें भक्ती।

७.

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च
रुचीनां वैचित्र्यात-ऋजु कुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव

काऽशुर तरजमुँ

छि त्रनवय वीद शिवमत सांखि शास्त्र
छि ललवान यिम शिवस युस छुय धराधर
मगर हक पोंज़ छु यीय मंज़िल यिमन अख
रलान यैलि पाँछ़ वतुँ आऽखुँर गलान शक
पकान ब्योंन ब्योंन वतन ह्यथ राग चोनुय
यिमन भऽखुँत्यन युँ शेरान कर्मलोनुय
छि पछ़िवाऽल्य चान्यि वति ननुँवाऽरय लारान
छि यिथुँकऽन्य जोय सऽदुँरस नांद लायान
पकान ब्योंन ब्योंन वतव कोंछ बाल प्राटान
गछे छोंल होंल पकान सोंन वोंगुन चालान
छि यिम पतुँ वुछ तुँ सऽदुँरस सूँत्य मेलान
यिथय कऽन्य शिव भखुँत्य न्यरवान प्रावान।।

८.

मोक्ष; खटवाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयतव वरद तन्त्रोपकरणम
सुरास्तां तामृर्दि विदधति भवदभूप्रणिहितां
नहि स्वात्मारामं विषयमृतृष्णा भ्रमयति।

काऽशुर तरजमुँ

घरुँच्य घरुँव्येठ वरद भगवान यीय छय
खंऽडा अख चारपाय बुडुँ दांद वैयि तय
ब्रह्मा सुँन्ज़ कलुँ खोंपुँर सुँह मुँसलुँ फरसा
हऽटिस शाहमार वऽलिथुँय मऽलिथ भस्मा
कृपाये चानि वृद्धियन दीय भूगान
कमान छय बुमुँ असि क्युत लोलुँ वरदान
रिद्धि सैद्धी दिचुँथ कोंरथक चें एहसान
तवय दिवता छि सोंख आनन्द भूगान
विषय रूँपी मृगतृष्णा नुँ पोरान
यिमन हाऽसिल छु गोमुत चोन ब्रह्मज्ञान
यिमय समत्व बुद्धि यूगस छि वातान
तिमन छा जांह ति माया युनुँ चालान
सिमय अथ ब्रह्मस्वरूपस मंज़ छि वातान
यिमन अनुग्रह छु चोनुय सूँत्य रोज़ान।।

९.

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वा ध्रुमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये
समस्तेऽप्येतस्मिन पुरमथन तैर्विस्मितव
स्तुवञ्जिहेलमित्यां न खलु ननु धृष्टा मुखरता।

काऽशुर तरजमुँ

छि कैंह गादुल्य स्थिर सम्सार ज़ानान
छु दोंर सम्सार कैंह गादुँल्य नुँ मानान
स्थिर–अस्थिर छि दोंनुँवय कूँत्य ज़ानान
पिलान नज़रा तम्यी अनुँमान वखनान
मगर छुँनुँ काँह अखा स्यकुँ पाऽठ्य भावान
यि सम्सार चलुँवुनुय छा किनुँ छु पोशान

छि कम ज़्ञाऽनी तुँ गाटुँल्यि अति परेशान
तवय अथ ब्रह्मचि वुँनुँले मैंज़ छि रोज़ान
तवय छुस काऽर नोंमरिथ तोंहि बुँ पूज़ान
स्यठा छुस ड़ीठ छुख बकवास बोज़ान।।

१०.

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनिलस्कन्धवपुषः
ततो भक्ति श्रद्धाभरगुरु गृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति।

काऽशुर तरजमुँ

यें केलासस अन्दर शिवजी खऽटिथ पान
यि लीला ऐश्वरी ह्युँन्ज़ कांह नुँ ज़ानान
ब्रह्मा साक्षात वेंष्णो पानुँ भगवान
ग्ऽत्न कऽरय कऽरय ति छिनुँ चोन अन्त ज़ानान
छु वेंष्णो पानुँ पातालस यें छारान
ब्रह्मा जी वऽन्य दिवान आकाऽश्य फेरान
मगर छुनुँ कुन्यि यिमन पय तुहुन्द न्येरान
फुटिथ दिल छोरहक तेंलि होवथक पान
यिथय कऽन्य दिल फुटिथ युस तोंहि छु छारान
तिहुँन्ज़ सेवा तुँ भऽखुँती रथि चुँ खारान।।

११.

अयतनादापाद्य त्रिभुवनमवैयतिकर्म
दशास्यो यदबाहूनभूतं रथ कण्डूपरवशान
शिरःपद्मश्रेणीरचितच रणाम्भोरुहमले
स्थिरायास्त्वद् भक्तेस्त्रिपुरहरविस्फूर्जितमि दम्।

काऽशुर तरजमुँ

कोंरुथ त्रिपुँरास्यरस संहार शिवजी
ब्रन्दय जुव जान दितम पनुँन्यी न्य भऽखुँती
यें रावुन न्यथ प्रभातन ओस पूज़ान
चऽटिथ कलुँ भावुँ पम्पोश शेरि लागान
युछिथ भख्ती दिचुँथ तस नरयन शख़्ती
कऽरुँन भऽखुँती वुछिन्य मा पेंयस सख़्ती
यछान ओस दुशमनन प्यठ ज़ोर हावुन्य
तमाह ओसुस योंदस मैंज़ शोंथुँर पावुँन्य
यें ध्युतुँमुत पानुँ ओस तस शक्ति वरदान
तवय वेवायि शोंथुँरन ओस कतरान।।

१२.

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बालत्कैलासेऽपि त्वदधिवसतो विक्रमयतः
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद ध्रुवपचितो मुह्यतिखलः।

काऽशुर तरजमुँ

करिथ सेवा यें रावुन द्राव बलवान
बन्योव अख शानुँ बोंड़ बलवीर शांहान
अहंकारन दिचुँस ज़ीर पऽथुँरि सोवुन
ह्यचोन कैलास पर्वत च्योन नहवुन
यें खोंर न्यठुँ सूँत्य बस अख ज़ीर दिचुँथस
सु वुकरनुँ आव बोंन वोत पातालस
मगर दुशवार गोस तति तूरय रोज़ुन
अहंकारन दिचुँस ज़ीर वेंयि नवोजुन
अज्ञाऽनी यिम मूर्ख येंलि छोंर छि वातान
अहंकार तेंलि तिमन ठऽल्य ठऽल्य छु आवान।।

१३.

यद्-ऋद्धि सुत्रामणो वरद् परमोच्चैरपि
सतीमधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रि भुवनः
न-तच्चित्रं तस्मिन वरिवसितरि त्वच्च रणयो
र्नकस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनितः।

काऽशुर तरजमुँ

कोंरुथ भानास्वरस शंकर यें कल्याण
यें रऽटिनय पाद त्रिभवन गव सु ज़ोनान
छु हुर कूत तीज चान्यन चरणुँ कमलन
कोंरुथ अनुग्रह तऽमिस मन पोशि गमलन
अगर इन्द्राज़ पदवी गव सु आऽविथ
यि छनुँ हाऽराऽनिया गव मन्साऽविथ
वजह थोंद युथ छु चान्यन चरणुँ कमलन
खबर कूँच इन्द्र पदवी अति छि ड़ोलन
कऽरिथ सरखम छु युस चेंय पान पुशरान
सु छुय रंगुँ रंगुँ थज़र तय वजर प्रावान
रऽटिथ चाऽन्य पाद ब्रह्मरूप तस बनान पान
सु अविनाऽशी शिवस सूँत्य लीन सपदान।।

१४.

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा
विधेयस्याऽसीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः

स कल्माषः कंठे तव न कुरुते नश्रियमहो
विकारोपि श्लाध्यो भुवनभय भङ्गव्यसनिनः

काऽशुर तरजमुँ

त्रिलोचन म्योन शंकर पानुँ भगवान
चुँ रोजुम राऽज्य वन्दयना टाऽठ्य पनुँन्य प्राण
समन्दर येंम्यि विज़्यन आऽस्य दीव मंदान
मऽन्दिथ अमृत तुँ ज़ाहरुँय अति छु न्येरान
मगर राक्षस तुँ दीवता आयि तम्बलान
यि ज़ाहरुँय गोंछ़ नुँ सम्सारस करून फान
चें शंकर येंल्यि वुछिथ यिम थाँर्थुरेमुँत्य
चें कऽरुँथक वऽड़ दया आऽस्य काऽर नोंमरिथ
वुछिथ महाकाल पानय ब्रोंठुँ द्राहस
चें हटि वोंलुथ ज़हर नन्यिवानुँ चोथस
यि ज़ाहरूँय गव बऽनिथ कंठुक चें श्रंगार
चें प्योंय नाव नीलुँकंठ फोंल्य लोलुँ गुलज़ार
भयस मख दिथ कोंरूथ ना कालुँसुँय ग्रास
ज़हर अम्यि चानि हटिकुय गवहरे खास
मोंलुल हटि नीलमणि ज़ोतान तुँ चमकान
प्रकाशिक्य सिंयिज़न छिय वोंदय सपदान।।

१५.

अरिद्धार्थ नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः
स पश्यन्नीश! त्वामितरसुसाधारणमभूत
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न-हिविशिपु पथ्यः परिभवः।

काऽशुर तरजमुँ

योंथ्या कोँह कामदीवा तीर अन्दाज़
गछ़ान खाऽली तसुन्द वार छुनुँ यि क्या राज़
मनुष्य या दीवता या दूँत्य साऽरी
दपान आऽस्य कामदीव छुय लामिसाऽली
यिमव रूँपीठ वाणव त्रिभुवनय वोंल
सु दोंद चऽखि चानि शंकर बस अऽती गोंल
त्रेंयिम येंलि न्यत्र मुचरुथ नार त्रोवुथ
भस्म गव कामदीव मेंचि मंज़ चें सोवुथ
कऽरिथ वश इन्द्रियन छुखना जितेन्द्रीय
चें आऽधीन कायनाथ पूर्ण चुँ यूज़ी
अखा युस ब्रह्मस्वरूपस करि अनादर
गऽछ़िथ नाश कामदीवस द्रास कति वर।।

१६.

महीपादाघाताद व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद भुजपधिरुऽणग्रहगणम
मुहुर्धौर्दौस्थ्यं यात्यनि भृतजटाताड़ित तटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता

काऽशुर तरजमुँ

रछान सम्सार मारान लोलुँ ड़ालय
तमाम राख्यस यलान छुख मोंहनि ज़ालय
गऽछ़िथ मस ड्रालुँ कम कम तिम छि मारान
यि शक्ती थाऽन्य तिमुँनुँय नचुँनावान
असान गिंदान नचान आनन्द छि भूगान
इशारय चानिवुँय छुय जऽशिनुँ सपदान
करान तुलेँ त्राव खोरन येंलि नचान छुख
गछ़ान छीय चाख पृथ्वी त्युथ गोंवान छुख
अगर नय चालि बार पाताल चलान छय
तऽमिस तिछ़ि माज्यि पृथ्वी ताम लगान भय
चुँ वाहरान नरि तुँ वेंष्णो ताम कांऽपान
यसुँन्ज़ जाय आसमानस छोंर छि आसान
गिंदान टिकुँ तार तऽमिसुँज़ि वसन जाये
नटान तारा मंण्ड़ल क्या तिहुन्द पाये
गछ़ान छुय चूरुँ चूरय तारा मण्ड़लसं
दिवान हुँकुँ लथ चुँ ज़न, छुख नारुँ कोंण्ड़लस
जटायन ज़ेछिनुँय येंलि ग्रायि मारान
चुँ ज़न छुख दीव लूकन फर्मुँचि वालान
जटायन हुन्द यि गोंव बार तिम नुँ व्यत्रान
गंगा न्येरान जटायय असि छि सगवान
बजर शंकर थज़र च्योन कोँह नुँ ज़ानान
गरीबस कर दया छुखना दयावान।

१७.

वियदव्यापी तारागुणगुणितफेनोद्गमरुचि
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमित्यनेने
नैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः।

काऽशुर तरजमुँ

छु कुल आकाश गाशुक तीज़ धारान
प्रकाश आकाश गंगाये वुछ छु न्येरान
छि सऽदुँरस माऽरिमंऽज्य अथ लाल तांवान
तुँ ग्रंऽन्ज़ रोंस गाशि तारक आयि ज़ोतान

मगर आकश गंगा गाशि तारख
वुछिथ चाऽन्यी जटा मन्द–छीय यिवान छख
जटायन मँज़ छि पाँ फेंरि सिर्यि ताबान
छि कम कम सिर्यि सरखम काऽर नोंमरान
छि सूक्षम कतरुँ चान्ये केशि न्येरान
यिमन कतरन समन्दर छुख बनावान
बजर फैलाव थज़र युस राज़ि पिन्हा
गरीबन साम दिथ कऽर ज़ान पाऽदा।।

१८.

रथा क्षोणी यन्ता शतधृततिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणि शर इति
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिविधेयैः
क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्रा प्रभुधियः।

काऽशुर तरजमुँ

छु साँगन चान्यनुँय येंति कौंह नुँ
तुलन आडम्बरा त्रपुरा बुँ गालन
ब्रह्मा सारुँथ्य तुँ पृथ्वी रथ बनाऽविथ
कमाना बस हिमालय सूत्य थाऽविथ
बनाऽविथ पऽहियि चन्द्रम' सिर्यि भगवान
तुँ वेंष्णो रूप भगवान गव बऽनिथ भान
यि त्रिपुरा गालुनुय ओस घासुँ कृऽट ज़न
अजब लीला कोंरथु मैदान्यि जंग ज़न
चुँ अऽछ टिटुँवारि कुलहम नाश करखना
यि लीला ज़ानि कुस अनज़ाऽन्य छीयना
गिन्दन योंद शक्तिमान ह्याथ सूँत्य दासन
मगर बलवान स्वाऽमीय आसन।।

१९.

हरिस्ते साहस्त्रं कमलबलिमाधायपदयो
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर् जागर्तिजगताम।

काऽशुर तरजमुँ

वनान त्रिपुरान्तकी शंकर बजर ज़ान
खोंरन चान्यन छु वेंष्णो पानुँ पूज़ान
सु नेंति पम्पोश सास छुय शेरि लागान
सदा गोंरुँ रूँपुँसुँय मँज़ छुय चेंय ड़ेंशान
अकुय पम्पोश तस सासस गोंमुत कम
कोंडुन न्यत्रुँय च्यें लोगुन शेरि यकदम
वुछिथ अम्यसुँन्ज़ यि भऽरुँव्तीय गोंय प्रसन्न मन
प्रसन्न सपुँदिथ दितुथ ना तस सोंर्दषन
विष्ण जियनुय सोंर्दशन ज़गि छु पालान
गरीबस पाप तय संताप गालान।।

२०.

क्रतो सुप्ते जाग्रत्वमसि फलयोगेकृतुमता
क्व कर्म प्रध्वसंत फलति पुरुषारा-धनमृते
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदान प्रतिभुवं
श्रुतौश्रद्धा बद्धया दृढ़परिकरः कर्मसु-जनः।

काऽशुर तरजमुँ

ज़गत सोरुय च्यें अवुँ किन्य रोज़ि पूज़ान
करान यज्ञ हवन छुख रुँत्य फल चुँ सोज़ान
छि यछ पछ मनुष्यनुँय प्यठ दीवताहन
मगर चुँय छुख यिमन येंत्यि तारुँ तारन
चुँ छुख मूजूद योंद यज्ञ कर्म मोंकलन
करव नय अस्तोंतीय चाऽन्य तेंलि कर्म प्यन
कर्म मानव अगर योंद नष्ट गाऽमुँत्य
करनवाऽल्य कर्म छीयनो शरण आमुँत्य
चुँ फल दिनुँवोल पानय अऽस्य छि येंत्यि कम
गरीब छुय चेंय नमान चेंय कुन छु सरखम।।

२१.

क्रियादक्षा दक्षः कृतुपतिरधीशस्तनुभृतांमृषीणामार्त्विज्यं
शरणद सदस्याः सुरगणा
क्रतभ्रन्तस्त्वतः कृतफलविधानव्यसनिनौ
धुवंकृर्तुः श्रद्धाविधुरमाभिचाराय हि मखाः।

काऽशुर तरजमुँ

शरण यिनुवालिनुँय छुख सायि थावान
तिमन छुख ना रछान दिल फाँफॅलावान
प्रजापत यज्ञकर्ता कूत ज्ञाऽनी
छि ब्रह्मा दीवता अति रोज़ाऽन्यी
ऋषी, मुनी, यूगी त्रिकालदर्षी
सभाये अथ अन्दर यिछुँ बजि छि हऽस्ती
यज्ञस गयि दुँह छेंतय हाऽरान गयि लूक
ब्रह्मा दिवता तुँ मुन्यिवर करुँन्यि लऽग्य शूक
यज्ञस डुबुँ ड़ास कोंर ना चाऽन्य क्रूधन
अनादर येंलि च्यें कोंरनय प्रज़ापत्यन
श्रद्धा राऽवुँस तुँ यिरुँवुँन्य नाव गऽयि तस
यि मा ज़ोनुन ज़ि फलदिनुँ वोल चुँय बस
गरीब दस्त बस्त शंकर नाव सुमरान
यि केंछा रुत करव रुँत्य फल छु सोज़ान।।

२२.

प्रजानाथं नाथ! प्रसभमभिकं स्वा दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषमृष्यस्य वपुषा
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः।

काऽशुर तरजमुँ

ब्रह्मा जी सृष्टिकर्ता कामनुँय वोल
दोंपुन करुँ कोरि सूँत्यन भूग सुय ड़ोल
वुछिथ यिछ़ वासना तमि कोरि त्राऽव दव
सु काऽमी मोल कोरे पतुँ पतय गव
बनाऽवुँन रूस्य कऽट कऽडुँनय कुनीय शीह
वन्योव हँगुल सु ब्रह्मा तऽस्य पतय छुय
वुछिथ हाला च्यें ब्रह्मा सुन्द यि शंकर
तुलुथ धनुषा ब्रह्मस चायि थर थर
चज्योव स्वर्गस मगर तीस पतुँ छु दोरान
अऽदुँर ज़ऽट गोस अगादे पोंत नुँ छोरान
गरीब छुय सूरमऽत्यसुँय नूर ड़ेशान
न पूज़न वुठ छि तिम हर सातुँ फेशान।।

२३.

स्वलावण्याशंसाधृत धनुषमनहाय तृणवत
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि
यदि स्त्रैण देवी यमनिरत देहार्ध घटना
दवैति त्वामद्धा वत वरद मुग्धा युवतयः।

काऽशुर तरजमुँ

ब्रूंज़िस मैंज़ कामदीव छ्युव धनुषधाऽरी
भस्म कऽरुँथस जवाऽनी पूरुँ साऽरुय
कोरुथ अमि मैंज़ च्यें पाऽदा ओंड़ शरीरा
यि पानस मैंज च्यें वन धारण कोरुथना
छि माता पार्वती तनुँ प्यठुँ यि सोंचान
चुँ सोंन्दर नांऽरियन देवान सपदान
सऽती माजे ति ज़ाऽन्यनो चाऽन्य लीला
तवय शंकर च्ये यिछ़ हाछ़ लाऽजिनयना
यि बेजा दूष शुम्या जाँज च्ये खारुन
फकत अर्धाङ्गनी नाऽरी चुँ ज़ानुन
अगर तमि माजि शख्ती ध्युत च्यें इलज़ाम
पेंयी मा फी च्ये काँह छुख पोंख्तुँ नय खाम।।

२४.

शमशानेष्वाक्रीड़ा स्मरहर! पिशाचा संहचरा!
चिताभस्माऽलेपः सृगपिनृकरोटी परिकरः
अमङ्गल्यं शीलं तय भवतु नामैवमखिलं
तथाऽपि स्मृतृणां वरद! परमं मंगलंअसि

काऽशुर तरजमुँ

कोरुँथ ना सूर कामस कामदीवस
अजब चाऽन्य रंग वुछिथ फऽट तूँर ज़गतस
च्यें वुछिंतुँय लरज़ नफरत पाऽदुँ सपदान
गिन्दन मैदान मिसाले छुय च्यें शुमशान
गिन्दन बाऽज्य भूत तय बेंयि प्रेंथ आसान
श्रंगार शमशान सूरुँक नूर त्रावान
मनुष्य कलुँ मालुँ छुखना नाऽल्य त्रावान
धर्म तय शास्त्र छुँनुँ श्रूच़ मानान
मगर साधक छि यिम चाऽन्य माल सुमरान
तिमन छुखना रछान सोंखुँ सान थावान।।

२५.

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायाऽत्तमरूतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्संगितदृशः
यदालोक्याऽऽल्हादं ह्रद इव निमज्जयामृतमये
दधत्यन्तस्तत्वं मिमिषि यमिनस्तत्किल भवान्!

काऽशुर तरजमुँ

करान यूगी छि प्राणायाम च्योनुय
रऽटिथ मन आत्मा वन्यि प्रज़लवोनुय
मुकामस वाऽतिथुँय छिनुँ तोति ज़ानान
करुँन्य व्याख्या गोंणन दोलभ छु भासान
वुछिथ साकार रूप आनन्द छु मेलान
कऽरिथ दर्शुन छि यूगी सोंत छावान
हमान छ्यख त्रेश न्यत्रन ज्यूत्य न्येरान
छि ज़न अमृत सरस मैंज़ पान नायान
गरीब अशिवान्यि नालस मोंख्तुँ लागान
छु शंकर स्वाऽमियस जयकार सोज़ान।।

२६.

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं
हुतवहस्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मात्वमितिच
परिछिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरं,
न विदमस्तत्तत्वं वियमिह तु यत्वं न भवसि।

काऽशुर तरजमुँ

सिर्यि चन्द्रम हवा नार पोन्य आकाश
छि पृथ्वी आत्मा बस च्योन बोंड़ गाश
भऽखुॅत्य ज्ञाऽनी फिरन ना चाऽन्य गोंनुॅमाल
ह्यकनमा भाऽविथुॅय सोन अऽन्दुॅरिमुॅय हाल
प्यवान वऽस्य गाटुजार तय अकुॅल पामाल
गोंनन हुन्द सोंन सऽदुॅर ताबान छीय लाल
स्व छ्यनुॅ काँह अख रछ़ा योंसुॅ छ्यनुॅ च्यें मँज़ व्याप्त
गरीबस अर्धरातन गाशि प्रभात।।

२७.

त्रंयी तिस्त्रो वृतिस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा
नकारा धैर्वणैस्त्रिभरभिद धतीर्ण विकृतिः
तुरीयं ते धाम ध्वनि भिअवरून्धानमणुभिः
समस्तंव्यस्तंत्वांशरणद गुणात्वोमिति पदम!
काऽशुर तरजमुॅ
शरण दिनुॅवालि शंकर छुख गंगाधर
अवल ओंमकार वीदन मँज़ चराचर
यज्जर या साम या ऋघ वेद आसन
प्रकाश ह्यू चान्य रूपक जाँह नुॅ त्रावन
चुॅ त्रनुॅवऽन्य हालुॅतन मँज़ शोलुॅ मारान
स्वप्न, ज़ाग्रथ सुषप्ती मँज़ चुॅ रोज़ान
चुॅ पातालस तुॅ स्वर्गस मुत्युलूकस
स्वरूप च्योनुय करान ठहराव तत्यन बस
त्रलूक धारान ब्रह्मा वेंष्णो महेश्वर
रटान रास त्रिभुवनुॅच्य त्रनुॅवय छि अमर
छु चूरिम च्योन परमय धाम आसान
तुरीधाम यथ छि ज्ञाऽनी लूक मानान
छि अथ चेतन स्वरूपस भरुॅत्य सुमराण
ब्रह्मा वेंष्णो महेश गोंण व्यचारान।।

२८.

भवः शर्वा रूद्रः पशुपतिरथोग्र सहमहांस्तथा
भीमेशानाविति तदाभिधाना ष्टकमिदम
अमुष्मिन प्रत्येकं प्रविचरिति देवा श्रुतिरपि
प्रियायस्मैधामने प्राणिहितनमस्योऽस्मिभवते!
काऽशुर तरजमुॅ
करान प्रथ रंगुॅ छुख शोंभ सृष्टिकर्ता
चुॅ देवादिदेव रुदन हुन्द विधाता
करान योंद क्रूध जगतस तोति पालान
चुॅ दीवन मँज़ महादीव छुय परमथान
चुॅ छुख गाहे भयानक रूप धारान
चुॅ छुख ना शानुॅ बोंड़ प्योंय नाव ईशान
चुॅ छुख रंगुॅ रंगुॅ कम कम रूप धारान
गरीब छुस भावुॅ ड़लुॅ पम्पोश सोज़ान।।

२९.

वपुषप्रार्दुभावाद् अनुमितिम इदं जन्मनि पुरा
पुरारे नैवाहम कौचिद्पि भवन्तम प्रन्तिवान
न, मन, मुक्ता समप्रत्यि प्यनुॅ अहमगरेप्यन्तिमान
महीश क्षन्तव्यम तत इदं अपराधं दूयंपि!
काऽशुर तरजमुॅ
म्यें शिवजी पऽतिम जन्मय आसहन पाप
अगर नय आसहन तेंलि मा वलन शाप
असीय योंद आसुॅहन पोंन्य कर्म कऽरिमित्य
मनुष्य तेंलि आसहन दीवलूक खऽत्यमुॅत्य
म्यें काँह नतुॅ काँह अतुर छुम पानुॅ कोंरमुत
तवय यथ मनुष्यलूकस मँज़ फस्योमुत
मनुष्य यूनी युन गव डंड़ भूगुन
कर्म छुम खोंट पऽतिम छुम अज़ म्यें पूरुन
खता कुस पऽतिमि ज़न्मय खोंत म्यों भगवान
बुॅ मा पाद चाऽन्य ओसुस शेरि लागान
नमस्कार छुय करान अकि लटि ति युस जन
सु छुय पतुॅ जन्मुॅ–जन्मन मूक्ष सपदन
करुॅन्य चाऽन्य अस्तोंती छुनुॅ ज़न्म धारूण
लऽभिथ मोंख्तीय नमस्कार पतुॅ नुॅ सोजुन
पुर्वु ज़न्मय नमस्कार छुम नुॅ कोंरमुत
लऽभिथ मोंख्तीय यितुॅ गछ़ आंसि चोंलमुत
स्यठा दुर्लभ करून तेंलि म्योन नमस्कार
चुॅ बख्शुम यिम जुॅ पाप छुख बखशनहार।।

३०.

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमः
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहरं। महिष्ठाय च नमः
नमोवर्षिष्ठाय त्रिनयन। यविष्ठाय च नमः
नमः र्सवस्मै ते तत्-इदम्-इति शर्वाय च नमः।
काऽशुर तरजमुॅ
च्यें शिवजी कामदीवस कोंरूथ समहार
गहे नखुॅ नखुॅ गहे दूर म्योन गमखार

गहे कोता लकुट प्यून्त रूप धारान
गहे बाऽरीक भयानक रूप बनावान
चुं छुख कुस कौंह ति छुय नो प्रज़ुंनावान
बुं चान्यन रूँपनुंय जयकार सोज़ान।।

३१.

वहलरजसे विशवोत्पती भवाय नमो नमः
प्रवलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः
जनसुखकृते सत्वोद्रिकतो मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रेगुण्ये शिवाय नमो नमः।
काऽशुर तरजमुं

रजूग्वनुं सान भव रूप तेंलि चुं धाराण
चुं यैंलि यैंलि आसहम सम्सार बनावान
सतोग्वन रूप सृष्टी छुख चुं पालान
तमोग्वन रूप प्रलयस प्यठ चुं धारान
त्रगोंन त्राऽविथ दिवान छुख पानुं मोंख्ती
तुं धारान शान्त न्यरगोंण रूप शिवजी
गरीब चाऽनिस प्रकाशस शिव स्वरूपस
करान छुय ना नमस्कार सिर्यि तीज़स।।

३२.

कृशहरिणति चेतः कलेशवश्यं क्वचेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लधिंनी शश्वत-ऋद्धिः
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्वरद
चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम
काऽशुर तरजमुं

थज़र तय बेंयि बज्जर च्योन औंऽतुंरोंस्तुय
छु महिमा च्योन पऽज्य पाऽठ्य वोन्तुं रोंस्तुय
भऽरिथ राग दुयतुं पापव सूंत्य छुम मन
योंलुस मायायि ज़ालन छुख चुं वोज़न
लभुन अति तार छुम दुष्वार बासान
छि इन्द्रे वश करान मन कूरुंनावान
यि छुम हाऽबथ बुं कर्युं ह्यकुं गोंण व्यछाऽरिथ
सिंफ चाऽन्य भऽखुंतिया मेंति हेंकि वचाऽविथ
अमी भऽखुंती दिर्युम ह्यमत तुं विशवास
बुं वाऽणी रूँप पोश चेंय लागने आस
म्यें मा छम सामर्थ गोंण चाऽन्य ग्यवुहा
म्य भऽखुंती मार्वुं पोश खऽत्य यिम रटखना।।

३३.

श्री पुष्पदन्तमुखपंकजर्निगतेन
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः
काऽशुर तरजमुं

वयान कोंर पुष्पदन्तन च्योन महिमा
स्तोत्र गालि पापन कड़ि सु तमना
स्तोत्र शिवजियसुंय खोंश करान छुय
परन वाल्यन यि जल जल वर दिवान छुय
करी युस पाठ कण्ठस राग अमिकुय
शरण युस यिय तऽमिस टोठान शिवजी
गरीब रोपोश तस पम्पोश लागान
छि मार्वुंच ही फोंलान मन वाऽर मुशकान।।

रूचिरमलधुवृती स्तोत्रमेतच्चकार।
काऽशुर तरजमुं

महिम्ना युछ स्तोत्र माऽरिमोन्द जान
गोंणन मेंज़ युस सरस छुय शोंलुं मारान
मुनी यूगी तुं राख्यस अथ छि पूज़ान
शिवस चन्द्रम ड्यकस प्यठ क्या छु लूभान
गोंणन चान्यन हुंन्ज़ुंय शोंहरथ छि तरफन
चुं छुख थदि पायि यूगी सूंत्य न्यरग्वन
भऽखुंत्य चाऽन्य भाऽव्य ग्वन अऽस्य पुष्पंदन्तन
तुं व्यछुंनाऽविन स्वन्दर पाऽठ्य मेंज़ श्लूकन।।

३७.

अहरहरनवद्यं धूर्जटः स्तोत्रमंतत
पठति परशक्त्या शुद्धचितः पुमान्यः
स भवति शिवलोकेरुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीतिमांश्च
काऽशुर तरजमुं

युसुय नित्य न्येमुं परि चान्यन श्लूकन
पऽरिथ शोंद मन शिवलूकस छि वातन
सु छुय इन्द्राजुं ह्युव बोंड़ राज प्रावान
सु राज़ा ताजुं ज़न गुलज़ार छावन
सु छुय भूगान कम कम सोंख तुं आनन्द
लबान हुर आय धन संतान अन्दुं वन्द।।

३८.

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः
अघोरान्नापरो मंत्रो नास्ति तत्वं गुरोः नमः।

काऽशुर तरजमुं

योंत्यम बस दीपताहन मैंज़ छु शेकर
तवय अऽस्यसुन्द महिम्नापार जल पर
करान सुस लोलुं माथे याऽन्य पूजा
तऽमिस छुनुं जाँह ति पूज़ुन काह ति दिवता
अघूर अख ब्योन मन्त्र लाजवाऽबी
ग्यरन हुन्द छुख गोंरु ग्युंय नामिसऽली।।

३६.

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं योगादिका क्रियाः
महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम।

काऽशुर तरजमुं

करन तप जप तुं बेयि दिन दान दख्यिना
हवन यज्ञ ज्ञान दिन तीर्थन गछनना
यि केंछा फल यिमन म्येलान अम्युक छुय
शुराऽहिम हिस्सी महिम्ना परकुय छुय
परी युस काँह महिम्नापार हुर्युं सान
तऽमिस तप जप यज्ञ करुंन्यी नुं आसान
तऽमिस रिद्धी तुं स्यद्धी आयितन छय
करान युस शीवुं शीवय शीवुंसुंय जय।।

४०.

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शशिधर वर मोलेर्देवस्य दासः
स खलु निज महिम्नो भ्रष्ट एवास्यरोषात
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः।

काऽशुर तरजमुं

यि आचाऽर्य पुष्पदन्त ओस पत्यिमि जन्मय
गंधर्व कोसम दर्शन नावुंकुय छय।
दपान करताम बूज़ अऽम्य चूरि चूरे
करान आनन्द सम्वाद शक्ति–शिवे।
वुछुन याम शिवजियन ध्युत शाप अंऽम्यिस्ऽय
चुं बस योंन दीवुंलूकय बन चुं मनुश्य।
अलोकिक युथ महिम्नापार ल्यूखुन
दितुस युथ शिवजियन फल मोंख्युं सौंऽपुन।।

४१.

सुखरमुनिपूज्य स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम।

काऽशुर तरजमुं

महिम्ना पारसुंय याऽनिस छि पूज़ान
ऋषी मुनी तुं दिवता लोंलि छि ललवान
सोन्दर तय लूभुंवुन्य बस याऽन्य लीला
लबान मोंखती तुं प्रावान स्वर्गधारा
अख्या युस वश कऽरिथ यऽन्द्रेय तुं ब्येयि मन
गंऽड़िथ गुल्य ब्योन महिमा रोज़ि सुमरंण
यिवान नखुं च्येय निशन शिव रूप प्रावान
तऽमिस हयेरि स्वर्गुं दिवता पोष त्रावन।

४२.

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुष्पगन्धर्व-भाषितम
अनौपम्य मनोहरि पुण्यमीश्वरवणर्म्।

काऽशुर तरजमुं

छू हर रंग पूरुं महिम्नापार ब्योनुय
कमावान पोंन्य करान कल्याण सोनुय
छु नो ब्येयि काँह ति ग्रंथा अथ बराबर
तवय शिव कोंड़ बनावुन पनुन मन सर।।

४३.

तव तत्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वरा
यादृशोसि महादेव तादृशाय नमो नमः

काऽशुर तरजमुं

मशहूर छुख ब्योन महिमा काँह नुं ज़ानान
छि कम यूझी तुं ज्ञाऽनी ओंत नुं वातान
चुं यिथुं कऽन्य येंति ति आसख पानुं रोज़ान
बुं छुस ड़ाऽल्य भावुं पोशिय तूऽरिय सोज़ान

४४.

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेत सदा
सर्वपाप विनिर्मुक्तः शिवलोकं स गच्छति

काऽशुर तरजमुं

महिम्नापार ब्योनुय युस व्यचारान
परान नित्य नेमुं बारम्बार सुमरान
सु छुय सम्साऽरिय पापव निश गछान नूर
सु रोज़ान दूषि रोंस पश्पान छुस नूर
लबान मोंकुंजार शिव लूकस छु वातान
बऽनिथ शिवतन ***गरीब*** लूभस छु ज़ालान।

धर्म शास्त्र के विषय में आवश्यक जानकारी

१. पंचक - धनिष्ट नक्षत्र के उत्तरार्ध से रेवती नक्षत्र के अन्त तक के पांच नक्षत्रों (धनिष्ट, शतभिशक, पूभाद्रपद, उभाद्रपद, रेवती) वाली तिथियाँ पंचक कहलाता है। पंचक में दाहसंस्कार, छलुन, दक्षिण दिशा की ओर यात्रा पर जाना, मिट्टी, तेल, मिट्टी के बरतन, लकडी काटनी अथवा घर लानी, मसमुचरून इत्यादि निषेध हैं। शेष सभी कामों के लिये पंचक शुभ माना जाता है। विवाह, यज्ञोपवीत जैसे शुभ कार्य पंचक में किये जा सकते है, एसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है।

२. करपंचक - हस्त, चित्र, स्वात, विशाख, अनुराधा यह पांच नक्षत्र वाली तिथियाँ करपंचक कहलाते हैं। यह पांच नक्षत्र प्रायः हर काम के लिए उत्तम माने जाते है।

३. त्र्यहः - जब किसी तिथि का क्षय (रावन) होता है तो उसको त्र्यहः कहते हैं। त्र्यहः अर्थात् तिथि के दिन यदि आपका या घर के किसी सदस्य का जन्म दिन हो तो जन्मदिन पहली तिथि को ही मनाए, मान लो सप्तमी तिथि का क्षय होता है और आपका जन्मदिन सप्तमी को आता है तो इस स्थिति में आपको जन्म दिन षष्ठी को मानाना चाहिए (अर्थात् एक दिन पूर्व) । व्रत तथा श्राद्ध आदि भी पहली तिथि पर करने चाहिये।

४. त्रिस्पृक - जिस दिन अधिक तिथि हो अर्थात् एक ही तिथि दो दिन तक हों तो त्रिस्पृक या अधिक दिन कहलाता

है। अगर इस दिन अपके घर के किसी सदस्य का जन्मदिन हो तो वह दूसरी तिथि को मनाए किन्तु श्राद्ध अथवा पितृकार्य पहली तिथि को सम्पन्न करना चाहिए।

५. अशौच - अशौच दो प्रकार का होता है- सूतक तथा मृतक। जन्म का अशौच सूतक कहलाता है, अपने परिवार में नव शिशु के जन्म होने पर प्राय: तीन दिन का अशौच रहता है। तथा सगोत्र में किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर दस रात्रि का अशौच माना गया है।

यदि किसी अविवाहित कन्या की मृत्यु हो तो अशौच तीन दिन का होता है तथा विवाहित लडकी को माता-पिता के मृत्यु का संदेश मिलने के दिन से ही तीन दिन का अशौच होता है।

दो अशौच एक साथ होने का निर्णय - अशौच (मृतक) के दिनों में ही यदि दूसरा मरने का अशौच पडे अथवा जन्म के अशौच में ही दूसरे के जन्म का अशौच पडे तो पहले अशौच के समाप्त होने पर ही शुद्धि होती है। ऐसे ही यदि मरने के अशौच पर जन्म का अशौच पडे तो ऐसी स्थिति में मरने का अशौच समाप्त होने पर दोनों अशौचों की शुद्धि होती है। यदि जन्म के अशौच पर मरने का अशौच पडे, ऐसी स्थिति में मरने का अशौच समाप्त होने पर जन्म का अशौच भी समाप्त हो जाता है। यदि दसवें दिन पर फिर से मरने का अशौच पडे तो ऐसी स्थिति में पहला अशौच समप्त होने के पश्चात भी दो दिन के लिये दूसरा अशौच रहता है। यदि ग्यारवें दिन को सूर्योदय से पहले मरने का अशौच फिर से पडे तो दूसरा अशौच तीन दिन के लिये रहता है। माता यदि पहले अन्तर्ध्यान हुई हो तथा उन्ही अशौच के दिनों में पिता की

मृत्यु हो जाये तो पिता के अशौच की समाप्ति पर ही दोनों अशौचों की शुद्धि होती है। इसी प्रकार यदि पिता की मृत्यु पहले हो जाए और उसके अशौच में ही माता की मृत्यु हो जाये तो ऐसी स्थिति में पिता का अशौच समाप्त होने पर भी माता का अशौच दो दिन अधिक रहता है।

जननाशौच - मरणाशौच

अपने परिवार में नव शिशु के जन्म होने पर प्रायः तीन दिन तथा सहगोत्र में किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर दस रात्रि का अशौच माना गया है। अशौचावस्था में देवकार्य पितृकार्य, वदोध्ययन (वेदों का अध्यन) तथा गुरुजनों का अभिवादन आदि करना निषेध माना गया है। यहां तक कि देव मन्दिर में प्रवेश तथा पूजन आदि करना भी वर्जित है। स्त्रियों के लिये प्रायः मास में एकबार विशेष अवस्था आती है जिसमें वह रजस्वला हो जाती है। इसमें तीन रात्रि तक उनकी आशौचावस्था रहती है।

६. अस्थि संचय - दसवें दिन तक अस्थि संचय आवश्यकरना चाहिए इसके लिये, पंचक, त्र्यहः, त्रिस्पृक, मंगल, गुरु, शनि तथा रविवार निषेध है।

७. अस्थि विसर्जन - मृत्यु के पश्चात दस दिन के अनन्तर ही गंगा में अस्थियां प्रवाहित करें यदि ऐसा सम्भव न हो तो एक वर्ष तक किसी भी शुभ दिन पर प्रवाहित करें। दान्त निकलने से पहले जिस बच्चे की मृत्यु हो उसको पृथ्वी पर गड्ढा खोद कर पृथ्वी में अर्पण करें। यदि किसी बच्चे का दान्त निकलने के बाद देहान्त हो जाए तो उसका दाह संस्कार

करें किन्तु उसका दसवाँ, ग्यारहवाँ, तथा बारहवाँ दिन न करें।

८. छलुन - दसवें दिन तक छलुन आवश्यक होता है, लडकियों को दसवें दिन तक छलुन का कार्य अवश्य करना चाहिये अन्यथा वे ग्यारहवें तथा बारहवें दिन की 'क्रिया' में सम्मिलित नहीं हो सकती हैं। छलुन के लिये शुभवार का होना आवश्यक है। शुभवार सोमवार, बुधवार, शुक्रवार है। परन्तु गुरुवार छलुन कार्य के लिये निषेध है। इसी प्रकार छलुन का कार्य पंचक, त्र्यहः, त्रिस्पृक में करना निषेध है।

९. श्राद्ध देखने की विधि - जिस दिन तिथि के साथ 'प्र' लिखा हो उस दिन का श्राद्ध अपने दिन ही आता है, यदि तिथि के साथ 'दि' लिखा हो तो उस दिन का श्राद्ध पहले ही दिन आता है उदाहरण के लिए मानलो यदि अष्टमी तिथि से त्रयोदशी तिथि तक सब तिथियों के साथ 'प्र' लिखा हो और चतुर्दशी तिथि के साथ 'दि' लिखा हो तो चतुर्दशी का श्राद्ध अपने ही दिन आयेगा।

१०. कुम्भ तर्पण विधि - बायां यज्ञोपवीत रखकर थाली में एक छोटा सा ताम्बे का लोटा (कुम्भ घडवह) खाली रखें बायें हाथ से पानी का लोटा लेकर दायें हाथ पर पानी की धारा आहिस्ता- आहिस्ता डालें ताकि पानी की धारा दायें अंगूठे की तरफ से ताम्बे की घडवी में पडे तथा इस मन्त्र का उच्चारण करें

कुम्भों वनिष्ठो जनिता शचभि यर्स्मिन् अग्रे, योन्यां गर्भे अन्तः प्लाशभिर्व्यक्ता शतधारा उत्सोदुहेन कुम्भी स्वधा

पितृभ्यः तत्सत् ब्रह्म, अद्यतावत् तिथौ, अमुकमासस्य, अमुक पक्षस्य, अमुक तिथौ, अमुक वासरे (*महीने, पक्ष, तिथि तथा वार का नाम लेकर*) **परलोकेक्षुत पिपासा निवारनार्थं सोदकुम्भ दान सहिते नित्य कुम्भे एतत त्ते तिलोदकं एतत् त्ते उदक तर्पणं हिमं रजतं रजतं** (दांया यज्ञोपवीत रखकर पानी की धारा डालते जाये तथा इस मन्त्र का उच्चारण करते जायें) **नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत साक्षिणे नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः**। यदि स्त्री ने तर्पण करना हो तो वह मस लठुर का प्रयोग यज्ञोपवीत के बदले में कर सकती है।

११. तर्पण विधि - तर्पण करते समय पहले महीना, पक्ष, तिथि ओर वार का उच्चारण करें, उसके पश्चात पित्रों का नाम लें। यदि तिथि **'दि'** हो तो दो तिथिया पढीं जाती हैं जैसे पंचम्यां परता षष्ठयां, यदि पंचमी **'प्र'** हो तो केवल पंचम्यां तिथि ही पढें। पित्रों के नाम के साथ अपने गोत्र का नाम लेना आवश्यक है। नाना, नानी आदि को उनके ही गोत्र का नाम लेकर तर्पण करें। **तत्सत् ब्रह्म, अध्य तावत् तिथौ अद्य अमुक मासस्य, अमुक पक्षस्य, अमुक तिथौ, अमुक वासरे (महीना, पक्ष, तिथि, नाम लेकर) जैसे अद्य श्रावण मासस्य कृष्ण पक्षे पंचम्यां परता षष्ठयां सोमवासर नितायां पित्रे कृष्ण दराय कापिष्ठल मानव पिता महाये, राम दराय कापिष्ठल मानव प्रपितामहाये ग्वाशदराय कापिष्ठल मानव, मात्रे गुणवती देवयै, कापिष्ठल मानव्यै, पितामह्यै अमरावती देव्यै कापिष्ठलमानव्यै, प्रपितामह्यै वनमाली देव्यै कापिष्ठल मानव्यै।**

नोट - यदि माता पिता जीवित हैं तो उनका नाम तर्पण में न लें।

१२. भीष्म पितामह के लिये तर्पण विधि - (तिथि माघ शुक्ल पक्ष अष्टमी)

हाथ में काला तिल लेकर बाया यज्ञोपवीत रखकर दक्षिण की ओर मुख करके इस निम्न लिखि मन्त्र से तर्पण करें

वैयाघ्रपद गोत्राय सांकृत्य प्रवराय च,
गंगा पुत्राय भीष्माय सर्वदा ब्रह्मचारिणे।
भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः,
आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्र पौत्रोचितां क्रियाम।।

अब दाया यज्ञोपवीत रखकर भीष्म पितामह को अर्घ दें।

१३. षडमोस - किसी पितर या मृतक का अर्धवार्षिक श्राद्ध निश्चित करने के लिए निश्चित तिथि का मध्याह्न देखा जाता है। जैसे त्रयोदशी निश्चित तिथि है अतः द्वादशी को षडमोस (अर्धवार्षिक) तथा त्रयोदशी को मासिक श्राद्ध (मासवार) होगा। जन्त्री में हर एक तिथि का मध्याह्न दिया गया है।

१४. वार्षिक श्राद्ध - वार्षिक श्राद्ध (यानि वहरवॉर) निश्चित तिथि का दिवा 'दि' प्रविठ 'प्र' देखकर ही मालूम होगा। मानलो त्रयोदशी निश्चित तिथि है तो द्वादशी को मासवार तथा त्रयोदशी को वार्षिक श्राद्ध होगा। जन्त्री में प्रत्येक तिथि का 'दि' और 'प्र' दिया गया है।

१५. दिवगोण - दिवगोण समपन्न करके यदि अशौच पडे तों अशौच का दोष नहीं होता है। विवाह तथा यज्ञोपवीत का दिवगोण अधिक से अधिक सात दिन पहले भी करने की विधि है। यदि यज्ञोपवीत संस्कार रचाने का संकल्प किया हो और सूतक (होंछ) पडे तो कुष्माण्ड आदि से आहुति देकर दोष का निवारण किया जा सकता है, परन्तु मृतक के लिये यह नियम लागू नहीं होगा। याद रहे देवगोण के लिए कोई मुहूर्त, नक्षत्र, तथा तिथि आदि देखने की कोई आवश्यकता नहीं है, परन्तु दिवगोण के दिन यदि भौमवार या शनिवार हो तो देवगोण का आरम्भ सूर्य उदय से पहले ही करें।

१६. यज्ञोपवीत धारण का अधिकार:- यज्ञोपवीत संस्कार के अनुपालन में शुचिता और पवित्रता का विशेष ध्यान रखना आवश्यक होता है। स्त्री के शरीर का निर्माण इसतरह से हुआ है कि उसे मास में कुछ दिन अपवित्र दशा में रहने के लिये बाध्य होती है। पुरुष के समान स्त्री ब्रह्मचर्य धर्म का पालन (रजस्वला होने पर) करने योग्य नहीं रहती है। इसी प्रकार मन्त्रों के उच्चारण की अशुद्धता भी स्त्री तथा द्विजेतरों में रहती है। फिर भी मनुस्मृति में स्त्रियों का विवाह संस्कार ही उनके यज्ञोपवीत संस्कार के समान है।

वैवाहिको विधि स्त्रीणां,
संस्कारो वैदिक: स्मृत:।। (मनु स्मृति २/३७)

ज़ातक मिलाप विधि

यह तो सर्वविदित है कि ज्योतिष शास्त्र भविष्य का सूचक है, अतः विवाह के पूर्व वर-कन्या की जन्मपत्रियों अर्थात् ज़ातुक मिलाने का आशय केवल परम्परा का निर्वाह ही नहीं अपितु भावी दम्पति के स्वभाव, गुण, प्रेम, और आचार-व्यवहार के सम्बन्ध को ज्ञात करना है।

ज्योतिष में लग्न को 'शरीर' और चन्द्रमा को 'मन' माना गया है। प्रेम मन से होता है, शरीर से नहीं। इस लिए आचार्यों ने जन्मराशि से मिलाप विधि का ज्ञान करना बताया है। इस के अतिरिक्त यह भी बताया गया है कि गुण अर्थात् बल मिलान द्वारा वर और कन्या के स्वास्थ्य, विद्या, आर्थिक स्थिति तथा प्रजनन शक्ति का ज्ञान करना चाहिए। इस गुण-मिलान-पद्धति में निम्न आठ बातें होती हैं -

1. वर्ण **2.** वश्य **3.** तारा **4.** योनी
5. ग्रह मैत्री **6.** गण मैत्री (जाति दोष) **7.** भकूट (राशि मित्रता) **8.** नाडी दोष

काश्मीरी लोकाचार को ध्यान में रखते हुए हम ग्रह मित्रता, जाति दोष, राशि मित्रता, नाडी दोष के अतिरिक्त मंगल दोष को भी प्राथमिकता देते हैं। उपर्युक्त बातों के बल (गुण) इस तरह देखे जाते हैं :

वर्ण का 1 गुण, वश्य के 2, तारा के 3, योनि के 4, ग्रह मित्रता के 5, जाति मित्रता के 6, राशि मित्रता के 7 तथा नाडी दोष के 8 गुण होते है। इस प्रकार कुल 36 गुण होते है। इस तरह से वर और वधू के मिलान में कम से कम 18 गुण मिलने पर ही विवाह सम्बन्ध तय किया जाता है। परन्तु नाडी और राशि मित्रता के गुण अवश्य मिलने चाहिए, जिन के बिना 18 गुणों में विवाह मंगलकारी नहीं माना जाता है।

12 राशियों के नाम : मेष, वृष, मिथुन, कर्कट, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन

9 ग्रहों के नाम : सूर्य, चन्द्रमा, भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु

27 नक्षत्रों के नाम : अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, तिष्या, अश्लेषा, मघा, पूर्वफाल्गुणी, उत्तरफाल्गुणी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठ, शतिभिषक, पूर्वभाद्रपदा, उत्तरभाद्रपदा, रेवती ।

ग्रह मैत्री ग्रह मित्रता तथा राशि मित्रता (भकुट)-- ये दोनों काश्मीर प्रदेश में षष्टाष्टक, नवपंचक, द्विद्वादशी के नाम से भी जाने जाते हैं। वर और कन्या की राशियों के स्वामियों की मित्रता ग्रह मित्रता कहलाता है। जैसे वर की राशि सिंह तथा वधू की राशि वृष हो, सिंह राशि का स्वामी सूर्य तथा वृष राशि का स्वामी शुक्र है, ग्रहों के शत्रु-मित्रता चक्र में सूर्य और शुक्र शत्रु बताये गये हैं।

राशियों के स्वामी देखने का चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
स्वामी	भौम	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	भौम	गुरु	शनि	शनि	गुरु

गहों की शत्रु-मित्रता का चक्र

	ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु
कन्या के राशि स्वामी	मित्र	चन्द्र भौम बृहस्पति	सूर्य बुध --	सूर्य चन्द्र बृहस्पति	सूर्य राहु शुक्र	सूर्य चन्द्र भौम	बुध शुक्र राहु	बुध शुक्र राहु	बुध शुक्र शनि
	शत्रु	शुक्र शनि राहु	राहु -- --	बुध राहु --	चन्द्र -- --	बुध शुक्र --	सूर्य चन्द्र --	सूर्य चन्द्र भौम	सूर्य चन्द्र भौम
	सम	बुध -- --	बृहस्पति शुक्र शनि	शुक्र शनि --	भौम बृहस्पति शनि	राहु शनि --	भौम बृहस्पति --	बृहस्पति -- --	बृहस्पति -- --

जाति दोष (गण मैत्री)

जाति दोष जाननें के लिए लडके अथवा लडकी के नक्षत्रों का पता होना आवश्यक है। देव जाति, मनुष्य जाति तथा राक्षस जाति, इन तीन जातियों में 27 नक्षत्रों को बाट कर उस नक्षत्र की जाति का अध्यन किया सकता है।

जाति दोष देखने की विधिः- अनुराधा नक्षत्र होने पर उस जातक का सम्बन्ध देव जाति से होगा, एसे ही मघा नक्षत्र होने से उस जातक की जाति राक्षस जाति होगी। पाठकों को समृण रहे कि वर और वधू की एक ही जाति का होना शुभ फल का ही सूचक है, परन्तु यदि लड़की की राक्षस जाति और लडका मनुष्य जाति से सम्भन्ध रखता हो तो विशेष हानिकारक है।

जाति देखने का चक्र

देव	अनुराध, मृग, श्रवण, पुनर्वसु, रेवती, स्वात, हस्त, तिष्या, अश्विन
मनुष्य	पूषा, पूफा, पूभा, उभा, उफाा, उषा, राहि, भर, आर्द्रा
राक्षस	मघा, अश्ले, धनि, कृति, ज्येष्ट, मूल, शत, चित्रा, विशाखा

देव जाति + राक्षस जाति	मध्यम	मनुष्य जाति + देव जाति	शुभ
राक्षस जाति + देव जाति	मध्यम	देव जाति + मनुष्य जाति	शुभ
राक्षस जाति + मनुष्य जाति	अशुभ	मनुष्य जाति+ राक्षस जाति	अशुभ

राशि मित्रता (भकूट)

कन्या की जन्म राशि से वर की जन्म राशि तक गिन्ना चाहिए तथा इसी प्रकार वर की जन्म राशि से कन्या की जन्म राशि तक भी गिन्ना चाहिए। यदि गिनने पर छठी और आठवीं हो तो **षष्टाष्टक,** नवमी और पाँचवी हो तो **नवपंचक** तथा दूसरी और बारॅहवीं हो तो **द्विद्वादशी** कहलाती है। उदाहरण के लिए मेष राशि की वृश्चिक राशि के साथ षष्टाष्टक, ऐसे ही मिथुन और मकर की षष्टाष्टक होती है। यदि वर और वधू के मिलान पर मित्रषष्टाष्टक, मित्रनवपंचक या मित्रद्विद्वाशी हो तो वह शुभ फलदायक ही होती है।

राशि कूट चक्र

मित्र षष्टाष्टक	मेष + वृश्चिक	मिथुन + मकर	सिंह + मीन	तुला + वृष	धनु + कर्क	कुम्भ + कन्या
शत्रु षष्टाष्टक	वृष + धनु	कर्क + कुम्भ	कन्या + मेष	वृश्चिक + मिथुन	मकर + सिंह	मीन + तुला
मित्रनवपंचक	मेष + सिंह	मिथुन + तुला	सिंह + धनु	तुला + कुम्भ	धुन + मेष	कुम्भ + मिथुन
शत्रुनवपंचक	वृष + कन्या	कर्क + वृश्चिक	कन्या + मकर	वृश्चिक + मीन	मकर + वृष	मीन + कर्क
मित्रद्विद्वादशी	मेष + मीन	मिथुन + वृष	सिंह + कर्क	तुला + कन्या	धनु + वृश्चिक	कुम्भ + मकर
शत्रुद्विद्वाशी	मेष + वृष	कर्क + मिथुन	सिंह + कन्या	तुला + वृश्चिक	धनु + मकर	कुम्भ + मीन

नाडी दोष

नीचे दिये गये नाडी चक्र से आप वर और वधू की नाडी का ज्ञान रख सकते है। यदि दोनों का नक्षत्र आद्य नाडी की पंक्ति में हो तो आद्य नाडी दोष होता है, ऐसे ही यदि दोनों का नक्षत्र मध्यनाडी की पंक्ति में हो तो मध्य नाडी दोष कहलाता है तथा यदि दोनों वर वधू का नक्षत्र अन्त्य नाडी की पंक्ति में हो तो अन्त्य नाडी दोष कहलाता है। इन तीन में से मध्य नाडी दोष विशेष हानिकारक माना जाता है। पाठकगण नोट करें कि यदि नाडी दोष होने पर एक नक्षत्र हो परन्तु वह नक्षत्र भिन्न भिन्न पादों पर हों तो नाडी दोष नहीं होता है। उदाहरण के लिए यदि वर और वधू दोनों का नक्षत्र कृतिका हो तो अन्त्य नाडी दोष होता है परन्तु यदि वर के नक्षत्र का पाद दो तथा वधू के नक्षत्र का पाद तीन हो तो नाडी दोष नहीं माना जाता है।

नाडी देखने का चक्र

अद्य नाडी	आश्विन	आर्द्रा	पुनर्वसु	उफा	हस्त	ज्येष्ठा	मूल	शतभि	पूभा
मध्य नाडी	भरण	मृगशिर	तिष्या	पूफा	चित्रा	अनुराधा	पूषा	धनिष्ट	उभा
अन्त्य नाडी	कृतिका	रोहिणी	अश्ले	मघा	स्वात	विशाख	उषा	श्रवण	रेव

नाडी दोष अपवाद

1. कुल सताईस नक्षत्रों में से **रोहिणी, मृगशिर, तिष्या, कृत्तिका, उत्तराभाद्रपद, श्रवण, आर्द्रा, ज्येष्ट, रेवती** नक्षत्रों पर कई आचार्यो ने अपने ग्रथों में यह सपष्ट रूप से वर्णन किया हैं कि मिलान में उपर्युक्त आठ नक्षत्र नाढी दोष से मुक्त हैं।
2. यदि वर या वधू में से एक की राशि ***कन्या*** और दूसरे की ***मिथुन***, एक की ***धनु*** और दूसरे की ***मीन*** तथा एक की ***तुला*** तथा दूसरे की ***वृष*** हो तो नाडी दोष नहीं होता।
3. वर तथा कन्या की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र अलग अलग हो तो नाडी दोष नहीं होता।
4. नाडी दोष होने पर यदि पाद भेद हो तो भी नाडी दोष नहीं होता है।
5. वर और वधू के राशि स्वामीयों अथवा नवांश स्वामियों की यदि आपस में मित्रता हो तो जाति दोष, षष्ठाष्टक अर्थात् ग्रह मित्रता दोष नहीं होता।

भौम दोष का फल एवं अपवाद

विवाह योग्य लडके व लडकी की जन्मकुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाडी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात कुण्डली में मंगल एवं मंगलीक दोष पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। जन्म कुण्डली में 1, 4, 7, 8, 12 वें घर में मंगल का होना मंगल दोष कहलाता है। मंगली दोष वैवाहिक जीवन को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करता है, विवाह में विघ्न, विलम्ब, व्यवधान, विवाहोपरान्त दम्पत्ति में से किसी एक अथवा दोनों को शारीरिक, मानसिक अथवा आर्थिक कष्ट, पारस्परिक मन मुटाव, आरोप-प्रत्यारोप तथा विवाह विच्छेद आदि। फिर भी मंगलदोष से भयभीत या आतंकित नहीं होना चाहिये क्योंकि हमारे आचार्यों तथा ऋषियों के महूर्तग्रन्थों में निम्नलिखित अनेक परिहार वाक्य मिलते हैं जिन से मंगलदोष निरस्त या भंग हो जाता है।

भौम दोष का अपवाद

१. कुज दोषवती देया कुजदोषवते किल।

नास्ति दोष न चानिष्टं दम्पत्योः।। सुखवर्धनम्।

मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलदोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वरवधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढता है।

२. सप्तमे यदा सौरिर्लग्ने वापि चतुर्थके।

अष्टमे द्वादशे चैव तदा भौमो न दोषकृत ।।

यदि वर की कुण्डली में एक में पूर्वोक्त प्रकार से मंगल हो दूसरी में सप्तम, लग्न, चतुर्थ, अष्टम्, द्वादश, इन भावों में शनि हो तो परस्पर भौम का दोष नहीं रहता।

३ . शनि भौमोथवा कश्चित् पापोवा तादृशोभवेत ।

तेष्वेव भवनेषु भौम दोष विनाश कृत ।। (फलित संग्रह)

यदि लडकी की कुण्डली में 1, 4, 7, 8, 12 वें भाव में मंगल हो और लडके की कुण्डली में उपर्युक्त भावों में शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि पापग्रह स्थित हों तो भौम दोष भंग हो जाता है, इसी प्रकार लडके की कुण्डली में भौम दोष होने पर उपर्युक्त भावों में कोर्द पापग्रह होने से भी भौम दोष नहीं रहता।

४. **अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे ।**

द्यूने मृगे कार्किचाष्टौ भौमदोषा न विद्यते ।। (मुहूर्त पारिजात)

लडके अथवा लडकी की कुण्डली में लग्न में मेष राशि का मंगल हो, वृश्चिक का मंगल चौथा हो, मकर का सातवें, कर्कट का आठवें एवं धनु राशि का मंगल 12 वें में हो तो मंगल देष नहीं होता है।

५. **सप्तमस्थो यदा भौमो गुरुणा च निरीक्षितः**

तदातु सर्वसौख्यं स्यात् मंगलीदोष नाशकृत ।।

यदि सातवाँ मंगल हो उसपर बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

६. **राशि मैत्रम् यदा याति गणैक्य वा यदा भवेत्।**

अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते।। (मुहूर्त दीपक)

यदि वर कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशि मैत्री हो, गुणैक्य 27 गुण या इस से अधिक मिलान हो तो मंगलदोष नहीं होता है।

७. **उक्त स्थानेषु चन्द्राच्च गण्येत् पापखेचरान।**

पापाधिके वरे श्रेष्ठ विवाहं प्रवदेद् बुधः।।

लग्न तथा चन्द्रमा से उक्त स्थनों (1, 4, 7, 8, 12) में पाप ग्रहों की संख्या गिनें, यदि कन्या से वर की पापसंख्या अधिक होतो विवाह सम्बन्ध श्रेष्ठ समझना चाहिए।

भौम दोष की शान्ति के लिये प्रमुख उपाय -

※ मंगलवार का व्रत रखें। दिन में नमक के बिना तरल भोज्य पदार्थ (चाय, काफी, दूध, लस्सी, फलों के रस) लें। सायंकाल

थाली में रोली से त्रिकोण बनाएँ तथा पंचोपचार (लाल चंदन, लाल पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य) से पूजन करें।

तत्पश्चात् सूर्यास्त से पूर्व ही गेहूँ की रोटी, घी, गुड ग्रहण करें।

※ मंगल दोष अधिक प्रबल हो तो मंगल चंडिका स्तोत्र का 108 दिन तक नित्यप्रति 21 बार जप करें। प्रातः काल पूर्वाभिमुख होकर बैठें व पंचमुखी दीप प्रज्वलित करके अपने इष्ट तथा मंगल ग्रह का पंचोपचार से करें, फिर निम्नलिखित जप करें -

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचंडिके। हारिके विपदां राशे हर्षमंगलकारिके।।

हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके। शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचंडिके।।

मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले। सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये।।

जातक मिलाने की सारिणी

लडकी	लडका	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा	स्वात	विशा	विशा	अनुरा	ज्येष्ठा	मूल	पूषा	उषा	उषा	श्रवण	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेवत
	अश्वि	23	27	22	19	25	15	20	25	23	25	26	21	21	15	16	15	24	26
मेष	भर	15	28	21	19	18	20	20	18	26	28	26	10	10	20	24	23	17	26
	कृति	28	14	19	17	20	26	25	19	12	14	14	25	25	26	18	18	20	13
	कृति	22	09	21	22	25	30	22	15	07	12	11	25	29	30	23	20	22	13
वृष	रोहि	18	15	08	15	30	24	14	20	11	16	18	19	25	24	29	26	27	19
	मृग	11	25	17	24	22	25	15	11	17	22	26	12	18	26	28	25	18	27
	मृग	13	27	20	13	13	14	23	19	25	20	24	10	12	21	23	24	17	26
मिथुन	आर्द्रा	20	27	20	14	19	05	15	28	27	22	23	17	19	12	17	19	26	26
	पुन	20	27	21	15	21	06	14	27	27	22	23	17	19	13	16	18	27	26
	पुन	19	27	21	19	25	11	08	21	21	26	27	21	12	06	10	16	25	25
कर्क	तिष्या	11	25	21	19	17	21	18	13	21	26	23	11	04	13	18	26	18	26
	अश्ले	26	12	17	16	19	26	29	23	08	13	13	26	17	18	11	18	20	12
	मघा	24	11	16	25	25	32	24	19	09	04	05	18	24	25	18	18	19	12
सिंह	पूफा	10	25	18	24	23	25	20	17	24	19	19	06	11	19	24	24	17	25
	उफा	18	27	18	25	31	17	09	25	25	20	20	12	18	11	16	16	27	25
	उफा	17	26	17	18	26	12	14	30	30	24	24	24	17	10	15	17	28	26
कन्या	हस्त	20	27	19	20	26	14	15	27	29	23	24	20	19	11	14	16	26	26
	चित्रा	19	19	33	27	11	25	27	13	21	16	17	16	16	24	17	19	10	19

जातक मिलाने की सारिणी

लडकी	लडका	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा	स्वात	विशा	विशा	अनुरा	ज्येष्ठा	मूल	पूषा	उषा	उषा	श्रवण	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेवत
तुला	चित्रा	28	27	34	23	07	21	27	13	21	24	25	23	18	26	19	12	03	12
	स्वात	28	28	20	10	20	17	23	27	19	23	23	28	21	22	32	19	19	11
	विशा	34	19	28	18	18	22	28	21	13	16	16	30	26	26	30	14	13	04
वृश्चिक	विशा	27	07	15	28	27	32	28	22	08	11	11	25	24	26	20	29	18	10
	अनुरा	07	21	16	28	28	31	16	14	22	25	26	12	11	20	25	24	18	26
	ज्येष्ठ	20	15	19	32	30	28	14	17	17	20	20	25	26	19	10	10	20	20
धनु	मूल	26	21	26	23	17	16	28	28	26	14	15	21	29	22	15	17	15	26
	पूषा	12	27	20	17	16	18	27	28	34	22	27	06	15	24	29	29	23	31
	उषा	20	19	12	09	24	18	25	35	28	18	15	14	23	24	29	30	31	23
मकर	उषा	23	22	15	12	17	27	15	24	17	28	27	26	16	17	30	30	21	23
	श्रवण	24	22	15	12	27	21	14	23	15	26	28	27	17	18	21	29	30	24
	धनि	26	24	29	26	12	26	21	07	15	26	27	28	17	23	18	25	15	23
कुम्भ	धनि	18	20	25	25	11	25	30	16	25	17	18	18	28	33	28	17	07	14
	शत	26	21	21	27	20	18	25	25	25	17	18	24	23	28	19	08	21	16
	पूभा	19	26	20	21	27	11	15	30	30	23	29	18	27	29	28	16	22	20
मीन	पूभा	11	19	13	19	25	10	14	29	29	29	23	25	16	07	15	28	33	31
	उभा	02	19	12	18	25	27	24	22	30	30	30	15	06	15	21	33	28	33
	रेव	12	10	04	11	26	21	26	29	21	24	22	23	14	16	18	30	33	28

जातक मिलाने की सारिणी

लड़की	लड़का	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि	भर	कृति	कृति	रोहि	मृग	मृग	आर्द्रा	पुन	पुन	तिष्या	अश्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	हस्त	चित्रा
मेष	अश्वि	28	33	28	18	24	23	26	17	18	23	31	27	20	24	15	11	11	13
	भर	33	28	29	18	27	15	18	26	26	31	24	25	26	24	24	19	19	06
	कृति	27	28	29	18	10	17	20	20	20	25	27	23	16	19	20	15	15	19
वृष	कृति	19	19	19	28	19	27	17	23	24	21	23	19	19	22	22	20	21	23
	रोहि	24	24	11	20	28	36	27	23	22	26	27	13	11	25	27	26	26	19
	मृग	24	15	19	27	35	29	19	24	23	26	19	21	20	16	25	23	19	12
मिथुन	मृग	27	18	23	19	26	20	28	33	31	20	11	15	24	21	29	31	34	20
	आर्द्रा	19	27	22	19	25	26	34	28	25	12	21	13	22	28	21	25	25	27
	पुन	19	26	22	19	22	23	32	24	28	14	21	16	22	26	20	24	25	27
कर्क	पुन	22	29	25	21	24	25	18	10	13	28	34	29	17	21	15	17	18	20
	तिष्या	30	21	27	23	25	18	11	19	24	34	28	29	19	21	24	26	26	12
	अश्ले	25	23	22	19	12	21	13	12	15	29	29	28	15	22	18	21	20	26
सिंह	मघा	19	19	16	17	11	18	21	21	20	17	19	16	28	30	27	15	15	20
	पूफा	25	24	19	20	24	16	19	27	26	23	17	17	30	28	34	24	21	06
	उफा	19	27	22	23	27	22	29	22	22	17	26	20	27	34	28	18	17	15
कन्या	उफा	11	21	16	21	26	24	32	22	24	18	28	21	16	23	17	28	27	25
	हस्त	11	19	16	21	24	31	32	19	24	18	27	22	16	21	15	26	28	28
	चित्रा	13	05	19	23	27	11	19	26	25	20	122	26	22	07	14	25	27	28

जातक मिलाने की सारिणी

लडकी	लडका	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि	भर	कृति	कृति	रोहि	मृग	मृग	आर्द्रा	पुन	पुन	तिष्या	अश्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	हस्त	चित्रा
तुला	चित्रा	22	14	28	23	19	11	12	20	25	19	11	25	25	11	18	18	26	20
	स्वात	28	30	18	13	17	27	27	26	34	28	28	13	14	26	26	26	28	27
	विशा	21	22	20	15	09	17	19	20	20	21	21	17	17	19	18	18	19	26
वृश्चिक	विशा	17	23	15	20	14	22	11	13	13	18	18	15	25	23	22	17	18	26
	अनुरा	24	15	19	24	28	21	10	15	20	25	17	20	25	21	29	24	25	11
	ज्येष्ठ	10	18	23	29	23	30	12	02	04	10	20	25	31	24	16	11	11	24
धनु	मूल	12	19	25	20	13	13	21	14	12	08	18	23	24	24	20	13	13	26
	पूषा	33	19	18	13	19	11	19	27	27	23	15	24	26	17	25	29	27	12
	उषा	33	26	12	06	10	17	25	26	27	23	23	09	09	24	25	29	29	20
मकर	उषा	27	29	15	12	16	23	19	25	22	28	28	14	05	20	21	24	24	16
	श्रवण	28	27	15	12	17	26	23	20	22	28	28	14	06	19	20	23	24	17
	धनि	20	11	26	31	19	11	08	16	15	21	13	27	19	05	11	16	17	15
कुम्भ	धनि	20	11	25	30	26	18	11	18	17	12	04	18	25	11	19	18	25	17
	शत	15	21	31	31	25	27	20	12	12	07	13	19	26	20	12	11	14	25
	पूभा	18	25	20	24	30	30	24	17	17	12	20	12	19	25	17	16	21	18
मीन	पूभा	15	21	25	19	26	26	24	18	18	17	25	18	17	23	15	16	16	18
	उभा	24	16	19	21	26	18	17	25	27	26	19	20	18	15	26	27	26	09
	रेव	25	26	11	13	17	26	25	24	25	25	26	13	12	23	23	24	25	19

काश्मीरी पण्डितों के गोत्र (जाति व उपजाति सहित)

हमारे वंशों को चलाने वाले जो ऋषि या मुनि हुये हैं वही ऋषि हमारे गोत्र प्रवर्तक हैं। गोत्र परम्परा हमें अपने मूल से जोडे रखती है। इसी के आधार पर हमारे संस्कार, यज्ञकर्म, विवाह, पितृक्रिया आदि कर्मकाण्डीय क्रियायें निष्पन्न होती हैं अतः हमें अपने गोत्र के विषय में जानकारी अवश्य रखनी चाहिये तथा इसको कभी भी भूलना नहीं चाहिये। ब्रह्मा जी जब सृष्टि के कार्य में प्रवृत्त हुए तो उनके मानसी संकल्प से नौ ऋषियों का प्रादुर्भाव हुआ -- मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, विश्वामित्र, भारद्वाज, गौतम और जमदग्नि। सृष्टि को आगे बढ़ाने में महर्षि मरीचि का विशेष योगदान रहा। मरीचि के पुत्र कश्यप हुए। कश्यप से ही जगत् की चराचर सृष्टि हुई।

कश्यपात् तु इमाः प्रजाः ।

ऋषि कश्यप काश्मीर के जनक और वहाँ की हिन्दू जाति के संस्थापक भी हैं। तभी तो कश्मीरियों को मुख्य रूप से कश्यप गोत्रीय माना जाता है। जिन्हें अपने गोत्र के विषय में संशय हो वे पुरुष काश्यप गोत्री तथा स्त्री काश्यपी गोत्री उच्चरित करके धार्मिक कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। वैसे काश्मीरी हिन्दुओं के एक सौ निन्यानवे (१९९) गोत्र प्रवर हैं जिन में से कुछ जातियों के गोत्र यहाँ दिये गए हैं। हो सकता है इस में कुछ जातियों का समावेश न हो पाया हो, उन से विनम्र अनुरोध है कि हम से सम्पर्क करके अपने गोत्र व जाति का विस्तृत परिचय देकर अनुग्रहीत करें।

Our Gotras with their Castes & Sub Castes

Note :- Please intimate us if you do not find your Gotra or Caste in the below list through e-mail : vijayeshwer@yahoo.com

Atri Bhargaya : Hapa

Artha Varshaganya Shandalya : Choudhri

Bhava Kapishthala Kaushika : Patar

Bhava Aupamanyava : Variku

Bhuta Was : Peshen, Thakur, Zalpuri

Bhuta Aupamanyava Shalan Kayana : Giru, Ganjoo, Kanzu

Bhuta Aupamanyava Vatsya Laugakshi : Pishen

Bhava Kapishthala : Khoru, Zadu, Sibbu, Vantu, Chandra, Kalla, Khaibri, Lattu, Kaw, Hakim.

Bhava Kapishthal Aupamanyava : Wani, Khan, Kantroo

Bhuta Vatsya Aupamanyava : Peshin, Revoo.

Dar Bharadwaja: Bangi, Dar, Jawansher, Misri, Parikala, Qandahari Thalatsur, Tritsha, Tshut, Turki, Uthu, Vichari, Waguzari, Jatoo, Datt.

Dar Varshaganya : Bakhshi, Kachru, Safaya, Shali

Deva Bharadwaja : Jatu, Khurdi, Sabani, Yachh, Zaru, Kallu, Gadroo.

Deva Kashyap : Chatta

Datthtreya (Koul) : Aima, Babu, Bamtsunt, Bamzai, Buju, Chowdhri, Dandar, Dangar, Drabi, Dout, Hak, Jalali, Jinsi, Jota, Kak, Keni, Kissu, Kothdar, Ladakhi, Mekhzin, Mandal, Moza, Muhtasib, Nagari, Padar, Pahalwan, Ratiz, Sahib Shargha, Shoga, Singhari, Salman, Sultan, Tota, Ugra, Zamindar Sharabi, Dembi, Achkan.

Dat Was : Khari

Dar Dev Shalan Kapi : Mota

Deva Bharadwaja Kaushika Deva : Dar

Dev Shalana Kaushika : Muttu

Deva Gargya : Bhan

Dar Kapisthala Upamanuva : Mich,

Dar Kapisthala Manuva : Bootnath (Bijbehara)

Deva Gautama : Bhatt, Purbi, Pandit (Tangmarg)

Dar Shandalya : Jogi

Deva Gautama Laugakshi : Hakim

Dipat Saman Aupamanyava : Sapru

Deva Kaushika : Bhatt

Dhaumyayana : Razdan

Deva Kantha Kashyapa : Kar

Deva Varshaganya Shandilya : Safaya

Deva Kucha Atreya : Badgami

Dat Sharman Kantha Kashyapa : Raina, Pandit, Bradoo

Deva Laugakshi : Mantapuri, Pandit

Deva Kashyap Maudgalya Kashyap : Bradi, Pandit

Deva Parashara : Thogan, Tulsi, Yachh, Kak

Deva Patsvamina Koshk : Kalpush

Dat Varshaganya : Sazawul

Deva Swamina Gotam Kaushika Mudgalaya : Pandit, Kukiloo

Deva Shandalya : Bataphalu, Karawani

Dev Wasishta : Shopuri, Hukku, Ukhlu

Dev Svamina Maudgalya : Bradi

Dev Vishamitra Varshaganya : Kem, Vangar, Wangoo

Dev Wasishta : Ukhlu

Dar Kapisthala : Lidi, Bhatt

Dar Wasak Shandilya : Safaya

Deva Vardhatta Shalan Kautsa : *Tsrungu (Chrangoo)*

Deva Dat Gautma Kaushik Bhardwaja: *Gushai &* Bumai, (Sopori) Pandit.

Dat Dat Shalan Kautsa : *Bhatt, Kasab, Khaumush,* Malik, Sathu

Dev Aupamanyava : *Kalu, Khashu, Meva, Pandit, Teli* (Koul).

Deva Patsvamina Aupamanyava Kaushika: Badgami, Kandhari, Kalpush, Bhan, Misri

Kash Aupamanyava : Bhatt

Karchanda Shandale : Chandru, Kar

Kara Shandalya : Mantu, Pandit, Shishoo

Kantha Dhaumyana Laugakshi Gautama : Bandar, Breth, Hastiwal, Muhtasib, Kav, Razdan, Shah, Shair, Wangani, Wat, Zari.

Kanth Kasahap : Bhatt, Dassu, Razdan, Tangan, Shakdher

Mitra Atreya : Kaboo (Baramulla)

Mitra Kashyapa : Handu, Bhat

Mitra Shandalya : Bhatt

Mitra Svamina Kaushika Atreya : Said

Nanda Kaushika Bharadwaja : Pandit

Nanda Koshk : Bhatt

Nanda Gotam : Pandit

Paldeva Vasagargya : Pat, Kukru, Khoshu. Kav, Pir, Malla. Bangru, Bakaya, Kadalabuju, Khashu, Kichlu, Kokru, Mala, Mam, Mirakhur, Misri, Munga, Pir, Put, Sopuri-Pandit, Khar, Dullo, Thathoo, Saraf.

Pat Svamina Kaushika : Amhardar, Bira, Braru, Chacha, Chaghat, Durani, Fotedar, Ganju, Jala, Kuchru, Kalu, Khurdi, Kyani, Mam, Mattu, Misri, Pandit, Panzu, Salman, Shanglu Sulu, Teng, Tritshal, Unt, Vashnavi, Wufa, Wanchu, Waza, Zithu, Saproo, Gurkhu, Kitroo, Zalpuri, Dhar, Ganhar, Wattal.

Pat Svamina Deva Ratra Parwara : Pandit, Watal

Ratna Kucha : Raina.

Ratra Vishwamitra Ahastya : .Mattu, Bhat.

Rajdat Atreya Shalan Kautsa : Bhat.

Rajbhut Logaskhi Deval : Bhan

Ratra Bhargava: Zitshoo, Chacha

Raja Dathattatreya : Partazi.

Raj Kaushika : Hakachar, Khod

Rashi Kaushika : Kashgari.

Raj Shandalya : Duru.

Rashi Kavigargya : Zaru, Goja.

Ratra Varshanganya: Kotar.

Ratra Vishwamitra Vashishta: Trakari, Matoo.

Raj Vashisht : Shunglu.

Svamina Warshaganya : Chothai; Duda, Hangal, Kathju, Lange, Kasid.

Svamina Atreya : Chaka, Handu, Gadwali, Kala, Shal, Sikh.

Shandalya Bharadwaja : Bhatt.

Sharman Bharadwaja : Bhatt

Sharman Atreya : Gaddu, Tatoo.

Soma Wasisht : Vuitho

Sharman Kautsa : Bhatt, Mogal, Sav, Thela

Sharman Kautsa Atreya : Ragoo, Nand, Datt, Koul

Shalan Kautsa Sharman Gusha Watsya Aupamanyava : Tilwan Koul, Mukka.

Svamina Gotam Laugakshi : Choku, Chhotu, Turi

Svamina Shandalya : Bhatt, Dass, Bakhshi, Nari, Vass, Pandit, Fata

Svamina Vasishta Bharadwaja: Bhatt, , Handu, Hukhu

Svamina Vasa Gargya : Langer, Sum, Gadwa, Datt, Nand, Halmat

Svamina Gargya : Machama

Svamina Gotam Shandalya : Labru, Razdan

Svamina Koshk Bharadwaja : Bhatt, Kukru

Svamina Gotam Shalan Kucha Atreya: Razdan, Raina, Bhatt, Challu.

Svamina Gotam Gosh Vas Aupamanyava: Chakan

Svamina Vatsya Aupamanyava : Bhatt, Wall, Malla

Svamina Gotam Atreya : Tsul

Svamina Hasya Dvaseya : Khanakatu

Svamina Kaushika : Thakur, Watal

Svamina Kautsa Atreya: Koul

Svamina Kantha Kashyapa : Labru

Svamina Rishi Kanya Gargya : Koul (Kulin)

Shandale : Shayer

Svamina Aupamanyava : Gigu

Svamina Rishi Kanya Vatsya : Tufchi

Svamina Vas Atreya : Ghasi, Bhan, Thusu, Waza

Svamina Bharadvaja : Bazari, Garyali, Jan, Khar, Miskin, Miyan, Munshi, Tikku, Kutsru.

Svamina Bharagava: Bali, Battiv.

Svamina Gautama : Gagar, Tava, Padora, Parimu, Keni, Kak, Razdan, Fehrist, Tarivala,Halli, Khaber. Bazaz, Badam, Charangu, Chillum, Gurut, Kak, Khosa, Kakapuri, Labru Langer, Manwotu, Naqib, Padora, Piala, Qazi, Razdan, Thalatsur, Thapal, Zari. Bhatt

Svamina Gautama Bharadvaja: Kemdal, Karihalu.

Svamina Maudgalya : Bhuni, Chana, Dewani, Galikrapa, Kanth, Khazanchi, Mazari, Muj, Madan, Mushran, Put, Shora Taku, Zahi, Razdan, Zitu, Zotan, Raina, Monga, Lala, Kandar, Reshi.

Vatsya Gusha Aupamanyava : Pandit

Vasishta Svamina Maudgalya : Bhandari

Varshayani : Barbuz, Karnel

Wardhatta Shalana Kucha : Muki, Sopori, Pandit.

Wasadeva Palagargya : Bindri

Wasishta : Bhatt, Rangateng

Note :- Please intimate us on phone No. 0191-2555064 if you do not find your Gotra in the above list or e-mail us at : vijayeshwer @yahoo.com.

काश्मीर क्षेत्र में प्राचीन काल से प्रचलित यात्राऐं

उमा भगवती यात्रा, ब्रारि आगन	चैत्र शुक्लपक्ष नवमी	श्री अमरनाथ व थजीवारा यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा
शिवा भगवती यात्रा, अक्यॅनीगाम	चैत्र शुक्लपक्ष नवमी	ध्यानेश्वर यात्रा बांढीपोरा	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा
कमला यात्रा, त्राल	वैशाख कृष्णपक्ष पंचमी	नबदल यात्रा, त्राल	भाद्र कृष्ण पक्ष चतुर्थी
डुमटबल यात्रा, कुकरनाग	वैशाख शुक्लपक्ष एकादशी	मार्तण्ड तीर्थ यात्रा,(मट्टन)	भाद्र शुक्ल पक्ष षष्ठी
कूटी हेर (कुट्हार) यात्रा, सागम	वैशाख शुक्लपक्ष तृतीया	हरमुकुट गंगा (गंगबल) यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी
गणपतयार यात्रा, श्रीनगर	वैशाख शुक्लपक्ष चतुर्दशी	गोतमनाग यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष एकादशी
ज़ीठयार यात्रा, श्रीनगर	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष पंचमी	नारायण नाग यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष एकादशी
नन्दकेश्वर यात्रा,सीर तथा सुम्बल	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष अमावसी	विथवुत्र यात्रा, वेरीनाग	भाद्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी
क्षीर भवानी यात्रा,तुलमुल	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष अष्ठमी	अन्ततनाग (नागबल) यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी
खनबिरिनय यात्रा, देवसर (कुलगाम)	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष अष्ठमी	पापहरणनाग, कारकूटनाग सेली	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी
मज़ी गाम यात्रा	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष अष्ठमी	विजयेश्वर यात्रा, बिजबिहारा	आश्विन कृष्ण पक्ष अमा०
लकुट पूर यात्रा	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष अष्ठमी	सोमयार यात्रा, श्रीनगर	आश्विन कृष्ण पक्ष अमा०
हरिश्वर यात्रा, खुनमुह	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष अष्ठमी	भद्रकाली वडीपोरा हन्दवारा यात्रा	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी
लुक भवन यात्रा,लुकभवन	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, मार्तण्ड	माघ शुक्ल पक्ष सप्तमी
कौसर नाग व पांजथ नाग यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी	चक्रेश्वर यात्रा	फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी
शुपयन यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी	विचार नाग यात्रा, विचार नाग	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी

काश्मीर के महात्माओं की जयन्तियाँ, श्राद्ध/यज्ञ

नोट:- निम्न् लिखे गए श्राद्ध में 'दि. प्र' के आधार से एक दिन की तिथि आगे पीछे भी हो सकती है स्वयं ठीक कीजिए।

महात्मा मोहन लाल ठुस्सू (कोफूर) जयन्ती	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	21 मार्च
महात्मा श्री काशीनाथ जी कौल जयन्ती, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	चैत्र शुक्ल पक्ष पंचमी	24 मार्च
चण्डीगाम महात्मा यज्ञ	चैत्र शुक्ल पक्ष सप्तमी	26 मार्च
उमा भगवती जयन्ती	चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	28 मार्च
शिवा भगवती, अकिनगाम	चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	28 मार्च
स्वामी भोई टोठ जी महाराज दिवस	चैत्र शुक्ल पक्ष दशमी	29 मार्च
स्वामी कुमार जी जयन्ती, उदमपुर गडी	चैत्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	1 अप्रेल
श्री प्रेम नाथ जी, गुसॉईगुण्ड जयन्ती	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	5 अप्रेल
स्वामी पृथ्वीनाथ पण्डित यज्ञ	वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्थी	8 अप्रेल
श्री ऋषि पीर श्राद्ध	वैशाख कृष्ण पक्ष षष्ठी	10 अप्रेल
श्री महादेव काक भान जयन्ती	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	11 अप्रेल
श्री जानकीनाथ साहिब दर जयन्ती	वैशाख कृष्ण पक्ष अष्टमी	12 अप्रेल
श्री नारायण जुव यज्ञ, बुलॅबुललेंकर	वैशाख कृष्ण पक्ष दशम्यां	14 अप्रेल
स्वामी सूरदास जी निर्वाण दिवस, गणेश स्थल आश्रम सारी जम्मू	वैशाख कृष्ण पक्ष दशम्यां	14 अप्रेल
स्वामी लक्ष्मण जी जयन्ती, महेन्द्र नगर	वैशाख कृष्ण पक्ष द्वादशी	16 अप्रेल
श्री शकर साहिब यज्ञ,	वैशाख शुक्ल पक्ष द्वितीया	20 अप्रेल
स्वामी शम्भू नाथ जी दर (गुशी) निर्वाण दिवस	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	21 अप्रेल

स्वा. मोतीलाल ब्रह्मचारी जी यज्ञ	वैशाख शुक्ल पक्ष अष्टमी	26 अप्रेल
स्वा. सर्वानन्द जी गुसाईगुंड यज्ञ	वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	29 अप्रेल
महात्मा दीनानाथ भान (डांगरपुर) जयन्ती	वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	29 अप्रेल
स्वा. किन्न टोठ यच्छकोट निवासी जयन्ती	वैशाख शुक्ल पक्ष द्वादशी	30 अप्रेल
श्री काक जी यज्ञ (हाँगलगुण्ड) कुक्करनाग व नगरोटा जम्मू	ज्येष्ट कृष्ण पक्ष द्वितीया	6 मई
स्वामी गोविंद कौल जलाली जयन्ती, त्रलोकपुरा, गोलगुजराल	ज्येष्ट कृष्ण पक्ष पंचमी	9 मई
श्री ज़्येष्ठा देवी जयन्ती, ज्यीठर्यार, राज भवन मार्ग, श्रीनगर	ज्येष्ट कृष्ण पक्ष पंचमी	9 मई
स्वामी नन्दकेश्वर यज्ञ (सीर) गोलगुजराल / अकलपुर जम्मू	ज्येष्ट कृष्ण पक्ष अमावसी	18 मई
श्री मान बट मान जयन्ती, फतेपुर	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	19 मई
जगत्गुरू श्री गोपीनाथ जी यज्ञ, खरयार श्रीनगर व उदयवाला	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष द्वितीया	20 मई
कर्मकाण्ड शिरोमणि श्री काशीनाथ हण्डू, जयन्ती	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष चतुर्थी	22 मई
श्री रघुनाथ जी कुक्लू जयन्ती	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष पंचम्यां	23 मई
श्री रघुनाथ जी ब्रह्मचारी जयन्ती	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष पंचम्यां	23 मई
श्री सिद्ध बब जयन्ती	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष नवमी	27 मई
महामहेश्वराचार्य अभिनवगुप्त जयन्ती	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष एकादशी	29 मई
माता रूपभवानी जयन्ती	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	2 जून
श्री महादेव काक जयन्ती, रत्नी पोरा, पुलवामा	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	2 जून
स्वामी वामन जी महाराज, वाछुलुन शुपियन यज्ञ	आषाढ कृष्ण पक्ष तृतीया	5 जून
श्री मोहन लाल जयन्ती उदमपुर	आषाढ कृष्ण पक्ष तृतीया	5 जून
स्वा. गोविंद कौल जी जलाली यज्ञ, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	आषाढ़ कृष्ण पक्ष सप्तमी	9 जून

स्वा. किन्न टोठ यच्छकोट निवासी यज्ञ	आषाढ़ कृष्ण पक्ष सप्तमी	9 जून
स्वामी श्यामलाल कौल (ओगरा) जयन्ती	आषाढ कृष्ण पक्ष एकादशी	12 जून
स्वामी स्वयमानन्द जयन्ती	आषाढ शुक्ल पक्ष षष्ठी	22 जुलाई
स्वामी आन्द जी, यज्ञ विलगाम	आषाढ़ शुक्ल पक्ष सप्तमी	23 जुलाई
स्वामी कण्ठ राम जी यज्ञ, कुलगाम	आषाढ़ शुक्ल पक्ष दशमी	26 जुलाई
स्वामी पुष्कर नाथ यज्ञ	आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वादशी	28 जुलाई
जगत्गुरू श्री गोपीनाथ जी जयन्ती, खरयार श्रीनगर व उदयवाला	आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वादशी	28 जुलाई
स्वामी विद्याधर जी जयन्ती, श्रीनगर	आषाढ़ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	29 जुलाई
श्री अमरनाथ वैष्णवी निर्वाण दिवस	आषाढ़ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	29 जुलाई
सन्त राधा देवी यज्ञ, सागम कुकरनाग	आषाढ़ शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	30 जुलाई
स्वामी लाल जी यज्ञ	श्रावण कृष्ण पक्ष तृतीया	3 अगस्त
श्री ग्रट बब दिवस (यज्ञ)	श्रावण कृष्ण पक्ष द्वादशी	11 अगस्त
मास्टर ज़िन्द कौल जयन्ती	श्रावण कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	13 अगस्त
स्वामी रघु नाथ जी ब्रह्मचार्य यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष षष्ठी	21 अगस्त
कर्मकाण्ड शिरोमणि श्री प्रेमनाथ सोपोरी, श्राद्ध	श्रावण शुक्ल सप्तमी	21 अगस्त
श्री जानकीनाथ साहिब दर यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष नवमी	24 अगस्त
स्वामी गोविन्द कौल यज्ञ (वनपू)	श्रावण शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	28 अगस्त
स्वामी गण काक यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	29 अगस्त
स्वा. धर सर्वानन्द जी सहीपोरा लंगेट निवासी यज्ञ	भाद्द कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	12 सितम्बर
स्वामी परमान्द जी यज्ञ (मार्तण्ड)	भाद्द शुक्ल पक्ष चतुर्थी	17 सितम्बर

श्री कृष्ण जू राज़दान जयन्ती	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	17 सितम्बर
स्वा. मोतीलाल ब्रह्मचारी जी जयन्ती	भाद्र शुक्ल पक्ष पंचमी	18 सितम्बर
माता उमादेवी यज्ञ (उमानगरी) मुट्ठी, जम्मू	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	21 सितम्बर
माता लल्लेश्वरी जयन्ती	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	21 सितम्बर
स्वामी काशीनाथ बब यज्ञ (हुगाम)	भाद्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	25 सितम्बर
स्वमी गाश कौल जी जलाली जयन्ती, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	भाद्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	25 सितम्बर
श्री शकर साहिब यज्ञ, मुंशी चक, जम्मू	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	28 सितम्बर
श्री केशवभट्ट ज्योतिषी (सिख) रैणावारी अन्तर्धान दिवस	आश्विन कृष्ण पक्ष द्वितीया	29 सितम्बर
स्वामी लक्ष्मण जी यज्ञ, निशात (श्रीनगर) व महेन्द्र नगर (जम्मू)	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	1 अक्टूबर
स्वामी हर काक जयन्ती, बमहामा कुपवारा	आश्विन कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	10 अक्टूबर
स्वामी क्राल बब यज्ञ	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	11 अक्टूबर
आनन्द स्वामी श्री प्राण नाथ जी बट्ठ गरीब जयन्ती	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	11 अक्टूबर
स्वामी हरि कृष्ण यज्ञ	आश्विन शुक्ल पक्ष द्वितीया	15 अक्टूबर
कर्मकाण्ड शिरोमणि श्री काशीनाथ हण्डू, निर्वाण दिवस	आश्विन शुक्ल पक्ष चतुर्थी	17 अक्टूबर
श्री नन्द लाल साहिब यज्ञ, लाले दा बाग जम्मू	आश्विन शुक्ल त्रयोदशी	25 अक्टूबर
श्री सिद्ध बब यज्ञ	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वितीया	29 अक्टूबर
ज्योतिषी आप्ताभ शर्मा अन्तर्ध्यान दिवस, विजयेश्वर निवासी	कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी	30 अक्टूबर
स्वामी गाश कौल जी निर्वाण जग, त्रलोकपुरा, गोलगुजराल	कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी	1 नवम्बर
स्वामी व्यदलाल यज्ञ, गुशी	कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी	1 नवम्बर
स्वामी पृथ्वीनाथ पण्डित जयन्ती	कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी	3 नवम्बर

श्री महादेव काक भान जयन्ती	कार्तिक कृष्ण पक्ष नवमी	4 नवम्बर
महात्मा चूनीलाल राज़दान, जयन्ती (हंदवारा), पटोली ब्रह्मना जम्मू	कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	10 नवम्बर
महातमा श्री तारा चंद जी, जयन्ती, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावसी	11 नवम्बर
महामहेश्वराचार्य महताबकाक जी जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्थी	15 नवम्बर
महात्मा मधुसूदन राज़दान, यज्ञ, तीर्थ नगर, तालाबतिलो जम्मू	कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी	17 नवम्बर
स्वामी गोकुलनाथ जी जयन्ती, अम्बिका विहार मुंशी चक, जम्मू	कार्तिक शुक्ल पक्ष सप्तमी	18 नवम्बर
श्री महादेव काक यज्ञ (रली पोरा)	कार्तिक शुक्ल पक्ष अष्टमी	19 नवम्बर
स्वामी आत्माराम जी यज्ञ, गुसानी गुण्ड	कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी	22 नवम्बर
श्रीमती कमला काचरू जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	23 नवम्बर
चण्डीगाम महात्मा जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	25 नवम्बर
स्वामी पोष बब महाराज यज्ञ (रैथन बडगाम) गंगयाल	मार्ग कृष्ण पक्ष द्वितीया	27 नवम्बर
स्वामी पोष बब महाराज जयन्ती (रैथन बडगाम) गंगयाल	मार्ग कृष्ण पक्ष द्वितीया	27 नवम्बर
स्वामी आनन्द जी यज्ञ जमनगरी	मार्ग कृष्ण पक्ष तृतीया	28 नवम्बर
स्वामी काशीनाथ जी यज्ञ, हुगाम	मार्ग कृष्ण पक्ष पंचमी	30 नवम्बर
स्वामी सर्वानन्द जी यज्ञ, गोतमनाग	मार्ग कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	9 दिसम्बर
माता शारिका जी जयन्ती, महेन्द्र नगर, जम्मू	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	13 दिसम्बर
स्वामी श्याम लाल जी हाजीन जयन्ती	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	13 दिसम्बर
स्वामी विद्याधर जी यज्ञ, श्रीनगर	मार्ग शुक्ल पक्ष तृतीया	14 दिसम्बर
स्वा॰ आफताब जू वाँगनू श्राद्ध	मार्ग शुक्ल पक्ष पंचमी	15 दिसम्बर
महात्मा श्री तारा चंद जी निर्वाण जग, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	पौष कृष्ण पक्ष तृतीया	28 दिसम्बर

स्वामी नन्दलाल मस्ताना जयन्ती, (नुनर वाले) लालेदा बाग	पौष कृष्णा पक्ष दशमी	4 जनवरी
महामहेश्वराचार्य श्री राम जयन्ती, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	पौष कृष्णा पक्ष द्वादशी	7 जनवरी
महात्मा स्वर्गी चूनीलाल राज़दान(हंदवारा), यज्ञ पटोली ब्रह्मना जम्मू	पौष कृष्णा पक्ष चतुर्दशी	9 जनवरी
श्री अशोकानन्द यज्ञ, नागढ़ण्डी	पौष कृष्णा पक्ष अमावसी	9 जनवरी
स्वामी शिवराम जी उमानगरी निवासी यज्ञ	पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	10 जनवरी
श्री मिरज़काक जयन्ती, हांगलगुण्ड	पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	10 जनवरी
स्वामी दमकाक जी यज्ञ शरिका पीठ, सुभाष नगर	पौष शुक्ल पक्ष अष्टमी	16 जनवरी
श्रीमती कमला काचरू यज्ञ	पौष शुक्ल पक्ष नवमी	17 जनवरी
माता मथुरा देवी यज्ञ, वेरीनाग	पौष शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	22 जनवरी
स्वामी काशीनाथ कौल यज्ञ, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	माघ कृष्ण पक्ष पंचमी	29 जनवरी
श्री जगन्नाथ वल्ली, निरवाण दिवस, वेरीनाग काश्मीर	माघ कृष्ण पक्ष सप्तमी	31 जनवरी
स्वामी श्री सत्यानन्द जी उमानगरी निवासी यज्ञ	माघ कृष्ण पक्ष अष्टमी	1 फरवरी
स्वामी राम जी यज्ञ, त्रिक आश्रम, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	माघ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	7 फरवरी
श्री नन्द लाल जी यज्ञ (बडगाम)	माघ शुक्ल पक्ष तृतीया	11 फरवरी
स्वा० आफताभ जू वाँगनू जयन्ती	माघ शुक्ल पक्ष दशमी	17 फरवरी
महात्मा दीनानाथ भान यज्ञ	माघ शुक्ल पक्ष द्वादशी	19 फरवरी
स्वामी वामन जी महाराज जयन्ती (वाछलुन शुपीयन)	माघ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	22 फरवरी
कर्मकाण्ड शिरोमणि श्री प्रेमनाथ सोपोरी जयन्ती	माघ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	22 फरवरी

माता शारिका जी यज्ञ	फाल्गुन कृष्ण पक्ष तृतीया	25 फरवरी
श्री व्यदलाल जयन्ती, गुशी	फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	27 फरवरी
स्वामी श्यामलाल कौल (ओगरा) यज्ञ	फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी	2 मार्च
श्री शंकर पंण्डित उमानगरी निवासी यज्ञ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	9 मार्च
स्वामी राम जुँव सफाया (तबरदार) यज्ञ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया	10 मार्च
स्वामी महताब काक जी यज्ञ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया	10 मार्च
महाशान्ति प्रभू स्वा. जगदानन्द ब्रह्मचारी जयन्ती	फाल्गुन शुक्ल पक्ष तृतीया	11 मार्च
स्वामी राम जुँव सफाया (तबरदार) जयन्ती	फाल्गुन शुक्ल पक्ष षष्ठी	14 मार्च
स्वामी शक्ति महाराज जयन्ती, उदयवाला बोहडी	फाल्गुन शुक्ल पक्ष अष्टमी	16 मार्च
श्री नन्दलाल जी जयन्ती	फाल्गुन शुक्ल पक्ष अष्टमी	16 मार्च
स्वामी गोविन्द कौल जयन्ती (वनपू)	फाल्गुन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	21 मार्च
श्री क्राल बब यज्ञ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	23 मार्च
स्वामी धर सर्वानन्द जी सहीपोरा लंगेट जयन्ती	चैत्र कृष्ण पक्ष चतुर्थी	27 मार्च
स्वामी हरकाक यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	31 मार्च
स्वामी ईश्वर दास बक्शी जयन्ती	चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	31 मार्च
श्री किशकाक यज्ञ, वडीपोरा	चैत्र कृष्ण पक्ष नवमी	2 अप्रेल
ब्रह्मचार्य श्री अर्जुनदेव यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष दशमी	3 अप्रेल

स्वामी श्यामलाल जी हाज़ीन यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	6 अप्रेल
स्वामी गाश काक जी यज्ञ, गोतमनाग	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	7 अप्रेल
श्री भट्ट जयन्ती	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	7 अप्रेल

नोट:. यदि उपर्युक्त जयन्ती व श्राद्ध की तिथियों में किसी प्रकार की गलती हो तो कृप्या e-mail (vijayeshwer@yahoo.com) द्वारा हमें सूचित करें।

डॉ. मनमोहन ज्योतिषी, विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय (रजि.), बोहड़ी पाट्टा, जम्मू। दूरभाष 2555064 (O) 2552625(R)

विक्रमी 2072 के व्रतों की सूची

कुमार षष्ठी व्रत

चैत्र	25 मार्च	बुध
वैशाख	23 अप्रेल	गुरु
ज्येष्ठ	23 मई	शनि
आषाढ	22 जून	सोम
आषाढ	21 जुलाई	भौम
श्रावण	20 अगस्त	गुरु
भाद्र	19 सितम्बर	शनि
आश्विन	18 अक्टूबर	रवि
कार्तिक	17 नवम्बर	भौम
मार्ग	16 दिसम्बर	बुध
पौष	15 जनवरी	शुक्र
माघ	13 फरवरी	शनि
फालगुन	13 मार्च	रवि

अष्टमी व्रत

चैत्र	27 मार्च	शुक्र
वैशाख	26 अप्रेल	रवि
ज्येष्ठ	26 मई	भौम
आषाढ	25 जून	गुरु
आषाढ	24 जुलाई	शुक्र
श्रावण	23 अगस्त	रवि
भाद्र	21 सितम्बर	सोम
आश्विन	21 अक्टूबर	बुध
कार्तिक	19 नवम्बर	गुरु
मार्ग	19 दिसम्बर	शनि
पौष	17 जनवरी	रवि
माघ	15 फरवरी	सोम
फालगुन	16 मार्च	बुध

पूर्णिमा व्रत

चैत्र	4 अप्रेल	शनि
वैशाख	4 मई	सोम
ज्येष्ठ	2 जून	भौम
आषाढ	2 जुलाई	गुरु
आषाढ	31 जुलाई	शुक्र
श्रावण	29 अगस्त	शनि
भाद्र	28 सितम्बर	सोम
आश्विन	27 अक्टूबर	भौम
कार्तिक	25 नवम्बर	बुध
मार्ग	25 दिसम्बर	शुक्र
पौष	23 जनवरी	शनि
माघ	22 फरवरी	सोम
फालगुन	23 मार्च	बुध

संकट निवारण चतुर्थी

		चन्द्रोदय
वैशाख	8 अप्रेल	10-34 रात
ज्येष्ठ	7 मई	10-19 रात
आषाढ	5 जून	9-59 रात
आषाढ	5 जुलाई	10-13 रात
श्रावण	3 अगस्त	9-31 रात
भाद्र	1 सितम्बर	8-50 रात
आश्विन	1 अक्टूबर	8-56 रात
कार्तिक	30 अक्टूबर	8-26 रात
मार्ग	29 नवम्बर	8-59 रात
पौष	28 दिसम्बर	8-39 रात
माघ	27 जनवरी	9-14 रात
फालगुन	26 फरवरी	9-44 रात
चैत्र	27 मार्च	10-17 रात

अमावसी व्रत

वैशाख	18 अप्रेल	शनि
ज्येष्ठ	18 मई	सोम
आषाढ	16 जून	भौम
आषाढ	16 जुलाई	गुरु
श्रावण	14 अगस्त	शुक्र
भाद्र	13 सितम्बर	रवि
आश्विन	12 अक्टूबर	सोम
कार्तिक	11 नवम्बर	बुध
मार्ग	11 दिसम्बर	शुक्र
पौष	9 जनवरी	शनि
माघ	8 फरवरी	सोम
फालगुन	9 मार्च	बुध
चैत्र	7 अप्रेल	गुरु

संक्रान्ति व्रत

वैशाख	14 अप्रेल	भौम
ज्येष्ठ	15 मई	शुक्र
आषाढ	15 जून	सोम
श्रावण	17 जुलाई	शुक्र
भाद्र	17 अगस्त	सोम
आश्विन	17 सितम्बर	गुरु
कार्तिक	18 अक्टूबर	रवि
मार्ग	17 नवम्बर	भौम
पौष	16 दिसम्बर	बुध
माघ	15 जनवरी	शुक्र
फालगुन	13 फरवरी	शनि
चैत्र	14 मार्च	सोम

एकादशी व्रत

चैत्र	31 मार्च	भौम
वैशाख	29 अप्रेल	बुध
ज्येष्ठ	29 मई	शुक्र
आषाढ	28 जून	रवि
आषाढ	27 जुलाई	सोम
श्रावण	26 अगस्त	बुध
भाद्र	24 सितम्बर	गुरु
आश्विन	24 अक्टूबर	शनि
कार्तिक	22 नवम्बर	रवि
मार्ग	21 दिसम्बर	सोम
पौष	20 जनवरी	बुध
माघ	18 फरवरी	गुरु
फालगुन	19 मार्च	शनि

हमारी संस्कृति के प्रतीक:-

श्राद्ध तथा जयन्ती देखने की विधि:-

जिस दिन तिथि के साथ 'प्र' लिखा हो उस दिन का श्राद्ध अपने दिन ही आता है। यदि तिथि के साथ 'दि' लिखा हो तो उस दिन का श्राद्ध पहले दिन आता है। परन्तु जयन्ती हमेशा अपनी ही तिथि पर मनानी चाहिये। केवल तिथि क्षय होने पर जयन्ती पहले दिन और अधिक तिथि होने पर जयन्ती दूसरी तिथि पर मनानी चाहिये।

सम्पादक

आवश्यक जानकारी:- देवगोण के लिये मुहूर्त, नक्षत्र, तिथि आदि देखने की कोई आवश्यकता नहीं होती। परन्तु देवगोण के दिन यदि भौमवार या शनिवार हो तो देवगोन का आरम्भ सूर्य उदय से पहले ही करें।

काश्मीरी पर्व और त्यौहार विक्रमी 2072 के लिये

नवरेह	21 मार्च	ज़्वाला चोदाह	30 जुलाई	अन्नत चोदाह	27 सितम्बर	मोक्षदा काह	21 दिसम्बर
ज़ंगत्रय	22 मार्च	कमला काह	10 अगस्त	पितृ पक्ष शरू	28 सितम्बर	मुंजहर तहर	26 दिसम्बर
दुर्गाष्टमी	27 मार्च	नाग पंचमी	20 अगस्त	साहिब सतम	3 अक्टूबर	चेतना दिवस	27 दिसम्बर
रामनवमी	28 मार्च	पवित्र काह	26 अगस्त	दुर्गाष्टमी	21 अक्टूबर	अ.भैरव जयन्ती	4 जनवरी
वेताल षष्ठी	10 अप्रेल	श्रावण बाह	27 अगस्त	महानवमी	22 अक्टूबर	सफलता काह	5 जनवरी
वैशाखी	14 अप्रेल	रक्षा बन्धन	29 अगस्त	विजया दशमी	22 अक्टूबर	क्षयचरि मावस	9 जनवरी
अक्षय तृतीया	21 अप्रेल	चन्द षष्ठी	3 सितम्बर	पापंकुशा काह	24 अक्टूबर	शिशर संक्रांति	14 जनवरी
नारद काह	29 अप्रेल	जन्म अष्टमी	5 सितम्बर	लवंग पुनिम	27 अक्टूबर	निर्वासन दिवस	19 जनवरी
गणेश चोदाह	3 मई	कुशा मावसी	13 सितम्बर	करवा चौथ	30 अक्टूबर	साहिब सतम	31 जनवरी
ज़्येष्ठा देवी यज्ञ	9 मई	बलिदान दिवस	14 सितम्बर	दीपमाला	11 नवम्बर	षटतिला काह	4 फरवरी
ज़्येष्ट अष्टमी	26 मई	विनायक चोरम	17 सितम्बर	विश्व कर्मा पूजा	12 नवम्बर	माघ शिव १४	7 फरवरी
निर्ज़ला काह	29 मई	वराह पचम	18 सितम्बर	हरिबोधिनी काह	22 नवम्बर	माघ मावस	8 फरवरी
हार सतम	23 जुलाई	शारदा अष्टमी	21 सितम्बर	गुरु नानक जयन्ती	25 नवम्बर	गौरी तृतीया	11 फरवरी
हार अठम	24 जुलाई	वामन बाह	25 सितम्बर	भैरव अष्टमी	3 दिसम्बर	त्रिपुरा चोरम	12 फरवरी
हार नवम	25 जुलाई	वितस्ता जयन्ती	26 सितम्बर	उतपन्ना काह	7 दिसम्बर	भीष्म अठॅम	15 फरवरी

भीम सेन काह	18 फरवरी
यक्षणी चोदाह	21 फरवरी
काव पुनिम	22 फरवरी
हुर उकदोह	23 फरवरी
होराष्टमी	2 मार्च
हेरॅथ (शिवरात्रि)	6 मार्च
शिव चतुर्दशी	7 मार्च
महाशिवरात्रि	7 मार्च
वटुक परिमोज़ॅन	9 मार्च
थाल भरॅण	13 मार्च
सोन्थ	14 मार्च
तील अठॅम	16 मार्च
होली	23 मार्च
चैत्र चोदाह	6 अप्रेल
थाल भरॅण	6 अप्रेल
नवरात्रा आरम्भ	7 अप्रेल

गण्डांत आरम्भ काल		गण्डांत समाप्ति काल		गण्डांत आरम्भ काल		गण्डांत समाप्ति काल	
21 मार्च	1-08 रात से	22 मार्च	11-58 दिन तक	29 सितम्बर	9-44 प्रातः से	29 सितम्बर	8-20 रात तक
30 मार्च	4-56 रात से	1 अप्रेल	6-26 सायं तक	8 अक्टूबर	6-50 प्रातः से	8 अक्टूबर	8-10 रात तक
10 अप्रेल	1-20 रात से	10 अप्रेल	1-31 दिन तक	18 अक्टूबर	6-50 प्रातः से	18 अक्टूबर	7-27 सायं तक
18 अप्रेल	11-59 दिन से	18 अप्रेल	10-49 रात तक	26 अक्टूबर	8-55 सायं से	27 अक्टूबर	7-31 प्रातः तक
27 अप्रेल	11-59 दिन से	27 अप्रेल	1-23 रात तक	4 नवम्बर	1-31 दिन से	4 नवम्बर	2-44 रात तक
7 मई	6-58 प्रातः से	7 मई	7-03 सायं तक	14 नवम्बर	12-25 दिन से	14 नवम्बर	12-58 रात तक
15 मई	9-09 रात से	16 मई	8-14 प्रातः तक	23 नवम्बर	6-51 प्रातः से	23 नवम्बर	5-43 सायं तक
24 मई	7-52 सायं से	25 मई	9-11 दिन तक	1 दिसम्बर	9-37 रात से	2 दिसम्बर	10-37 दिन तक
3 जून	1-50 दिन से	3 जून	1-43 रात तक	11 दिसम्बर	7-07 सायं से	12 दिसम्बर	7-29 प्रातः तक
11 जून	4-00 रात से	12 जून	3-21 दिन तक	20 दिसम्बर	2-07 दिन से	20 दिसम्बर	1-21 रात तक
20 जून	4-09 रात से	21 जून	5-21 सायं तक	29 दिसम्बर	6-44 प्रातः से	29 दिसम्बर	7-32 सायं तक
30 जून	10-21 रात से	1 जुलाई	10-06 दिन तक	6 जनवरी	2-34 रात से	7 जनवरी	3-09 दिन तक
9 जुलाई	9-25 दिन से	9 जुलाई	8-52 रात तक	16 जनवरी	7-33 सायं से	17 जनवरी	6-54 प्रातः तक
18 जुलाई	12-00 दिन से	18 जुलाई	1-10 रात तक	25 जनवरी	3-37 दिन से	25 जनवरी	4-20 रात तक
28 जुलाई	7-52 प्रातः से	28 जुलाई	7-41 सायं तक	3 फरवरी	11-40 दिन से	3 फरवरी	12-25 रात तक
5 अगस्त	3-22 दिन से	5 अगस्त	2-38 रात तक	12 फरवरी	1-42 रात से	13 फरवरी	12-48 दिन तक
14 अगस्त	8-09 सायं से	15 अगस्त	8-07 प्रातः तक	21 फरवरी	11-06 रात से	22 फरवरी	11-56 दिन तक
24 अगसत	5-03 सायं से	25 अगसत	5-09 प्रातः तक	1 मार्च	8-02 रात से	2 मार्च	9-03 दिन तक
1 सितम्बर	11-25 रात से	2 सितम्बर	10-19 प्रातः तक	11 मार्च	10-22 दिन से	11 मार्च	9-05 रात तक
10 सितम्बर	12-57 रात से	11 सितम्बर	2-15 प्रातः तक	20 मार्च	5-09 प्रातः से	20 मार्च	6-08 सायं तक
20 सितम्बर	12-45 रात से	21 सितम्बर	1-11 दिन तक	30 मार्च	5-17 प्रातः से	30 मार्च	6-12 सायं तक

पंचक

के आरम्भ तथा समाप्ति काल

दिनांक	आरम्भ		दिनांक	समाप्ति
18 मार्च	6:59 AM	से	21 मार्च	6:30 AM
14 अप्रेल	3:53 PM	से	18 अप्रेल	5:22 PM
11 मई	10:19 PM	से	15 मई	2:41 AM
7 जून	3:41 AM	से	12 जून	9:40 AM
5 जुलाई	10:01 AM	से	9 जुलाई	3:07 PM
1 अगस्त	6:30 PM	से	5 अगस्त	8:57 PM
28 अगस्त	4:52 AM	से	1 सितम्बर	4:49 AM
25 सितम्बर	3:36 PM	से	29 सितम्बर	3:00 PM
22 अक्टूबर	12:50 AM	से	26 अक्टूबर	2:13 AM
19 नवम्बर	7:35 AM	से	23 नवम्बर	12:18 PM
16 दिसम्बर	12:55 PM	से	20 दिसम्बर	7:45 PM
12 जनवरी	7:18 PM	से	16 जनवरी	1:13 AM
8 फरवरी	4:12 AM	से	12 फरवरी	7:13 AM
7 मार्च	2:51 PM	से	11 मार्च	3:42 PM
3 अप्रेल	1:15 AM	से	7 अप्रेल	2:21 AM

पंचक के विषय में

आवश्यक जानकारी:

धनिष्ट नक्षत्र के उत्तरार्ध से रेवती नक्षत्र के अन्त पांच नक्षत्रों (धनिष्ट शतभिशक, पू.भा., उ.भा., रेवती) वाली तिथियाँ पंचक कहलाती हैं। पंचक में दक्षिण दिशा की ओर यात्रा पर जाना, तेल, मिट्टी के बरतन, लकडी काटनी या घर लानी, दाहसंस्कार, छलुन तथा मस मुर्चॅरून, मेंहन्दी लगाना इत्यादि निषेध है। शेष सभी कार्यों के लिए पंचक शुभ माना जाता है। विवाह, यज्ञोपवीत जैसे शुभ कार्य पंचक में किये जा सकते हैं, एसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है। पंचक में यदि यात्रा पर जाना हो तो मुहूर्त का विचार अवश्य करें।

यदि किसी की मृत्यु पंचक में हो तो उस स्थिति में किसी विद्वान ब्रह्मण से पंचक शान्ति करवाने का विधान है।

ईस्वी 2015-16 के लिए

ग्रह संचार

सूर्य का राशि संचार

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
14 अप्रेल	मेष	1:46 PM
15 मई	वृष	10:37 AM
15 जून	मिथुन	5:11 PM
16 जुलाई	कर्कट	4:02 AM
17 अगस्त	सिंह	12:24 PM
17 सितम्बर	कन्या	12:19 PM
17 अक्टूबर	तुला	12:16 AM
16 नवम्बर	वृश्चिक	12:03 AM
16 दिसम्बर	धनु	2:42 PM
14 जनवरी 2016	मकर	1:26 AM
13 फरवरी	कुम्भ	2:25 PM
14 मार्च	मीन	11:17 AM

भौम का राशि संचार

(विक्रमी 2072 के आरम्भ मीन में भौम)

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
23 मार्च	मेष	10:46 PM
3 मई	वृष	11:53 PM
15 जून	मिथुन	1:08 AM
30 जुलाई	कर्कट	2:18 AM
15 सितम्बर	सिंह	9:29 PM
3 नवम्बर	कन्या	8:07 AM
24 सितम्बर	तुला	5:57 AM
20 फरवरी	वृश्चिक	4:42 PM

बुध का राशि संचार

(विक्रमी 2072 के आरम्भ कुम्भ में बुध)

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
27 मार्च	मीन	1:34 AM
12 अप्रेल	मेष	8:40 AM
27 अप्रेल	वृष	12:04 PM
19 मई	वक्री	7:17 AM
11 जून	मार्गी	4:02 AM
5 जुलाई	मिथुन	12:13 PM
20 जुलाई	कर्कट	11:49 PM
4 अगस्त	सिंह	6:16 PM
23 अगस्त	कन्या	8:38 AM
17 सितमबर	वक्री	11:38 AM
9 अक्टूबर	मार्गी	8:27 PM
29 अक्टूबर	तुला	10:42 PM
17 नवम्बर	वृश्चिक	7:30 AM
6 दिसम्बर	धनु	12:01 PM
26 दिसमबर	मकर	11:49 PM
5 जनवरी 2016	वक्री	6:34 PM
14 जनवरी	वक्री धनु	3:01 PM
25 जनवरी	मार्गी	3:20 AM
8 फरवरी	मकर	3:06 AM
1 मार्च	कुम्भ	12:01 AM
18 मार्च	मीन	4:36 AM
2 अप्रेल	मेष	3:44 PM

गुरु का राशि संचार

(विक्रमी 2072 के आरम्भ कर्क में वक्री गुरु)

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
8 अप्रेल	मार्गी	10:23 PM
14 जुलाई	सिंह	6:23 AM
8 जनवरी	वक्री	10:05 AM

शुक्र का राशि संचार

(विक्रमी 2072 के आरम्भ मेष में शुक्र)

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
6 अप्रेल	वृष	7:43 PM
2 मई	मिथुन	8:33 PM
30 मई	कर्क	8:55 PM
5 जुलाई	सिंह	9:50 AM
25 जुलाई	वक्री	2:58 PM
13 अगस्त	(व) कर्क	5:23 PM
6 सितम्बर	मार्गी	2:01 PM
30 सितम्बर	सिंह	4:14 AM
3 नवम्बर	कन्या	7:30 AM
30 नवम्बर	तुला	7:45 AM
25 दिसम्बर	वृश्चिक	3:15 PM
19 जनवरी	धनु	6:20 AM
12 फरवरी	मकर	2:49 PM
7 मार्च	कुम्भ	9:06 PM
31 मार्च	मीन	3:23 AM

शनि का राशि संचार

(विक्रमी 2072 के आरम्भ में वृश्चिक में शनि)

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
2 अगस्त	मार्गी	11:24 AM
25 मार्च	वक्री	3:17 PM

पूरे वर्ष शनि वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

राहु व केतु का राशि संचार

(विक्रमी 2072 के आरम्भ में कन्या में राहु व मीन में केतु)

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
29 जनवरी 16	सिंह	1:21 AM
29 जनवरी 16	कुम्भ	1:21 AM

एक-श्लोकी- नवग्रहस्तोत्रम्

ब्रह्मा- मुरारि:- त्रिपुरान्त- कारी
भानु: शशी भूमिसुतो बुधश्च,
गुरुश्च शुक्र: शनि-राहु केतव:
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

विक्रमी 2072 के दस अधिकारी

रस का स्वामी
शनि

वर्षा का स्वामी
चन्द्रमा

धातुओ के स्वामी
चन्द्रमा

फलों का स्वामी
चन्द्रमा

वर्ष का राजा
शनि



वर्ष का मन्त्री
भौम

धान्य का स्वामी
बुध

अजनास का स्वामी
गुरु

मेघ का स्वामी
चन्द्रमा

वर्ष का वाहन
भैसा

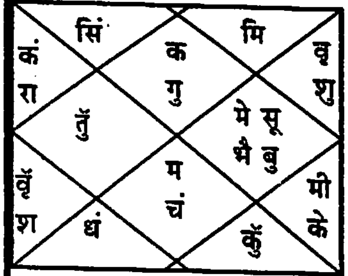
वर्ष का नाम
कीलक

रक्षा मन्त्री
चन्द्रमा

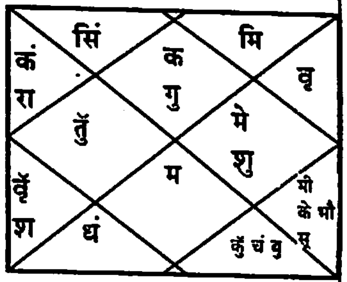
धन का स्वामी
गुरु

आषाढ़ नवमी
25 ज़ुलाई शनिवार

विक्रमी 2072 की भविष्यवाणी



जगत् लग्न कुण्डली



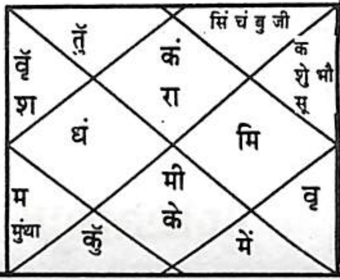
नव वर्ष प्रवेश कुण्डली

जगत–कुण्डली एवं नव वर्ष प्रेवश कुण्डली में कर्कट लग्न उदित हुआ है ग्रहस्थिति के अनुसार वर्षलग्न का स्वामी चन्द्रमा अष्टम भाव में मित्र बुध के साथ स्थित है तथा शनि पंचम भाव में शत्रु राशिगत है किन्तु उसपर उच्चस्थ गुरु की शुभ मित्र दृष्टि पडने के कारण अमरीका, रूस, भारत, कनेडा, फ्रांस, इंगलेण्ड आदि देशों के सामने इस्लामी कट्टरवाद एवं आतंकवादी घटनाओं से विश्व में अस्थिरता एवं अशान्ति का माहौल बना रहेगा। आतंकवादी हिंसकों, घटनाओं एवं विस्फोटकों के कारण ईराक, अफगानिस्तान, सीरया व पाकिस्तान आदि कुछ देश विशेष रूप से प्रभावित होंगे। चीन – पाकिस्तान, तथा भारत के साथ सीमा अतिक्रमण के साथ साथ आतंकवाद, घुसपैठ से सम्बन्धित जटिल समस्याओं के कारण युद्ध जन्य वात:वरण बना रहेगा। गुरू की मित्रदृष्टि होने से भारत में अनेक प्रकार के विकास योजनाओ का विस्तार होगा एवं देश की अर्थव्यवस्था में काफी सुधार होगा। श्री नरेन्द्र मोदी जी का शपथग्रहण वृश्चिक लग्न में लेना सशक्त एवं प्रभावशाली सरकार का द्योतक है तथा अपने विवेक एवं कुशल प्रबन्धन के कारण देश को उन्नति के पथ पर लाने में विशेष योगदान रहेगा। सरकारी योजनाओं को बेहतर तरीके से क्रियान्वित किया जाएगा। भारत विदेश नीति के अन्तर्गत विश्व में प्रभावस्वरूप एवं महत्व पूर्ण

भूमिका निभायेगा। विपक्ष के अवरोधों एवं आलोचनाओं के बावजूद मोदी सरकार भारत को विकास के पथपर अग्रंसर करने में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त करेगी। भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी बढ़ती महंगाई, पेयजल, बिजली आदि समस्याओं का निवारण यथा सम्भव प्रयास करके भारत को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने की भरपूर कोशिश होगी। दिल्ली, झारखण्ड आदि प्रदेशों में आगामी विधान सभा में भाजपा को विजय श्री प्राप्त होगी एवं जम्मू कशमीर में गडजोड की सरकार बनेगी।

जम्मू काश्मीर :

69 वां वर्ष स्वतन्त्र भारत चक्र



जम्मू काश्मीर की प्रभाव राशि तुला तथा नाम राशि मकर है। वर्तमान ग्रहस्थिति के अनुसार आगामी विधानसभा चुनावों में भाजपा प्रभाव क्षेत्र जम्मू तथा पी.डी.पी का प्रभाव क्षेत्र काश्मीर होने के संकेत हैं। कुछ अन्य दलों का वोटप्रतिशत कम रहेगा फिरभी जोड़तोड़ की राजनीति से गडबंधन सरकार बनने का योग है। कांग्रस तथा नैशनल कांफ्रंस को विषम परस्थितियों का सामना करना पडेगा। नवीन गठबंधन सरकार राज्य में केन्द्र की सहायता से स्वास्थ्य, रेलयातायात र्प्यटन एवं अनेक विकास योजनाओं की ओर विशेष ध्यान देगी। केन्द्र सरकार की आर्थिक सहायता के बावजूद राज्य सरकार आत्मनिर्भर होने के बजाय दिनोंदिन आश्रित होता जाएगां प्रान्त में हडताल, केन्द्रविरोधी राजनीति, पाकप्रेरित आतंकी एवं विध्वंसक कार्यवाहियों से राज्य का वात:वरण अस्तव्यस्त रहेंगा एवं विकास के कार्यों में रूकावटें पैदा करेंगा।

★ ★ ★

ग्रहण विवरण सम्वत् विक्रमी 2072

वि. 2072 (ईस्वी 2015-16) में भूमण्डल पर चार ग्रहण घटित होंगे। जिनमें से भारत में तीन ग्रहण दिखाई देंगे। 13 सितम्बर 2015 का खण्डग्रास सूर्य ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा।

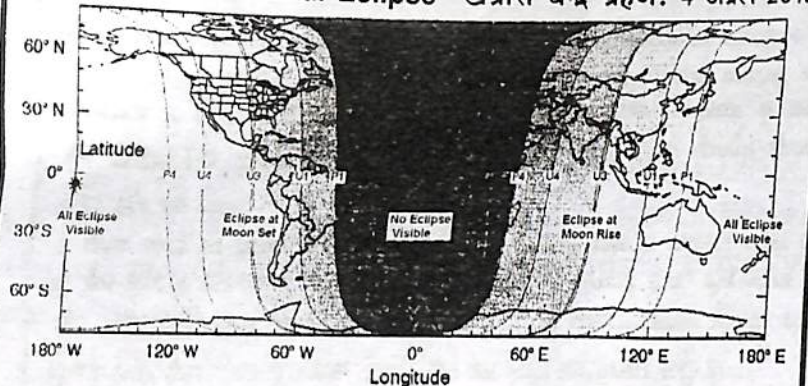
१. खग्रास चन्द्र ग्रहण: 4 अप्रैल 2015 चैत्र शुक्लपक्ष पूर्णिमा शनिवार को ग्रस्तोदय रूप में खग्रास चन्द्र ग्रहण सम्पूर्ण भारतवर्ष में दिखाई देगा। इस ग्रहण का आरम्भ काल व समाप्ति काल I.S.T समय अनुसार 5:24 सायं से आरम्भ होगा तथा समाप्ति काल सायं 5:36 बजे होगा। किन्तु यह ग्रहण अफगानिस्तान, पश्चिम पाकिस्तान, ईरान, ईराक, इंग्लैण्ड व यूरपीय देशों, दक्षिणी अफ्रीका व रूस आदि देशों में दिखाई नहीं देगा।

२. खण्डग्रास सूर्य ग्रहण: 13 सितम्बर 2015 (भाद्र कृष्ण पक्ष अमावसी रविवार) को खण्डग्रास सूर्य ग्रहण भारतवर्ष में बिलकुल नहीं दिखई देगा। अत: भारत में सूतक, स्नान, दान व्रत आदि का विचार नहीं होगा।

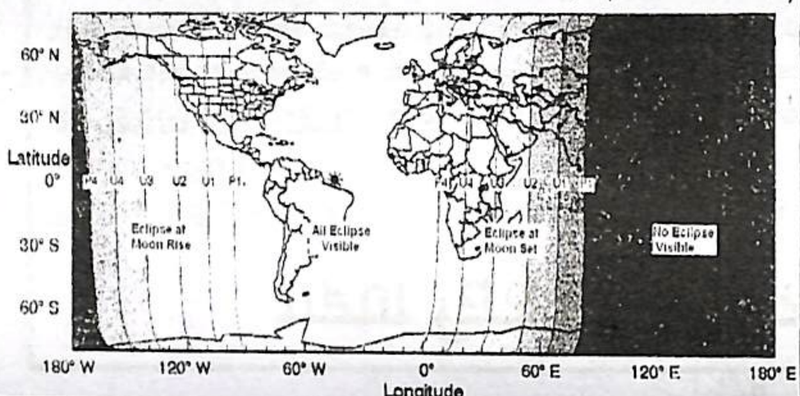
३. खग्रास चन्द्र ग्रहण: (28 सितम्बर 2015) भाद्र शुक्लपक्ष पूर्णिमा सोमवार को यह ग्रहण भी भारत के पश्चिम राजस्थान, पश्चिम गुजरात के कुछ क्षेत्रों में चन्द्रास्त के समय कुछ ही मिन्टों के लिए दिखाई देगा, शेष भारत के किसी भी प्रान्त में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। अत: धर्मिक कृत्य व सूतक आदि का विचार न करें। इस ग्रहण का आरम्भ काल व समाप्ति काल I.S.T समय अनुसार 6:37 प्रात: से आरम्भ होगा तथा समाप्ति काल 9:57 दिन तक होगा।

४. ग्रस्तोदय खण्डग्रास सूर्यग्रहण: 8/9 मार्च 2016 फाल्गुन कृष्ण पक्ष अमावसी भौमवार/बुधवार की मध्य रात्रि के पश्चात भारत में खण्डग्रास व ग्रस्तोदय खण्डग्रास रूप में दिखाई देगा। यह ग्रहण भारतवर्ष के उतर पश्चिम व पश्चिमी भागों यानि जम्मू कश्मीर के पश्चिमी भागों, पश्चिमी पंजाब, पश्चिमी राजिस्तान, पश्चिमी गुजरात एवं कुछ पश्चिमी महाराष्ट्र आदि प्रान्तों में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। अत: इन प्रान्तों में धार्मिक कृत्य, सूतक आदि का विचार नहीं होगा। भारतीय समयानुसार यह ग्रहण रात के 4:49 बजे प्रारम्भ होगा व समाप्त 10:05 बजे दिन को होगा।

(Picture1) Total Lunar Eclipse खग्रास चन्द्र ग्रहण: 4 अप्रेल 2015

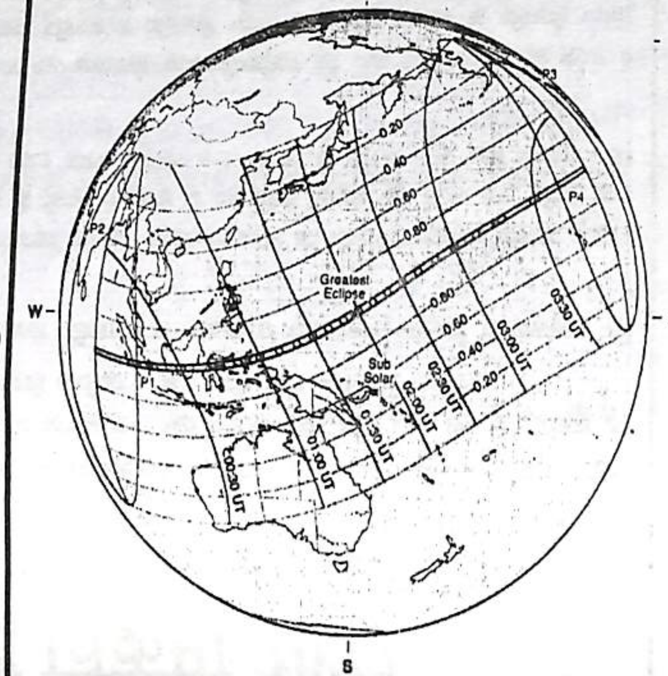


(Picture 2)Total Lunar Eclipse खग्रास चन्द्र ग्रहण(28 सितम्बर 2015)



(Picture 3) Total Solar Eclipse

ग्रस्तोदय खण्डग्रास सूर्यग्रहण: 8/9 मार्च 2016



Circumstances at Greatest Eclipse: 01:57:11.5 UT

आय-व्यय चक्र (आमदनी खर्च चक्र)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	8	2	8	2	5	8	2	8	5	14	14	5
व्यय	5	14	11	8	5	11	14	5	11	11	11	11

लाभ और व्यय के अंकों के जोड से एक कम करके 8 से भाग दें, भाग देने के पश्चात यदि

1 बाकी बचे तो यह वर्ष हर प्रकार से लाभदायक मनोवांछित योजनाए् सफल होंगी, धनलाभ में वृद्धिहोगी, विद्यार्थी वर्ग को सफलता प्राप्त होगी मनोरंजक कार्यो की ओर प्रवृति बढेगी।

2 बचे तो धनलाभ मध्यम, किसी मंगलकार्य पर धन खर्च होगा, मान आदर में वृद्धि, परिश्रम से सफलता, व्यापार से लाभ प्राप्त होगा।

3 बचे तो लाभ बहुत कम, व्यय अधिक रहेगा, संघर्ष एवं भागदौड अधिक, पारिवारिक चिन्ता एवं समस्यायें स्वसस्थ्य के विषय में सावधानी बरतें, चोट आदि की सम्भावना।

4 बनते कार्यमें विघ्न एवं समस्याएं उत्पन्न होंगी, रोग आदि पर धन का खर्च, आर्थिक एवं घरेलू उलझनों से मानसिक तनाव रहेगा।

5 बाकी बचे तो आय कम व व्यय अधिक बनते कार्यो में विघ्न उत्पन्न होंगे, परिवार के सदस्ययों के साथ मतभेद, स्वभाव में तेज़ी रहेगी।

6 बाकी बचे तो वर्ष आपके स्वप्नों एवं भाग्योन्नति में सहायक सिद्ध होगा, मानप्रतिष्ठा एवं आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी, विद्यार्थियों के लिये सफलता प्रदान करने वाला वर्ष होगा, शुभ कार्यो पर धनका खर्च होगा।

7 बाकी बचे तो व्यापार व राजदरबार से आर्थिक लाभ, आर्थिक साधनों में वृद्धि, ज़मीन जायदाद आदि कार्यो पर धन का खर्च, मनोवांछित योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी। विद्यार्थी वर्ग को सफलता प्राप्त होगीं

यदि 8 अर्थात् ० बचे तो मानसिक परेशानियाँ, पारिवारिक परेशानी, राज्यदरबार से अशान्ति एवं स्थान परिवर्तन का योग।

राहु काल के विषय में जानकारी

सूर्य उदय से सूर्य अस्त के मध्य प्रतिदिन लगभग 01 घण्टा 30 मिनट की अवधि राहु काल मानी गयी है। हमारे ऋषि-मुनियों ने राहुकाल में कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ करने से मना किया है। राहुकाल में किसी भी शुभ कार्य का प्रारम्भ अशुभ सिद्ध होता है। जैसे सूर्य ग्रहण के दिन राहु सूर्य को ग्रस कर ग्रहण में बदल देता है वैसे ही राहुकाल में प्रारम्भ किये गये शुभ कार्य को ग्रहण लग जाता है, अर्थात् शुभता का परिणाम अशुभ होता है। इन सभी बातों को सार्वजनिक तौर पर सिद्ध कर इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि राहुकाल में किसी भी शुभ कार्य का प्रारम्भ नहीं करना चाहिए, जो कार्य पहले से चल रहा है, वह चलता रहे उसमें कोई कमी नहीं आती। बस शुरूआत नहीं करनी चाहिए। हमारे दक्षिण व पश्चिम भारत में लोग इस राहुकाल का विशेष ध्यान रखकर अपने शुभ कार्यो को प्रारम्भ करते हैं। राहुकाल का समय और अवधि निकालने के लिये हम सबसे पहले सूर्योदय और सूर्यास्त निकालकर दिनमान निकाल लेते हैं और दिनमान को आठ बराबर भागों में बांट लेते हैं। एक हिस्सा लगभग 1 घण्टा 30 मिनट का होगा। अब रविवार से शनिवार तक (सातों दिन) क्रमशः 8वां, 2रा, 7वां, 5वां, 6ठा, 4था और 3रा भाग राहुकाल होगा। इस प्रकार प्रतिदिन का राहुकाल निकाल कर आप अपने शुभ कार्यो के प्रारम्भ को सुनिश्चित कर सकते हैं। इस वर्ष हमने विक्रमी २०७२ सम्वत् (ईस्वी 2015-16) का राहु काल जम्मू के रेखंश व अक्षांश पर गणित कर प्रकाशित किया है अतः आपने सुजाव हमें vijayeshwer@yahoo.com पर अवश्य बेजें।

सम्पादक

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
1–मार्च	रवि	5:00 PM	से	6:26 PM
2–मार्च	सोम	8:25 AM	से	9:51 AM
3–मार्च	भौम	3:35 PM	से	5:01 PM
4–मार्च	बुध	12:43 PM	से	2:09 PM
5–मार्च	गुरु	2:09 PM	से	3:36 PM
6–मार्च	शुक्र	11:15 AM	से	12:42 PM
7–मार्च	शनि	9:48 AM	से	11:15 AM
8–मार्च	रवि	5:04 PM	से	6:31 PM
9–मार्च	सोम	8:18 AM	से	9:46 AM
10–मार्च	भौम	3:37 PM	से	5:05 PM
11–मार्च	बुध	12:41 PM	से	2:09 PM
12–मार्च	गुरु	2:09 PM	से	3:38 PM
13–मार्च	शुक्र	11:12 AM	से	12:40 PM
14–मार्च	शनि	9:42 AM	से	11:11 AM
15–मार्च	रवि	5:07 PM	से	6:37 PM
16–मार्च	सोम	8:11 AM	से	9:41 AM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
17–मार्च	भौम	3:39 PM	से	5:08 PM
18–मार्च	बुध	12:39 PM	से	2:09 PM
19–मार्च	गुरु	2:09 PM	से	3:39 PM
20–मार्च	शुक्र	11:08 AM	से	12:38 PM
21–मार्च	शनि	9:37 AM	से	11:07 AM
22–मार्च	रवि	5:11 PM	से	6:42 PM
23–मार्च	सोम	8:04 AM	से	9:35 AM
24–मार्च	भौम	3:40 PM	से	5:12 PM
25–मार्च	बुध	12:37 PM	से	2:09 PM
26–मार्च	गुरु	2:09 PM	से	3:41 PM
27–मार्च	शुक्र	11:04 AM	से	12:36 PM
28–मार्च	शनि	9:31 AM	से	11:04 AM
29–मार्च	रवि	5:14 PM	से	6:47 PM
30–मार्च	सोम	7:56 AM	से	9:29 AM
31–मार्च	भौम	3:42 PM	से	5:15 PM
1–अप्रेल	बुध	12:35 PM	से	2:08 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
2-अप्रेल	गुरु	2:08 PM	से	3:42 PM
3-अप्रेल	शुक्र	11:00 AM	से	12:34 PM
4-अप्रेल	शनि	9:25 AM	से	11:00 AM
5-अप्रेल	रवि	5:17 PM	से	6:52 PM
6-अप्रेल	सोम	7:49 AM	से	9:24 AM
7-अप्रेल	भौम	3:43 PM	से	5:18 PM
8-अप्रेल	बुध	12:33 PM	से	2:08 PM
9-अप्रेल	गुरु	2:08 PM	से	3:43 PM
10-अप्रेल	शुक्र	10:57 AM	से	12:32 PM
11-अप्रेल	शनि	9:20 AM	से	10:56 AM
12-अप्रेल	रवि	5:20 PM	से	6:57 PM
13-अप्रेल	सोम	7:42 AM	से	9:19 AM
14-अप्रेल	भौम	3:45 PM	से	5:21 PM
15-अप्रेल	बुध	12:31 PM	से	2:08 PM
16-अप्रेल	गुरु	2:08 PM	से	3:45 PM
17-अप्रेल	शुक्र	10:53 AM	से	12:31 PM
18-अप्रेल	शनि	9:15 AM	से	10:53 AM
19-अप्रेल	रवि	5:24 PM	से	7:02 PM
20-अप्रेल	सोम	7:36 AM	से	9:14 AM
21-अप्रेल	भौम	3:46 PM	से	5:25 PM
22-अप्रेल	बुध	12:29 PM	से	2:08 PM
23-अप्रेल	गुरु	2:08 PM	से	3:47 PM
24-अप्रेल	शुक्र	10:50 AM	से	12:29 PM
25-अप्रेल	शनि	9:10 AM	से	10:50 AM
26-अप्रेल	रवि	5:27 PM	से	7:07 PM
27-अप्रेल	सोम	7:29 AM	से	9:09 AM
28-अप्रेल	भौम	3:48 PM	से	5:28 PM
29-अप्रेल	बुध	12:28 PM	से	2:08 PM
30-अप्रेल	गुरु	2:08 PM	से	3:49 PM
1-मई	शुक्र	10:47 AM	से	12:28 PM
2-मई	शनि	9:06 AM	से	10:47 AM
3-मई	रवि	5:31 PM	से	7:12 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
4–मई	सोम	7:24 AM	से	9:05 AM
5–मई	भौम	3:50 PM	से	5:32 PM
6–मई	बुध	12:27 PM	से	2:09 PM
7–मई	गुरु	2:09 PM	से	3:51 PM
8–मई	शुक्र	10:45 AM	से	12:27 PM
9–मई	शनि	9:03 AM	से	10:45 AM
10–मई	रवि	5:34 PM	से	7:17 PM
11–मई	सोम	7:19 AM	से	9:02 AM
12–मई	भौम	3:53 PM	से	5:35 PM
13–मई	बुध	12:27 PM	से	2:10 PM
14–मई	गुरु	2:10 PM	से	3:53 PM
15–मई	शुक्र	10:44 AM	से	12:27 PM
16–मई	शनि	9:00 AM	से	10:44 AM
17–मई	रवि	5:38 PM	से	7:22 PM
18–मई	सोम	7:16 AM	से	8:59 AM
19–मई	भौम	3:55 PM	से	5:39 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
20–मई	बुध	12:27 PM	से	2:11 PM
21–मई	गुरु	2:12 PM	से	3:56 PM
22–मई	शुक्र	10:43 AM	से	12:27 PM
23–मई	शनि	8:58 AM	से	10:43 AM
24–मई	रवि	5:42 PM	से	7:27 PM
25–मई	सोम	7:13 AM	से	8:58 AM
26–मई	भौम	3:58 PM	से	5:43 PM
27–मई	बुध	12:28 PM	से	2:13 PM
28–मई	गुरु	2:13 PM	से	3:59 PM
29–मई	शुक्र	10:43 AM	से	12:28 PM
30–मई	शनि	8:57 AM	से	10:43 AM
31–मई	रवि	5:45 PM	से	7:31 PM
1–जून	सोम	7:11 AM	से	8:57 AM
2–जून	भौम	4:00 PM	से	5:46 PM
3–जून	बुध	12:29 PM	से	2:15 PM
4–जून	गुरु	2:15 PM	से	4:01 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
5-जून	शुक्र	10:43 AM	से	12:29 PM
6-जून	शनि	8:57 AM	से	10:43 AM
7-जून	रवि	5:48 PM	से	7:35 PM
8-जून	सोम	7:10 AM	से	8:57 AM
9-जून	भौम	4:03 PM	से	5:49 PM
10-जून	बुध	12:30 PM	से	2:16 PM
11-जून	गुरु	2:17 PM	से	4:03 PM
12-जून	शुक्र	10:44 AM	से	12:30 PM
13-जून	शनि	8:57 AM	से	10:44 AM
14-जून	रवि	5:51 PM	से	7:38 PM
15-जून	सोम	7:11 AM	से	8:57 AM
16-जून	भौम	4:05 PM	से	5:52 PM
17-जून	बुध	12:31 PM	से	2:18 PM
18-जून	गुरु	2:18 PM	से	4:05 PM
19-जून	शुक्र	10:45 AM	से	12:32 PM
20-जून	शनि	8:58 AM	से	10:45 AM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
21-जून	रवि	5:53 PM	से	7:40 PM
22-जून	सोम	7:12 AM	से	8:59 AM
23-जून	भौम	4:06 PM	से	5:53 PM
24-जून	बुध	12:33 PM	से	2:20 PM
25-जून	गुरु	2:20 PM	से	4:07 PM
26-जून	शुक्र	10:46 AM	से	12:33 PM
27-जून	शनि	9:00 AM	से	10:47 AM
28-जून	रवि	5:54 PM	से	7:41 PM
29-जून	सोम	7:14 AM	से	9:00 AM
30-जून	भौम	4:07 PM	से	5:54 PM
1-जुलाई	बुध	12:34 PM	से	2:21 PM
2-जुलाई	गुरु	2:21 PM	से	4:08 PM
3-जुलाई	शुक्र	10:48 AM	से	12:35 PM
4-जुलाई	शनि	9:02 AM	से	10:48 AM
5-जुलाई	रवि	5:54 PM	से	7:40 PM
6-जुलाई	सोम	7:16 AM	से	9:02 AM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
7-जुलाई	भौम	4:08 PM	से	5:54 PM
8-जुलाई	बुध	12:35 PM	से	2:22 PM
9-जुलाई	गुरु	2:22 PM	से	4:08 PM
10-जुलाई	शुक्र	10:50 AM	से	12:36 PM
11-जुलाई	शनि	9:04 AM	से	10:50 AM
12-जुलाई	रवि	5:53 PM	से	7:39 PM
13-जुलाई	सोम	7:19 AM	से	9:05 AM
14-जुलाई	भौम	4:07 PM	से	5:53 PM
15-जुलाई	बुध	12:36 PM	से	2:22 PM
16-जुलाई	गुरु	2:22 PM	से	4:07 PM
17-जुलाई	शुक्र	10:51 AM	से	12:36 PM
18-जुलाई	शनि	9:06 AM	से	10:51 AM
19-जुलाई	रवि	5:51 PM	से	7:36 PM
20-जुलाई	सोम	7:22 AM	से	9:07 AM
21-जुलाई	भौम	4:06 PM	से	5:51 PM
22-जुलाई	बुध	12:37 PM	से	2:21 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
23-जुलाई	गुरु	2:21 PM	से	4:05 PM
24-जुलाई	शुक्र	10:53 AM	से	12:37 PM
25-जुलाई	शनि	9:09 AM	से	10:53 AM
26-जुलाई	रवि	5:48 PM	से	7:32 PM
27-जुलाई	सोम	7:26 AM	से	9:09 AM
28-जुलाई	भौम	4:04 PM	से	5:47 PM
29-जुलाई	बुध	12:37 PM	से	2:20 PM
30-जुलाई	गुरु	2:20 PM	से	4:03 PM
31-जुलाई	शुक्र	10:54 AM	से	12:37 PM
1-अगस्त	शनि	9:11 AM	से	10:54 AM
2-अगस्त	रवि	5:44 PM	से	7:27 PM
3-अगस्त	सोम	7:29 AM	से	9:12 AM
4-अगस्त	भौम	4:01 PM	से	5:43 PM
5-अगस्त	बुध	12:36 PM	से	2:18 PM
6-अगस्त	गुरु	2:18 PM	से	4:00 PM
7-अगस्त	शुक्र	10:54 AM	से	12:36 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
8-अगस्त	शनि	9:13 AM	से	10:55 AM
9-अगस्त	रवि	5:39 PM	से	7:21 PM
10-अगस्त	सोम	7:33 AM	से	9:14 AM
11-अगस्त	भौम	3:57 PM	से	5:38 PM
12-अगस्त	बुध	12:35 PM	से	2:16 PM
13-अगस्त	गुरु	2;16 PM	से	3:56 PM
14-अगस्त	शुक्र	10:55 AM	से	12:35 PM
15-अगस्त	शनि	9:15 AM	से	10:55 AM
16-अगस्त	रवि	5:34 PM	से	7:14 PM
17-अगस्त	सोम	7:36 AM	से	9:15 AM
18-अगस्त	भौम	3:53 PM	से	5:32 PM
19-अगस्त	बुध	12:34 PM	से	2:13 PM
20-अगस्त	गुरु	2:13 PM	से	3:51 PM
21-अगस्त	शुक्र	10:55 AM	से	12:33 PM
22-अगस्त	शनि	9:16 AM	से	10:55 AM
23-अगस्त	रवि	5:27 PM	से	7:06 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
24-अगस्त	सोम	7:39 AM	से	9:17 AM
25-अगस्त	भौम	3:48 PM	से	5:26 PM
26-अगस्त	बुध	12:32 PM	से	2:10 PM
27-अगस्त	गुरु	2:09 PM	से	3:46 PM
28-अगस्त	शुक्र	10:55 AM	से	12:32 PM
29-अगस्त	शनि	9:18 AM	से	10:55 AM
30-अगस्त	रवि	5:21 PM	से	6:57 PM
31-अगस्त	सोम	7:42 AM	से	9:18 AM
1-सितम्बर	भौम	3:42 PM	से	5:19 PM
2-सितम्बर	बुध	12:30 PM	से	2:06 PM
3-सितम्बर	गुरु	2:05 PM	से	3:41 PM
4-सितम्बर	शुक्र	10:54 AM	से	12:29 PM
5-सितम्बर	शनि	9:19 AM	से	10:54 AM
6-सितम्बर	रवि	5:13 PM	से	6:48 PM
7-सितम्बर	सोम	7:45 AM	से	9:19 AM
8-सितम्बर	भौम	3:37 PM	से	5:11 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
9-सितम्बर	बुध	12:28 PM	से	2:02 PM
10-सितम्बर	गुरु	2:01 PM	से	3:35 PM
11-सितम्बर	शुक्र	10:53 AM	से	12:27 PM
12-सितम्बर	शनि	9:20 AM	से	10:53 AM
13-सितम्बर	रवि	5:06 PM	से	6:39 PM
14-सितम्बर	सोम	7:47 AM	से	9:20 AM
15-सितम्बर	भौम	3:31 PM	से	5:03 PM
16-सितम्बर	बुध	12:25 PM	से	1:58 PM
17-सितम्बर	गुरु	1:57 PM	से	3:29 PM
18-सितम्बर	शुक्र	10:53 AM	से	12:25 PM
19-सितम्बर	शनि	9:21 AM	से	10:53 AM
20-सितम्बर	रवि	4:58 PM	से	6:29 PM
21-सितम्बर	सोम	7:50 AM	से	9:21 AM
22-सितम्बर	भौम	3:25 PM	से	4:56 PM
23-सितम्बर	बुध	12:23 PM	से	1:53 PM
24-सितम्बर	गुरु	1:53 PM	से	3:23 PM
25-सितम्बर	शुक्र	10:52 AM	से	12:22 PM
26-सितम्बर	शनि	9:22 AM	से	10:52 AM
27-सितम्बर	रवि	4:50 PM	से	6:20 PM
28-सितम्बर	सोम	7:53 AM	से	9:22 AM
29-सितम्बर	भौम	3:19 PM	से	4:48 PM
30-सितम्बर	बुध	12:20 PM	से	1:49 PM
1-अक्टूबर	गुरु	1:49 PM	से	3:17 PM
2-अक्टूबर	शुक्र	10:51 AM	से	12:20 PM
3-अक्टूबर	शनि	9:23 AM	से	10:51 AM
4-अक्टूबर	रवि	4:43 PM	से	6:11 PM
5-अक्टूबर	सोम	7:56 AM	से	9:24 AM
6-अक्टूबर	भौम	3:13 PM	से	4:41 PM
7-अक्टूबर	बुध	12:18 PM	से	1:45 PM
8-अक्टूबर	गुरु	1:45 PM	से	3:12 PM
9-अक्टूबर	शुक्र	10:51 AM	से	12:18 PM
10-अक्टूबर	शनि	9:25 AM	से	10:51 AM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
11-अक्टूबर	रवि	4:36 PM	से	6:02 PM
12-अक्टूबर	सोम	7:59 AM	से	9:25 AM
13-अक्टूबर	भौम	3:08 PM	से	4:34 PM
14-अक्टूबर	बुध	12:16 PM	से	1:42 PM
15-अक्टूबर	गुरु	1:41 PM	से	3:07 PM
16-अक्टूबर	शुक्र	10:51 AM	से	12:16 PM
17-अक्टूबर	शनि	9:26 AM	से	10:51 AM
18-अक्टूबर	रवि	4:29 PM	से	5:53 PM
19-अक्टूबर	सोम	8:03 AM	से	9:27 AM
20-अक्टूबर	भौम	3:03 PM	से	4:27 PM
21-अक्टूबर	बुध	12:15 PM	से	1:39 PM
22-अक्टूबर	गुरु	1:38 PM	से	3:02 PM
23-अक्टूबर	शुक्र	10:52 AM	से	12:15 PM
24-अक्टूबर	शनि	9:29 AM	से	10:52 AM
25-अक्टूबर	रवि	4:23 PM	से	5:46 PM
26-अक्टूबर	सोम	8:07 AM	से	9:29 AM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
27-अक्टूबर	भौम	2:59 PM	से	4:21 PM
28-अक्टूबर	बुध	12:14 PM	से	1:36 PM
29-अक्टूबर	गुरु	1:36 PM	से	2:58 PM
30-अक्टूबर	शुक्र	10:52 AM	से	12:14 PM
31-अक्टूबर	शनि	9:31 AM	से	10:53 AM
1-नवम्बर	रवि	4:18 PM	से	5:39 PM
2-नवम्बर	सोम	8:11 AM	से	9:32 AM
3-नवम्बर	भौम	2:56 PM	से	4:16 PM
4-नवम्बर	बुध	12:14 PM	से	1:35 PM
5-नवम्बर	गुरु	1:34 PM	से	2:55 PM
6-नवम्बर	शुक्र	10:54 AM	से	12:14 PM
7-नवम्बर	शनि	9:34 AM	से	10:54 AM
8-नवम्बर	रवि	4:13 PM	से	5:33 PM
9-नवम्बर	सोम	8:16 AM	से	9:35 AM
10-नवम्बर	भौम	2:53 PM	से	4:12 PM
11-नवम्बर	बुध	12:14 PM	से	1:34 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
12-नवम्बर	गुरु	1:33 PM	से	2:52 PM
13-नवम्बर	शुक्र	10:56 AM	से	12:15 PM
14-नवम्बर	शनि	9:38 AM	से	10:56 AM
15-नवम्बर	रवि	4:10 PM	से	5:28 PM
16-नवम्बर	सोम	8:21 AM	से	9:39 AM
17-नवम्बर	भौम	2:51 PM	से	4:09 PM
18-नवम्बर	बुध	12:16 PM	से	1:33 PM
19-नवम्बर	गुरु	1:33 PM	से	2:51 PM
20-नवम्बर	शुक्र	10:59 AM	से	12:16 PM
21-नवम्बर	शनि	9:42 AM	से	10:59 AM
22-नवम्बर	रवि	4:08 PM	से	5:25 PM
23-नवम्बर	सोम	8:26 AM	से	9:43 AM
24-नवम्बर	भौम	2:51 PM	से	4:08 PM
25-नवम्बर	बुध	12:17 PM	से	1:34 PM
26-नवम्बर	गुरु	1:34 PM	से	2:51 PM
27-नवम्बर	शुक्र	11:02 AM	से	12:18 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
28-नवम्बर	शनि	9:46 AM	से	11:02 AM
29-नवम्बर	रवि	4:07 PM	से	5:23 PM
30-नवम्बर	सोम	8:31 AM	से	9:47 AM
1-दिसम्बर	भौम	2:51 PM	से	4:07 PM
2-दिसम्बर	बुध	12:20 PM	से	1:36 PM
3-दिसम्बर	गुरु	1:36 PM	से	2:51 PM
4-दिसम्बर	शुक्र	11:05 AM	से	12:21 PM
5-दिसम्बर	शनि	9:50 AM	से	11:06 AM
6-दिसम्बर	रवि	4:07 PM	से	5:23 PM
7-दिसम्बर	सोम	8:36 AM	से	9:51 AM
8-दिसम्बर	भौम	2:53 PM	से	4:08 PM
9-दिसम्बर	बुध	12:23 PM	से	1:38 PM
10-दिसम्बर	गुरु	1:38 PM	से	2:53 PM
11-दिसम्बर	शुक्र	11:09 AM	से	12:24 PM
12-दिसम्बर	शनि	9:54 AM	से	11:09 AM
13-दिसम्बर	रवि	4:09 PM	से	5:24 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
14-दिसम्बर	सोम	8:41 AM	से	9:55 AM
15-दिसम्बर	भौम	2:55 PM	से	4:10 PM
16-दिसम्बर	बुध	12:26 PM	से	1:41 PM
17-दिसम्बर	गुरु	1:41 PM	से	2:56 PM
18-दिसम्बर	शुक्र	11:12 AM	से	12:27 PM
19-दिसम्बर	शनि	9:58 AM	से	11:13 AM
20-दिसम्बर	रवि	4:12 PM	से	5:26 PM
21-दिसम्बर	सोम	8:45 AM	से	9:59 AM
22-दिसम्बर	भौम	2:58 PM	से	4:13 PM
23-दिसम्बर	बुध	12:30 PM	से	1:44 PM
24-दिसम्बर	गुरु	1:45 PM	से	2:59 PM
25-दिसम्बर	शुक्र	11:16 AM	से	12:31 PM
26-दिसम्बर	शनि	10:02 AM	से	11:16 AM
27-दिसम्बर	रवि	4:16 PM	से	5:30 PM
28-दिसम्बर	सोम	8:48 AM	से	10:03 AM
29-दिसम्बर	भौम	3:02 PM	से	4:17 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
30-दिसम्बर	बुध	12:33 PM	से	1:48 PM
31-दिसम्बर	गुरु	1:48 PM	से	3:03 PM
1-जनवरी	शुक्र	11:19 AM	से	12:34 PM
2-जनवरी	शनि	10:04 AM	से	11:19 AM
3-जनवरी	रवि	4:20 PM	से	5:35 PM
4-जनवरी	सोम	8:50 AM	से	10:05 AM
5-जनवरी	भौम	3:06 PM	से	4:21 PM
6-जनवरी	बुध	12:36 PM	से	1:52 PM
7-जनवरी	गुरु	1:52 PM	से	3:07 PM
8-जनवरी	शुक्र	11:22 AM	से	12:37 PM
9-जनवरी	शनि	10:06 AM	से	11:22 AM
10-जनवरी	रवि	4:25 PM	से	5:41 PM
11-जनवरी	सोम	8:51 AM	से	10:07 AM
12-जनवरी	भौम	3:11 PM	से	4:27 PM
13-जनवरी	बुध	12:39 PM	से	1:55 PM
14-जनवरी	गुरु	1:56 PM	से	3:12 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
15-जनवरी	शुक्र	11:24 AM	से	12:40 PM
16-जनवरी	शनि	10:07 AM	से	11:24 AM
17-जनवरी	रवि	4:30 PM	से	5:47 PM
18-जनवरी	सोम	8:51 AM	से	10:07 AM
19-जनवरी	भौम	3:15 PM	से	4:32 PM
20-जनवरी	बुध	12:42 PM	से	1:59 PM
21-जनवरी	गुरु	1:59 PM	से	3:16 PM
22-जनवरी	शुक्र	11:25 AM	से	12:42 PM
23-जनवरी	शनि	10:07 AM	से	11:25 AM
24-जनवरी	रवि	4:36 PM	से	5:53 PM
25-जनवरी	सोम	8:49 AM	से	10:07 AM
26-जनवरी	भौम	3:19 PM	से	4:37 PM
27-जनवरी	बुध	12:43 PM	से	2:02 PM
28-जनवरी	गुरु	2:02 PM	से	3:20 PM
29-जनवरी	शुक्र	11:25 AM	से	12:44 PM
30-जनवरी	शनि	10:06 AM	से	11:25 AM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
31-जनवरी	रवि	4:41 PM	से	6:00 PM
1-फरवरी	सोम	8:47 AM	से	10:06 AM
2-फरवरी	भौम	3:23 PM	से	4:43 PM
3-फरवरी	बुध	12:44 PM	से	2:04 PM
4-फरवरी	गुरु	2:04 PM	से	3:24 PM
5-फरवरी	शुक्र	11:25 AM	से	12:45 PM
6-फरवरी	शनि	10:04 AM	से	11:25 AM
7-फरवरी	रवि	4:46 PM	से	6:07 PM
8-फरवरी	सोम	8:43 AM	से	10:04 AM
9-फरवरी	भौम	3:27 PM	से	4:48 PM
10-फरवरी	बुध	12:45 PM	से	2:06 PM
11-फरवरी	गुरु	2:06 PM	से	3:28 PM
12-फरवरी	शुक्र	11:23 AM	से	12:45 PM
13-फरवरी	शनि	10:01 AM	से	11:23 AM
14-फरवरी	रवि	4:51 PM	से	6:13 PM
15-फरवरी	सोम	8:38 AM	से	10:00 AM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
16-फरवरी	भौम	3:30 PM	से	4:52 PM
17-फरवरी	बुध	12:45 PM	से	2:08 PM
18-फरवरी	गुरु	2:08 PM	से	3:31 PM
19-फरवरी	शुक्र	11:21 AM	से	12:45 PM
20-फरवरी	शनि	9:58 AM	से	11:21 AM
21-फरवरी	रवि	4:55 PM	से	6:19 PM
22-फरवरी	सोम	8:33 AM	से	9:57 AM
23-फरवरी	भौम	3:32 PM	से	4:57 PM
24-फरवरी	बुध	12:44 PM	से	2:08 PM
25-फरवरी	गुरु	2:09 PM	से	3:33 PM
26-फरवरी	शुक्र	11:19 AM	से	12:44 PM
27-फरवरी	शनि	9:53 AM	से	11:18 AM
28-फरवरी	रवि	5:00 PM	से	6:25 PM
29-फरवरी	सोम	8:26 AM	से	9:52 AM
1-मार्च	भौम	3:35 PM	से	5:01 PM
2-मार्च	बुध	12:43 PM	से	2:09 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
3-मार्च	गुरु	2:09 PM	से	3:35 PM
4-मार्च	शुक्र	11:16 AM	से	12:42 PM
5-मार्च	शनि	9:49 AM	से	11:15 AM
6-मार्च	रवि	5:03 PM	से	6:30 PM
7-मार्च	सोम	8:20 AM	से	9:47 AM
8-मार्च	भौम	3:37 PM	से	5:04 PM
9-मार्च	बुध	12:41 PM	से	2:09 PM
10-मार्च	गुरु	2:09 PM	से	3:37 PM
11-मार्च	शुक्र	11:12 AM	से	12:41 PM
12-मार्च	शनि	9:43 AM	से	11:12 AM
13-मार्च	रवि	5:07 PM	से	6:36 PM
14-मार्च	सोम	8:13 AM	से	9:42 AM
15-मार्च	भौम	3:38 PM	से	5:08 PM
16-मार्च	बुध	12:39 PM	से	2:09 PM
17-मार्च	गुरु	2:09 PM	से	3:39 PM
18-मार्च	शुक्र	11:09 AM	से	12:39 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
19-मार्च	शनि	9:38 AM	से	11:08 AM
20-मार्च	रवि	5:10 PM	से	6:41 PM
21-मार्च	सोम	8:05 AM	से	9:36 AM
22-मार्च	भौम	3:40 PM	से	5:11 PM
23-मार्च	बुध	12:37 PM	से	2:09 PM
24-मार्च	गुरु	2:09 PM	से	3:40 PM
25-मार्च	शुक्र	11:05 AM	से	12:37 PM
26-मार्च	शनि	9:32 AM	से	11:04 AM
27-मार्च	रवि	5:13 PM	से	6:46 PM
28-मार्च	सोम	7:58 AM	से	9:30 AM
29-मार्च	भौम	3:41 PM	से	5:14 PM
30-मार्च	बुध	12:35 PM	से	2:08 PM
31-मार्च	गुरु	2:08 PM	से	3:42 PM
1-अप्रेल	शुक्र	11:01 AM	से	12:35 PM
2-अप्रेल	शनि	9:26 AM	से	11:00 AM
3-अप्रेल	रवि	5:17 PM	से	6:51 PM

दिनांक	वार	आरम्भ	से	समाप्ति
4-अप्रेल	सोम	7:50 AM	से	9:25 AM
5-अप्रेल	भौम	3:43 PM	से	5:17 PM
6-अप्रेल	बुध	12:33 PM	से	2:08 PM
7-अप्रेल	गुरु	2:08 PM	से	3:43 PM
8-अप्रेल	शुक्र	10:57 AM	से	12:33 PM
9-अप्रेल	शनि	9:21 AM	से	10:57 AM
10-अप्रेल	रवि	5:20 PM	से	6:56 PM
11-अप्रेल	सोम	7:43 AM	से	9:20 AM
12-अप्रेल	भौम	3:44 PM	से	5:21 PM
13-अप्रेल	बुध	12:31 PM	से	2:08 PM
14-अप्रेल	गुरु	2:08 PM	से	3:45 PM
15-अप्रेल	शुक्र	10:54 AM	से	12:31 PM

Note:- Timeings mentioned below are in Indian Standard Time (IST).

विक्रमी 2072 के

सर्वार्थ सिद्धि योग

नोटः- सर्वार्थ सिद्धि योग में विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेश, शंकु प्रतिष्ठा, विद्यारम्भ आदि शुभ कार्य न करें। ऐसे शुभ कार्यो की तिथि का चयन सम्बन्धित मुहूर्त प्रकरण से ही करें।

'सर्वार्थसिद्धि योग' में आभूषण लाना, आफिसर से मिलना, चार्ज लेना, भूमि आदि का क्रय, किसी से समझौता करना, परीक्षा देना, फार्म भरना किसी काम्पेटिशन के लिए आवेदन भेजना, यात्रा या मुकद्दमा करना, वाहन व वस्त्र का क्रय करना इत्यादि आवश्यक परिस्थितिवश किये जा सकते हैं। परन्तु विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेश, शंकु प्रतिष्ठा, विद्यारम्भ आदि शुभ कार्यो के लिये सम्बन्धित मुहूर्त प्रकरण से ही मुहूर्तो का चयन करें।

सर्वार्थ सिद्धि योग आरम्भ काल		सर्वार्थ सिद्धि योग समाप्ति काल	
22-मार्च	सूर्य उदय	22-मार्च	4:23 AM
24-मार्च	सूर्य उदय	24-मार्च	2:01 AM
25-मार्च	6:30 AM	25-मार्च	1:57 AM
29-मार्च	6:25 AM	30-मार्च	8:44 AM
31-मार्च	6:22 AM	31-मार्च	11:40 AM
8-अप्रेल	6:12 AM	9-अप्रेल	सूर्य उदय
12-अप्रेल	7:10 AM	13-अप्रेल	4:46 AM
17-अप्रेल	7:49 PM	18-अप्रेल	6:00 AM
19-अप्रेल	सूर्य उदय	19-अप्रेल	3:09 PM
21-अप्रेल	सूर्य उदय	21-अप्रेल	11:57 AM
22-अप्रेल	सूर्य उदय	22-अप्रेल	11:14 AM
24-अप्रेल	12:05 PM	25-अप्रेल	सूर्य उदय
26-अप्रेल	सूर्य उदय	26-अप्रेल	3:53 PM
6-मई	सूर्य उदय	6-मई	12:40 PM
10-मई	सूर्य उदय	10-मई	11:57 AM
11-मई	सूर्य उदय	11-मई	10:56 AM
15-मई	सूर्य उदय	15-मई	2:41 AM

सर्वार्थ सिद्धि योग		सर्वार्थ सिद्धि योग	
आरम्भ काल		समाप्ति काल	
20-मई	सूर्य उदय	20-मई	8:45 PM
22-मई	सूर्य उदय	22-मई	10:14 PM
30-मई	4:30 PM	31-मई	सूर्य उदय
6-जून	5:31 PM	7-जून	सूर्य उदय
11-जून	10:58 AM	12-जून	सूर्य उदय
12-जून	सूर्य उदय	12-जून	9:40 AM
15-जून	सूर्य उदय	16-जून	5:24 AM
17-जून	सूर्य उदय	17-जून	5:41 AM
18-जून	6:01 AM	19-जून	सूर्य उदय
27-जून	सूर्य उदय	27-जून	2:49 AM
29-जून	सूर्य उदय	29-जून	4:31 AM
4-जुलाई	सूर्य उदय	4-जुलाई	10:55 PM
7-जुलाई	5:45 PM	7-जुलाई	सूर्य उदय
9-जुलाई	सूर्य उदय	9-जुलाई	3:07 PM
10-जुलाई	सूर्य उदय	10-जुलाई	2:09 PM
13-जुलाई	सूर्य उदय	13-जुलाई	12:52 PM
16-जुलाई	सूर्य उदय	16-जुलाई	2:49 PM
22-जुलाई	सूर्य उदय	23-जुलाई	सूर्य उदय

सर्वार्थ सिद्धि योग		सर्वार्थ सिद्धि योग	
आरम्भ काल		समाप्ति काल	
25-जुलाई	सूर्य उदय	25-जुलाई	11:24 AM
27-जुलाई	सूर्य उदय	27-जुलाई	1:51 PM
31-जुलाई	9:53 AM	1-अगस्त	7:41 AM
4-अगस्त	सूर्य उदय	4-अगस्त	10:38 PM
6-अगस्त	सूर्य उदय	6-अगस्त	सूर्य अस्त
8-अगस्त	6:26 PM	9-अगस्त	सूर्य उदय
10-अगस्त	सूर्य उदय	10-अगस्त	7:01 PM
13-अगस्त	सूर्य उदय	13-अगस्त	11:13 PM
19-अगस्त	सूर्य उदय	19-अगस्त	1:22 PM
28-अगस्त	सूर्य उदय	28-अगस्त	6:07 PM
1-सितम्बर	सूर्य उदय	1-सितम्बर	7:14 AM
5-सितम्बर	सूर्य उदय	5-सितम्बर	सूर्य अस्त
13-सितम्बर	1:21 PM	14-सितम्बर	सूर्य उदय
29-सितम्बर	3:00 PM	30-सितम्बर	सूर्य उदय
3-अक्टूबर	सूर्य उदय	3-अक्टूबर	7:27 AM
11-अक्टूबर	6:33 AM	11-अक्टूबर	10:34 PM
16-अक्टूबर	9:43 AM	17-अक्टूबर	सूर्य उदय
18-अक्टूबर	1:12 PM	19-अक्टूबर	सूर्य उदय

सर्वार्थ सिद्धि योग		सर्वार्थ सिद्धि योग	
आरम्भ काल		समाप्ति काल	
25-अक्टूबर	7:42 AM	25-अक्टूबर	सूर्य अस्त
8-नवम्बर	6:55 AM	9-नवम्बर	सूर्य उदय
12-नवम्बर	3:42 PM	13-नवम्बर	सूर्य उदय
15-नवम्बर	सूर्य उदय	15-नवम्बर	7:39 PM
22-नवम्बर	सूर्य उदय	22-नवम्बर	2:29 PM
30-नवम्बर	सूर्य उदय	30-नवम्बर	2:22 AM
6-दिसम्बर	सूर्य उदय	6-दिसम्बर	3:31 PM
10-दिसम्बर	सूर्य उदय	10-दिसम्बर	12:24 AM
23-दिसम्बर	7:31 AM	23-दिसम्बर	2:52 PM
27-दिसम्बर	11:19 AM	28-दिसम्बर	11:49 AM
29-दिसम्बर	सूर्य उदय	29-दिसम्बर	1:02 PM
ईस्वी 2016			
6-जनवरी	7:35 AM	7-जनवरी	8:57 AM
10-जनवरी	9:42 AM	11-जनवरी	7:35 AM
17-जनवरी	सूर्य उदय	17-जनवरी	11:57 PM
19-जनवरी	सूर्य उदय	19-जनवरी	9:45 PM
20-जनवरी	सूर्य उदय	20-जनवरी	8:54 PM
24-जनवरी	7:32 AM	24-जनवरी	8:44 PM

सर्वार्थ सिद्धि योग		सर्वार्थ सिद्धि योग	
आरम्भ काल		समाप्ति काल	
3-फरवरी	7:26 AM	3-फरवरी	6:08 PM
7-फरवरी	7:23 AM	7-फरवरी	6:29 PM
8-फरवरी	7:22 AM	8-फरवरी	5:03 PM
12-फरवरी	7:13 AM	13-फरवरी	सूर्य उदय
17-फरवरी	सूर्य उदय	17-फरवरी	2:14 AM
19-फरवरी	7:12 AM	19-फरवरी	2:58 AM
27-फरवरी	6:27 PM	27-फरवरी	सूर्य उदय
10-मार्च	6:21 PM	11-मार्च	3:42 PM
14-मार्च	9:27 AM	15-मार्च	सूर्य उदय
16-मार्च	6:41 AM	16-मार्च	सूर्य उदय
18-मार्च	6:38 AM	18-मार्च	8:33 AM
26-मार्च	सूर्य उदय	26-मार्च	4:12 AM
28-मार्च	सूर्य उदय	29-मार्च	6:24 AM
2-अप्रेल	2:26 PM	3-अप्रेल	6:17 AM
7-अप्रेल	सूर्य उदय	8-अप्रेल	11:23 PM
11-अप्रेल	सूर्य उदय	11-अप्रेल	4:11 PM
14-अप्रेल	सूर्य उदय	14-अप्रेल	2:36 PM



ईस्वी 2015–16

विक्रमी 2072 में हर शुभ कार्य के लिए

निषेध समय



अधिक मास	17 जून 2015	से	16 जुलाई 2015
शुक्र अस्त	6 अगस्त 2015	से	20 अगस्त 2015
गुरु अस्त	12 अगस्त 2015	से	7 सितम्बर 2015
सिंह में सूर्य (स्यंघ)	17 अगस्त 2015	से	17 सितम्बर 2015
श्राद्ध पक्ष (पितृ पक्ष)	29 सितम्बर 2015	से	12 अक्टूबर 2015
पौष मास (धनु में सूर्य)	16 दिसम्बर 2015	से	14 जनवरी 2016
चैत्र कृष्ण पक्ष	24 मार्च 2016	से	7 अप्रेल 2016

करपंचक के विषय में जानकारी :- हस्त, चित्र, स्वात, विशाख, अनुराधा यह पांच नक्षत्र वाली तिथियाँ करपंचक कहलाती है। यह पांच नक्षत्र प्राय: हर काम के लिए उत्तम माने जाते है।

चैत्र शुक्लपक्ष

21 मार्च 2015 की ग्रह स्थिति :- मीन में सूर्य, भौम, केतू; मेष में शुक्र; कर्क में गुरु(वक्री); कन्या में राहु; वृश्चिक में शनि (वक्री); कुम्भ में बुध।

सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	चैत्र	मार्च	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वसंत ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
30 02	8	**21**	शनि	प्रति दि	11:32AM	उ.भा. दि	9:02AM	धैम्या, नवरेह, नवरात्रारम्भ, विक्रमी 2072 आरम्भ, 6:30 प्रात: मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त, श्री मोहनलाल ठुस्सू जयन्ती **A**	6:35	6:40
10	9	**22**	रवि	द्विती दि	8:16AM	अश्वि प्र	4:23AM	आनन्द:, त्र्यह:(तृती प्र 5:26AM), जंगत्रय, यज्ञ शिव मन्दिर पुरुखू कैम्प, हारी पर्वत देवी आगंन पलौडा, 4:23 रात गण्डमूल समाप्त।	6:33	6:41
15	10	**23**	सोम	चतु प्र	3:12AM	भरण प्र	2:52AM	चर:, 10:47 रात मेष में भौम। **A** 9:02 प्रात: गण्डमूल आरम्भ।	6:32	6:42
20	11	**24**	भौम	पंच प्र	1:39AM	कृति प्र	2:01AM	मुसुलं, 8:35 प्रात: वृष में चन्द्र, महात्मा काशीनाथ कौल जयन्ती।	6:31	6:43
25	12	**25**	बुध	षष्ठी प्र	12:53AM	रोहि प्र	1:57AM	शूलम्, कुमारषष्ठी।	6:30	6:43
30	13	**26**	गुरु	सप्त प्र	12:54AM	मृग प्र	2:38AM	मृत्यु:, 2:12 दिन मिथुन में चन्द्र।	6:28	6:44
35	14	**27**	शुक्र	अष्ट प्र	1:42AM	आर्द्रा प्र	4:05AM	काम्य:, दुर्गाष्टमी, महा यज्ञ दुर्गानाग मन्दिर, श्रीनगर, व नागडंढी अछबल, 1:35 रात मीन में बुध।	6:27	6:45

दुर्गाष्टमी
27 मार्च

रामनवमी
28 मार्च

40	15	28	शनि	नवम प्र	3:10AM	पुन प्र	6:09AM		छत्रम्, रामनवमी, उमा, शैलपुत्री व शिवा भगवती जयन्ती, अकिनगाम यात्रा, चक्रीश्वर व मंगला भगवती (वची) यात्रा, **B**	6:26	6:45
45	16	29	रवि	दश प्र	5:10AM	तिष्या	दिन रात-----		श्रीवत्सः। **B** 11:35 रात कर्क में चन्द्र।	6:24	6:46
50	17	30	सोम	एका	दिन रात-----	तिष्या दि	8:44AM		प्रजापत्यः, अधिक तिथि, 8:44 दिन गण्डमूल आरम्भ।	6:23	6:47
55	18	31	भौम	एका दि	7:34AM	अश्ले दि	11:40AM		आनन्दः, कामदा एकादशी व्रत, 11:40 दिन सिंह में चन्द्र।	6:22	6:48
31 00	19	अप्रे	बुध	द्वाद दि	10:09AM	मघा दि	2:45PM		चरः, स्वामी कुमार जी जयंती (गडी उधमपोर), स्वामी रूपजी मस्ताना जयन्ती चिनौर, 2:45 दिन गण्डमूल समाप्त।	6:20	6:48
05	20	2	गुरु	त्रयो दि	12:47PM	पू.फा. दि	5:52PM		मुसुलं, श्री महावीर जयन्ती (जैन), 12:37 रात कन्या में चन्द्र।	6:19	6:49
09	21	3	शुक्र	चर्तु दि	3:18PM	उ.फा. प्र	8:50PM		शूलम्।	6:18	6:50
10	22	4	शनि	पूर्णि दि	5:36PM	हस्त प्र	11:35PM		मृत्युः, महा यज्ञ पोखरीबल हारी पर्वत काश्मीर व बन्तलाव, पूर्णिमा व्रत, श्री हनुमान जयन्ती, बादशह कलन्दर जयन्ती, चन्द्रग्रहण।	6:17	6:50

श्राद्धः प्रतिपदा से तृतीया तक पहले दिन, चतुर्थी से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी से पूर्णिमा तक पहले दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से तृतीया तक पहले दिन, चतुर्थी से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी का पहले दिन, त्रयोदशी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

प्रातः काल हाथ (कर) का दर्शन क्यों करें? शास्त्रों में कहा गया है ''कराग्रे वसति लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती। करमूले तु गोविन्दः, प्रभाते कर दर्शनम्।।'' हाथ के अग्र (आगे) भाग में लक्ष्मी निवास करती है, हाथ के मध्य में सरस्वती और मूल में गोविन्द का निवास होता है, इसलिए प्रातः काल हाथ का दर्शन करना चाहिए और जीवन में धन, ज्ञान एवं ईश्वर को प्राप्त करना मानव के हाथ में है। अतः प्रातः काल हाथ का दर्शन करना चाहिए। प्रातः काल देखने योग्य और न देखने योग्य वस्तुओं का विचार मनोविज्ञान पर निर्भर होता है जिसका दिन भर मन मस्तिष्क पर भी प्रभाव बना रहता है।

वैशाख कृष्णपक्ष

5 अप्रेल 2015 की ग्रह स्थिति :- मीन में सूर्य, बुध, केतू; मेष में भौम, शुक्र; कर्क में गुरु; कन्या में राहु; वृश्चिक में शनि (वक्री)।
सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	चैत्र	अप्रे	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वसन्त ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
31 13	23	5	रवि	प्रति प्र	7:35PM	चित्र प्र	2:01AM	काम्य:, ब्रह्मचारी श्री प्रेमनाथ जयन्ती (गोसाईगुण्ड),12:51 दिन तुला में चन्द्र।	6:15	6:51
18	24	6	सोम	द्विती प्र	9:11PM	स्वात प्र	4:05AM	छत्रम्, 7:43 सायं वृष में शुक्र।	6:14	6:52
23	25	7	भौम	तृती प्र	10:20PM	विशा प्र	5:42AM	श्रीवत्स:, 11:20 रात वृश्चिक में चन्द्र।	6:13	6:52
28	26	8	बुध	चतु प्र	11:02PM	अनु	दिन रात-----	सौम्य:, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 10:34 रात)।	6:11	6:53
30	27	9	गुरु	पंच प्र	11:12PM	अनु दि	6:51AM	आनन्द:, श्री पंचमी, 6:51 प्रात: गण्डमूल आरम्भ।	6:10	6:54
37	28	10	शुक्र	षष्ठी प्र	10:49PM	ज्येष्ठ दि	7:29AM	चर:, वैताल षष्ठी, श्री ऋषिपीर श्राद्ध, श्री मंगलेश्वर भैरव जयन्ती, भैरव बाग मन्दिर व कमला यात्रा, 7:29 प्रात: धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	6:09	6:55
43	29	11	शनि	सप्त प्र	9:54PM	मूल दि	7:36AM	मुसुलं, 7:36 प्रात: गण्डमूल समाप्त।	6:08	6:55

श्री पंचमी
9 अप्रेल

वैताल षष्ठी
10 अप्रेल

55	30	12	रवि	अष्ट प्र	8:27PM	पू.षा. दि	7:10AM	शूलम्, 12:59 दिन मकर में चन्द्र, 8:40 प्रातः मेष में बुध।	6:06	6:56
32 00	31	13	सोम	नवम प्र	6:28PM	उ.षा. दि	6:13AM	मृत्युः, मासान्त।	6:05	6:57
06	वैश	14	भौम	दश दि	4:02PM	धनि प्र	2:55AM	उन्मूलं, वैशाखी, 1:46 दिन मेष में सूर्य, संक्रान्ति व्रत, 3:53दिन कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ, स्वामी सूरदास जी निर्वाण दिवस।	6:04	6:57
08	2	15	बुध	एका दि	1:14PM	शत प्र	12:43AM	मानसम्, वरूथिनी एकादशी।	6:03	6:58
13	3	16	गुरु	द्वाद दि	10:09AM	पू.भा. प्र	10:18PM	मुद्गरम्, शैवाचार्य स्वामी लक्ष्मण जी जयन्ती, 4:55 सायं मीन में चन्द्र।	6:02	6:59
18	4	17	शुक्र	त्रयो दि	6:54AM	उ.भा. प्र	7:49PM	ध्वजः, त्र्यहः (चतुर्दशी प्र 3:37AM) चतुर्दशी तिथि का क्षय, 7:49 सायं गण्डमूल आरम्भ।	6:00	7:00
23	5	18	शनि	अमा प्र	12:27AM	रेव दि	5:22PM	प्रजापत्यः, अमावसी व्रत, 5:22 सायं मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	5:59	7:00

श्राद्धः प्रतिपदा से दशमी तक अपने दिन, एकादशी से चतुर्दशी तक पहले दिन, अमावसी का अपने दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी से चतुर्दशी तक पहले दिन, अमावसी का अपने दिन।

पण्डित की परिभाषा :- आत्मज्ञान समारम्भस्तितिक्षा धर्म नित्यता । यमर्थान्नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते ॥

आत्मज्ञान, कार्यों में उद्योगशीलता, सहनशीलता और धर्म में स्थिरता-ये सब गुण जिसको उसके उद्देश्य से विचलित नहीं करते, वही वास्तव में पण्डित कहलाता है।

महाभारत (उद्योग पर्व ३/१५)

वैशाख शुक्लपक्ष

19 अप्रेल 2015 की ग्रह स्थिति :- मेष में सूर्य, भौम, बुध; वृष में शुक्र; कर्क में गुरु; कन्या में राहु; वृश्चिक में शनि (वक्री), मीन में केतू।
सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	वैश	अप्रे	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वसन्त / ग्रीष्म ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
32 27	6	**19**	रवि	प्रति प्र	9:32PM	अश्वि दि	3:09PM	आनन्द:, 3:09 दिन गण्डमूल समाप्त।	5:58	7:01
33	7	**20**	सोम	द्विती प्र	7:03PM	भरण दि	1:17PM	चर:, स्वामी कुमार जी जयन्ती गीतासत्संग आश्रम मुट्ठी, परशुराम जयन्ती, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, 6:54 सायं वृष में चन्द्र।	5:57	7:02
38	8	**21**	भौम	तृती दि	5:06PM	कृति दि	11:57AM	मुसुलं, अक्षय तृतीया, स्वामी योगिराज धर्मदत्त जी निर्वाण दिवस।	5:56	7:02
41	9	**22**	बुध	चतु दि	3:49PM	रोहि दि	11:14AM	शूलम्, 11:10 रात मिथुन में चन्द्र।	5:55	7:03
43	10	**23**	गुरु	पंच दि	3:18PM	मृग दि	11:16AM	मृत्यु:, कुमारषष्ठी व्रत, जगत् गुरू शंकराचार्य जयन्ती।	5:54	7:04
51	11	**24**	शुक्र	षष्ठी दि	3:35PM	आर्द्रा दि	12:05PM	काम्य:, श्री सर्वानन्द जी प्रेमी बलिदान दिवस।	5:52	7:05
56	12	**25**	शनि	सप्त दि	4:38PM	पुन दि	1:39PM	छत्रम्, श्री गंगा जयन्ती, स्वामी मोतीलाल ब्रह्मचारी (लालाजी) यज्ञ, 7:12 प्रात: कर्क में चन्द्र।	5:51	7:05

58	13	26	रवि	अष्ट	दि	6:21PM	तिष्या	दि	3:53PM	श्रीवत्सः, अष्टमी व्रत, 3:53 दिन गण्डमूल आरम्भ।	5:50	7:06
33 03	14	27	सोम	नवम	प्र	8:35PM	अश्ले	दि	6:37PM	सौम्यः, 6:37 सायं सिंह में चन्द्र, 12:01 दिन वृष में बुध।	5:49	7:07
08	15	28	भौम	दश	प्र	11:07PM	मघा	प्र	9:40PM	कालदण्डः, 9:40 रात गण्डमूल समाप्त।	5:48	7:08
13	16	29	बुध	एका	प्र	1:42AM	पू.फा.	प्र	12:47AM	स्थिरः, नारद एकादशी, डुमटबल यात्रा, स्वा. सर्वानन्द जी यज्ञ गुसाईंगुण्ड, महात्मा दीनानाथ जयन्ती डांगरपुर तुलमुल।	5:47	7:08
16	17	30	गुरु	द्वाद	प्र	4:09AM	उ.फा.	प्र	3:46AM	मातंगः, 7:33 प्रातः कन्या में चन्द्र।	5:46	7:09
21	18	मई	शुक्र	त्रयो		दिन रात-----	हस्त		दिन रात-----	अमृत्म्, अधिक तिथि। **A** यज्ञ गणेश विहार, लोवर मुट्ठी जम्मू, 1:54 रात वृष में भौम।	5:45	7:10
26	19	2	शनि	त्रयो	दि	6:17AM	हस्त	दि	6:27AM	मृत्युः, 7:39 सायं तुला में चन्द्र, 8:33 रात मिथुन में शुक्र।	5:44	7:10
28	20	3	रवि	चर्तु	दि	7:59AM	चित्र	दि	8:44AM	काम्यः, श्री नरसिंह चुदाह, गणेश चतुर्दशी, गणपतयार व गणेशबल यात्रा, यज्ञ देवस्थान सुधार सभा हानन्द चौवलगाम, **A**	5:43	7:11
33	21	4	सोम	पूर्णि	दि	9:12AM	स्वात	दि	10:32AM	छत्रम्, श्री बुद्ध जयन्ती (बुद्ध पूर्णिमा), पूर्णिमा व्रत, 5:34 प्रातः वृश्चिक में चन्द्र।	5:42	7:12

श्राद्धः प्रतिपदा से तृतीया तक अपने दिन, चतुर्थी से अष्टमी तक पहले दिन, नवमी से त्रयोदशी तक अपने दिन, चतुर्दशी व पूर्णिमा पहले दिन।
मध्याह्नः प्रतिपदा से त्रयोदशी तक अपने दिन, चतुर्दशी व पूर्णिमा पहले दिन।

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

5 मई 2015 की ग्रह स्थिति :- मेष में सूर्य; वृष में भौम, बुध; मिथुन में शुक्र; कर्क में गुरु; कन्या में राहु; वृश्चिक में शनि (वक्री), मीन में केतू। सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	वैश	मई	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, ग्रीष्म ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
33 38	22	5	भौम	प्रति दि	9:54AM	विशा दि	11:50AM	श्रीवत्स:, श्री काकजी यज्ञ हांगलगुण्ड काश्मीर व नगरोटा, जम्मू।	5:41	7:13
43	23	6	बुध	द्विती दि	10:07AM	अनु दि	12:40PM	सौम्य:, 12:40 दिन गण्डमूल आरम्भ।	5:40	7:13
46	24	7	गुरु	तृती दि	9:52AM	ज्येष्ठ दि	1:04PM	कालदण्ड:, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 10:19रात), 1:04 दिन धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	5:40	7:14
51	25	8	शुक्र	चतु दि	9:12AM	मूल दि	1:03PM	स्थिर:, 1:03 दिन गण्डमूल समाप्त।	5:39	7:15
55	26	9	शनि	पंच दि	8:09AM	पू.षा. दि	12:40PM	मातंग:, ज्येष्ठा देवी महायज्ञ जयीठयार यात्रा श्रीनगर, 6:31 सायं मकर में चन्द्र, स्वा. गोविन्द कौल जलाली जयन्ती त्रिलोकपुरा गोलगुजराल।	5:38	7:16
58	27	10	रवि	षष्ठी दि	6:46AM	उ.षा. दि	11:57AM	अमृत्म, त्र्यहः सप्तमी तिथि का क्षय (सप्त प्र 5:04 AM), विजयेश्वर निवासी ज्योतिषी काशीनाथ शर्मा निर्वाण दिवस।	5:37	7:16
34 00	28	11	सोम	अष्ट प्र	3:05AM	श्रवण दि	10:56AM	सिद्ध:, अष्टमी व्रत, स्वा. शंकर राज़दान यज्ञ (छच्बल), 10:19 रात कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	5:36	7:17
06	29	12	भौम	नवम प्र	12:51AM	धनि दि	9:38AM	उन्मूलं।	5:36	7:18

10	30	13	बुध	दश प्र	10:25PM	शत दि	8:07AM	मानसम्, 12:51 रात मीन चन्द्र।	5:35	7:18
13	31	14	गुरु	एका प्र	7:50PM	पू.भा. दि	6:24AM	मुद्गरम्, भद्रकाली जयन्ती, रथ एकादशी, मासान्त, 6:24 प्रातः गण्डमूल आरम्भ।	5:34	7:19
16	ज्ये	15	शुक्र	द्वाद दि	5:10PM	रेव प्र	2:41AM	श्रीवत्सः, 2:41 रात मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त, 10:37 दिन वृष में सूर्य, संक्रान्ति व्रत।	5:33	7:20
20	2	16	शनि	त्रयो दि	2:31PM	अश्वि प्र	12:52AM	सौम्यः, 12:52 रात गण्डमूल समाप्त।	5:33	7:21
23	3	17	रवि	चर्तु दि	12:00PM	भरण प्र	11:14PM	कालदण्डः, 4:52 रात वृष में चन्द्र।	5:32	7:21
26	4	18	सोम	अमा दि	9:43AM	कृति प्र	9:55PM	स्थिरः, हरिश्वर यात्रा खुनमुह, श्री नन्दकेश्वर यज्ञ अजीत कालोनी -गोलगुजराल / अकल पुर / सीरजागीर / सुम्बल यात्रा।	5:31	7:22

श्राद्धः प्रतिपदा से सप्तमी तक पहले दिन, अष्टमी से द्वादशी तक अपने दिन, त्रयोदशी से अमावसी तक पहले दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से सप्तमी तक पहले दिन, अष्टमी से चतुर्दशी तक अपने दिन, अमावसी का पहले दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- हिन्दू स्त्रियाँ माँग में सिन्दूर क्यों लगाती हैं?

सीमन्त अर्थात् माँग में सिन्दूर या माथे पर बिन्दियाँ लगाना सुहागिन स्त्रियों का सूचक है। माँग में सिन्दूर लगाने का वैज्ञानिक कारण भी है। ब्रह्मरन्ध्र और अध्मि नामक मर्मस्थान के ठीक ऊपर स्त्रियाँ सिन्दूर लगाती हैं जिसे सामान्य भाषा में सीमन्त अथवा माँग कहते हैं। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का यह भाग अपेक्षाकृत कोमल होता है। चूँकि सिन्दूर में पारा जैसी धातु अत्यधिक मात्रा में पायी जाती है जो स्त्रियों के शरीर वद्युतीय को नियंत्रित करता है तथा मर्मस्थल को बाहरी दुष्प्रभावों से बचाता भी है। कुंकुम हल्दी का चूर्ण होता है जिसमें नींबू का रस मिलाने से लाल रंग का हो जाता है। आयुर्वेद के अनुसार कुंकुम त्वचा शोधन के लिए सर्वोतम औषधि है। इसका तिलक लगाने से मस्तिष्क तन्तुओं में क्षीणता नहीं आती।

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

19 मई 2015 की ग्रह स्थिति :- वृष में सूर्य, भौम, बुध; मिथुन में शुक्र; कर्क में गुरु; कन्या में राहु; वृश्चिक में शनि (वक्री), मीन में केतू।
सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	ज्ये	मई	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, ग्रीष्म ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
34 30	5	19	भौम	प्रति दि	7:49AM	रोहि प्र	9:03PM	मातंग:।	5:31	7:23
33	6	20	बुध	द्विती दि	6:26AM	मृग प्र	8:45PM	अमृतम्, भगवान् श्री गोपीनाथ जी यज्ञ, 8:50 प्रात: मिथुन में चन्द्र।	5:30	7:23
35	7	21	गुरु	तृती दि	5:40AM	आर्द्रा प्र	9:08PM	काण्ड:।	5:30	7:24
38	8	22	शुक्र	चतु दि	5:36AM	पुन प्र	10:14PM	अलापकम्, 3:53 दिन कर्क में चन्द्र, कर्मकाण्ड शिरोमणि काशीनाथ हण्डू जयन्ती।	5:29	7:25
42	9	23	शनि	पंच दि	6:17AM	तिष्या प्र	12:02AM	श्रीवत्स:, कुमार षष्ठी व्रत, ब्रह्मचारी श्री गोपीनाथ जी (गोरीपुरा) जयन्ती, स्वा. रघुनाथजी कुक्लू जयन्ती, 12:02 रात गण्डमूल शुरू।	5:28	7:25
43	10	24	रवि	षष्ठी दि	7:41AM	अश्ले प्र	2:28AM	वज्रम्, 2:28 रात सिंह में चन्द्र।	5:28	7:26
47	11	25	सोम	सप्त दि	9:39AM	मघा प्र	5:19AM	ध्वांक्ष:, 5:19 रात अगले प्रात: गण्डमूल समाप्त।	5:27	7:27
51	12	26	भौम	अष्ट दि	12:02PM	पू.फा.	दिन रात-----	धौम्य:, ज्येष्ठ अष्टमी, क्षीर भवानी (तुलमुल) भवानी नगर, लकटीपुरा, मंजगाम, खनबरन व टिक्कर यात्रा।	5:27	7:27

52	13	27	बुध	नवम	दि	2:35PM	पू.फा.	दि	8:24AM	स्थिर:, 3:10 दिन कन्या में चन्द्र, सिद्ध बब जयन्ती।	5:27	7:28
56	14	28	गुरु	दश	दि	5:01PM	उ.फा.	दि	11:26AM	मातंग:।	5:26	7:29
35 00	15	29	शुक्र	एका	दि	7:08PM	हस्त	दि	2:12PM	अमृत्, निर्जला एकादशी, 3:25 रात तुला में चन्द, श्री नील कण्ठ शर्मा जयन्ती (श्रीनगर), हवन स्वा॰ सूरदास जी आश्रम सारी जम्मू।	5:26	7:29
02	16	30	शनि	द्वाद	प्र	8:43PM	चित्र	दि	4:30PM	काण्ड:, 8:55 रात कर्क में शुक्र।	5:25	7:30
03	17	31	रवि	त्रयो	प्र	9:43PM	स्वात	दि	6:14PM	अलापकम्, वटसावित्री व्रत।	5:25	7:30
07	18	जून	सोम	चर्तु	प्र	10:04PM	विशा	दि	7:20PM	मैत्रम्, स्वा. गोपालनन्द गिरि यज्ञ लाले दा बाग, 1:07 दिन वृश्चिक में चन्द्र।	5:25	7:31
10	19	2	भौम	पूर्णि	प्र	9:49PM	अनु	प्र	7:51PM	वज्रम्, माता रूपभवानी जयन्ती, कबीर जयन्ती, स्वामी महादेव काक जी (रतनीपोरा) जयन्ती, पूर्णिमा व्रत, 7:51 सायं गण्डमूल आरम्भ।	5:25	7:32

श्राद्ध: प्रतिपदा से एकादशी तक पहले दिन, द्वादशी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

मध्याह्न: प्रतिपदा से सप्तमी तक पहले दिन, अष्टमी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- गले में माला धारण करने का वैज्ञानिक कारण। जप करते समय साधकों को होंठ एवं जिह्वा को हिलाना पड़ता है जिस कारण कण्ठ की धमनियाँ प्रभावित होती हैं और साधक को कण्ठमाला, गलगण्ड आदि रोग होने की संभावना बन जाती है। ऐसे रोगों की संभावना से रक्षा केलिए औषधि युक्त काष्ठ तुलसी, रुद्राक्ष आदि की माला धारण करते हैं। माला में १०८ मनके होते हैं जो साधक को जप संख्या की गणना करने में सहायक होते हैं। इन १०८ मनकों का रहस्य यह है कि हमारें ऋषि व मुनियों ने कुल २७ नक्षत्र बतलाये हैं और प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं इस प्रकार 27X4= 108 हुए। ऐसी मान्यता है।

शुद्ध आषाढ़ कृष्णपक्ष

3 जून 2015 की ग्रह स्थिति :- वृष में सूर्य, भौम, बुध (वक्री); कर्कट में शुक्र, गुरु; कन्या में राहु; वृश्चिक में शनि (वक्री), मीन में केतू। सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	ज्ये	जून	वार	तिथि		समाप्ति काल	नक्षत्र		समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, ग्रीष्म ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
35 10	20	3	बुध	प्रति	प्र	9:02PM	ज्येष्ठ	प्र	7:50PM	ध्वांक्ष:, श्री गुरु हर गोविंद सिंह जी जयन्ती, 7:50 सायं धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	5:24	7:32
13	21	4	गुरु	द्विती	प्र	7:48PM	मूल	दि	7:22PM	धौम्य:, 7:22 सायं गण्डमूल समाप्त।	5:24	7:33
15	22	5	शुक्र	तृती	दि	6:14PM	पू.षा.	दि	6:34PM	प्रवर्ध:, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 9:59रात), 12:19 रात मकर में चन्द्र, स्वा. वामन जी यज्ञ।	5:24	7:33
17	23	6	शनि	चतु	दि	4:26PM	उ.षा.	दि	5:31PM	क्षय:।	5:24	7:34
17	24	7	रवि	पंच	दि	2:28PM	श्रवण	दि	4:19PM	मुसुलं, 3:41 रात कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	5:24	7:34
17	25	8	सोम	षष्ठी	दि	12:23PM	धनि	दि	3:02PM	शूलम्, स्वा. गोविन्द कौल जलाली यज्ञ।	5:23	7:35
20	26	9	भौम	सप्त	दि	10:16AM	शत	दि	1:41PM	मृत्यु:।	5:23	7:35

20	27	10	बुध	अष्ट दि	8:07AM	पू.भा. दि	12:19PM	काम्यः, 6:40 प्रातः मीन में चन्द्र।	5:23	7:36
22	28	11	गुरु	नवम दि	5:59AM	उ.भा. दि	10:58AM	छत्रम्, त्र्यहः दशमी तिथि का क्षय (दश प्र 3:52 AM), 10:58 दिन गण्डमूल आरम्भ।	5:23	7:36
22	29	12	शुक्र	एका प्र	1:50AM	रेव दि	9:40AM	श्रीवत्सः, योगिनी एकादशी, 9:40 दिन मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त, श्री श्यामलाल ओगरा जयन्ती।	5:23	7:36
25	30	13	शनि	द्वाद प्र	11:54PM	अश्वि दि	8:25AM	सौम्यः, 8:25 दिन गण्डमूल समाप्त।	5:23	7:37
25	31	14	रवि	त्रयो प्र	10:09PM	भरण दि	7:19AM	कालदण्डः, मासान्त, 1:05 दिन वृष में चन्द्र।	5:23	7:37
25	आष	15	सोम	चर्तु प्र	8:41PM	कृति दि	6:26AM	स्थिरः, 5:11 सायं मिथुन में सूर्य, संक्रान्ति व्रत, 1:09 रात मिथुन में भौम।	5:23	7:38
25	2	16	भौम	अमा दि	7:35PM	रोहि दि	5:51AM	मातंगः, अमावसी व्रत, 5:43 सायं मिथुन में चन्द्र।	5:23	7:38

श्राद्धः- प्रतिपदा से तृतीया तक अपने दिन, चतुर्थी से दशमी तक पहले दिन, एकादशी से अमावसी तक अपने दिन।

मध्याह्नः- प्रतिपदा से षष्ठी तक अपने दिन, सप्तमी से दशमी तक पहले दिन, एकादशी से अमावसी तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- **प्राणायां मन्त्रः** ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः ॐ महः, ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यम्।
ॐ तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।
ॐ आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भवः स्वरोम् ।

अशुद्ध आषाढ़ शुक्लपक्ष

17 जून 2015 की ग्रह स्थिति :- मिथुन में सूर्य, भौम; कर्कट में गुरु, शुक्र; कन्या में राहु; वृश्चिक में शनि (वक्री), मीन में केतू, वृष में बुध। सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाके: 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	आष	जून	वार	तिथि		समाप्ति काल	नक्षत्र		समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, ग्रीष्म/वर्षा ऋतु, उतर/ दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
35 25	3	17	बुध	प्रति	दि	6:58PM	मृग	दि	5:41AM	क्षय:।	5:23	7:38
25	4	18	गुरु	द्विती	दि	6:55PM	आर्द्रा	दि	6:01AM	काण्ड:, 12:40 रात कर्क में चन्द्र।	5:24	7:39
25	5	19	शुक्र	तृती	दि	7:29PM	पुन	दि	6:57AM	अलापकम्।	5:24	7:39
25	6	20	शनि	चतु	प्र	8:42PM	तिष्या	दि	8:31AM	मैत्रम्, 8:31 दिन गण्डमूल आरम्भ।	5:24	7:39
27	7	21	रवि	पंच	प्र	10:31PM	अश्ले	दि	10:41AM	वज्रम्, 10:41 दिन सिंह में चन्द्र, दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षाऋतु शरू।	5:24	7:39
26	8	22	सोम	षष्ठी	प्र	12:46AM	मघा	दि	1:21PM	ध्वांक्ष:, कुमारषष्ठी व्रत, 1:21 दिन गण्डमूल समाप्त।	5:24	7:39
25	9	23	भौम	सप्त	प्र	3:17AM	पू.फा.	दि	4:21PM	धौम्य:, 11:08 रात कन्या में चन्द्र।	5:25	7:40
25	10	24	बुध	अष्ट		दिन रात-----	उ.फा.	दि	7:27PM	प्रर्वध:, अधिक तिथि।	5:25	7:40

25	11	**25**	गुरु	अष्ट	दि	5:46AM	हस्त	प्र	10:23PM	क्षयः, अष्टमी व्रत।	5:25	7:40
23	12	**26**	शुक्र	नवम	दि	7:59AM	चित्र	प्र	12:54AM	गजः, 11:42 दिन तुला में चन्द्र।	5:25	7:40
22	13	**27**	शनि	दश	दि	9:42AM	स्वात	प्र	2:49AM	सिद्धः।	5:26	7:40
22	14	**28**	रवि	एका	दि	10:45AM	विशा	प्र	4:02AM	उन्मूलं, 9:48 रात वृश्चिक में चन्द्र।	5:26	7:40
21	15	**29**	सोम	द्वाद	दि	11:03AM	अनु	प्र	4:31AM	मानसम्, 4:31 रात गण्डमूल आरम्भ।	5:26	7:40
20	16	**30**	भौम	त्रयो	दि	10:37AM	ज्येष्ठ	प्र	4:18AM	मुद्गरम्, 4:18 रात धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	5:27	7:40
18	17	जुल	बुध	चर्तु	दि	9:30AM	मूल	प्र	3:30AM	ध्वजः, 3:30 रात गण्डमूल समाप्त।	5:27	7:40
17	18	**2**	गुरु	पूर्णि	दि	7:50AM	पू.षा.	प्र	2:15AM	प्रजापत्यः, पूर्णिमा व्रत।	5:28	7:40

श्राद्धः- प्रतिपदा से तृतीया तक पहले दिन, चतुर्थी से अष्टमी तक अपने दिन, नवमी से पूर्णिमा तक पहले दिन।
मध्याह्नः- प्रतिपदा से अष्टमी तक अपने दिन, नवमी से पूर्णिमा तक पहले दिन।

मारी संस्कृति के प्रतीक :- ब्राह्मी मुहूर्त में उठने के क्या लाभ है? रात्रि के अन्तिम प्रहर को ब्राह्मी मुहूर्त कहते हैं। निद्रा त्याग करने का शास्त्र विहित यह समय सर्वोतम होता है। इस मुहूर्त में जागृत होने से मनुष्य को सौन्दर्य बल, विद्या, बुद्धि और स्वस्थता प्राप्त होती है। वैज्ञानिक शोधों के अनुसार प्रातः काल ब्राह्मी मुहूर्त में वायु मण्डल प्रदूषण रहित होता है। केवल इस समय 41 प्रतिशत आक्सीजन होती है जिसे हम प्राण वायु के रूपमें सदैव प्रयेग करते हैं। आयुर्वेद के दृष्टिकोण से ब्राह्मी मुहूर्त में उठकर टहलने से संजीवनी शक्ति से परिपूर्ण मलयगिरी की ओर से आने वाली हवा शरीर को स्पर्श करके नव शक्ति का संचार करती है। इस अमृततृल्य वायु का संवन करना स्वास्थय के लिए अति लाभदायक हैं।

अशुद्ध आषाढ़ कृष्णपक्ष

3 जुलाई 2015 की ग्रह स्थिति :- मिथुन में सूर्य, भौम; कर्कट में गुरु, शुक्र; कन्या में राहु; वृश्चिक में शनि (वक्री), मीन में केतू, वृष में बुध।
सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	आष	जुल	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वर्षा ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
35 17	19	3	शुक्र	प्रति दि	5:43AM	उ.षा. प्र	12:40AM	आनन्द:, त्र्यह: द्वितीया तिथि का क्षय (द्विती प्र 3:18AM), 7:53 प्रात: मकर में चन्द्र।	5:28	7:40
16	20	4	शनि	तृती प्र	12:44AM	श्रवण प्र	10:55PM	स्थिर:।	5:28	7:40
15	21	5	रवि	चतु प्र	10:08PM	धनि प्र	9:07PM	मातंग:, संकट चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 10:13 रात), 10:01 दिन कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ, 12:16 दिन मिथुन में बुध, 9:48 रात सिंह में शुक्र।	5:29	7:40
13	22	6	सोम	पंच दि	7:35PM	शत दि	7:22PM	अमृतम्।	5:29	7:40
12	23	7	भौम	षष्ठी दि	5:10PM	पू.भा. दि	5:45PM	काण्ड:, 12:08 दिन मीन में चन्द्र।	5:30	7:40
11	24	8	बुध	सप्त दि	2:56PM	उ.भा. दि	4:19PM	अलापकम्, 4:19 दिन गण्डमूल आरम्भ।	5:30	7:39
06	25	9	गुरु	अष्ट दि	12:55PM	रेव दि	3:07PM	मैत्रम्, 3:07 दिन मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	5:31	7:39
05	26	10	शुक्र	नवम दि	11:09AM	अश्वि दि	2:09PM	वज्रम्, 2:09 दिन गण्डमूल समाप्त।	5:31	7:39

03	27	11	शनि	दश	दि	9:38AM	भरण	दि	1:26PM	ध्वांक्ष:, 7:18 सायं वृष में चन्द्र।	5:32	7:39
34 58	28	12	रवि	एका	दि	8:23AM	कृति	दि	1:00PM	धौम्य:।	5:32	7:38
57	29	13	सोम	द्वाद	दि	7:27AM	रोहि	दि	12:52PM	प्रवर्ध:, 12:56 रात मिथुन में चन्द्र।	5:33	7:38
53	30	14	भौम	त्रयो	दि	6:51AM	मृग	दि	1:05PM	क्षय:, 6:25 प्रात: सिंह में गुरु।	5:34	7:38
51	31	15	बुध	चर्तु	दि	6:39AM	आर्द्रा	दि	1:43PM	गज:, मासान्त।	5:34	7:37
50	श्राव	16	गुरु	अमा	दि	6:54AM	पुन	दि	2:49PM	सिद्ध:, अमावसी व्रत, 4:02 रात कर्क में सूर्य, 8:30 प्रात: कर्क में चन्द्र, अधिक मास समाप्त।	5:35	7:37

श्राद्ध:- प्रतिपदा व द्वितीया पहले दिन, तृतीया से पंचमी तक अपने, षष्ठी से अमावसी तक पहले दिन।
मध्याह्न:- प्रतिपदा से अष्टमी तक अपने दिन, नवमी से अमावसी तक पहले दिन।

दुर्गा सप्तशती का सारभूत मंत्र

या श्री: स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मी:
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धि:,
श्रद्धा सत्तां कुलजन प्रभवस्य लज्जा,
त्वां त्वां नता:स्म परिपालय देवि! विश्वम्।

आषाढ़ शुक्लपक्ष

17 जुलाई 2015 की ग्रह स्थिति :- कर्क में सूर्य; सिंह में गुरु, शुक्र; कन्या में राहु; वृश्चिक में शनि (वक्री), मीन में केतू, मिथुन में भौम, बुध। सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	श्रा	जुल	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वर्षा ऋतु, दक्षिणयन।	सू उ	सू अ
34 46	2	17	शुक्र	प्रति दि	7:40AM	तिष्या दि	4:25PM	उन्मूलं, संक्रान्ति व्रत, 4:25 सायं गण्डमूल आरम्भ।	5:35	7:37
45	3	18	शनि	द्विती दि	8:58AM	अश्ले दि	6:31PM	मानसम्, 3:31 सायं सिंह में चन्द्र, चान्द दिखाई देगा।	5:36	7:36
41	4	19	रवि	तृती दि	10:46AM	मघा प्र	9:06PM	मुद्गरम्, 9:06 रात गण्डमूल समाप्त, ईदुलफितर।	5:37	7:36
36	5	20	सोम	चतु दि	1:00PM	पू.फा. प्र	12:03AM	ध्वजः, 11:02 रात कर्क में बुध।	5:37	7:35
36	6	21	भौम	पंच दि	3:31PM	उ.फा. प्र	3:11AM	प्रजापत्यः, गुफबल बारामुला पांजला यात्रा, कुमारषष्ठी व्रत, 6:49 प्रातः कन्या में चन्द्र।	5:38	7:35
35	7	22	बुध	षष्ठी दि	6:06PM	हस्त	दिन रात-----	आनन्दः, स्वामी स्वयांनन्द जी जयन्ती, मुट्ठी।	5:38	7:34
31	8	23	गुरु	सप्त प्र	8:30PM	हस्त दि	6:17AM	क्षयः, हार सतम्, 7:44सायं तुला में चन्द्र।	5:39	7:33
28	9	24	शुक्र	अष्ट प्र	10:29PM	चित्र दि	9:06AM	गजः, हार अष्टमी, अष्टमी व्रत।	5:40	7:33

25	10	25	शनि	नवम	प्र	11:50PM	स्वात	दि	11:24AM	सिद्धः, हार नवमी, शारिका जयन्ती, ज़्या देवी जयन्ती विजविहारा।	5:40	7:32
21	11	26	रवि	दश	प्र	12:25AM	विशा	दि	1:01PM	उन्मूलं, 6:41 प्रातः वृश्चिक में चन्द्र।	5:41	7:32
18	12	27	सोम	एका	प्र	12:11AM	अनु	दि	1:51PM	मानसम्, देवशयनी एकादशी व्रत, 1:51 दिन गण्डमूल आरम्भ।	5:42	7:31
15	13	28	भौम	द्वाद	प्र	11:08PM	ज्येष्ठ	दि	1:52PM	मुद्गरम्, हारवाह, लुकभवन यात्रा,हरिस्वाप,श्री भगवान् गोपीनाथ जी जयन्ती, 1:52 दिन धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	5:42	7:30
11	14	29	बुध	त्रयो	प्र	9:22PM	मूल	दि	1:08PM	ध्वजः, 1:08 दिन गण्डमूल समाप्त, श्री अमरनाथ वैष्णवी जी (बब) अन्तर्ध्यान दिवस।	5:43	7:30
06	15	30	गुरु	चर्तु	दि	7:01PM	पू.षा.	दि	11:46AM	प्रजापत्यः, ज्वाला चतुर्दशी, खव यात्रा, सन्त राधा देवी यज्ञ (सागम), 5:20 सायं मकर में चन्द्र, 2:19 रात कर्क में भौम।	5:44	7:29
05	16	31	शुक्र	पूर्णि	दि	4:13PM	उ.षा.	दि	9:53AM	आनन्दः, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, गुरु पूर्णिमा, छडी का पहला स्नान, व्यास पूजा,	5:44	7:28

श्राद्धः प्रतिपदा से षष्ठी तक पहले दिन, सप्तमी से चतुर्दशी तक अपने दिन, पूर्णिमा का पहले दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से तृतीया तक पहले दिन, चतुर्थी से पूर्णिमा तक पहले दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- 'शुचि' का क्या अर्थ है?

धार्मिक दृष्टि से शुचि का अर्थ पवित्रता से है। अपवित्र वस्तु को अशुचि कहते है। अन्तः करण की पवित्रता का अर्थ शुचिता से है जब कि बाह्य जगत की वस्तु को स्वच्छता से तुलना करते है। यहाँ कहने का तातर्प्य यह हैं कि हमें स्वच्छता के अतिरिक्त अपने घर में शुचि व अशुचि का भी ध्यान रखना चाहिए।

श्रावण कृष्णपक्ष

1 अगस्त 2015 की ग्रह स्थिति :- कर्क में सूर्य, भौम, बुध; सिंह में गुरु, शुक्र (वक्री); कन्या में राहु; वृश्चिक में शनि (वक्री), मीन में केतू।
सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	श्रा	अग	वार	तिथि		समय	नक्षत्र		समय	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वर्षा ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
34 01	17	अग	शनि	प्रति	दि	1:08PM	श्रवण	दि	7:41AM	स्थिर:, 6:30 सायं कुम्भ में चन्द व पंचक आरम्भ।	5:45	7:27
33 56	18	2	रवि	द्विती	दि	9:55AM	शत	प्र	2:55AM	क्षय:, परम्गुरू लालजी यज्ञ (टिक्कर)।	5:46	7:26
52	19	3	सोम	तृती	दि	6:43AM	पू.भा.	प्र	12:39AM	गज:, त्र्यह: चतुर्थी तिथि का क्षय (चतु प्र 3:41AM), संकट चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 9:31 रात), 7:12 सायं मीन में चन्द्र।	5:46	7:26
48	20	4	भौम	पंच	प्र	12:53AM	उ.भा.	प्र	10:38PM	सिद्ध:, 6:13 सायं सिंह में बुध, 10:38रात गण्डमूल आरम्भ।	5:47	7:25
46	21	5	बुध	षष्ठी	प्र	10:27PM	रेव	प्र	8:57PM	उन्मूलं, 8:57 रात मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	5:48	7:24
42	22	6	गुरु	सप्त	प्र	8:24PM	अश्वि	प्र	7:40PM	मानसम्, शीतला सप्तमी, 7:40 सायं गण्डमूल समाप्त, शुक्र अस्त 6:00 सायं।	5:48	7:23
38	23	7	शुक्र	अष्ट	दि	6:48PM	भरण	दि	6:49PM	मुद्गरम्, 12:41 रात वृष में चन्द्र।	5:49	7:22
33	24	8	शनि	नवम	दि	5:40PM	कृति	दि	6:26PM	ध्वज:।	5:50	7:21

28	25	9	रवि	दश	दि	4:59PM	रोहि	दि	6:30PM	प्रजापत्यः।	5:50	7:20
25	26	10	सोम	एका	दि	4:46PM	मृग	दि	7:01PM	आनन्दः, कमला एकादशी, कमलानाग यात्रा त्राल, 6:42 प्रातः मिथुन में चन्द्र।	5:51	7:19
21	27	11	भौम	द्वाद	दि	5:00PM	आर्द्रा	प्र	7:59PM	चरः।	5:52	7:18
16	28	12	बुध	त्रयो	दि	5:41PM	पुन	प्र	9:23PM	मुसुलं, 2:59 दिन कर्क में चन्द्र, गुरु अस्त 6:12 प्रातः।	5:52	7:17
12	29	13	गुरु	चर्तु	दि	6:49PM	तिष्या	प्र	11:13PM	शूलम्, 5:26 सायं कर्क में शुक्र (वक्री), मास्टर पण्डित ज़िन्दा कौल जयन्ती, 11:13 रात गण्डमूल आरम्भ।	5:53	7:16
08	30	14	शुक्र	अमा	प्र	8:23PM	अश्ले	प्र	1:28AM	मृत्यु, अमावसी व्रत, 1:28 रात सिंह में चन्द्र।	5:54	7:15

श्राद्धः प्रतिपदा से चतुर्थी तक पहले दिन, पंचमी से अष्टमी तक अपने दिन, नवमी से चतुर्दशी तक पहले दिन, अमावसी का अपने दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा का अपने दिन, द्वितीया से चतुर्थी तक पहले दिन, पंचमी से अमावसी तक अपने दिन।

यज्ञोपवीत' शब्द का क्या अर्थ है? यज्ञ + उपवीत = यज्ञोपवीत, अर्थात् जिसे यज्ञ करने का पूर्ण रूप से अधिकार प्राप्त हो जाये। यज्ञोपवीत धारण किये बिना किसी को गायत्री जप अथवा वेद पाठ का अधिकार प्राप्त नहीं होता। इसके पहनने से व्यक्ति ब्रह्म (जिसे ईश्वर, परमरत्मा आदि अनेकों नाम से सम्बोधित करते हैं) के प्रति समर्पित हो जाता है अर्थात् ब्रह्म सूत्र धारण करने के उपरान्त उस व्यक्ति को विशेष नियम आचारणों का पालन करना अनिवार्य हो जाता है। जनेऊ दो प्रकार के होते हैं- तीन धागे वाले अथवा छः धागे वाले। ब्रह्मचारी के लिए तीन धागे वाले जनेऊ का विधान है, विवाहित पुरुष को छः धागे वाला जनेऊ धारण करते हैं। धार्मिक व्याख्या के अतिरिक्त यज्ञोपवीत के तीन सूत्रों में प्रथम सूत्र संयमित जीवन, दूसरा सूत्र माता के प्रति कर्तव्य की भावना और तीसरा सूत्र पिता के प्रति कर्तव्य की भावना का बोधक है। छः सूत्रों वाले यज्ञोपवीत में चौथे, पाचवें व छटे सूत्र का पत्नी, सासू व श्वसुर के प्रति कर्तव्य पालन का स्मरण करता है।

श्रावण शुक्ल पक्ष

15 अगस्त 2015 की ग्रह स्थिति :- कर्क में सूर्य, भौम, शुक्र(वक्री); सिंह में बुध, गुरु; कन्या में राहु; वृश्चिक में शनि; मीन में केतू।
सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	श्रा	अग	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वर्षा / शरद ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
33 03	31	15	शनि	प्रति प्र	10:22PM	मघा प्र	4:06AM	काम्य:, 4:06 रात गण्डमूल समाप्त।	5:54	7:14
33 00	32	16	रवि	द्विती प्र	12:41AM	पू.फा.	दिन रात-----	छत्रम्, मासान्त।	5:55	7:13
32 53	भाद	17	सोम	तृती प्र	3:14AM	पू.फा. दि	7:03AM	ध्वज:, 12:24 दिन सिंह में सूर्य, सयधं आरम्भ, संक्रान्ति व्रत, 1:49 दिन कन्या में चन्द्र।	5:56	7:12
48	2	18	भौम	चतु प्र	5:53AM	उ.फा. दि	10:11AM	प्रजापत्य:। **A** ब्रह्मचारी यज्ञ अम्बफला।	5:56	7:11
45	3	19	बुध	पंच	दिन रात-----	हस्त दि	1:22PM	आनन्द:, अधिक तिथि, 2:35 रात तुला में चन्द्र।	5:57	7:10
41	4	20	गुरु	पंच दि	8:26AM	चित्र दि	4:24PM	चर:, नागपंचमी, कौसरनाग यात्रा (क्रमसरनाग), नागडंढी महायज्ञ (अछबल), कुमार षष्ठी, शुक्रोदय 8:46 प्रात:, श्री रघुनाथ जी **A**	5:58	7:09
36	5	21	शुक्र	षष्ठी दि	10:41AM	स्वात दि	7:04PM	मुसुलं, ज्यो. आफताभ शर्मा (विजयेश्वर निवासी) जयन्ती।	5:58	7:07

कौसर नाग यात्रा व नागडंढी यज्ञ
20 अगस्त

रक्षाबन्धन
29 अगस्त

32	6	22	शनि	सप्त	दि	12:24PM	विशा	प्र	9:11PM	शूलम्, 2:43 दिन वृश्चिक में चन्द्र।	5:59	7:06
28	7	23	रवि	अष्ट	दि	1:26PM	अनु	प्र	10:36PM	मृत्यु:, अष्टमी व्रत, 8:37 प्रात: कन्या में बुध, 10:36 रात गण्डमूल आरम्भ।	6:00	7:05
21	8	24	सोम	नवम	दि	1:41PM	ज्येष्ठ	प्र	11:12PM	काम्य:, 11:12रात धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	6:00	7:04
17	9	25	भौम	दश	दि	1:05PM	मूल	प्र	10:59PM	छत्रम्, 10:59 रात गण्डमूल समाप्त।	6:01	7:03
13	10	26	बुध	एका	दि	11:40AM	पू.षा.	प्र	9:59PM	श्रीवत्स:, पवित्रत्ता एकादशी व्रत, 3:38 रात मकर में चन्द्र।	6:02	7:02
08	11	27	गुरु	द्वाद	दि	9:32AM	उ.षा.	प्र	8:19PM	सौम्य:, शुपियन यात्रा, श्री कृष्ण पण्डित यज्ञ, श्रावण द्वादशी, ज्यो. कण्ठ शर्मा (विजयेश्वर निवासी) निर्वाण दिवस।	6:02	7:00
02	12	28	शुक्र	त्रयो	दि	6:48AM	श्रवण	दि	6:07PM	धौम्य:, त्र्यह:, चतुर्दशी का क्षय (चर्तु प्र 3:35AM), 4:52 रात कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	6:03	6:59
31 58	13	29	शनि	पूर्णि	प्र	12:05AM	धनि	दि	3:32PM	प्रवर्ध:, रक्षा बन्धन, अमरनाथ व थजवारा बिजबिहारा यात्रा, श्रावण पूर्णिमा व्रत।	6:04	6:58

श्राद्ध: प्रतिपदा से पंचमी तक अपने दिन, षष्ठी से चतुर्दशी तक पहले दिन, पूर्णिमा का अपने दिन।
मध्याह्न: प्रतिपदा से पंचमी तक अपने दिन, षष्ठी का पहले दिन, सप्तमी से दशमी तक अपने दिन, एकादशी से चतुर्दशी तक पहले दिन, पूर्णिमा अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक:- भोजन खाने से पूर्व आचमन करने का मन्त्र: अन्त: चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुख: त्वं यज्ञ:, त्वं वष्टकार:, आपोज्योति रसोमृतं ब्रह्म भूर्भव: स्वरोम्। अमृतोपस तरणमसि। अर्थात् जल रूपी अमृत से ढक्कन खोलता हूँ।

भाद्र कृष्णपक्ष

30 अगस्त 2015 की ग्रह स्थिति :- सिंह में सूर्य, गुरु; कन्या में बुध, राहु; वृश्चिक में शनि; मीन में केतू, कर्क में भौम, शुक्र(वक्री)।
सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाकः 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	भाद्र	अग	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शरद् ऋतु, दक्षिणायण।	सू उ	सू अ
31 55	14	30	रवि	प्रति प्र	8:27PM	शत दि	12:45PM	क्षयः, 4:37 रात मीन में चन्द्र।	6:04	6:57
51	15	31	सोम	द्विती दि	4:50PM	पू.भा. दि	9:55AM	गजः, ज्यो. प्रेमनाथ शास्त्री (विजयेश्वर निवासी) अन्तर्ध्यान दिवस।	6:05	6:55
43	16	सित	भौम	तृती दि	1:24PM	उ.भा. दि	7:14AM	सिद्धः, कुमार तृतीया, संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय 8:50रात), 4:49 रात मेष में चन्द व पंचक समाप्त, 7:14 प्रातः गण्डमूल आरम्भ।	6:06	6:54
40	17	2	बुध	चतु दि	10:17AM	अश्वि प्र	2:49AM	मृत्युः, 2:49 रात गण्डमूल समाप्त।	6:06	6:53
36	18	3	गुरु	पंच दि	7:36AM	भरण प्र	1:19AM	काम्यः, त्र्यहः, षष्ठी का क्षय (षष्ठी प्र 5:58AM), चन्दन षष्ठी व्रत, (चन्द्रोदय 9:59 रात)।	6:07	6:52
31	19	4	शुक्र	सप्त प्र	3:56AM	कृति प्र	12:25AM	छत्रम्, 7:02 प्रातः वृष में चन्द्र।	6:08	6:50
25	20	5	शनि	अष्ट प्र	3:02AM	रोहि प्र	12:10AM	श्रीवत्सः, जन्मअष्टमी (चन्द्रोदय 11:54 रात)।	6:08	6:49

जन्म अष्टमी
5 सितम्बर

21	21	6	रवि	नवम प्र	2:48AM	मृग प्र	12:32AM	सौम्यः, 12:16 दिन मिथुन में चन्द्र।	6:09	6:48
16	22	7	सोम	दश प्र	3:11AM	आर्द्रा प्र	1:31AM	कालदण्डः, गुरु उदय 10:40 दिन ।	6:10	6:46
10	23	8	भौम	एका प्र	4:08AM	पुन प्र	3:04AM	स्थिरः, अजा एकादशी व्रत, गोवत्स पूजा 8:38 रात कर्क में चन्द्र, श्री अपर्णा जी जयन्ती, श्री स्वयांन्नद आश्रम मुट्ठी,।	6:10	6:45
06	24	9	बुध	द्वाद प्र	5:36AM	तिष्या प्र	5:07AM	मातंगः, 5:07 रात गण्डमूल आरम्भ।	6:11	6:44
31 01	25	10	गुरु	त्रयो	दिन रात-----	अश्ले	दिन रात-----	अमृतम्, अधिक तिथि।	6:11	6:42
30 55	26	11	शुक्र	त्रयो दि	7:29AM	अश्ले दि	7:34AM	मृत्युः, 7:34 प्रातः सिंह में चन्द्र।	6:12	6:41
51	27	12	शनि	चर्तु दि	9:43AM	मघा दि	10:20AM	काम्यः, 10:20 दिन गण्डमूल समाप्त।	6:13	6:40
47	28	13	रवि	अमा दि	12:11PM	पू.फा. दि	1:21PM	छत्रम्, दर्श मावस, मघा मावसी, 8:09 रात कन्या में चन्द्र।	6:13	6:38

श्राद्धः प्रतिपदा व द्वितीया अपने दिन, तृतीया से षष्ठी तक पहले दिन, सप्तमी से त्रयोदशी तक अपने दिन, चतुर्दशी व अमावसी का पहले दिन।
मध्याह्नः प्रतिपदा से तृतीया अपने दिन, चतुर्थी से षष्ठी पहले दिन, सप्तमी से त्रयोदशी तक अपने दिन, चतुर्दशी का पहले दिन, अमावसी का अपने दिन।

आरोग्य तथा सौभाग्य मंत्र :- देहि सौभाग्यम् आरोग्यं देहि मे परमं सुखम्,
रूपं दैहि जयं-देहि यशो देहि द्विषो जहि।

भाद्र शुक्लपक्ष

14 सितम्बर 2015 की ग्रह स्थिति :- सिंह में सूर्य, गुरु; कन्या में बुध, राहु; वृश्चिक में शनि; मीन में केतू, कर्क में भौम, शुक्र।

सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	भाद्र	सित	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शरद् ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
31 41	29	14	सोम	प्रति दि	2:49PM	उ.फा. दि	4:29PM	श्रीवत्स:, बलिदान दिवस (श्री टिकलाल टपलू)। A व्रत, यज्ञ परमानन्द जी मार्तण्ड।	6:14	6:37
36	30	15	भौम	द्विती दि	5:28PM	हस्त प्र	7:39PM	सौम्य:, 9:29 रात सिंह में भौम।	6:15	6:36
32	31	16	बुध	तृती प्र	8:02PM	चित्र प्र	10:43PM	कालदण्ड:, हरितालिका तृतीया, चन्द्रमा का दर्शन आज अवश्य करें, (चन्द्रोदय प्रात: से चन्द्रास्त रात), मासान्त, 9:12 दिन तुला में चन्द्र।	6:15	6:34
26	असू	17	गुरु	चतु प्र	10:21PM	स्वात प्र	1:32AM	स्थिर:, विनायक चतुर्थी, चन्द्रमा का दर्शन आज नहीं करें, स्वा. कृष्णजुव राज़दान जयन्ती, 12:19 दिन कन्या में सूर्य, संक्रान्ति A	6:16	6:33
21	2	18	शुक्र	पंच प्र	12:16AM	विशा प्र	3:57AM	मातंग:, वराह पंचमी, स्वा. मोतीलाल ब्रह्मचारी जी जयन्ती, 9:23 रात वृश्चिक में चन्द्र।	6:17	6:32
15	3	19	शनि	षष्ठी प्र	1:40AM	अनु प्र	5:50AM	अमृतम्, सूर्य षष्ठी, कुमार षष्ठी, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, 5:50 रात गण्डमूल आरम्भ।	6:17	6:30
11	4	20	रवि	सप्त प्र	2:24AM	ज्येष्ठ	दिन रात-----	काण्ड:।	6:18	6:29

06	5	21	सोम	अष्ट	प्र	2:23AM	ज्येष्ठ	दि	7:04AM	काम्यः, माता उमादेवी (उमानगरी) यज्ञ, गंगाष्टमी, ललेश्वरी जयन्ती, शारदाष्टमी गुशी कुपवारा, 7:04 प्रातः धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	6:18	6:28
30 00	6	22	भौम	नवम	प्र	1:36AM	मूल	दि	7:34AM	छत्रम्, 7:34 प्रातः गण्डमूल समाप्त।	6:19	6:26
29 56	7	23	बुध	दश	प्र	12:04AM	पू.षा.	दि	7:18AM	श्रीवत्सः, 1:07 दिन मकर में चन्द्र।	6:20	6:25
54	8	24	गुरु	एका	प्र	9:50PM	श्रवण	प्र	4:39AM	ध्वजः, नारायणी एकादशी, गोतमनाग व नारायण नाग यात्रा।	6:20	6:23
52	9	25	शुक्र	द्वाद	दि	7:01PM	धनि	प्र	2:26AM	प्रजापत्यः, इन्द्र द्वादशी, बारामुल्ला यात्रा, वामन बाह, 3:36 दिन कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	6:21	6:22
46	10	26	शनि	त्रयो	दि	3:43PM	शत	प्र	11:47PM	आनन्दः, वितस्ता त्रयोदशी, विथवोतुर यात्रा वेरीनाग।	6:22	6:21
41	11	27	रवि	चर्तु	दि	12:07PM	पू.भा.	प्र	8:54PM	चरः, आनन्त चतुर्दशी, अनन्तनाग यात्रा, पापहरण नाग(सैली कारकूटनाग) यात्रा, स्वा. श्री कण्ठ यज्ञ मलिकआगन, 3:38 दिन मीन में चन्द्र।	6:22	6:19
37	12	28	सोम	पूर्णि	दि	8:20AM	उ.भा.	दि	5:54PM	मुसुलं, त्र्यहः प्रतिपदा का क्षय (प्रति प्र 4:35AM), पितृ पक्ष आरम्भ, श्री शकर साहिब यज्ञ, 5:54 सायं गण्डमूल आरम्भ। • प्रतिपदा का श्राद्ध	6:23	6:18

श्राद्धः प्रतिपदा व द्वितीया पहले दिन, तृतीया से द्वादशी तक अपने दिन, त्रयोदशी से पूर्णिमा तक पहले दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से चतुर्दशी तक अपने दिन, पूर्णिमा का पहले दिन।

आश्विन कृष्णपक्ष

29 सितम्बर 2015 की ग्रह स्थिति :- कन्या में सूर्य, बुध (वक्री), राहु; वृश्चिक में शनि; मीन में केतू, कर्क में शुक्र, सिंह में भौम, गुरु।
सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	भाद्र	सित	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शरद ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
29 26	13	**29**	भौम	द्विती प्र	12:59AM	रेव दि	3:00PM	शूलम्, 3:00 दिन मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त। • द्विती का श्राद्ध	6:24	6:17
22	14	**30**	बुध	तृती प्र	9:43PM	अश्वि दि	12:21PM	मृत्यु:, 4:15 रात सिंह में शुक्र, 12:21 दिन गण्डमूल समाप्त। • तृतीया का श्राद्ध	6:24	6:15
16	15	अक	गुरु	चतु प्र	6:56PM	भरण दि	10:07AM	काम्य:, संकट चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 8:56रात), 3:39 दिन वृष में चन्द्र। • चतुर्थी का श्राद्ध	6:25	6:14
11	16	**2**	शुक्र	पंच दि	4:46PM	कृति दि	8:27AM	छत्रम्। • पंचमी व षष्ठी का श्राद्ध	6:26	6:13
07	17	**3**	शनि	षष्ठी दि	3:19PM	रोहि दि	7:27AM	श्रीवत्स:, साहिब सप्तमी, 7:14 सायं मिथुन में चन्द्र। • सप्तमी का श्राद्ध	6:26	6:12
29 00	18	**4**	रवि	सप्त दि	2:38PM	मृग दि	7:13AM	सौम्य:। • अष्टमी का श्राद्ध	6:27	6:10
28 56	19	**5**	सोम	अष्ट दि	2:45PM	आर्द्रा दि	7:44AM	कालदण्ड:, महा लक्ष्मी अष्टमी, 2:38 रात कर्क में चन्द्र। • नवमी का श्राद्ध	6:28	6:09

51	20	6	भौम	नवम	दि	3:38PM	पुन	दि	9:01AM	स्थिर:। • दशमी का श्राद्ध	6:29	6:08
49	21	7	बुध	दश	दि	5:10PM	तिष्या	दि	10:58AM	मातंग:, 10:58 दिन गण्डमूल आरम्भ।	6:29	6:06
47	22	8	गुरु	एका	प्र	7:13PM	अश्ले	दि	1:27PM	अमृतम्, सन्यासियों का श्राद्ध, इन्द्रा एकादशी, 1:27 दिन सिंह में चन्द्र। • एकादशी का श्राद्ध	6:30	6:05
41	23	9	शुक्र	द्वाद	प्र	9:39PM	मघा	दि	4:18PM	काण्ड:, 4:18 सायं गण्डमूल समाप्त। • द्वादशी का श्राद्ध	6:31	6:04
36	24	10	शनि	त्रयो	प्र	12:17AM	पू.फा.	प्र	7:24PM	अलापकम्, 2:11 रात कन्या में चन्द्र। • त्रयोदशी का श्राद्ध	6:31	6:03
32	25	11	रवि	चर्तु	प्र	2:59AM	उ.फा.	प्र	10:34PM	मैत्रम, स्वामी प्राणनाथ भठ्ठ गरीब (भाईजी) जयन्ती • चतुर्दशी का श्राद्ध	6:32	6:01
28	26	12	सोम	अमा	प्र	5:36AM	हस्त	प्र	1:41AM	वज्रम्, सोमावसी, सोमवार व विजयेश्वर यात्रा, पितृ मावस। • अमावसी का श्राद्ध	6:33	6:00

श्राद्ध: प्रतिपदा का पहले दिन, द्वितीया से पंचमी तक अपने दिन, षष्ठी से दशमी तक पहले दिन, एकादशी से अमावसी तक अपने दिन।

मध्याह्न: प्रतिपदा का पहले दिन, द्वितीया से अमावसी तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक:- हम आचमन क्यों करते हैं?

कण्ठ शोधन के लिए आचमन किया जाता है। आचमन करने से कफ आदि की सफाई हो जाती है और श्वास क्रिया में तथा मंत्रों के उच्चारण में सहायता मिलती है। अन्यथा कफ आदि के कारण मंत्रोच्चारण में त्रुटि हो सकती है। तीन बार आचमन करने से कामिक, मानिसक और वाचिक त्रिविध पापों की निवृत्ति होती है।

आश्विन शुक्लपक्ष

13 अक्टूबर 2015 की ग्रह स्थिति :- कन्या में सूर्य, बुध, राहु; वृश्चिक में शनि; मीन में केतू; सिंह में भौम, गुरु, शुक्र।
सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	असू	अक	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शरद / हेमन्त ऋतु दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
28 16	27	13	भौम	प्रति	दिन रात-----	चित्र प्र	4:38AM	ध्वांक्ष:, अधिक दिन, नवरात्र (शरद) आरम्भ, 3:11 दिन तुला में चन्द्र।	6:34	5:59
12	28	14	बुध	प्रति दि	8:02AM	स्वात	दिन रात-----	धौम्य:।	6:34	5:58
08	29	15	गुरु	द्विती दि	10:12AM	स्वात दि	7:21AM	स्थिर:, 3:10 रात वृश्चिक में चन्द्र।	6:35	5:56
03	30	16	शुक्र	तृती दि	12:01PM	विशा दि	9:43AM	मातंग:, मासान्त, कर्मकाण्ड शिरोमणि काशीनाथ हण्डू निर्वाण दिवस।	6:36	5:55
27 56	कत	17	शनि	चतु दि	1:24PM	अनु दि	11:42AM	अमृतम्, 12:16 रात तुला में सूर्य, 11:42 दिन गण्डमूल आरम्भ।	6:37	5:54
52	2	18	रवि	पंच दि	2:18PM	ज्येष्ठ दि	1:12PM	काण्ड:, कुमार षष्ठी व्रत, यज्ञ दर्गा मन्दिर नगरोटा जम्मू, संक्रान्ति व्रत, 1:12 दिन धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	6:37	5:53
48	3	19	सोम	षष्ठी दि	2:39PM	मूल दि	2:11PM	अलापकम्, 2:11 दिन गण्डमूल समाप्त।	6:38	5:52

43	4	**20**	भौम	सप्त	दि	2:23PM	पू.षा. दि	2:34PM	मैत्रम्, 8:34 रात मकर में चन्द्र।	6:39	5:51
38	5	**21**	बुध	अष्ट	दि	1:30PM	उ.षा. दि	2:20PM	वज्रम्, श्री दुर्गाष्टमी।	6:40	5:50
33	6	**22**	गुरु	नवम	दि	11:59AM	श्रवण दि	1:29PM	ध्वजः, महानवमी, नवरात्र समाप्त, विजया दशमी, दशहरा, भद्रकाली वडीपोरा हन्दवारा यात्रा, मंगला भगवती यज्ञ वची पुलवामा, **A**	6:40	5:48
30	7	**23**	शुक्र	दश	दि	9:52AM	धनि दि	12:02PM	प्रजापत्यः। **A**12:50 रात कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	6:41	5:47
26	8	**24**	शनि	एका	दि	7:13AM	शत दि	10:05AM	आनन्दः, त्र्यहः, द्वादशी तिथि का क्षय (द्वाद प्र 4:08AM), पापंकुशा एकादशी व्रत, 2:20 रात मीन में चन्द्र।	6:42	5:46
21	9	**25**	रवि	त्रयो	प्र	12:44AM	पू.भा. दि	7:42AM	चरः, 7:42 प्रातः गण्डमूल आरम्भ।	6:43	5:45
16	10	**26**	सोम	चर्तु	प्र	9:10PM	रेव प्र	2:13AM	मातंगः, पण्डित कृपाराम दत आनन्दपुर साहिब प्रयाण दिवस, 2:13 रात मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	6:44	5:44
11	11	**27**	भौम	पूर्णि	दि	5:35PM	अश्वि प्र	11:25PM	अमृतम्, लवंग पुनिम, वालमिकी जयन्ती, पूर्णिमा व्रत, स्वामी देव गिरि जी यज्ञ पुरुखू कैम्प, 11:25 रात गण्डमूल समाप्त।	6:44	5:43

श्राद्धः प्रतिपदा का अपने दिन, द्वितीया से द्वादशी तक पहले दिन, त्रयोदशी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा का अपने दिन, द्वितीया का पहले दिन, तृतीया से अष्टमी अपने दिन, नवमी से द्वादशी पहले दिन, त्रयोदशी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

नोटः. यदि इस जन्त्री में प्रकाशित महापुरूषों की जयन्ती व श्राद्ध की तिथियों में किसी प्रकार की गलती हो तो कृपया (vijayeshwer@yahoo.com) द्वारा हमें सूचित करें।

डॉ. मनमोहन ज्योतिषी, विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय (रजि.), बोहड़ी पाट्टा, जम्मू। दूरभाष 2555064 (O) 2552625(R)

कार्तिक कृष्णपक्ष

28 अक्टूबर 2015 की ग्रह स्थिति :- तुला में सूर्य; वृश्चिक में शनि; मीन में केतू; सिंह में भौम, गुरु, शुक्र; कन्या में बुध, राहु।
सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाकः 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	कत	अक	वार	तिथि		समाप्ति काल	नक्षत्र		समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
27 06	12	28	बुध	प्रति	दि	2:09PM	भरण	प्र	8:50PM	गजः, 2:14 रात वृष में चन्द्र। श्री सिद्धबब जी यज्ञ,	6:45	5:42
02	13	29	गुरु	द्विती	दि	11:02AM	कृति	प्र	6:37PM	अलापकम्, 10:43 रात तुला में बुध।	6:46	5:41
26 58	14	30	शुक्र	तृती	दि	8:25AM	रोहि	दि	4:57PM	मैत्रम्, त्र्यहः चतुर्थी का क्षय (चतु प्र 6:26AM), संकट चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 8:26रात), करवा चौथ, 4:21 रात मिथुन में चन्द्र।	6:47	5:40
53	15	31	शनि	पंच	प्र	5:13AM	मृग	दि	3:57PM	वज्रम्।	6:48	5:39
48	16	नव	रवि	षष्ठी	प्र	4:51AM	आर्द्रा	दि	3:46PM	ध्वांक्षः, स्वामी ग्वाश कौल जी निर्वाण जग त्रलोक पुरा, गोल गुजराल।	6:49	5:38
43	17	2	सोम	सप्त	प्र	5:20AM	पुन	दि	4:25PM	धौम्यः, 10:10 दिन कर्क में चन्द्र।	6:50	5:37
38	18	3	भौम	अष्ट	प्र	6:39AM	तिष्या	प्र	5:52PM	प्रवर्धः, 8:08 प्रातः कन्या में भौम, 7:30 प्रातः कन्या में शुक्र, 5:52 सायं गण्डमूल आरम्भ।	6:50	5:37

विजयेश्वर जन्त्री के प्रवर्तक
ज्यो. आफ़ताब शर्मा
अन्तर्ध्यान दिवस
30 अक्टूबर

33	19	4	बुध	नवम	दिन रात -----	अश्ले प्र	8:03PM	क्षय:, अधिक तिथि, 8:03 रात सिंह में चन्द्र।	6:51	5:36
30	20	5	गुरु	नवम दि	8:37AM	मघा प्र	10:47PM	गज:, 10:47 रात गण्डमूल समाप्त।	6:52	5:35
28	21	6	शुक्र	दश दि	11:05AM	पू.फा. प्र	1:52AM	सिद्ध:।	6:53	5:34
23	22	7	शनि	एका दि	1:47PM	उ.फा. प्र	5:03AM	उन्मूलं, रमा एकादशी, 8:39 प्रात: कन्या में चन्द्र।	6:54	5:33
18	23	8	रवि	द्वाद दि	4:32PM	हस्त	दिन रात -----	मानसम्।	6:55	5:33
13	24	9	सोम	त्रयो प्र	7:06PM	हस्त दि	8:10AM	वज्रम, धन्वन्तरी जयन्ती, 9:38 रात तुला में चन्द्र।	6:56	5:32
11	25	10	भौम	चर्तु प्र	9:23PM	चित्र दि	11:02AM	ध्वांक्ष:, स्वामी चूनीलाल जी राजदान जयन्ती, श्री हनुमान जयन्ती।	6:57	5:31
06	26	11	बुध	अमा प्र	11:17PM	स्वात दि	1:34PM	धौम्य:, दीपमाला, महा लक्ष्मी पूजन, स्वा. ताराचन्द जी जयन्ती त्रिलोकपुरा, गोलगुजराल, जम्मू।	6:57	5:30

दीपावाली
11 नवम्बर

श्राद्ध: प्रतिपदा से चतुर्थी तक पहले दिन, पंचमी से नवमी तक अपने दिन, दशमी से द्वादशी पहले दिन, त्रयोदशी से अमावसी तक अपने दिन।

मध्याह्न: प्रतिपदा का अपने दिन, द्वितीया से चतुर्थी पहले दिन, पंचमी से नवमी तक अपने दिन, दशमी का पहले दिन, एकादशी से अमावसी अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक:- प्राणायाम क्या है? प्राणायाम से क्या कोई लाभ होता है? प्राणायाम से श्वास क्रिया का नियमन होता है। इसका सीधा अर्थ प्राणों का व्यायाम करना होता है। प्राणायाम करने से ही ऋषि मुनियों ने दीर्घायु प्राप्त किया। प्राणायाम के द्वारा स्वेच्छा से मृत्यु प्राप्त करने की शक्ति प्राप्त होती है। प्राणायाम के द्वारा मनुष्य मन को नियंत्रित करके 'प्राणवायु' को पकड़ता है और छोड़ता है। और इच्छानुसार प्राणों को कपाल में स्थित 'ब्रह्म रन्ध्र' में चढ़ाकर 'इच्छा मृत्यु' पा सकता है किन्तु इसके लिए कठिन साधना करना होता है।

कार्तिक शुक्लपक्ष

12 नवम्बर 2015 की ग्रह स्थिति :- तुला में सूर्य, बुध; वृश्चिक में शनि; मीन में केतू; सिंह में गुरु; कन्या में भौम, शुक्र, राहु।
सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	कत	नव	वार	तिथि		समाप्ति काल	नक्षत्र		समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
26 01	27	**12**	गुरु	प्रति	प्र	12:45AM	विशा	दि	3:42PM	प्रवर्ध:, अन्नकूट, गोवर्द्धन पूजा, विश्व कर्म पूजा, 9:13 प्रात: वृश्चिक में चन्द्र।	6:58	5:30
25 58	28	**13**	शुक्र	द्विती	प्र	1:48AM	अनु	दि	5:26PM	क्षय:, भातृ दूज/भाई दूज, 5:26 सायं गण्डमूल आरम्भ।	6:59	5:29
55	29	**14**	शनि	तृती	प्र	2:25AM	ज्येष्ठ	प्र	6:44PM	गज:, 6:44 सायं धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	7:00	5:28
51	30	**15**	रवि	चतु	प्र	2:36AM	मूल	प्र	7:39PM	सिद्ध:, मासान्त, 7:39 सायं गण्डमूल समाप्त।	7:01	5:28
48	मार्ग	**16**	सोम	पंच	प्र	2:23AM	पू.षा.	प्र	8:08PM	उन्मूलं, 12:03 रात वृश्चिक में सूर्य, 2:12 रात मकर में चन्द्र।	7:02	5:27
43	2	**17**	भौम	षष्ठी	प्र	1:44AM	उ.षा.	प्र	8:14PM	मानसम्, कुमारषष्ठी व्रत, संक्रान्ति व्रत, 7:30 प्रात: वृश्चिक में बुध।	7:03	5:27
41	3	**18**	बुध	सप्त	प्र	12:39AM	श्रवण	प्र	7:54PM	छत्रम्, स्वामी श्री गोकुल नाथ जी जयन्ती, अम्बिका विहार, गोल गुजराल जम्मू।	7:04	5:26
36	4	**19**	गुरु	अष्ट	प्र	11:09PM	धनि	प्र	7:09PM	श्रीवत्स:, श्री महादेव काकजी यज्ञ (रत्नीपुरा), गोपाल अष्टमी, 7:35 प्रात: कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	7:05	5:26

33	5	**20**	शुक्र	नवम	प्र	9:13PM	शत प्र	5:58PM	सौम्य:।	7:06	5:25
31	6	**21**	शनि	दश	प्र	6:53PM	पू.भा. दि	4:24PM	कालदण्ड:, 10:49 दिन मीन में चन्द्र।	7:07	5:25
26	7	**22**	रवि	एका	दि	4:13PM	उ.भा. दि	2:29PM	स्थिर:, हरिबोधिनी एकादशी, शिव स्वाप, स्वा. आत्माराम जी यज्ञ गोसाईगुण्ड, 2:29 दिन से गण्डमूल आरम्भ।	7:07	5:25
23	8	**23**	सोम	द्वाद	दि	1:17PM	रेव दि	12:18PM	मातंग:, 2:18 दिन मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	7:08	5:24
22	9	**24**	भौम	त्रयो	दि	10:14AM	अश्वि दि	9:58AM	अमृतम्, त्र्यह: चतुर्दशी का क्षय (चर्तु प्र 7:09 AM), 9:58 दिन गण्डमूल समाप्त।	7:09	5:24
18	10	**25**	बुध	पूर्णि	प्र	4:14AM	भरण दि	7:38AM	काण्ड:, श्री गुरु नानक जयन्ती, कार्तिक पूर्णिमा व्रत, दीपदान मुहूर्त, हवन स्वामी सूरदास जी आश्रम सारी जम्मू,1:04 दिन वृष में चन्द्र।	7:10	5:24

श्राद्ध: प्रतिपदा से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी से चतुर्दशी तक पहले दिन, पूर्णिमा का अपने दिन।

मध्याह्न: प्रतिपदा से द्वादशी तक अपने दिन, त्रयोदशी व चतुर्दशी का पहले दिन, पूर्णिमा का अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक:- **भोजन खाने से पूर्व आचमन करने का मन्त्र:** अन्त: चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुख: त्वं यज्ञ:, त्वं वष्टकार:, आपोज्योति रसोमृतं ब्रह्म भूर्भव: स्वरोम्। अमृतोपस तरणमसि। अर्थात् जल रूपी अमृत से ढक्कन खोलता हूँ।

भोजन समाप्त करने के पश्चात् आचमन करने का मन्त्र: अन्त: चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुख: त्वं यज्ञ: त्वं वष्टकार:, आपो ज्योति रसोमृतं ब्रह्म भूर्भव: स्वरोम्। अमृतोपिधानमसि। अर्थात् जलरूप अमृत से टक्कन बंद करता हूँ।

मार्ग कृष्णपक्ष

26 नवम्बर 2015 की ग्रह स्थिति :- वृश्चिक में सूर्य, बुध, शनि; मीन में केतु; सिंह में गुरु; कन्या में भौम, शुक्र, राहु।
सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	मग	नव	वार	तिथि		समाप्ति काल	नक्षत्र		समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
25 16	11	26	गुरु	प्रति	प्र	1:38AM	रोहि	प्र	3:36AM	उन्मूलं।	7:11	5:23
13	12	27	शुक्र	द्विती	प्र	11:30PM	मृग	प्र	2:13AM	मानसम्, 2:50 दिन मिथुन में चन्द्र, स्वा. पोष बब महाराज जयन्ती व यज्ञ।	7:12	5:23
11	13	28	शनि	तृती	प्र	10:01PM	आर्द्रा	प्र	1:30AM	मुद्गरम्, स्वा. आनन्द जी यज्ञ जमनगरी।	7:13	5:23
06	14	29	रवि	चतु	प्र	9:17PM	पुन	प्र	1:32AM	ध्वज:, संकट निवारण चतुर्थी (चन्द्रोदय 8:59रात), स्वामी काशी बब यज्ञ हुगाम, 7:27 सायं कर्क में चन्द्र।	7:14	5:23
03	15	30	सोम	पंच	प्र	9:24PM	तिष्या	प्र	2:22AM	प्रजापत्य:, 7:46 प्रात: तुला में शुक्र, 2:22 रात से गण्डमूल।	7:15	5:23
02	16	दिस	भौम	षष्ठी	प्र	10:21PM	अश्ले	प्र	4:02AM	आनन्द:, 4:02 रात सिंह में चन्द्र।	7:15	5:22
01	17	2	बुध	सप्त	प्र	12:04AM	मघा	प्र	6:23AM	चर:, 6:23 प्रात: गण्डमूल समाप्त।	7:16	5:22
24 58	18	3	गुरु	अष्ट	प्र	2:23AM	पू.फा.		दिन रात-----	मुसुलं, **महाकाल भैरव अष्टमी।**	7:17	5:22

56	19	4	शुक्र	नवम प्र	5:03AM	पू.फा. दि	9:14AM	सिद्ध:, 4:00 दिन कन्या में चन्द्र।	7:18	5:22
53	20	5	शनि	दश	दिन रात-----	उ.फा. दि	12:22PM	उन्मूलं, अधिक तिथि।	7:19	5:22
51	21	6	रवि	दश दि	7:48AM	हस्त दि	3:31PM	मानसम्, 5:00 प्रात: तुला में चन्द्र, 12:01 दिन धनु में बुध।	7:20	5:22
50	22	7	सोम	एका दि	10:23AM	चित्र प्र	6:25PM	मुद्गरम्, **उत्पन्ना एकादशी।**	7:20	5:22
48	23	8	भौम	द्वाद दि	12:35PM	स्वात प्र	8:56PM	ध्वज:, स्वामी सर्वानन्द जी यज्ञ गोतमनाग।	7:21	5:22
47	24	9	बुध	त्रयो दि	2:16PM	विशा प्र	10:56PM	प्रजापत्य:, 4:29 दिन वृश्चिक में चन्द्र।	7:22	5:23
46	25	10	गुरु	चर्तु दि	3:24PM	अनु प्र	12:24AM	आनन्द:, मेला पुरमण्डल, देविका स्नान उदमपुरा जम्मू, 12:24 रात गण्डमूल आरम्भ।	7:23	5:23
43	26	11	शुक्र	अमा दि	3:59PM	ज्येष्ठ प्र	1:21AM	चर:, 1:21 रात धनु में चन्द्र।	7:23	5:23

श्राद्ध: प्रतिपदा से दशमी तक अपने दिन,एकादशी से अमावसी तक पहले दिन।

मध्याह्न: प्रतिपदा से दशमी तक अपने दिन,एकादशी का पहले दिन, द्वादशी से अमावसी तक अपने दिन।

एक-श्लोकी- नवग्रहस्तोत्रम् :-

ब्रह्मा- मुरारि:- त्रिपुरान्त- कारी, भानु: शशी भूमिसुतो बुधश्च,
गुरुश्च शुक्र: शनि- राहु केतव: कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।।

मार्ग शुक्लपक्ष

12 दिसम्बर 2015 की ग्रह स्थिति :- वृश्चिक में सूर्य, शनि; धनु में बुध; मीन में केतू; सिंह में गुरु; कन्या में भौम, राहु, तुला में शुक्र।

सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2015

दिन मान	मग	दि	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, हेमन्त / शिशिर ऋतु, दक्षिणायन/ उतरायण।	सू उ	सू अ
24 43	27	**12**	शनि	प्रति दि	4:04PM	मूल प्र	1:50AM	मुसुलं, 1:50 रात गण्डमूल समाप्त।	7:24	5:23
41	28	**13**	रवि	द्विती दि	3:43PM	पू.षा. प्र	1:56AM	शूलम्, श्री शारिका जी जयन्ती, स्वा. विद्याधर जी यज्ञ।	7:25	5:23
42	29	**14**	सोम	तृती दि	3:01PM	उ.षा. प्र	1:43AM	मृत्यु:, 7:55 प्रात: मकर में चन्द्र।	7:25	5:24
40	30	**15**	भौम	चतु दि	2:01PM	श्रवण प्र	1:15AM	अलापकम्, मासान्त।	7:26	5:24
40	पौष	**16**	बुध	पंच दि	12:47PM	धनि प्र	12:32AM	मैत्रम्, गुरु तेगबहादुर जी शहीदी दिवस, कुमारषष्ठी व्रत, 2:42 दिन धनु में सूर्य, संक्रान्ति व्रत, 12:55 दिन कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	7:27	5:24
41	2	**17**	गुरु	षष्ठी दि	11:19AM	शत प्र	11:38PM	वज्रम्।	7:27	5:25
38	3	**18**	शुक्र	सप्त दि	9:39AM	पू.भा. प्र	10:31PM	ध्वांक्ष:, 4:49 दिन मीन में चन्द्र।	7:28	5:25
40	4	**19**	शनि	अष्ट दि	7:47AM	उ.भा. प्र	9:13PM	धौम्य:, त्र्यह: नवमी का क्षय (नव प्र 5:44AM), अष्टमी व्रत, 9:13 रात गण्डमूल आरम्भ।	7:29	5:25

पण्डित कृपाराम दत्त
बलिदान दिवस
21 दिसम्बर

38	5	20	रवि	दश	प्र	3:31AM	रेव	प्र	7:45PM	प्रवर्धः, 7:45 सायं मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	7:29	5:26
37	6	21	सोम	एका	प्र	1:12AM	अश्वि	प्र	6:09PM	क्षयः, मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयन्ती (कुमार जी आश्रम मुठ्ठी), 6:09 सायं गण्डमूल समाप्त, पण्डित कृपाराम दत्त बलिदान दिवस।	7:30	5:26
38	7	22	भौम	द्वाद	प्र	10:50PM	भरण	दि	4:30PM	गजः, 10:05 रात वृष में चन्द्र, सूर्य उतरायण में, शिशिर ऋतु शरू।	7:30	5:27
40	8	23	बुध	त्रयो	प्र	8:33PM	कृति	दि	2:52PM	सिद्धः, 5:58 रात तुला में भौम।	7:31	5:27
40	9	24	गुरु	चर्तु	प्र	6:27PM	रोहि	दि	1:24PM	उन्मूलं, श्री दत्तात्रेय जयन्ती, 12:46 मिथुन में चन्द्र।	7:31	5:28
40	10	25	शुक्र	पूर्णि	दि	4:41PM	मृग	दि	12:14PM	मानसम्, श्री अन्नपूर्ण जयन्ती, पूर्णिमा व्रत, त्रिपुरा भैरव जयन्ती, 3:14 दिन वृश्चिक में शुक्र।	7:32	5:28

श्राद्धः प्रतिपदा से नवमी तक पहले दिन, दशमी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से पंचमी तक अपने दिन, षष्ठी से नवमी तक पहले दिन, दशमी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

आवश्यक संदेश : मार्ग शुक्लपक्ष पंचमी (16 दिसम्बर 2015) काश्मीरी पण्डितों के धर्मरक्षक अमर बलिदानी श्री गुरुतेगबहादुर महराज का शहीदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन गुरुद्वारा शीशगंज, चान्दनी चौक दिल्ली में दीवान आयोजित होता है। दिल्ली वासी काश्मीरी पण्डित इस दिन इस महान तीर्थस्थल पर उनके उस महान बिलिदान को याद व अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। हम शेष कश्मीरी पण्डित समाज को भी इस दिन अपने निकटतम गुरुद्वारों में आयोजित दीवानों में सम्मिलित होने की प्रार्थना करते हैं।

तिलक जन्जू (जनेउ) राखा प्रभु ताका, कीनौ बड़ो कलू में साका। धर्म हेत साका जिन किया, सीस दिया पर सिरर न दिया।।
तेग बहादुर के चलत, भयो जगत को सोक, है है है सब जग भयो, जै जै सुर लोक।।



पौष कृष्णपक्ष

12 दिसम्बर 2015 की ग्रह स्थिति :- धनु में सूर्य, बुध; मीन में केतू; सिंह में गुरु; कन्या में राहु, तुला में भौम; वृश्चिक में शुक्र व शनि।

सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2015-2016

दिन मान	पौष	दिस	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शिशर ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
24 40	11	**26**	शनि	प्रति दि	3:24PM	आर्द्रा दि	11:29AM	मुद्गरम्, मुंजहर तहर, मातृका पूजा, 5:18 रात कर्क में चन्द, 11:50 रात मकर में बुध।	7:32	5:29
40	12	**27**	रवि	द्विती दि	2:42PM	पुन दि	11:19AM	ध्वजः, स्वर्गी श्री प्रेम नाथ भट्ट बलिदान दिवस, चेतना दिवस, महात्मा श्री ताराचन्द जी यज्ञ त्रिलोकपुरा गोलगुजराल,।	7:32	5:30
42	13	**28**	सोम	तृती दि	2:43PM	तिष्या दि	11:49AM	प्रजापत्यः, संकट चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 8:39 रात), 11:49 दिन गण्डमूल आरम्भ।	7:33	5:30
42	14	**29**	भौम	चतु दि	3:29PM	अश्ले दि	1:02PM	आनन्दः, 1:02 दिन सिंह में चन्द, महात्मा श्री काशीनाथ जी कौल यज्ञ, त्रलोकपुरा, गोलगुजराल जम्मू,।	7:33	5:31
43	15	**30**	बुध	पंच दि	4:59PM	मघा दि	2:58PM	चरः, 2:58 दिन गण्डमूल समाप्त।	7:33	5:32
45	16	**31**	गुरु	षष्ठी प्र	7:06PM	पू.फा. दि	5:30PM	मुसुलं, 12:13 रात कन्या में चन्द।	7:34	5:32
45	17	जन	शुक्र	सप्त प्र	9:39PM	उ.फा. प्र	8:27PM	शूलम्, श्री शारदा देवी जयन्ती 2015 ईस्वी आरम्भ।	7:34	5:33

47	18	2	शनि	अष्ट	प्र	12:22AM	हस्त	प्र	11:35PM	मृत्युः, महाकाली जयन्ती, स्वा. रघुनाथ जी कुकिलू यज्ञ।	7:34	5:34
50	19	3	रवि	नवम	प्र	2:59AM	चित्र	प्र	2:36AM	काम्यः, 1-07 दिन तुला में चन्द्र।	7:34	5:35
52	20	4	सोम	दश	प्र	5:13AM	स्वात	प्र	5:17AM	छत्रम्, श्री आनन्देश्वर भैरव जयन्ती, स्वामी नन्द बब साहिब जयन्ती, लालेदाबाग।	7:34	5:35
51	21	5	भौम	एका	प्र	6:54AM	विशा	प्र	7:26AM	श्रीवत्सः, सफलता एकादशी, 12:57 रात वृश्चिक में चन्द्र।	7:35	5:36
52	22	6	बुध	द्वाद		दिन रात -----	अनु		दिन रात -----	सौम्यः, अधिक तिथि। A सिंह में वक्री राहु व कुम्भ में वक्री केतु।	7:35	5:37
55	23	7	गुरु	द्वाद	दि	7:55AM	अनु	दि	8:57AM	आनन्दः, महामहेश्वराचार्य श्री राम जी जयन्ती त्रलोकपुरा गोल गुजराल, 8:57 प्रातः गण्डमूल आरम्भ।	7:35	5:38
57	24	8	शुक्र	त्रयो	दि	8:14AM	ज्येष्ठ	दि	9:47AM	चरः, 9:47 दिन धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	7:35	5:39
25 00	25	9	शनि	चर्तु	दि	7:54AM	मूल	दि	10:01AM	मुसुलंः, क्ष्यचरिपावम, त्र्यहः अमावसी का क्षय (अमा प्र 7:01AM), अशोकानन्द नागडण्ढी यज्ञ, 10:01 दिन गण्डमूल समाप्त, 10:27दिन A	7:35	5:39

श्राद्धः प्रतिपदा से पंचमी तक पहले दिन, षष्ठी से द्वादशी तक अपने दिन, त्रयोदशी से अमावसी तक पहले दिन।
मध्याह्नः प्रतिपदा से द्वादशी तक अपने दिन, त्रयोदशी से अमावसी तक पहले दिन।

मृतसंजीवनी मंत्र :- ॐ हौं जूं सः, ॐ भूर्भुवः स्वः, ॐ त्र्यम्बकं यजामहे, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं, ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्,
ॐ भर्गो देवस्य धीमहि, ॐ उर्वारुकमिव बन्धनाद्, ॐ मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्, ॐ स्वः भुवः ॐ सः जूं हौ ॐ।।

पौष शुक्लपक्ष

10 जनवरी 2016 की ग्रह स्थिति :- धनु में सूर्य; मकर में बुध(व), कुम्भ में केतू, सिंह में गुरु(व), राहु; तुला में भौम; वृश्चिक में शुक्र,शनि। सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2016

दिन मान	पौष	जन	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शिशर ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
25 02	26	**10**	रवि	प्रति प्र	5:40AM	पू.षा. दि	9:42AM	शूलम्, 3:33 दिन मकर में चन्द्र, श्री मिरजाकाक जयन्ती, नगरोटा।	7:35	5:40
03	27	**11**	सोम	द्विती प्र	4:00AM	उ.षा. दि	8:57AM	मृत्यु:।	7:35	5:41
07	28	**12**	भौम	तृती प्र	2:06AM	श्रवण दि	7:55AM	अलापकम्।, 7:18 सायं कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ, स्वामी विवेकानंद जयन्ती। ।	7:35	5:42
10	29	**13**	बुध	चतु प्र	12:05AM	शत प्र	5:19AM	मानसम्, मासान्त।	7:34	5:43
12	माघ	**14**	गुरु	पंच प्र	10:01PM	पू.भा. प्र	3:55AM	मुद्गरम्, 1:26 रात मकर में सूर्य, 10:16 रात मीन में चन्द्र, 3:02 दिन धनु में वक्री बुध, मकर संक्रान्ति (शिशर संक्रान्ति)।	7:34	5:44
15	2	**15**	शुक्र	षष्ठी प्र	7:57PM	उ.भा. प्र	2:33AM	ध्वज:, कुमार षष्ठी, संक्रान्ति व्रत, 2:33 रात से गण्डमूल आरम्भ।	7:34	5:45
17	3	**16**	शनि	सप्त दि	5:56PM	रेव प्र	1:13AM	प्रजापत्य:, 1:13 रात मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	7:34	5:46

21	4	17	रवि	अष्ट दि	3:58PM	अश्वि प्र	11:57PM	आनन्दः, अष्टमी व्रत, श्रीमती कमला काचरू यज्ञ, 11:57 रात गण्डमूल समाप्त।	7:34	5:46
25	5	18	सोम	नवम दि	2:05PM	भरण प्र	10:48PM	चरः, श्री पृथ्वी नाथ भट्ट नूरपुरा त्राल जयन्ती, 4:31रात वृष में चन्द्र, 6:20 रात (अगले प्रातः) धनु में शुक्र।	7:34	5:47
27	6	19	भौम	दश दि	12:20PM	कृति प्र	9:45PM	मुसुलं, काश्मीरी पण्डित निष्कासन दिवस।	7:33	5:48
31	7	20	बुध	एका दि	10:43AM	रोहि प्र	8:54PM	शूलम्, पुत्रदा एकादशी व्रत।	7:33	5:49
32	8	21	गुरु	द्वाद दि	9:20AM	मृग प्र	8:17PM	मृत्युः, 8:33 प्रातः मिथुन में चन्द्र।	7:33	5:50
35	9	22	शुक्र	त्रयो दि	8:14AM	आर्द्रा प्र	8:00PM	काम्यः, त्र्यहः चतुर्दशी का क्षय (चर्तु प्र 7:31AM), मथुरा देवी यज्ञ वेरीनाग, काश्मीर।	7:32	5:51
38	10	23	शनि	पूर्णि प्र	7:16AM	पुन प्र	8:07PM	छत्रम्, पूर्णिमा व्रत, 2:02 दिन कर्क में चन्द्र।	7:32	5:52

श्राद्धः प्रतिपदा से सप्तमी तक अपने दिन, अष्टमी से चतुर्दशी तक पहले दिन, पूर्णिमा का अपने दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से दशमी तक अपने दिन, एकादशी से चतुर्दशी तक पहले दिन, पूर्णिमा का अपने दिन।

सभी उलक्षनों से छुअकारा पाने का मंत्र :

सर्वाबाधा विर्निमुक्तो धन धान्य समन्विताः

मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविष्यति न संशयः।

माघ कृष्णपक्ष

24 जनवरी 2016 की ग्रह स्थिति :- मकर में सूर्य; कुम्भ में केतू, सिंह में गुरु(व), राहु; तुला में भौम; वृश्चिक में शनि, धनु में बुध(व), शुक्र(व)।
सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2016

दिन मान	माघ	जन	वार	तिथि		समाप्ति काल	नक्षत्र		समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शिशर ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
25 43	11	24	रवि	प्रति		दिन रात -----	तिष्या	प्र	8:44PM	श्रीवत्स:, अधिक तिथि, 8:44 सायं गण्डमूल आरम्भ।	7:31	5:53
46	12	25	सोम	प्रति	दि	7:33AM	अश्ले	प्र	9:54PM	सौम्य:, 9:54 रात सिंह में चन्द्र।	7:31	5:54
50	13	26	भौम	द्विती	दि	8:26AM	मघा	प्र	11:39PM	कालदण्ड:, भारतगणतन्त्र दिवस, 11:39 रात गण्डमूल समाप्त।	7:30	5:55
53	14	27	बुध	तृती	दि	9:55AM	पू.फा.	प्र	1:58AM	स्थिर:, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 9:14रात)।	7:30	5:56
58	15	28	गुरु	चतु	दि	11:57AM	उ.फा.	प्र	4:43AM	मातंग:, 8:37 प्रात: कन्या में चन्द्र, स्वामी आफताभ राम जी यज्ञ, स्वामी काशीनाथ कौल यज्ञ त्रिलोकपुरा गोलगुजराल।	7:29	5:57
26 02	16	29	शुक्र	पंच	दि	2:25PM	हस्त		दिन रात -----	अमृतम्।	7:29	5:58
06	17	30	शनि	षष्ठी	दि	5:05PM	हस्त	दि	7:45AM	मृत्यु:, 9:19 रात तुला में चन्द्र।	7:28	5:59
10	18	31	रवि	सप्त	प्र	7:44PM	चित्र	दि	10:51AM	काम्य:, साहिब सप्तमी। स्वामी विवेकानन्द जयन्ती	7:28	6:00

13	19	फर	सोम	अष्ट	प्र	10:06PM	स्वात दि	1:46PM	छत्रम्।	7:27	6:01
18	20	2	भौम	नवम	प्र	11:56PM	विशा दि	4:15PM	श्रीवत्स:, 9:41 दिन वृश्चिक में चन्द्र।	7:26	6:01
23	21	3	बुध	दश	प्र	1:07AM	अनु प्र	6:08PM	सौम्य:, श्री नीलकण्ठ शर्मा (श्रीनगर) यज्ञ, 6:08 सायं गण्डमूल आरम्भ।	7:26	6:02
27	22	4	गुरु	एका	प्र	1:31AM	ज्येष्ठ प्र	7:18PM	कालदण्ड:, षटतिला एकादशी, 7:18 सायं धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	7:25	6:03
31	23	5	शुक्र	द्वाद	प्र	1:08AM	मूल प्र	7:43PM	स्थिर:, 7:43 सायं गण्डमूल समाप्त।	7:24	6:04
36	24	6	शनि	त्रयो	प्र	12:03AM	पू.षा. प्र	7:25PM	शूलम्, 1:14 रात मकर में चन्द्र।	7:23	6:05
38	25	7	रवि	चर्तु	प्र	10:20PM	उ.षा. प्र	6:29PM	अमृतम्, शिवचतुर्दशी व्रत, महामहेश्वराचार्य श्री राम जी यज्ञ, त्रिलोकपुरा गोलगुजराल जम्मू।	7:23	6:06
43	26	8	सोम	अमा	प्र	8:09PM	श्रवण दि	5:03PM	सिद्ध:, माघ मावस, अमावसी व्रत, 4:12 रात कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ, 3:08 रात मकर में बुध।	7:22	6:07

शिवचतुर्दशी व्रत
6, 7, 8 फरवरी

श्राद्ध: प्रतिपदा का अपने दिन, द्वितीया से षष्ठी तक पहले दिन, सप्तमी से अमावसी तक अपने दिन।
मध्याह्न: प्रतिपदा का अपने दिन, द्वितीया से चतुर्थी तक पहले दिन, पंचमी से अमावसी तक अपने दिन।

हर प्रकार के मंगल प्राप्ति का मंत्र :-

सर्व मंगल मंगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके,
शरण्ये त्रयम्बके, गौरि नारायणि नमोस्तुते।

माघ शुक्लपक्ष

9 फरवरी 2016 की ग्रह स्थिति :- मकर में सूर्य, बुध; कुम्भ में केतू, सिंह में गुरु(व), राहु; तुला में भौम; वृश्चिक में शनि, धनु में शुक्र।
सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2016

दिन मान	माघ	फर	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शिशर / वसन्त ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
26 47	27	9	भौम	प्रति दि	5:37PM	धनि दि	3:16PM	उन्मूलं।	7:21	6:08
51	28	10	बुध	द्विती दि	2:52PM	शत दि	1:15PM	मानसम्, स्वा. नन्द लाल जी यज्ञ (हुशरू, टिक्कर), 5:41 रात मीन में चन्द्र।	7:20	6:09
56	29	11	गुरु	तृती दि	12:03PM	पू.भा. दि	11:10AM	मुद्गरम्, गौरी तृतीया। **A**समाप्त, 2:49 दिन मकर में शुक्र।	7:19	6:10
27 00	30	12	शुक्र	चतु दि	9:17AM	उ.भा. दि	9:07AM	ध्वज:, त्र्यह: पंचमी का क्षय (पंच प्र 6:40AM), वसन्त पंचमी, मासान्त, त्रिपुरा चतुर्थी व्रत, 7:13 प्रात: मेष में चन्द्र व पंचक **A**	7:18	6:11
06	फाल	13	शनि	षष्ठी प्र	4:17AM	अश्वि प्र	5:33AM	सौम्य:, कुमार षष्ठी व्रत, 2:25 दिन कुम्भ में सूर्य, संक्रान्तिं व्रत, 5:33 रात गण्डमूल समाप्त।	7:17	6:12
11	2	14	रवि	सप्त प्र	2:11AM	भरण प्र	4:10AM	कालदण्ड:, सूर्य सप्तमी, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा।	7:16	6:12
16	3	15	सोम	अष्ट प्र	12:27AM	कृति प्र	3:09AM	स्थिर:, भीष्म अष्टमी, श्री निरंजन नाथ कौल (बडगाम) जयन्ती, 9:53 दिन वृष में चन्द्र।	7:15	6:13

21	4	**16**	भौम	नवम	प्र	11:05PM	रोहि	प्र	2:30AM	मातंगः।	7:14	6:14
23	5	**17**	बुध	दश	प्र	10:07PM	मृग	प्र	2:14AM	अमृतम्, 2:19 दिन मिथुन में चन्द्र।	7:13	6:15
28	6	**18**	गुरु	एका	प्र	9:34PM	आर्द्रा	प्र	2:24AM	काण्डः, भीमसेन काह, जया एकादशी व्रत।	7:12	6:16
33	7	**19**	शुक्र	द्वाद	प्र	9:27PM	पुन	प्र	2:58AM	अलापकम्, भीष्म द्वादशी, 8:47 रात कर्क में चन्द्र।	7:11	6:17
38	8	**20**	शनि	त्रयो	प्र	9:47PM	तिष्या	प्र	4:00AM	मैत्रम्, 4:42 दिन वृश्चिक में भौम, 4:00 रात गण्डमूल आरम्भ।	7:10	6:18
43	9	**21**	रवि	चर्तु	प्र	10:34PM	अश्ले	प्र	5:28AM	वज्रम्, यक्षिणी चुदाह, 5:28 रात सिंह में चन्द्र।	7:09	6:19
48	10	**22**	सोम	पूर्णि	प्र	11:50PM	मघा		दिनरात -----	ध्वांक्षः, काव पुनिम, माघ पुनिम, गुरू रविदास जयन्ती, स्वामी कुमार जी आश्रम यज्ञ मुट्ठी।	7:08	6:19

श्राद्धः प्रतिपदा का अपने दिन, द्वितीया से पंचमी तक पहले दिन, षष्ठी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से तृतीया तक अपने दिन, चतुर्थी व पंचमी पहले दिन, षष्ठी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- **धार्मिक आख्यानों के अनुसार शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को चन्द्र दर्शन नहीं करना चाहिए? क्यों?**
सूर्य चन्द्र की गणना के अनुसार चतुर्थी तिथि के दिन चन्द्रमा ऐसे त्रिकोण पर स्थित होता है जहाँ से सूर्य की 'मृत्युपरक करिणें' (विषैली) चन्द्रमा पर पड़ती हैं। सूर्य का वही मृत्यु परक प्रकाश चतुर्थी को चन्द्रमा द्वारा पृथवी की ओर आता है। वैज्ञानिक भी इस तथ्य को सत्य मानते हैं। इसकारण शुक्ल पक्ष की चतुर्थी के चन्द्रमा को नहीं देखना चाहिए। एक पौराणिक कथा के अनुसार एक बार चन्द्रमा ने गणेश जी का उपहास किया तब क्रोधित गणेश जी ने चन्द्रमा को श्राप दे दिया-जाओ तुम काले कुलूटे हो जाओ। यह सुनकर चन्द्रमा भय से काँपने लगे, क्षमा याचना करने पर गणेश जी बोले 'अब तुम सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होओ गे। मेरा श्राप केवल भाद्र पद शुक्ल पक्ष चतुर्थी (गणेश चतुर्थी) को प्रभाव हीन रहेगा। बाकी चतुर्थीयों को इसका प्रभाव अधिक रहेगा।

फालगुन कृष्णपक्ष

23 फरवरी 2016 की ग्रह स्थिति :- कुम्भ में सूर्य, केतु; सिंह में गुरु(व), राहु; वृश्चिक में भौम, शनि; मकर में बुध, शुक्र।

सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2016

दिन मान	फा	फर	वार	तिथि		समाप्ति काल	नक्षत्र		समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वसन्त ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
27 53	11	**23**	भौम	प्रति	प्र	1:32AM	मघा	दि	7:22AM	कालदण्ड:, हुरॅ उकदोह, स्वामी जीवन साहिब यज्ञ, 7:22 प्रातः गण्डमूल समाप्त।	7:07	6:20
57	12	**24**	बुध	द्विती	प्र	3:39AM	पू.फा.	दि	9:42AM	स्थिर:, 4:21 दिन कन्या में चन्द्र।	7:06	6:21
28 03	13	**25**	गुरु	तृती	प्र	6:05AM	उ.फा.	दि	12:24PM	मातंग:।	7:05	6:22
08	14	**26**	शुक्र	चतु		दिनरात -----	हस्त	दि	3:22PM	अमृतम्, अधिक तिथि, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 9:44 रात),4:54 रात तुला चन्द्र	7:04	6:23
13	15	**27**	शनि	चतु	दि	8:43AM	चित्र	प्र	6:27PM	काण्ड:।	7:03	6:24
18	16	**28**	रवि	पंच	दि	11:21AM	स्वात	प्र	9:30PM	अलापकम्।	7:01	6:24
21	17	**29**	सोम	षष्ठी	दि	1:48PM	विशा	प्र	12:17AM	मैत्रम्, 5:37 सायं वृश्चिक में चन्द्र, स्वा. कृष्णानन्द सरस्वती अन्तर्ध्यान दिवस।	7:00	6:25
27	18	मार्च	भौम	सप्त	दि	3:52PM	अनु	प्र	2:37AM	वज्रम्, 12:11 रात कुम्भ में बुध, स्वामी श्याम लाल कौल (ओगरा) यज्ञ, 2:37 रात गण्डमूल आरम्भ।	6:59	6:26



वटुक नाथ पूजा
(शिवरात्रि)
6 मार्च

33	19	**2**	बुध	अष्ट	दि	5:20PM	ज्येष्ठ	प्र	4:20AM	ध्वांक्षः, हुरॅ अठम, चकरीश्वर अमृतकुण्ड पुखरीबल यात्रा, 4:20 रात धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	6:58	6:27
38	20	**3**	गुरु	नवम	दि	6:05PM	मूल	प्र	5:19AM	धौम्यः, 5:19 रात गण्डमूल समाप्त, श्री दामूधर भट्ट (फतेपुर) जयन्ती, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती।	6:57	6:28
43	21	**4**	शुक्र	दश	दि	6:02PM	पू.षा.	प्र	5:32AM	प्रवर्धः, दयार दहम्।	6:56	6:28
46	22	**5**	शनि	एका	दि	5:12PM	उ.षा.	प्र	4:58AM	क्षयः, विजया एकादशी, 11:27 दिन मकर में चन्द्र।	6:54	6:29
52	23	**6**	रवि	द्वाद	दि	3:36PM	श्रवण	प्र	3:43AM	मुसुलं, हेरॅथ,हर रात्रि (वटुक पूजन), अर्धरात्रि व्यापिनी त्रयोदशी।	6:53	6:30
58	24	**7**	सोम	त्रयो	दि	1:21PM	धनि	प्र	1:52AM	शूलम्, शिव चतुर्दशी, महाशिवरात्रि (समस्त भारत), 2:51 दिन कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ, 9:06 रात कुम्भ में शुक्र।	6:52	6:31
29 03	25	**8**	भौम	चर्तु	दि	10:34AM	शत	प्र	11:36PM	मृत्युः।	6:51	6:31
06	26	**9**	बुध	अमा	दि	7:24AM	पू.भा.	प्र	9:02PM	काम्यः, त्र्यहः प्रतिपदा का क्षय (प्रति प्र 4:01AM), डून्य मावस, वटुक परिमोज़ुन (अपनी रीति के अनुसार), 3:41 दिन मीन में चन्द्र।	6:49	6:32

श्राद्धः प्रतिपदा से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचमी से अमावसी तक पहले दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचमी का पहले दिन, षष्ठी से त्रयोदशी तक अपने दिन, चतुर्दशी व अमावसी का पहले दिन।

गण्डमूल नक्षत्र के विषय में जानकारी :- रेव, अश्वि, अश्ले, मघा, ज्येष्ठ, मूल-ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं-इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्र में विद्वान् ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

फाल्गुन शुक्लपक्ष

10 मार्च 2016 की ग्रह स्थिति :- कुम्भ में सूर्य, शुक्र, बुध व केतु; सिंह में गुरु(व), राहु; वृश्चिक में भौम, शनि।
सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2016

दिन मान	फा	मार्च	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वसन्त ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
29 06	27	10	गुरु	द्विती प्र	12:34AM	उ.भा. दि	6:21PM	छत्रम्, श्री शंकर पण्डित (उमानगरी) यज्ञ, श्री रामकृष्ण परमहंस जयन्ती, 6:21 सायं गण्डमूल आरम्भ।	6:48	6:33
12	28	11	शुक्र	तृती प्र	9:12PM	रेव दि	3:42PM	श्रीवत्स:, 3:42 दिन मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	6:47	6:34
18	29	12	शनि	चतु दि	6:03PM	अश्वि दि	1:15PM	सौम्य:, 1:15 दिन गण्डमूल समाप्त।	6:45	6:34
23	30	13	रवि	पंच दि	3:16PM	भरण दि	11:07AM	कालदण्ड:, थाल भरुण, कुमार षष्ठी, मासान्त, 4:39 दिन वृष में चन्द्र।	6:44	6:35
27	चैत्र	14	सोम	षष्ठी दि	12:57PM	कृति दि	9:27AM	स्थिर:, सोंथ, 11:17 दिन मीन में सूर्य, संक्रान्ति व्रत।	6:43	6:36
33	2	15	भौम	सप्त दि	11:12AM	रोहि दि	8:19AM	मातंग:, 7:58 सायं मिथुन में चन्द्र।	6:42	6:37
38	3	16	बुध	अष्ट दि	10:03AM	मृग दि	7:47AM	अमृतम्, तील अष्टमी, स्वा. नन्दलाल कौल जयन्ती (टिक्कर), श्री दामूदर भट्ट (फतेपुर) अन्तर्ध्यान दिवस, दीपदान का स्वयंसिद्ध मुहूर्त।	6:40	6:37
44	4	17	गुरु	नवम दि	9:32AM	आर्द्रा दि	7:52AM	काण्ड:, 2:19 रात कर्क में चन्द्र।	6:39	6:38

48	5	18	शुक्र	दश	दि	9:39AM	पुन	दि	8:33AM	छत्रम्, स्वर्गी श्री दीनानाथ नादिम जयन्ती 4:37 रात मीन में बुध।	6:38	6:39
53	6	19	शनि	एका	दि	10:20AM	तिष्या	दि	9:49AM	श्रीवत्सः, अमला एकादशी, 9:49 दिन गण्डमूल आरम्भ।	6:36	6:40
58	7	20	रवि	द्वाद	दि	11:32AM	अश्ले	दि	11:35AM	सौम्यः, 11:35 दिन सिंह में चन्द्र।	6:35	6:40
30 02	8	21	सोम	त्रयो	दि	1:12PM	मघा	दि	1:46PM	ध्वांक्षः, 1:46 दिन गण्डमूल समाप्त।	6:34	6:41
10	9	22	भौम	चर्तु	दि	3:13PM	पू.फा.	दि	4:19PM	धौम्यः, 10:59 रात कन्या में चन्द्र।	6:32	6:42
15	10	23	बुध	पूर्णि	दि	5:31PM	उ.फा.	प्र	7:07PM	प्रवर्धः, पूर्णिमा व्रत, होलिका दहन, होली।	6:31	6:42

श्राद्धः प्रतिपदा का पहले दिन, द्वितीया से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचमी से पूर्णिमा तक पहले दिन।
मध्याह्नः प्रतिपदा का पहले दिन, द्वितीया से षष्ठी तक अपने दिन, सप्तमी से द्वादशी तक पहले दिन, त्रयोदशी से पूर्णिमा तक पहले दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- कपूर प्रज्वलित देवी देवताओं की आरती क्यों की जाती है? प्राचीनकाल से ही हमारे देश में देशी घी के दीपक से और कपूर से देवी देवताओं की आरती करने का प्रचलन चला आ रहा है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार देवी देवता आरती करने से प्रसन्न होते हैं और साधक की मनोकामना पूर्ण करते हैं। कपूर जलाने से देवदोष तथा पितृदोष का शमन होता है। कपूर दहन में बाहरी वातावरण को शुद्ध करने की अद्भुत क्षमता है। कपूर जलाने से घर का वातावरण शुद्ध रहता है क्योंकि इसमें जीवाणुओं, विषाणुओं (वायरस आदि) को नष्ट करने की क्षमता होती है, शरीर पर बीमारियों का आक्रमण आसानी से नहीं होता। इस तरह वैज्ञानिक कारणों से भी कपूर जलाना उचित हैं। गणेश जी का वाहक मूषक (चूहा) क्यों है? गणेश जी का भारी भरकम शरीर और सवारी मूषक की! यह बड़ा ही अजीब सा लगता है। सत्य तो यह है कि गणेश जी बुद्धि के देवता हैं और चूहा तर्क का प्रतीक माना गया है। बुद्धि सदैव तर्क पर ही सवार रहती है।

चैत्र कृष्णपक्ष

24 मार्च 2016 की ग्रह स्थिति :- मीन में सूर्य, बुध; सिंह में गुरु(व), राहु; वृश्चिक में भौम, शनि, कुम्भ में शुक्र, केतु।
सप्तर्षि 5091, विक्रमी 2072, शाक: 1937, ईस्वी 2016

दिन मान	चैत्र	मार्च	वार	तिथि		समाप्ति काल	नक्षत्र		समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वसन्त ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
30 20	11	24	गुरु	प्रति	प्र	8:00PM	हस्त	प्र	10:06PM	क्षयः।	6:30	6:43
25	12	25	शुक्र	द्विती	प्र	10:35PM	चित्र	प्र	1:10AM	गजः, 11:38 दिन तुला में चन्द्र।	6:29	6:44
30	13	26	शनि	तृती	प्र	1:09AM	स्वात	प्र	4:12AM	सिद्धः।	6:27	6:45
35	14	27	रवि	चतु	प्र	3:34AM	विशा		दिनरात -----	उन्मूलं, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 10:17 रात), 12:23 वृश्चिक में चन्द्र।	6:26	6:45
35	15	28	सोम	पंच	प्र	5:41AM	विशा	दि	7:05AM	मैत्रम्।	6:25	6:46
41	16	29	भौम	षष्ठी		दिनरात -----	अनु	दि	9:40AM	वज्रम, अधिक तिथि, 9:40 दिन गण्डमूल आरम्भ।	6:23	6:47
45	17	30	बुध	षष्ठी	दि	7:22AM	ज्येष्ठ	दि	11:49AM	ध्वांक्षः, 11:49 दिन धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	6:22	6:47
50	18	31	गुरु	सप्त	दि	8:29AM	मूल	दि	1:23PM	धौम्यः, 3:24 रात मीन में शुक्र, 1:23 दिन. गण्डमूल समाप्त।	6:21	6:48

57	19	अप्रै	शुक्र	अष्ट दि	8:54AM	पू.षा. दि	2:17PM	प्रवर्धः, 8:23 रात मकर में चन्द्र।	6:19	6:49
31 00	20	2	शनि	नवम दि	8:34AM	उ.षा. दि	2:26PM	क्षयः, 3:44 रात मेष में बुध।	6:18	6:50
05	21	3	रवि	दश दि	7:28AM	श्रवण दि	1:50PM	मुसुलं, त्र्यहः, एकादशी का क्षय (एका प्र 5:38AM), पापमोचिनी एकादशी व्रत, 1:15 रात कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	6:17	6:50
10	22	4	सोम	द्वाद प्र	3:07AM	धनि दि	12:31PM	शूलम्।	6:16	6:51
13	23	5	भौम	त्रयो प्र	12:04AM	शत दि	10:35AM	मृत्युः, 2:47 रात मीन में चन्द्र।	6:14	6:52
18	24	6	बुध	चर्तु प्र	8:37PM	पू.भा. दि	8:08AM	काम्यः, चित्र चुदाह।	6:13	6:52
23	25	7	गुरु	अमा दि	4:54PM	रेव प्र	2:21AM	मैत्रम्, थाल भरुण, श्री भट्ठ जयन्ती, विचार नाग यात्रा, ज़नपोरा शुपियन यात्रा (वरनाग), 2:21 रात मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	6:12	6:53

श्राद्धः प्रतिपदा से षष्ठी तक अपने दिन, सप्तमी से एकादशी तक पहले दिन, द्वादशी से अमावसी तक अपने दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से षष्ठी तक अपने दिन, सप्तमी से एकादशी तक पहले दिन, द्वादशी से अमावसी तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- बेल पत्र में तीन दल (पते) होने का क्या अर्थ है?

बेल पत्र के तीन पते (दल) तीन प्रमुख देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) का द्योतक है। तीन दल तीन लोकों को बतलाता है। बल पत्र के तीन दल से तीन महादेवियों (महालक्ष्मी, महासरस्वती व महाकाली) का ज्ञान होता है। देश की तीन पवित्र नदियाँ गंगा, यमुना व सरस्वती भी हैं। महादेव शंकर जी के त्रिशूल में तीन फल होते हैं जिसमें तीनों लोकों का संहार करने की शक्ति निहित है। इसी लिये हेरथ (शिवरात्रि) की सामग्री लेते समय हम बेल पत्र को भी प्राथमिकता देते हैं।



मुहूर्त संभाग

स्मरण रहे :- सूक्ष्म गणित द्वारा निकला हुआ क़ाल जिस में शुभ कार्य किया जा सकता है मुहूर्त कहलाता है। अतः निश्चित मुहूर्त पर पाणिग्रहण, यज्ञोपवीत के अवसर पर महा गायत्री स्वरूप जनेऊ डालना मुहूर्त का सदुपयोग है। मुहूर्त क़ाल को नाच गाने या वीडीयो ग्राफी आदि में गवां देने से मुहूर्त का औचित्य एवं महत्व नहीं रहता। मुहूर्त को ध्यान में रखकर ही विवाह आदि से संबिंधत अन्य आवश्यक प्रबन्ध किये जाते हैं। अतः अनुरोध है कि मुहूर्त का विचार अवश्य रखें।



विक्रमी सम्वत् 2072 के

साथ रटुन मुहूर्त



यह मुहूर्त भारतीय समय अनुसार 2015-16 ईस्वी के लिए दिये गऐ हैं। इस में आप लिदुन, मेहन्दी लगाना, मस मुचरून, यज्ञोपवीत विवाह आदि के लिए नये वस्त्र, मसाला, अग्निवत्र, आभूषण आदि लाने के लिए अपनी सुविधा और आवश्यक्ता अनुसार मुहूर्त चयन करके लाभान्वित हो सकते हैं।

चैत्र शुक्ल पक्ष

22 मार्च द्वितीया रविवार

25 मार्च षष्ठी बुधवार

26 मार्च सप्तमी गुरुवार

29 मार्च दशमी रविवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

5 अप्रेल प्रतिपदा रविवार

6 अप्रेल द्वितीया सोमवार

9 अप्रेल पंचमी गुरुवार

10 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार

7:29 प्रातः तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

19 अप्रेल प्रतिपदा रविवार

3:09 दिन तक

22 अप्रेल चतुर्थी बधवार

3:49 दिन से

23 अप्रेल पंचमी गुरुवार

11:16 दिन तक

24 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार

12:05 दिन से

26 अप्रेल अष्टमी रविवार

3:53 दिन तक

3 मई चतुर्दशी रविवार

7:59 प्रातः से

4 मई पूर्णिमा सोमवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार

7 मई तृतीया गुरुवार

9:52 दिन तक

11 मई अष्टमी सोमवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार

22 मई चतुर्थी शुक्रवार

28 मई दशमी गुरुवार

11:26 दिन से

29 मई एकादशी शुक्रवार

31 मई त्रयोदशी रविवार

शुद्ध आषाढ़ कृष्ण पक्ष

3 जून प्रतिपदा बुधवार

7:50 सायं तक
7 जून पंचमी रविवार

शुद्ध आषाढ़ शुक्ल पक्ष

22 जुलाई षष्ठी बुधवार
23 जुलाई सप्तमी गुरुवार
24 जुलाई अष्टमी शुक्रवार
26 जुलाई दशमी रविवार
27 जुलाई एकादशी सोमवार
31 जुलाई पूर्णिमा शुक्रवार
9:53 दिन से

भाद्र कृष्ण पक्ष

9 सितम्बर द्वादशी बुधवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

14 सितम्बर प्रतिपदा सोमवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टूबर प्रतिपदा बुधवार
15 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
21 अक्टूबर अष्टमी बुधवार
1-30 दिन तक
22 अक्टूबर नवमी गुरुवार
11:59 दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

1 नवम्बर षष्ठी रविवार
3:46 दिन से
2 नवम्बर सप्तमी सोमवार
8 नवम्बर द्वादशी रविवार
9 नवम्बर त्रयोदशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

12 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार
12:18 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष

26 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
30 नवम्बर पंचमी सोमवार
6 दिसम्बर दशमी रविवार
7 दिसम्बर एकादशी सोम॰
9 दिसम्बर त्रयोदशी बुधवार

पौष शुक्ल पक्ष

17 जनवरी अष्टमी रविवार
3:58 दिन तक
20 जनवरी एकादशी बुधवार
21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
31 जनवरी सप्तमी रविवार
1 फरवरी अष्टमी सोमवार
10:06 रात तक
3 फरवरी दशमी बुधवार
4 फरवरी एकादशी गुरुवार
7:18 सायं तक

माघ शुक्ल पक्ष

17 फरवरी दशमी बुधवार
19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

25 फरवरी तृतया गुरुवार
12:24 दिन तक
28 फरवरी पंचमी रविवार
29 फरवरी षष्ठी सोमवार
2 मार्च अष्टमी बुधवार

5:20 सायं तक

6 मार्च द्वादशी रविवार

7 मार्च त्रयोदशी सोमवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

16 मार्च अष्टमी बुधवार

7:47 प्रातः तक

17 मार्च नवमी गुरुवार

8:32 प्रातः से

18 मार्च दशमी शुक्रवार



हमारी संस्कृति के प्रतीकः-

महार्षि वेद व्यास जी माता-पिता की सेवा को पारमार्थिक संस्कार के रूप में बताते हुए उसकी महिमा में कहते हैं।

सर्वतीर्थमयी माता, सर्वदेवमयः पिता ।
मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत् ॥



卐 विक्रमी सम्वत् 2072 के 卐

यज्ञोपवीत मुहूर्त



यह मुहूर्त भारतीय समय अनुसार 2015-16 ईस्वी के लिए दिये गऐ हैं।

चैत्र शुक्ल पक्ष

25 मार्च षष्ठी बुधवार

10:49 दिन से

1:04 दिन तक (मि)

26 मार्च सप्तमी गुरुवार

10:45 दिन से

1:00 दिन तक (मि)

29 मार्च दशमी रविवार

10:33 दिन से

12:48 दिन तक (मि)

वैशाख कृष्ण पक्ष

6 अप्रेल द्वितीया सोमवार

10:02 दिन से

12:17 दिन तक (मि)

वैशाख शुक्ल पक्ष

24 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार

1:29 दिन से

3:51 दिन तक (सिं)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

7 मई तृतीया गुरुवार

7:59 प्रातः से

9:52 दिन तक (मि)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार

11:47 दिन से

2:09 दिन तक (सिं)

28 मई दशमी गुरुवार

6:37 प्रातः से

8:52 प्रातः तक (मि)

31 मई त्रयोदशी रविवार

11:04 दिन से

1:26 दिन तक (सिं)

शुद्ध आषाढ़ कृष्ण पक्ष

7 जून पंचमी रविवार

10:36 दिन से

12:58 दिन तक (मि)

आश्विन शुक्ल पक्ष

22 अक्टूबर नवमी गुरुवार

11:59 दिन से

1:06 दिन तक (धं)

23 अक्टूबर दशमी शुक्रवार

12:02 दिन से

1:02 दिन तक (धं)

1:02 दिन से

2:41 दिन तक (म)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

18 नवम्बर सप्तमी बुधवार

9:18 दिन से

11:20 दिन तक (धं)

12:59 दिन से

2:24 दिन तक (कुँ)

22 नवम्बर एकादशी रविवार

10:55 दिन से

11:04 दिन तक (धं)

11:04 दिन से

12:43 दिन तक (म)

12:43 दिन से

2:08 दिन तक (कुँ)

23 नवम्बर द्वादशी सोमवार

8:58 प्रातः से

11:00 दिन तक (धं)

11:00 दिन से

12:18 दिन तक (म)

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

8:42 प्रातः से

10:45 दिन तक (धं)

10:45 दिन से

12:24 दिन तक (म)

30 नवम्बर पंचमी सोमवार

8:31 प्रातः से

10:43 दिन तक (धं)

10:43 दिन से

12:12 दिन तक (म)

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिसम्बर तृतीया सोमवार

7:35 प्रातः से

9:38 दिन तक (धं)

11:17 दिन से

12:42 दिन तक (कुँ)

पौष शुक्ल पक्ष

20 जनवरी एकादशी बुधवार

8:51 प्रातः से

10:16 दिन तक (कुँ)

10:16 दिन से

11:36 दिन तक (मी)

21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

8:47 प्रातः से

10:12 दिन तक (कुँ)

10:12 दिन से

11:32 दिन तक (मी)

माघ कृष्ण पक्ष

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
8:16 प्रातः से
9:41 दिन तक (कुँ)
9:41 दिन से
11:00 दिन तक (मी)

माघ शुक्ल पक्ष

10 फरवरी द्वितीया बुधवार
8:54 प्रातः से
10:13 दिन तक (मी)
11:45 दिन से
1:15 दिन तक (वृ)

11 फरवरी तृतीया गुरुवार
11:10 दिन से
11:41 दिन तक (मे)
11:41 दिन से
12:03 दिन तक (वृ)

17 फरवरी दशमी बुधवार
8:26 प्रातः से
9:46 दिन तक (मी)

19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
8:18 प्रातः से
9:38 दिन तक (मी)
11:09 दिन से
1:03 दिन तक (वृ)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार
10:50 दिन से
12:43 दिन तक (वृ)
12:43 दिन से
2:58 दिन तक (मि)

25 फरवरी तृतीया गुरुवार
7:55 प्रातः से
9:14 दिन तक (मी)
10:46 दिन से
12:39 दिन तक (वृ)
12:39 दिन से
2:54 दिन तक (मि)

28 फरवरी पंचमी रविवार
7:43 प्रातः से
9:02 दिन तक (मी)
10:34 दिन से
11:21 दिन तक (वृ)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार
9:54 दिन से
11:48 दिन तक (वृ)
11:48 दिन से
2:03 दिन तक (मि)

11 मार्च तृतीया शुक्रवार
9:51 दिन से
11:44 दिन तक (वृ)
11:44 दिन से
1:59 दिन तक (मि)

17 मार्च नवमी गुरुवार
9:32 दिन से
11:20 दिन तक (वृ)

18 मार्च दशमी शुक्रवार
9:23 दिन से
11:16 दिन तक (वृ)



卐 विक्रमी सम्वत् 2072 के 卐

विवाह मुहूर्त



यह मुहूर्त भारतीय समय अनुसार 2015-16 ईस्वी के लिए दिये गऐ हैं।

वैशाख कृष्ण पक्ष

16 अप्रेल द्वादशी गुरुवार
11:27 रात से
1:30 रात तक (धं)

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 अप्रेल चतुर्थी बुधवार
8:58 प्रातः से
11:14 दिन तक (मिं)
11:14 दिन से
1:37 दिन तक (क)

27 अप्रेल नवमी सोमवार
10:44 रात से
12:46 रात तक (धं)

30 अप्रेल द्वादशी गुरुवार
10:32 रात से
12:35 रात तक (धं)
12:35 रात से
2:14 रात तक (म)

3 मई चर्तुदशी रविवार
10:30 दिन से
12:54 दिन तक (क)
10:20 रात से
12:23 रात तक (धं)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

7 मई तृतीया गुरुवार
1:04 दिन से
3:00 दिन तक (सिं)
12:07 रात से
1:46 रात तक (म)

8 मई चतुर्थी शुक्रवार
7:55 प्रातः से
10:11 दिन तक (मि)
10:11 दिन से
12:34 दिन तक (क)

9 मई पंचमी शनिवार
12:40 दिन से
2:57 दिन तक (सिं)
10:57 रात से
11:59 रात तक (धं)

11 मई अष्टमी सोमवार
12:33 दिन से

2:44 दिन तक (सिं)
9:49 रात से
11:51 रात तक (धं)
11:51 रात से
1:30 रात तक (म)
16 मई त्रयोदशी शनिवार
9:39 दिन से
12:03 दिन तक (क)
12:03 दिन से
2:25 दिन तक (सिं)
9:26 रात से
11:32 रात तक (धं)
11:32 रात से
12:00 रात तक (म)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार
9:24 दिन से
11:47 दिन तक (क)
11:47 दिन से
2:09 दिन तक (सिं)
25 मई सप्तमी सोमवार
9:04 दिन से
11:28 दिन तक (क)
30 मई द्वादशी शनिवार
8:44 प्रातः से
11:08 दिन तक (क)
11:08 दिन से
1:30 दिन तक (सिं)
8:34 रात से
10:37 रात तक (धं)
31 मई त्रयोदशी रविवार
11:04 दिन से
1:26 दिन तक (सिं)
1 जून चतुदर्शी सोमवार
8:26 रात से
10:29 रात तक (धं)
10:29 रात से
12:08 रात तक (म)

शुद्ध आषाढ़ कृष्ण पक्ष

4 जून द्वितीया गुरुवार
10:48 दिन से
1:10 दिन तक (सिं)
5 जून तृतीया शुक्रवार
10:13 रात से
11:52 रात तक (म)
11:52 रात से
1:57 रात तक (कुँ)
6 जून चतुर्थी शनिवार
10:40 दिन से
1:02 दिन तक (सिं)
8:07 रात से
10:09 रात तक (धं)
7 जून पंचमी रविवार
10:36 दिन से
12:58 दिन तक (सिं)
10 जून अष्टमी बुधवार
12:19 दिन से
12:46 दिन तक (सिं)
7:51 सायं से
9:53 रात तक (धं)
9:53 रात सये
11:32 रात तक (म)
12 जून एकादशी शुक्रवार
10:17 दिन से

12:38 दिन तक (सिं)
7:43 सायं से
9:46 रात तक (धं)
9:46 रात से
11:24 रात तक (म)

आश्विन शुक्ल पक्ष

19 अक्टूबर षष्ठी सोमवार
8:55 प्रातः से
11:16 दिन तक (वृँ)
1:18 दिन से
2:11 दिन तक (म)
21 अक्टूबर अष्टमी बुधवार
8:47 प्रातः से
11:08 दिन तक (वृँ)
11:08 दिन से
1:10 दिन तक (धं)

8:58 रात से
11:14 रात तक (मि)
11:14 रात से
1:38 रात तक (क)
22 अक्टूबर नवमी गुरुवार
8:43 प्रातः से
11:04 दिन तक (वृँ)
11:04 दिन से
1:06 दिन तक (धं)
23 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
8:27 प्रातः से
10:48 दिन तक (वृँ)
10:48 दिन से
12:51 दिन तक (धं)
8:39 रात से
10:54 रात तक (मि)

10:54 रात से
1:18 रात तक (क)
26 अक्टूबर चतुर्दशी सोमवार
10-48 दिन से
12-51 दिन तक (धं)
8-39 रात से
9-10 रात तक (मि)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

29 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
8:27 रात से
10:42 रात तक (मि)
10:42 रात से
1:06 रात तक (क)
31 अक्टूबर पंचमी शनिवार
8:08 प्रातः से
10:29 दिन तक (वृँ)
10:29 दिन से

12:31 दिन तक (धं)
12:31 दिन से
2:10 दिन तक (म)
5 नवम्बर नवमी गुरुवार
10:09 दिन से
12:11 दिन तक (धं)
12:11 दिन से
1:50 दिन तक (म)
7:59 सायं से
10:15 रात तक (मि)
8 नवम्बर द्वादशी रविवार
9:57 दिन से
11:59 दिन तक (ध)
11:59 दिन से
1:38 दिन तक (म)
7:48 सायं से

10:03 रात तक (मि)
9 नवम्बर त्रयोदशी सोमवार
9:53 दिन से
11:56 दिन तक (धं)
11:56 दिन से
1:34 दिन तक (म)
9:59 रात से
12:23 रात तक (क)
12:23 रात से
2:44 रात तक (सिं)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

14 नवम्बर तृतीया शनिवार
7:24 सायं से
9:39 रात तक (मि)
9:39 रात से
12:03 रात तक (क)
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार
9:18 दिन से
11:20 दिन तक (धं)
12:59 दिन से
2:24 दिन तक (कुँ)
9:24 रात से
11:47 रात तक (क)
11:47 रात से
2:09 रात तक (सिं)
19 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
9:14 दिन से
11:16 दिन तक (धं)
11:16 दिन से
12:55 दिन तक (म)
22 नवम्बर एकादशी रविवार
10:55 दिन से
11:04 दिन तक (धं)
11:04 दिन से
12:43 दिन तक (म)
9:08 रात से
11:32 रात तक (क)
11532 रात से
1:53 रात तक (सिं)
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार
8:58 प्रातः से
11:00 दिन तक (धं)
11:00 दिन से
12:39 दिन तक (म)
9:04 रात से
11:28 रात तक (क)

मार्ग कृष्ण पक्ष

26 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
10:49 दिन से
12:28 दिन तक (म)
8:52 रात से
11:16 रात तक (क)
11:16 रात से
1:38 रात तक (सिं)
27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
8:42 प्रातः से
10:45 दिन तक (धं)
10:45 दिन से
12:24 दिन तक (म)
8:48 सायं से
11:12 रात तक (क)
11:12 रात से
1:34 रात तक (सिं)
2 दिसम्बर सप्तमी बुधवार

8:23 प्रातः से
10:25 दिन तक (धं)
10:25 दिन से
12:04 दिन तक (म)
12:04 दिन से
1:29 दिन तक (कुँ)
8:29 रात से
10:52 रात तक (क)
4 दिसम्बर नवमी शुक्रवार
10:17 दिन से
11:56 दिन तक (म)
11:56 दिन से
1:21 दिन तक (कुँ)
8:21 रात से
10:47 रात तक (क)
6 दिसम्बर दशमी रविवार
8:13 रात से
10:37 रात तक (क)
10:37 रात से
12:58 रात तक (सिं)
7 दिसम्बर एकादशी सोम॰
8:03 प्रातः से
10:05 दिन तक (धं)
10:05 दिन से
11:44 दिन तक (म)
8:09 रात से
10:33 रात तक (क)
9 दिसम्बर त्रयोदशी बुधवार
10:56 रात से
12:46 रात तक (सिं)
10 दिसम्बर चर्तुदशी गुरुवार
9:54 दिन से
11:32 दिन तक (म)
11:32 दिन से
12:59 दिन तक (कुँ)

मार्ग शुक्ल पक्ष

12 दिसम्बर प्रतिपदा शनिवार
9:46 प्रातः से
11:25 दिन तक (म)
7:49 सायं से
10:13 रात तक (क)

पौष शुक्ल पक्ष

16 जनवरी सप्तमी शनिवार
10:17 रात से
12:38 रात तक (कुँ)
17 जनवरी अष्टमी रविवार
9:03 प्रातः से
10:28 दिन तक (कुँ)
10:28 दिन से
11:48 दिन तक (मी)
7:51 सायं से
10:13 रात तक (सिं)
10:13 रात से
11:57 रात तक (कुँ)
20 जनवरी एकादशी बुधवार
8:51 प्रातः से
10:16 दिन तक (कुँ)
10:16 दिन से
11:36 दिन तक (मी)
7:40 सायं से
8:54 रात तक (सिं)

माघ कृष्ण पक्ष

28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार
9:45 दिन से

11:05 दिन तक (मी)
7:08 सायं से
9:30 रात तक (सिं)
29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
9:41 दिन से
11:00 दिन तक (मी)
2:25 दिन से
4:41 दिन तक (मि)
7:04 सायं से
9:26 रात तक (सिं)
30 जनवरी षष्ठी शनिवार
9:37 दिन से
10:57 दिन तक (मी)
2:21 दिन से
4:37 दिन तक (मि)
7:00 सायं से

9:22 रात तक (सिं)
31 जनवरी सप्तमी रविवार
9:33 दिन से
10:53 दिन तक (मी)
2:17 दिन से
4:33 दिन तक (मि)
9:18 रात से
11:15 रात तक (कुँ)
3 फरवरी दशमी बुधवार
9:21 दिन से
10:41 दिन तक (मी)
2:04 दिन से
4:21 दिन तक (मि)
4 फरवरी एकादशी गुरुवार
11:10 रात से
11:23 रात तक (कुँ)

5 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
9:13 दिन से
10:33 दिन तक (मी)
6 फरवरी त्रयोदशी शनिवार
8:54 रात से
11:15 रात तक (कुँ)
7 फरवरी चर्तुदशी रविवार
9:06 प्रातः से
10:25 दिन तक (मी)
1:50 दिन से
4:50 दिन तक (मि)

माघ शुक्ल पक्ष

11 फरवरी तृतया गुरुवार
1:34 दिन से
3:49 दिन तक (मि)
8:35 रात से

10:55 रात तक (कुँ)
17 फरवरी दशमी बुधवार
8:26 प्रातः से
9:46 दिन तक (मी)
1:10 दिन से
3:26 दिन तक (मि)
8:11 रात से
10:32 रात तक (कुँ)
22 फरवरी पूर्णिमा सोमवार
9:26 दिन से
10:57 दिन तक (मे)
12:51 दिन से
3:06 दिन तक (मि)
7:51 सायं से
10:12 रात तक (कं)
10:12 रात से

12:35 रात तक (तुँ)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार

12:43 दिन से
2:58 दिन तक (मि)
10:04 रात से
12:27 रात तक (तुँ)

25 फरवरी तृतया गुरुवार

9:14 दिन से
10:46 दिन तक (मे)

27 फरवरी चतुर्थी शनिवार

9:06 दिन से
10:38 दिन तक (मे)
12:31 दिन से
2:46 दिन तक (मि)
7:32 सायं से
9:52 रात तक (कं)

28 फरवरी पंचमी रविवार

9:02 दिन से
10:34 दिन तक (मे)
12:27 दिन से
2:43 दिन तक (मि)
7:28 सायं से
9:30 रात तक (कं)

3 मार्च नवमी गुरुवार

8:51 प्रातः से
10:22 दिन तक (मे)
12:15 दिन से
2:31 दिन तक (मि)
7:16 सायं से
9:37 रात तक (कं)
9:37 रात से
12:00 रात तक (तुँ)

5 मार्च एकादशी शनिवार

8:43 प्रातः से
10:14 दिन तक (मे)
12:07 दिन से
2:23 दिन तक (मि)
7:08 सायं से
9:29 रात तक (कं)
9:29 रात से
11:52 रात तक (तुँ)

6 मार्च द्वादशी रविवार

8:39 प्रातः से
10:10 दिन तक (मे)
12:04 दिन से
2:19 दिन तक (मि)
7:04 सायं से
9:25 रात तक (कं)
9:25 रात से
11:48 रात तक (तुँ)

7 मार्च त्रयोदशी सोमवार

8:35 प्रातः से
10:06 दिन तक (मे)
12:00 दिन से
2:15 दिन तक (मि)
7:00 सायं से
9:21 रात तक (कं)
9:21 रात से
11:44 रात तक (तुँ)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार

8:23 प्रातः से
9:54 दिन तक (मे)

11:48 दिन से
2:03 दिन तक (मि)
6:49 सायं से
9:09 रात तक (कं)
9:09 रात से
11:32 रात तक (तुँ)

11 मार्च तृतीया शुक्रवार
11:44 दिन से
1:59 दिन तक (मि)
9:05 रात से
11:29 रात तक (तुँ)

12 मार्च चतुर्थी शनिवार
11:40 दिन से
1:15 दिन तक (मि)

हमारी संस्कृति के प्रतीक:-

- <u>यज्ञोपवीत धारण का अधिकार:-</u> यज्ञोपवीत संस्कार के अनुपालन में शुचिता और पवित्रता का विशेष ध्यान रखना आवश्यक होता है। स्त्री के शरीर का निर्माण इसतरह से हुआ है कि उसे मास में कुछ दिन अपवित्र दशा में रहने के लिये बाध्य होती है। पुरुष के समान स्त्री ब्रह्मचर्य धर्म का पालन (रजस्वला होने पर) करने योग्य नहीं रहती है। इसी प्रकार मन्त्रों के उच्चारण की अशुद्धता भी स्त्री तथा द्विजेतरों में रहती है। फिर भी मनुस्मृति में स्त्रियों का विवाह संस्कार ही उनके यज्ञोपवीत संस्कार के समान है।

वैवाहिको विधि स्त्रीणां, संस्कारो वैदिक: स्मृत:।। (मनु स्मृति २/३७)

- <u>निष्क्रमण संस्कार</u> चौथे मास में निष्क्रमण संस्कार करना चाहिये। बालक को घर से बाहर लेजाकर सूर्यमन्त्रों के साथ और बालक की रक्षा तथा उसमें ज्ञान ज्योति की प्रतिष्ठा कराने के लिये सूर्य दर्शन कराना चाहिये।

- <u>जननाशौच</u> - मरणाशौच अपने परिवार में नव शिशु के जन्म होने पर प्राय: तीन दिन तथा सहगोत्र में किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर दस रात्रि का अशौच माना गया है। अशौचावस्था में देवकार्य पितृकार्य, वदोध्ययन (वेदों का अध्यन) तथा गुरूजनों का अभिवादन आदि करना निषेध माना गया है। यहां तक कि देव मन्दिर में प्रवेश तथा पूजन आदि करना भी वर्जित है। स्त्रियों के लिये प्राय: मास में एकबार विशेष अवस्था आती है जिसमें वह रजस्वला हो जाती है। इसमें तीन रात्रि तक उनकी आशौचावस्था रहती है।

राशि अनुसार मुहूर्तों के विषय में आवश्यक जानकारी

राशि अनुसार शुद्ध मुहूर्त देखते समय लड़के अथवा लड़की दोनों की राशि से शुद्ध मुहूर्त मिलना आवश्यक नहीं है, एक की राशि से मुहूर्त मिले तो उस को ही शुद्ध मुहूर्त मानिये। यदि आपने घर में कई बच्चों का यज्ञोपवीत एक साथ करना हो तो एक लडके की राशि से मुहूर्त मिलना चाहिये। राशि अनुसार यज्ञोपवीत, विवाह मुहूर्तो में शुद्ध मुहूर्त देखने के लिए सूर्य, चन्द्रमा तथा बृहस्पति चौथे, आठवें और बारहवें भाव में नहीं होना चाहिए, इन तीनों ग्रहों का विचार करके ही ऊपरलिखित मुहूर्त रखे गये है जहाँ चन्द्रमा, सूर्य बृहस्पति इन तीन में से केवल एक ग्रह अनुकूल न हो उस मुहूर्त के साथ उस ग्रह की पूजा लिखी गई है। सूर्य, चन्द्रमा तथा बृहस्पति के नाम सू, चं तथा गु से अंकित किये गये है।

सम्पादक

राशि के अनुसार विक्रमी 2072 (ई. 2015-16) के

यज्ञोपवीत मुहूर्त

मेष सिंह धनु

24 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार	गु
7 मई तृतीया गुरुवार	गु
20 मई द्वितीया बुधवार	गु
28 मई दशमी गुरुवार	गु
31 मई त्रयोदशी रविवार	गु
7 जून पंचमी रविवार	गु
22 अक्टूबर नवमी गुरुवार	
23 अक्टूबर दशमी शुक्रवार	
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार	सू
22 नवम्बर एकादशी रविवार	सू
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार	सू
27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार	सू
14 दिसम्बर तृतीया सोमवार	सू
20 जनवरी एकादशी बुधवार	
21 जनवरी द्वादशी गुरुवार	
29 जनवरी पंचमी शुक्रवार	
10 फरवरी द्वितीया बुधवार	
11 फरवरी तृतीया गुरुवार	चं
17 फरवरी दशमी बुधवार	
19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार	
24 फरवरी द्वितीया बुधवार	
25 फरवरी तृतीया गुरुवार	
28 फरवरी पंचमी रविवार	
10 मार्च द्वितीया गुरुवार	चं
11 मार्च तृतीया शुक्रवार	चं
17 मार्च नवमी गुरुवार	चं

वृष कन्या मकर

25 मार्च षष्ठी बुधवार
26 मार्च सप्तमी गुरुवार
29 मार्च दशमी रविवार
6 अप्रेल द्वितीया सोमवार
24 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार सू
20 मई द्वितीया बुधवार
28 मई दशमी गुरुवार
31 मई त्रयोदशी रविवार
7 जून पंचमी रविवार
22 अक्टूबर नवमी गुरुवार गु
23 अक्टूबर दशमी शुक्रवार गु
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार गु
22 नवम्बर एकादशी रविवार गु
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार गु
27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार गु
30 नवम्बर पंचमी सोमवार गु
14 दिसम्बर तृतीया सोमवार गु
20 जनवरी एकादशी बुधवार गु
21 जनवरी द्वादशी गुरुवार गु
29 जनवरी पंचमी शुक्रवार गु
10 फरवरी द्वितीया बुधवार गु
11 फरवरी तृतीया गुरुवार गु
17 फरवरी दशमी बुधवार गु
19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार गु
25 फरवरी तृतीया गुरुवार गु
28 फरवरी पंचमी रविवार गु
10 मार्च द्वितीया गुरुवार गु
11 मार्च तृतीया शुक्रवार गु
17 मार्च नवमी गुरुवार गु
18 मार्च दशमी शुक्रवार गु

मिथुन तुला कुम्भ

25 मार्च षष्ठी बुधवार चं
26 मार्च सप्तमी गुरुवार चं
29 मार्च दशमी रविवार
6 अप्रेल द्वितीया सोमवार
24 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
7 मई तृतीया गुरुवार
20 मई द्वितीया बुधवार सू
31 मई त्रयोदशी रविवार सू
22 अक्टूबर नवमी गुरुवार चं
23 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार चं
22 नवम्बर एकादशी रविवार
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार
27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार चं
30 नवम्बर पंचमी सोमवार
14 दिसम्बर तृतीया सोमवार
21 जनवरी द्वादशी गुरुवार सू
10 फरवरी द्वितीया बुधवार सू
11 फरवरी तृतीया गुरुवार सू
17 फरवरी दशमी बुधवार चं
19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
24 फरवरी द्वितीया बुधवार
25 फरवरी तृतीया गुरुवार चं
28 फरवरी पंचमी रविवार
10 मार्च द्वितीया गुरुवार
11 मार्च तृतीया शुक्रवार
17 मार्च नवमी गुरुवार
18 मार्च दशमी शुक्रवार

कर्क वृश्चिक मीन

25 मार्च षष्ठी बुधवार
26 मार्च सप्तमी गुरुवार
29 मार्च दशमी रविवार
6 अप्रेल द्वितीया सोमवार चं
24 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार चं
7 मई तृतीया गुरुवार
20 मई द्वितीया बुधवार चं
28 मई दशमी गुरुवार
31 मई त्रयोदशी रविवार चं
7 जून पंचमी रविवार

22 अक्टूबर नवमी गुरुवार सू
23 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार
22 नवम्बर एकादशी रविवार
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार
27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
30 नवम्बर पंचमी सोमवार
14 दिसम्बर तृतीया सोमवार
20 जनवरी एकादशी बुधवार
21 जनवरी द्वादशी गुरुवार चं
29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
10 फरवरी द्वितीया बुधवार चं
11 फरवरी तृतीया गुरुवार
24 फरवरी द्वितीया बुधवार सू
25 फरवरी तृतीया गुरुवार सू
10 मार्च द्वितीया गुरुवार सू
11 मार्च तृतीया शुक्रवार सू
17 मार्च नवमी गुरुवार चं
18 मार्च दशमी शुक्रवार

卐 卐 卐 卐 卐

विक्रमी 2072 के राशि अनुसार

विवाह मुहूर्त

मेष सिंह धनु

16 अप्रेल द्वादशी गुरुवार गु
22 अप्रेल चतुर्थी बुधवार गु
30 अप्रेल द्वादशी गुरुवार गु
3 मई चर्तुदशी रविवार गु
8 मई चतुर्थी शुक्रवार गु
9 मई पंचमी शनिवार गु
11 मई अष्टमी सोमवार गु
16 मई त्रयोदशी शनिवार गु
20 मई द्वितीया बुधवार गु
25 मई सप्तमी सोमवार गु
30 मई द्वादशी शनिवार गु
31 मई त्रयोदशी रविवार गु
1 जून चतुदर्शी सोमवार गु
4 जून द्वितीया गुरुवार गु
5 जून तृतीया शुक्रवार गु
6 जून चतुर्थी शनिवार गु
7 जून पंचमी रविवार गु
12 जून एकादशी शुक्रवार गु
19 अक्टूबर षष्ठी सोमवार
21 अक्टूबर अष्टमी बुधवार

22 अक्टूबर नवमी गुरुवार
23 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
26 अक्टूबर चतुर्दशी सोमवार चं
29 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
5 नवम्बर नवमी गुरुवार
8 नवम्बर द्वादशी रविवार
9 नवम्बर त्रयोदशी सोमवार
14 नवम्बर तृतीया शनिवार चं
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार सू
19 नवम्बर अष्टमी गुरुवार सू
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार सू
26 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार सू
27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार सू
2 दिसम्बर सप्तमी बुधवार सू
4 दिसम्बर नवमी शुक्रवार सू
6 दिसम्बर दशमी रविवार सू
7 दिसम्बर एकादशी सोम॰ सू
9 दिसम्बर त्रयोदशी बुधवार सू
16 जनवरी सप्तमी शनिवार चं

17 जनवरी अष्टमी रविवार
20 जनवरी एकादशी बुधवार
28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार
29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
30 जनवरी षष्ठी शनिवार
31 जनवरी सप्तमी रविवार
3 फरवरी दशमी बुधवार चं
4 फरवरी एकादशी गुरुवार चं
5 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
6 फरवरी त्रयोदशी शनिवार
7 फरवरी चर्तुदशी रविवार
11 फरवरी तृतया गुरुवार चं
17 फरवरी दशमी बुधवार
22 फरवरी पूर्णिमा सोमवार
24 फरवरी द्वितीया बुधवार
25 फरवरी तृतया गुरुवार
27 फरवरी चतुर्थी शनिवार
28 फरवरी पंचमी रविवार
3 मार्च नवमी गुरुवार
5 मार्च एकादशी शनिवार
6 मार्च द्वादशी रविवार
7 मार्च त्रयोदशी सोमवार
10 मार्च द्वितीया गुरुवार चं
11 मार्च तृतीया शुक्रवार चं
12 मार्च चतुर्थी शनिवार

卐 卐 卐 卐 卐

वृष कन्या मकर

16 अप्रेल द्वादशी गुरुवार
22 अप्रेल चतुर्थी बुधवार सू
27 अप्रेल नवमी सोमवार सू
30 अप्रेल द्वादशी गुरुवार सू
3 मई चर्तुदशी रविवार सू
7 मई तृतीया गुरुवार सू
11 मई अष्टमी सोमवार सू
16 मई त्रयोदशी शनिवार चं
20 मई द्वितीया बुधवार
25 मई सप्तमी सोमवार चं
30 मई द्वादशी शनिवार
31 मई त्रयोदशी रविवार
1 जून चतुदर्शी सोमवार
4 जून द्वितीया गुरुवार चं
5 जून तृतीया शुक्रवार चं
6 जून चतुर्थी शनिवार
7 जून पंचमी रविवार
10 जून अष्टमी बुधवार
12 जून एकादशी शुक्रवार चं
21 अक्टूबर अष्टमी बुधवार गु
22 अक्टूबर नवमी गुरुवार गु
23 अक्टूबर दशमी शुक्रवार गु
26 अक्टूबर चतुर्दशी सोमवार गु
29 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार गु
31 अक्टूबर पंचमी शनिवार गु
8 नवम्बर द्वादशी रविवार गु
9 नवम्बर त्रयोदशी सोमवार गु
14 नवम्बर तृतीया शनिवार गु
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार गु
19 नवम्बर अष्टमी गुरुवार गु
22 नवम्बर एकादशी रविवार गु
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार गु
26 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार गु
27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार गु
6 दिसम्बर दशमी रविवार गु
7 दिसम्बर एकादशी सोम॰ गु
9 दिसम्बर त्रयोदशी बुधवार गु
10 दिसम्बर चर्तुदशी गुरुवार गु
16 जनवरी सप्तमी शनिवार गु
20 जनवरी एकादशी बुधवार गु
28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार गु
29 जनवरी पंचमी शुक्रवार गु
30 जनवरी षष्ठी शनिवार गु
31 जनवरी सप्तमी रविवार गु
3 फरवरी दशमी बुधवार गु
4 फरवरी एकादशी गुरुवार गु
7 फरवरी चर्तुदशी रविवार गु
11 फरवरी तृतया गुरुवार गु

17 फरवरी दशमी बुधवार गु
25 फरवरी तृतया गुरुवार गु
27 फरवरी चतुर्थी शनिवार गु
28 फरवरी पंचमी रविवार गु
6 मार्च द्वादशी रविवार गु
7 मार्च त्रयोदशी सोमवार गु
10 मार्च द्वितीया गुरुवार गु
11 मार्च तृतीया शुक्रवार गु

मिथुन तुला कुम्भ

16 अप्रेल द्वादशी गुरुवार
22 अप्रेल चतुर्थी बुधवार चं
27 अप्रेल नवमी सोमवार
30 अप्रेल द्वादशी गुरुवार चं
3 मई चर्तुदशी रविवार
7 मई तृतीया गुरुवार
8 मई चतुर्थी शुक्रवार
9 मई पंचमी शनिवार
11 मई अष्टमी सोमवार चं
16 मई त्रयोदशी शनिवार सू
20 मई द्वितीया बुधवार सू
25 मई सप्तमी सोमवार सू
30 मई द्वादशी शनिवार सू
31 मई त्रयोदशी रविवार सू
1 जून चतुदर्शी सोमवार सू
4 जून द्वितीया गुरुवार सू
5 जून तृतीया शुक्रवार सू
10 जून अष्टमी बुधवार सू
12 जून एकादशी शुक्रवार सू
19 अक्टूबर षष्ठी सोमवार
21 अक्टूबर अष्टमी बुधवार चं
22 अक्टूबर नवमी गुरुवार चं
23 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
26 अक्टूबर चतुर्दशी सोमवार
29 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार चं
31 अक्टूबर पंचमी शनिवार
5 नवम्बर नवमी गुरुवार
8 नवम्बर द्वादशी रविवार चं
9 नवम्बर त्रयोदशी सोमवार चं
14 नवम्बर तृतीया शनिवार
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार चं
19 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
22 नवम्बर एकादशी रविवार
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार
26 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार चं
27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार चं
2 दिसम्बर सप्तमी बुधवार
4 दिसम्बर नवमी शुक्रवार
6 दिसम्बर दशमी रविवार चं
7 दिसम्बर एकादशी सोम॰
9 दिसम्बर त्रयोदशी बुधवार
10 दिसम्बर चर्तुदशी गुरुवार
16 जनवरी सप्तमी शनिवार सू
17 जनवरी अष्टमी रविवार सू
31 जनवरी सप्तमी रविवार सू
3 फरवरी दशमी बुधवार सू
4 फरवरी एकादशी गुरुवार सू
5 फरवरी द्वादशी शुक्रवार सू
6 फरवरी त्रयोदशी शनिवार सू
11 फरवरी तृतया गुरुवार सू
17 फरवरी दशमी बुधवार चं
22 फरवरी पूर्णिमा सोमवार
24 फरवरी द्वितीया बुधवार
25 फरवरी तृतया गुरुवार चं
27 फरवरी चतुर्थी शनिवार
28 फरवरी पंचमी रविवार
3 मार्च नवमी गुरुवार
5 मार्च एकादशी शनिवार चं
6 मार्च द्वादशी रविवार चं
7 मार्च त्रयोदशी सोमवार चं
10 मार्च द्वितीया गुरुवार
11 मार्च तृतीया शुक्रवार
12 मार्च चतुर्थी शनिवार

कर्क वृश्चिक मीन

16 अप्रेल द्वादशी गुरुवार
22 अप्रेल चतुर्थी बुधवार
27 अप्रेल नवमी सोमवार
30 अप्रेल द्वादशी गुरुवार
3 मई चर्तुदशी रविवार चं
7 मई तृतीया गुरुवार
8 मई चतुर्थी शुक्रवार
9 मई पंचमी शनिवार
11 मई अष्टमी सोमवार
16 मई त्रयोदशी शनिवार
20 मई द्वितीया बुधवार चं
25 मई सप्तमी सोमवार
30 मई द्वादशी शनिवार चं
31 मई त्रयोदशी रविवार चं
1 जून चतुदर्शी सोमवार चं
4 जून द्वितीया गुरुवार
5 जून तृतीया शुक्रवार
6 जून चतुर्थी शनिवार
7 जून पंचमी रविवार
10 जून अष्टमी बुधवार
12 जून एकादशी शुक्रवार
19 अक्टूबर षष्ठी सोमवार सू
21 अक्टूबर अष्टमी बुधवार सू
22 अक्टूबर नवमी गुरुवार सू
23 अक्टूबर दशमी शुक्रवार सू
26 अक्टूबर चतुर्दशी सोमवार सू
29 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार सू
5 नवम्बर नवमी गुरुवार सू
8 नवम्बर द्वादशी रविवार सू
9 नवम्बर त्रयोदशी सोमवार सू
14 नवम्बर तृतीया शनिवार सू
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार
19 नवम्बर अष्टमी गुरुवार चं
22 नवम्बर एकादशी रविवार
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार
26 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
2 दिसम्बर सप्तमी बुधवार
4 दिसम्बर नवमी शुक्रवार
6 दिसम्बर दशमी रविवार
7 दिसम्बर एकादशी सोम॰ चं
9 दिसम्बर त्रयोदशी बुधवार चं
10 दिसम्बर चर्तुदशी गुरुवार
16 जनवरी सप्तमी शनिवार
17 जनवरी अष्टमी रविवार
20 जनवरी एकादशी बुधवार
28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार
29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
30 जनवरी षष्ठी शनिवार
31 जनवरी सप्तमी रविवार चं
3 फरवरी दशमी बुधवार
4 फरवरी एकादशी गुरुवार
5 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
6 फरवरी त्रयोदशी शनिवार
7 फरवरी चर्तुदशी रविवार
17 फरवरी दशमी बुधवार
22 फरवरी पूर्णिमा सोमवार सू
24 फरवरी द्वितीया बुधवार सू
25 फरवरी तृतया गुरुवार सू
3 मार्च नवमी गुरुवार सू
5 मार्च एकादशी शनिवार सू
6 मार्च द्वादशी रविवार सू
7 मार्च त्रयोदशी सोमवार सू
10 मार्च द्वितीया गुरुवार सू
11 मार्च तृतीया शुक्रवार सू
12 मार्च चतुर्थी शनिवार सू

विक्रमी 2072 के (गण्डन साथ)

वाग्दान मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

25 मार्च षष्ठी बुधवार
26 मार्च सप्तमी गुरुवार
1 अप्रेल द्वादशी बुधवार
2 अप्रेल त्रयोदशी गुरुवार
12:47 दिन तक
3 अप्रेल चर्तुदशी शुक्रवार
3:18 दिन से

वैशाख कृष्ण पक्ष

6 अप्रेल द्वितीया सोमवार
10 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
16 अप्रेल द्वादशी गुरुवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 अप्रेल चतुर्थी बुधवार
3:49 दिन से
23 अप्रेल पंचमी गुरुवार
11:16 दिन तक
29 अप्रेल एकादशी बुधवार
30 अप्रेल द्वादशी गुरुवार
3 मई चतुर्दशी रविवार
8:44 प्रातः से
4 मई पूर्णिमा सोमवार
9:12 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार
12:40 दिन तक
8 मई चतुर्थी शुक्रवार
9:12 दिन से.
13 मई दशमी बुधवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार
25 मई सप्तमी सोमवार
9:39 दिन तक
27 मई नवमी बुधवार
2:35 दिन से
28 मई दशमी गुरुवार
29 मई एकादशी शुक्रवार
2:12 दिन तक
31 मई त्रयोदशी रविवार

शुद्ध आषाढ़ कृष्ण पक्ष

4 जून द्वितीया गुरुवार
5 जून तृतीया शुक्रवार
6:14 सायं तक
7 जून पंचमी रविवार
8 जून षष्ठी सोमवार
3:02 दिन तक
12 जून एकादशी शुक्रवार
9:40 दिन तक

शुद्ध आषाढ़ शुक्ल पक्ष

19 जुलाई तृतीया रविवार
10:46 दिन तक
20 जुलाई चतुर्थी सोमवार
1:00 दिन से
22 जुलाई षष्ठी बुधवार
23 जुलाई सप्तमी गुरुवार
26 जुलाई दशमी रविवार
1:01 दिन से
27 जुलाई एकादशी सोमवार

1:51 दिन तक
29 जुलाई त्रयोदशी बुधवार
31 जुलाई पूर्णिमा शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

19 अक्टूबर षष्ठी सोमवार
22 अक्टूबर नवमी गुरुवार
11:59 दिन से
23 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
12:02 दिन तक
25 अक्टूबर त्रयोदशी रविवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

5 नवम्बर नवमी गुरुवार
6 नवम्बर दशमी शुक्रवार
8 नवम्बर द्वादशी रविवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
5:26 सायं तक
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार
22 नवम्बर एकादशी रविवार
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
2 दिसम्बर सप्तमी बुधवार
6 दिसम्बर दशमी रविवार
3:31 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

13 दिसम्बर द्वितीया रविवार
14 दिसम्बर तृतीया सोमवार
3:01 दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

20 जनवरी एकादशी बुधवार
21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार
11:57 दिन से
29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
31 जनवरी सप्तमी रविवार
10:51 दिन से
3 फरवरी दशमी बुधवार
5 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

10 फरवरी द्वितीया बुधवार
1:15 दिन से
11 फरवरी तृतीया गुरुवार
12:03 दिन तक
17 फरवरी दशमी बुधवार
22 फरवरी पूर्णिमा सोमवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार
25 फरवरी तृतीया गुरुवार
28 फरवरी पंचमी रविवार
4 मार्च दशमी शुक्रवार
6 मार्च द्वादशी रविवार
7 मार्च त्रयोदशी सोमवार
1:21 दिन तक

फाल्गुन शक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार
11 मार्च तृतीया शुक्रवार
20 मार्च द्वादशी रविवार
11:35 दिन से
21 मार्च त्रयोदशी सोमवार
1:12 दिन तक
23 मार्च पूर्णिमा बुधवार
5:31 सायं तक

卐 卐 卐 卐 卐

विक्रमी 2072 (ईस्वी 2015-16) के

शंकु प्रतिष्ठा मुहूर्त

(कन् साथ)

वैशाख शुक्ल पक्ष

24 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
1:29 दिन से
3:51 दिन तक (सिं)
25 अप्रेल सप्तमी शनिवार
8:46 प्रातः से
11:02 दिन तक (मि)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

9 मई पंचमी शनिवार
12:40 दिन से
2:52 दिन तक (सिं)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार
11:47 दिन से
2:09 दिन तक (सिं)
2:09 दिन से
4:29 दिन तक (कं)
23 मई पंचमी शनिवार
11:35 दिन से
1:57 दिन तक (सिं)
1:57 दिन से
4:48 दिन तक (कं)

शुद्ध आषाढ़ शुक्ल पक्ष

22 जुलाई षष्ठी बुधवार
10:01 दिन से
12:22 दिन तक (कं)
23 जुलाई सप्तमी गुरुवार
9:57 दिन से
12:18 दिन तक (कं)
31 जुलाई पूर्णिमा शुक्रवार
9:26 दिन से
11:46 दिन तक (कं)

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टूबर प्रतिपदा बुधवार
9:15 प्रातः से
11:35 दिन तक (वृँ)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

31 अक्टूबर पंचमी शनिवार
10:29 दिन से
12:31 दिन तक (धं)
2 नवम्बर सप्तमी सोमवार
8:00 प्रातः से
10:21 दिन तक (वृं)
10:21 दिन से
12:13 दिन तक (धं)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

18 नवम्बर सप्तमी बुधवार
7:30 प्रातः से
9:18 प्रातः तक (वृं)
9:18 प्रातः से
11:20 दिन तक (धं)

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
8:42 प्रातः से
10:45 दिन तक (धं)

विक्रमी 2072 (ईस्वी 2015-16) के

गृह प्रवेश मुहूर्त

(नये मकान या फलेट में प्रवेश के मुहूर्त)

30 नवम्बर पंचमी सोमवार
8:31 प्रातः से
10:33 दिन तक (धं)

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिसम्बर तृतीया सोमवार
7:35 प्रातः से
9:38 दिन तक (धं)

पौष शुक्ल पक्ष

16 जनवरी सप्तमी शनिवार
1:23 दिन से
3:16 दिन तक (वृ)

23 जनवरी पूर्णिमा शनिवार
12:55 दिन से
2:49 दिन तक (वृ)

माघ कृष्ण पक्ष

28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार
12:36 दिन से
2:29 दिन तक (वृ)
2:29 दिन से
4:44 दिन तक (मि)

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
12:32 दिन से
2:25 दिन तक (वृ)
2:25 दिन से
4:41 दिन तक (मि)

माघ शुक्ल पक्ष

11 फरवरी तृतीया गुरुवार
11:41 दिन से
12:03 दिन तक (वृ)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार
12:43 दिन से
2:58 दिन तक (मि)

25 फरवरी तृतीया गुरुवार
12:39 दिन से
2:54 दिन तक (मि)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार
11:48 दिन से
2:03 दिन तक (मि)

11 मार्च तृतीया शुक्रवार
11:44 दिन से
1:59 दिन तक (मि)

वैशाख शुक्ल पक्ष

24 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
3:51 दिन से
6:12 सायं तक (कं)

25 अप्रेल सप्तमी शनिवार
6:53 प्रातः से
8:46 प्रातः तक (वृ)
3:47 दिन से

4:38 सायं तक (कं)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

9 मई पंचमी शनिवार
5:58 प्रातः से
7:51 प्रातः तक (वृ)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार
2:09 दिन से
4:29 दिन तक (कं)

23 मई पंचमी शनिवार
1:57 दिन से
4:18 दिन तक (कं)

30 मई द्वादशी शनिवार
1:30 दिन से
3:50 दिन तक (कं)

भाद्र शुक्ल पक्ष

14 सितम्बर प्रतिपदा सोमवार
1:33 दिन से
3:36 दिन तक (धं)

आश्विन शुक्ल पक्ष

22 अक्टूबर नवमी गुरुवार
11:59 दिन से
1:06 दिन तक (धं)

23 अक्टूबर दशमी शुक्रवार
11:00 दिन से
1:02 दिन तक (धं)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

31 अक्टूबर पंचमी शनिवार
10:29 दिन से
12:31 दिन तक (धं)
2:10 दिन से
3:35 दिन तक (कुँ)

2 नवम्बर सप्तमी सोमवार
10:21 दिन से
12:23 दिन तक (धं)
2:02 दिन से
3:27 दिन तक (कुँ)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

18 नवम्बर सप्तमी बुधवार
9:18 प्रातः से
11:20 दिन तक (धं)
12:59 दिन से
2:24 दिन तक (कुँ)

21 नवम्बर दशमी शनिवार
5:03 दिन से
6:57 सायं तक (वृ)

23 नवम्बर द्वादशी सोमवार
8:58 प्रातः से
11:00 दिन तक (धं)

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
8:42 प्रातः से
10:45 दिन तक (धं)
12:24 दिन से
1:49 दिन तक (कुँ)

30 नवम्बर पंचमी सोमवार
8:31 प्रातः से
10:33 दिन तक (धं)
12:12 दिन से
1:37 दिन तक (कुँ)

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिसम्बर तृतीया सोमवार
7:35 प्रातः से
9:38 दिन तक (धं)
11:17 दिन से
12:42 दिन तक (कुँ)

पौष शुक्ल पक्ष

16 जनवरी सप्तमी शनिवार
9:07 प्रातः से
10:32 दिन तक (कुँ)
3:16 दिन से
5:32 दिन तक (मि)

20 जनवरी एकादशी बुधवार
8:51 प्रातः से
10:16 दिन तक (कुँ)
10:16 दिन से
11:36 दिन तक (मी)

21 जनवरी द्वादशी गुरुवार
8:47 प्रातः से
10:12 दिन तक (कुँ)
10:12 दिन से
11:32 दिन तक (मी)

माघ कृष्ण पक्ष

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
8:16 प्रातः से
9:41 दिन तक (कुँ)
9:41 दिन से
11:00 दिन तक (मी)

माघ शुक्ल पक्ष

10 फरवरी द्वितीया बुधवार
8:54 प्रातः से
10:13 दिन तक (मी)

17 फरवरी दशमी बुधवार
8:26 प्रातः से
9:46 दिन तक (मी)
1:10 दिन से
3:26 दिन तक (मि)

19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
8:18 प्रातः से
9:28 दिन तक (मी)
1:03 दिन से
3:18 दिन तक (मि)

20 फरवरी त्रयोदशी शनिवार
8:14 प्रातः से
9:34 दिन तक (मी)
12:59 दिन से
3:14 दिन तक (मि)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

25 फरवरी तृतीया गुरुवार
12:43 दिन से
2:58 दिन तक (मि)

25 फरवरी तृतीया गुरुवार
7:55 प्रातः से
9:14 दिन तक (मी)
12:39 दिन से
2:54 दिन तक (मि)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार
11:48 दिन से
2:03 दिन तक (मि)

11 मार्च तृतीया शुक्रवार
11:44 दिन से
1:59 दिन तक (मि)

Note:
The Rashies shown with the Muhurts is the Auspicious Time of that particular day for concerned Muhurt. It should not be considered as Moon sign of the person.



विक्रमी 2072 के
लेन्टर (छत) डालने के मुहूर्त



चैत्र शुक्ल पक्ष
26 मार्च सप्तमी गुरुवार
29 मार्च दशमी रविवार

वैशाख कृष्ण पक्ष
6 अप्रेल द्वितीया सोमवार
9 अप्रेल पंचमी गुरुवार
6:51 प्रातः से

वैशाख शुक्ल पक्ष
22 अप्रेल चतुर्थी बुधवार
3:49 दिन से
23 अप्रेल पंचमी गुरुवार
24 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
30 अप्रेल द्वादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
6 मई द्वितीया बुधवार
12:40 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
20 मई द्वितीया बुधवार
21 मई तृतीया गुरुवार
5:40 प्रातः तक
22 मई चतुर्थी शुक्रवार
5:36 प्रातः से
27 मई नवमी बुधवार
28 मई दशमी गुरुवार
29 मई एकादशी शुक्रवार
2:12 दिन तक
31 मई त्रयोदशी रविवार

शुद्ध आषाढ़ कृष्ण पक्ष
7 जून पंचमी रविवार
4:19 दिन तक

शुद्ध आषाढ़ शुक्ल पक्ष
22 जुलाई षष्ठी बुधवार
23 जुलाई सप्तमी गुरुवार
6:17 प्रातः तक
26 जुलाई दशमी रविवार
1:01 दिन से
27 जुलाई एकादशी सोमवार
1:51 दिन तक

भाद्र कृष्ण पक्ष
9 सितम्बर द्वादशी बुधवार

आश्विन शुक्ल पक्ष
14 अक्टूबर प्रतिपदा बुधवार
15 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
7:21 प्रातः तक
22 अक्टूबर नवमी गुरुवार
11:59 दिन से
1:29 दिन तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष
1 नवम्बर षष्ठी रविवार
2 नवम्बर सप्तमी सोमवार
8 नवम्बर द्वादशी रविवार
9 नवम्बर त्रयोदशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष
12 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार

3:42 दिन से
13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
5:26 सायं तक
18 नवम्बर सप्तमी गुरुवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
30 नवम्बर पंचमी सोमवार
6 दिसम्बर दशमी रविवार
3:31 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिसम्बर तृतीया सोमवार
3:01 दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार
11:57 दिन से
29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
31 जनवरी सप्तमी रविवार
10:51 दिन से
3 फरवरी दशमी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

17 फरवरी दशमी बुधवार
18 फरवरी एकादशी गुरुवार
19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार
9:42 दिन से
25 फरवरी तृतीया गुरुवार
28 फरवरी पंचमी रविवार
6 मार्च द्वादशी रविवार

फाल्गुन शक्ल पक्ष

17 मार्च नवमी गुरुवार
9:32 दिन से
18 मार्च दशमी शुक्रवार

काहनेथर साथ

ज़ातकर्म मुहूर्त (विक्रमी 2072 के लिए)

चैत्र शुक्ल पक्ष

25 मार्च षष्ठी बुधवार
26 मार्च सप्तमी गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

6 अप्रेल द्वितीया सोमवार
9 अप्रेल पंचमी गुरुवार
6:51 प्रातः तक
15 अप्रेल एकादशी बुधवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 अप्रेल चतुर्थी बुधवार
3:49 दिन से
23 अप्रेल पंचमी गुरुवार
11:16 दिन तक
24 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
12:05 दिन से
30 अप्रेल द्वादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार
12:40 दिन तक
13 मई दशमी बुध्वार
8:07 प्रातः तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार
22 मई चतुर्थी शुक्रवार
27 मई नवमी बुधवार
2:35 दिन से
28 मई दशमी गुरुवार
29 मई एकादशी शुक्रवार

शुद्ध आषाढ़ कृष्ण पक्ष

8 जून षष्ठी सोमवार
12 जून एकादशी शुक्रवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

9 सितम्बर द्वादशी बुधवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

14 सितम्बर प्रतिपदा सोमवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टूबर प्रतिपदा बुधवार
15 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
7:21 प्रातः तक
22 अक्टूबर नवमी गुरुवार
11:59 दिन से
23 अक्टूबर दशमी शुक्रवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

2 नवम्बर सप्तमी सोमवार
9 नवम्बर त्रयोदशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
30 नवम्बर पंचमी सोमवार
7 दिसम्बर एकादशी सोम॰

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिसम्बर तृतीया सोमवार
3:01 दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

20 जनवरी एकादशी बुधवार
21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार
11:57 दिन सो
29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
3 फरवरी दशमी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

10 फरवरी द्वितीया बुधवार
1:15 दिन तक
11 फरवरी तृतीया गुरुवार
11:10 दिन से
12:03 दिन तक
17 फरवरी दशमी बुधवार
19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार
9:42 दिन से
25 फरवरी तृतीया गुरुवार
7 मार्च त्रयोदशी सोमवार

फाल्गुन शक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार
11 मार्च तृतीया शुक्रवार
17 मार्च नवमी गुरुवार
9:32 दिन से
18 मार्च दशमी शुक्रवार

卐 卐 卐 卐 卐

विक्रमी 2072 के

वस्त्र धारण मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

3 अप्रेल चतुर्दशी शुक्रवार
3:18 दिन से

वैशाख कृष्ण पक्ष

5 अप्रेल प्रतिपदा रविवार
6 अप्रेल द्वितीया सोमवार
9 अप्रेल पंचमी गुरुवार
6:51 प्रातः तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

19 अप्रेल प्रतिपदा रविवार
3:09 दिन तक
30 अप्रेल द्वादशी गुरुवार
3 मई चतुर्दशी रविवार
4 मई पूर्णिमा सोमवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार
12:40 दिन तक
11 मई अष्टमी सोमवार
10:56 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

27 मई नवमी बुधवार
2:35 दिन से
28 मई दशमी गुरुवार
29 मई एकादशी शुक्रवार
31 मई त्रयोदशी रविवार

शुद्ध आषाढ़ कृष्ण पक्ष

7 जून पंचमी रविवार
4:19 दिन से

भाद्र शुक्ल पक्ष

14 सितम्बर प्रतिपदा सोमवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टूबर प्रतिपदा बुधवार
15 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
22 अक्टूबर नवमी गुरुवार
1:29 दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

8 नवम्बर द्वादशी रविवार
9 नवम्बर त्रयोदशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

12 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
5:26 दिन तक
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार
7:54 रात से
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार
12:18 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष

6 दिसम्बर दशमी रविवार
7 दिसम्बर एकादशी सोम॰
9 दिसम्बर त्रयोदशी बुधवार
12:16 दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

17 जनवरी अष्टमी रविवार

3:58 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार

11:57 दिन से

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार

31 जनवरी सप्तमी रविवार

3 फरवरी दशमी बुधवार

6:08 सायं तक

8 फरवरी अमावसी सोमवार

8:09 रात से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार

9:42 दिन से

25 फरवरी तृतीया गुरुवार

28 फरवरी पंचमी रविवार

29 फरवरी षष्ठी सोमवार

7 मार्च त्रयोदशी सोमवार

1:21 दिन तक

फाल्गुन शक्ल पक्ष

11 मार्च तृतीया शुक्रवार

3:42 दिन से

23 मार्च पूर्णिमा बुधवार

卐 卐 卐 卐 卐

हमारी संस्कृति के प्रतीकः-

मकान बनवाने के बाद हम हवन, गृह प्रवेश पूजा पाठ आदि क्यों करवाते है? गृह प्रवेश के समय यज्ञ, रामायण पाठ या गृह प्रवेश पूजा कराने से अनावश्यक गृह दोष का निवारण हो जाता है और घर में लक्ष्मी का आगमन होता है। समस्त कुप्रभावों को नष्ट करने के लिए ही हम ग्रह प्रवेश पूजा कराते हैं जिससे घर में सदैव सुख शान्ति व खुशहाली रहती हैं। हवन आदि करने से आत्मिक शान्ति मिलती है। और शान्त मन तथा प्रसन्न चित होने से उस समय घर में प्रवेश करो तो सदैव प्रसन्नता कायम रहती है।

विक्रमी 2072 के

विद्यारम्भ मुहूर्त

What is the purpose of Vidhyarambh ceremony?

The word *vidya* means *knowledge* and *arambh* denotes *beginning.* Education of the child is a very important aspect of life and deserves all the importance it can be given. In the **Jyotirnibandh** it is said

विद्यया लुप्यते पापं विद्ययाऽयुः प्रवर्धते।

विद्यया सर्वसिद्धिः स्याद्विद्ययामृमश्नुते ॥

With the study of Vedas all sins are eliminated. One lives longer. One succceeds in every thing. The nectar of learning comes just like normal food and water.

The religious text explains the one who is not knowledgeable is deprived of wonderful fruit like morality

चैत्र शुक्ल पक्ष

25 मार्च षष्ठी बुधवार

26 मार्च सप्तमी गुरुवार

29 मार्च दशमी रविवार

1 अप्रेल द्वादशी बुधवार

2:45 दिन से

2 अप्रेल त्रयोदशी गुरुवार

12:47 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

5 अप्रेल प्रतिपदा रविवार

9 अप्रेल पंचमी गुरुवार

10 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
15 अप्रेल एकादशी बुधवार
16 अप्रेल द्वादशी गुरुवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 अप्रेल चतुर्थी बुधवार
3:49 दिन से
23 अप्रेल पंचमी गुरुवार
24 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
29 अप्रेल एकादशी बुधवार
30 अप्रेल द्वादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार
12:40 दिन तक
8 मई चतुर्थी शुक्रवार
9:12 प्रातः से
13 मई दशमी बुधवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार
21 मई तृतीया गुरुवार
5:40 प्रातः तक
22 मई चतुर्थी शुक्रवार
27 मई नवमी बुधवार
2:35 दिन से
28 मई दशमी गुरुवार
29 मई एकादशी शुक्रवार

शुद्ध आषाढ़ कृष्ण पक्ष

4 जून द्वितीया गुरुवार
5 जून तृतीया शुक्रवार
6:14 सायं तक
7 जून पंचमी रविवार
12 जून एकादशी शुक्रवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

9 सितम्बर द्वादशी बुधवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टूबर प्रतिपदा बुधवार
15 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
7:21 प्रातः तक
22 अक्टूबर नवमी गुरुवार
11:59 दिन से
23 अक्टूबर दशमी शुक्रवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

29 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
6:37 सायं से
1 नवम्बर षष्ठी रविवार
6 नवम्बर दशमी शुक्रवार
8 नवम्बर द्वादशी रविवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

12 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
3:42 दिन से
13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
5:26 सायं तक
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार
22 नवम्बर एकादशी रविवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
6 दिसम्बर दशमी रविवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

13 दिसम्बर द्वितीया रविवार

पौष शुक्ल पक्ष

20 जनवरी एकादशी बुधवार
21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

27 जनवरी तृतीया बुधवार
9:55 दिन तक

28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार
11:57 दिन से
29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
31 जनवरी सप्तमी रविवार
3 फरवरी दशमी बुधवार
5 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

10 फरवरी द्वितीया बुधवार
11 फरवरी तृतीया गुरुवार
12:03 दिन तक
17 फरवरी दशमी बुधवार
18 फरवरी एकादशी गुरुवार
19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार
25 फरवरी तृतीया गुरुवार
28 फरवरी पंचमी रविवार
3 मार्च नवमी गुरुवार
6:05 सायं से
4 मार्च दशमी शुक्रवार
6 मार्च द्वादशी रविवार
3:36 दिन तक

फाल्गुन शक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार
11 मार्च तृतीया शुक्रवार
17 मार्च नवमी गुरुवार
9:32 दिन से
18 मार्च दशमी शुक्रवार
20 मार्च द्वादशी रविवार
11:32 दिन तक

(विक्रमी 2072 के लिए)

अन्न प्राशन मुहूर्त

अथा अन्नप्राशनं कुर्यात्, षष्ठे मासि विधानतः।।

बालक का अन्न-प्राशन संस्कार छटे मास में ही करना चाहिये।

चैत्र शुक्ल पक्ष

26 मार्च सप्तमी गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

6 अप्रेल द्वितीया सोमवार
9 अप्रेल पंचमी गुरुवार
6:51 प्रातः तक
15 अप्रेल एकादशी बुधवार
1:14 दिन से

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 अप्रेल चतुर्थी बुधवार
3:49 दिन से
23 अप्रेल पंचमी गुरुवार
11:16 दिन तक
24 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
3:35 दिन से
30 अप्रेल द्वादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार
12:40 दिन तक

13 मई दशमी बुध्वार
8:07 प्रातः तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार
22 मई चतुर्थी शुक्रवार
27 मई नवमी बुधवार
2:35 दिन से
28 मई दशमी गुरुवार
5-01 सायं तक

शुद्ध आषाढ़ कृष्ण पक्ष

8 जून षष्ठी सोमवार
12-23 दिन से

भाद्र कृष्ण पक्ष

9 सितम्बर द्वादशी बुधवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

14 सितम्बर प्रतिपदा सोमवार
2-49 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टूबर प्रतिपदा बुधवार
8-02 प्रातः से
15 अक्टूबर द्वितीया गुरुवार
7:21 प्रातः तक
22 अक्टूबर नवमी गुरुवार
11:59 दिन से
23 नवम्बर दशमी शुक्रवार
9-52 दिन तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष

2 नवम्बर सप्तमी सोमवार
9 नवम्बर त्रयोदशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
30 नवम्बर पंचमी सोमवार
7 दिसम्बर एकादशी सोम॰
10-23 दिन से

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिसम्बर तृतीया सोमवार
3:01 दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार
11:57 दिन से
29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
2-35 दिन तक
3 फरवरी दशमी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

10 फरवरी द्वितीया बुधवार
1:15 दिन तक
11 फरवरी तृतीया गुरुवार
11:10 दिन से
12:03 दिन तक
17 फरवरी दशमी बुधवार
19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार
9:42 दिन से
25 फरवरी तृतीया गुरुवार
7 मार्च त्रयोदशी सोमवार

फाल्गुन शक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार
11 मार्च तृतीया शुक्रवार
17 मार्च नवमी गुरुवार
9:32 दिन से
18 मार्च दशमी शुक्रवार

卐 卐 卐 卐 卐

विक्रमी 2072 के

दिवचृ क्षीर मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

27 मार्च अष्टमी शुक्रवार
29 मार्च दशमी रविवार
3 अप्रेल चतुर्दशी शुक्रवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

6 अप्रेल द्वितीया सोमवार
9 अप्रेल पंचमी गुरुवार
6:51 प्रातः से
12 अप्रेल अष्टमी रविवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

19 अप्रेल प्रतिपदा रविवार
3:09 दिन तक
23 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
3:53 दिन तक
30 अप्रेल द्वादशी गुरुवार
4 मई पूर्णिमा सोमवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार
12:40 दिन तक
11 मई अष्टमी सोमवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

21 मई तृतीया गुरुवार
5:40 प्रातः तक
22 मई चतुर्थी शुक्रवार
28 मई दशमी गुरुवार
29 मई एकादशी शुक्रवार
31 मई त्रयोदशी रविवार

शुद्ध आषाढ़ कृष्ण पक्ष

7 जून पंचमी रविवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

9 सितम्बर द्वादशी बुधवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

14 सितम्बर प्रतिपदा सोमवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टूबर प्रतिपदा बुधवार
15 अक्टूबर द्वितीया गुरुवर
21 अक्टूबर अष्टमी बुधवार
22 अक्टूबर नवमी गुरुवार
11:59 दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

1 नवम्बर षष्ठी रविवार
2 नवम्बर सप्तमी सोमवार
8 नवम्बर द्वादशी रविवार
9 नवम्बर त्रयोदशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

12 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

30 नवम्बर पंचमी सोमवार
6 दिसम्बर दशमी रविवार
7 दिसम्बर एकादशी सोम॰
9 दिसम्बर त्रयोदशी बुधवार
2:16 दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

17 जनवरी अष्टमी रविवार
3:58 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार
11:57 दिन तक
29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
31 जनवरी सप्तमी रविवार
3 फरवरी दशमी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

18 फरवरी एकादशी गुरुवार
19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
9:42 दिन से
25 फरवरी तृतीया गुरुवार
28 फरवरी पंचमी रविवार
29 फरवरी षष्ठी सोमवार
7 मार्च त्रयोदशी सोमवार
2:00 दिन तक

फाल्गुन शक्ल पक्ष

11 मार्च तृतीया शुक्रवार
3:42 दिन से
17 मार्च नवमी गुरुवार
9:32 दिन से
18 मार्च दशमी शुक्रवार

ख्यन्तव्यो मेऽपराधः, शिव शिव शिव भोः, श्री महादेव शम्भो।।
किसी भी व्यक्ति के देहान्त होने के समय हमें ऊपर लिखित मन्त्र का सही उच्चारण करना चाहिए । न कि 'ख्त्तव्यो मेऽपराधः, शिव शिव शम्भो, श्री महादेव शम्भो' जो कि अशुद्ध है।

गृह देवता (घर दिवताह)

को प्रसन्न करने के मुहूर्त



पौष कृष्ण पक्ष

26 दिसम्बर प्रतिपदा शनिवार
29 दिसम्बर चतुर्थी भौमवार
2 जनवरी अष्टमी शनिवार
5 जनवरी एकादशी भौमवार
9 जनवरी चतुर्दशी शनिवार

स्वयं सिद्ध मुहूर्त :-

चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा, वसन्त पंचमी, अक्षया तृतीया, विजयादशमी, दीपावली तिथियां स्वयं सिद्ध मुहूर्त कहलाती हैं। आवश्यक परिस्थिति में यदि कोई मुहूर्त न बन पड़े तो इन स्वयं सिद्ध मुहूर्तों में से किसी एक का चयन करके शुभ कार्य कर सकते हैं। Emergency पड़ने पर अथवा आवश्यक परिस्थिति या शीघ्रता पड़ने पर निर्धारित मुहूर्त के न मिलने पर किसी अभीष्ट कार्य में सफलता प्राप्ति के लिये जन्त्री में प्रकाशित सर्वार्थ सिद्धि मुहूर्तों का चयन भी कर सकते हैं। परन्तु सर्वार्थ सिद्धि योग में विवाह, यज्ञोपवीत, ग्रह प्रवेश, शंकु प्रतिष्ठा, विद्यारम्भ आदि शुभ कार्य न करें। ऐसे शुभ कार्यो की तिथि का चयन सम्बन्धित मुहूर्त प्रकरण से ही करें।

ज़र-कासय साथ

चूढाकर्म मुहूर्त (विक्रमी 2072 के लिए)

चैत्र शुक्ल पक्ष

26 मार्च सप्तमी गुरुवार
10:45 दिन से
1:00 दिन तक (मि)

वैशाख कृष्ण पक्ष

6 अप्रेल द्वितीया सोमवार
10:02 दिन से
12:17 दिन तक (मि)

वैशाख शुक्ल पक्ष

24 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
3:35 दिन से
3:51 दिन तक (सिं)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

7 मई तृतीया गुरुवार
7:59 प्रातः से
9:52 दिन तक (मि)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार
11:47 दिन से
2:09 दिन तक (सिं)
28 मई दशमी गुरुवार
6:37 प्रातः से
8:52 प्रातः तक (मि)
31 मई त्रयोदशी रविवार
11:04 दिन से
1:26 दिन तक (सिं)

आश्विन शुक्ल पक्ष

22 अक्टूबर नवमी गुरुवार
11:59 दिन से
1:06 दिन तक (धं)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

18 नवम्बर सप्तमी बुधवार
9:18 दिन से
11:20 दिन तक (धं)
12:59 दिन से
2:24 दिन तक (कुँ)
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार
8:58 प्रातः से
11:00 दिन तक (धं)
11:00 दिन से
12:18 दिन तक (म)

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
8:42 प्रातः से
10:45 दिन तक (धं)
10:45 दिन से
12:24 दिन तक (म)
30 नवम्बर पंचमी सोमवार
8:31 प्रातः से
10:43 दिन तक (धं)
10:43 दिन से
12:12 दिन तक (म)

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिसम्बर तृतीया सोमवार
7:35 प्रातः से
9:38 दिन तक (धं)

11:17 दिन से
12:42 दिन तक (कुँ)

पौष शुक्ल पक्ष

20 जनवरी एकादशी बुधवार
10:43 दिन से
11:36 दिन तक (मी)
21 जनवरी द्वादशी गुरुवार
8:47 प्रातः से
10:12 दिन तक (कुँ)
10:12 दिन से
11:32 दिन तक (मी)

माघ कृष्ण पक्ष

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
8:16 प्रातः से
9:41 दिन तक (कुँ)
9:41 दिन से
11:00 दिन तक (मी)

माघ शुक्ल पक्ष

10 फरवरी द्वितीया बुधवार
8:54 प्रातः से
10:13 दिन तक (मी)
11:45 दिन से
1:15 दिन तक (वृ)
11 फरवरी तृतीया गुरुवार
11:10 दिन से
11:41 दिन तक (मे)
11:41 दिन से
12:03 दिन तक (वृ)
17 फरवरी दशमी बुधवार
8:26 प्रातः से
9:46 दिन तक (मी)
19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
8:18 प्रातः से
9:38 दिन तक (मी)
11:09 दिन से
1:03 दिन तक (वृ)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितीया बुधवार
10:50 दिन से
12:43 दिन तक (वृ)
12:43 दिन से
2:58 दिन तक (मि)
25 फरवरी तृतीया गुरुवार
7:55 प्रातः से
9:14 दिन तक (मी)
10:46 दिन से
12:39 दिन तक (वृ)
12:39 दिन से
2:54 दिन तक (मि)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

10 मार्च द्वितीया गुरुवार
9:54 दिन से
11:48 दिन तक (वृ)
11:48 दिन से
2:03 दिन तक (मि)
11 मार्च तृतीया शुक्रवार
9:51 दिन से
11:44 दिन तक (वृ)
11:44 दिन से
1:59 दिन तक (मि)
17 मार्च नवमी गुरुवार
9:32 दिन से
11:20 दिन तक (वृ)
18 मार्च दशमी शुक्रवार
9:23 दिन से
9:39 दिन तक (वृ)

(विक्रमी 2072 के लिए)

पन्न साथ

नोट:- पन्न मुहूर्त के लिए भौमवार, शनिवार, पंचक त्रयहः मासान्त, संक्रान्ति आदि निषेध माना जाता है परन्तुं स्यंघ पन्न दान के लिए निषेध नहीं है। विनायक चतुर्थी पन्न मुहूर्त के लिए स्वयं सिद्ध मुहूर्त है अत: वारदोष, पंचक, त्रयहः आदि का विचार विनायक चतुर्थी में नहीं किया जाता है। स्यंघ भी पन्न दान के लिए निषेध नहीं है।

भाद्र शुक्ल पक्ष

14 सितम्बर प्रतिपदा सोमवार
17 सितम्बर चतुर्थी गुरुवार
18 सितम्बर पंचमी शुक्रवार
20 सितम्बर सप्तमी रविवार
21 सितम्बर अष्टमी सोमवार
24 सितम्बर एकादशी गुरुवार
25 सितम्बर द्वादशी शुक्रवार
3:36 दिन तक

नोटः विनायक चतुर्थी पन्न मुहूर्त के लिए स्वयं सिद्ध मुहूर्त है।

卐 卐 卐 卐 卐

शिशुर लागनुक साथ

कार्तिक शुक्ल पक्ष

22 नवम्बर एकादशी रविवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

26 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
6 दिसम्बर दशमी रविवार
9 दिसम्बर त्रयोदशी बुधवार
2:16 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

20 दिसम्बर दशमी रविवार
23 दिसम्बर त्रयोदशी बुधवार
2:52 दिन से

पौष कृष्ण पक्ष

27 दिसम्बर द्वितीया रविवार
1 जनवरी सप्मती शुक्रवार
7 जनवरी द्वादशी गुरुवार
8:57 प्रातः तक

पौष शुक्ल पक्ष

10 जनवरी प्रतिपदा रविवार
9:42 दिन से

हमारी संस्कृति के प्रत्तीक:-

आशौच:- जीवन में कुछ अवस्थाएँ ऐसी भी आती है, जब व्यक्ति अशौचावस्था में रहता है। उस समय वह देवार्चन आदि कोई शुभ कार्य करने का अधिकारी नहीं रहता है।

दीपदान मुहूर्त

(प्रेतदीपदान)

नोट:- लोकाचार की दृष्टि से 'काश्मीर दैशिकज्योति: संग्रह' (स्व. केश्व भट्ट ज्योतिषी) तथा मृतत्त्व गृन्थ के आधार से दीपदान के सभी मुहूर्तों का चयन किया गया है।

(प्रेतदीपदान) कार्तिक्यां माघमासे वा फाल्गुने मास एवहि ।
दीपदानं हितं कृष्णाषष्ठयां फाल्गुनमाघयो:।।
जीवाऽर्कजे नैव कुजाऽर्कवारे रिक्ते तिथौ चन्द्रबले विहीने।
अृक्षाणि वर्ज्यानि त्रिपुष्कराणि शेषेषु दीपा न्परिकल्पयन्ति ।। (काश्मीर दैशिकज्योति: संग्रह)

आशिवन शुक्ल पक्ष

14 अक्टूबर प्रतिपदा बुधवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

6 नवम्बर दशमी शुक्रवार
9 नवम्बर त्रयोदशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
23 नवम्बर द्वादशी सोमवार
12:18 दिन से
25 नवम्बर पूर्णिमा बुधवार

माघ कृष्ण पक्ष

29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
3 फरवरी दशमी बुधवार
5 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

17 फरवरी दशमी बुधवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

4 मार्च दशमी शुक्रवार

हमारी संस्कृति के प्रतीक:-

दीपदान (तीलद्युन) षडमोस या मासवार पर देने का प्रचल्लन जो कुछ समय से आरम्भ हुआ है, गलत है। काश्मीर के किसी भी पौराणिक गृन्थ में इस का कही भी वर्णन नहीं है जो इस की आज्ञा देता हो कि षडमोस या मासवार पर दीपदान देना चाहिये, केवल कार्तिक पूर्णिमा व तील अष्टमी दीपदान के स्वयं सिद्ध मुहूर्त हैं। इन दिनों के विना आप कृपया दीपदान देने के लिए दीपदान मुर्हूत का चयन अवश्य करें।

लडकी को दूध देने का

मुहूर्त (दुध् साथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष
26 मार्च सप्तमी गुरुवार
29 मार्च दशमी रविवार

वैशाख कृष्ण पक्ष
9 अप्रेल पंचमी गुरुवार
6:51 प्रातः तक

वैशाख शुक्ल पक्ष
23 अप्रेल पंचमी गुरुवार
11:16 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
5 मई प्रतिपदा भौमवार
11:50 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
28 मई दश्मी गुरुवार
11:26 दिन से
2 जून पूर्णिमा भौमवार

शुद्ध आषाढ़ कृष्ण पक्ष
4 जून द्वितीया गुरुवार
7 जून पंचमी रविवार
2:28 दिन तक

शुद्ध आषाढ़ शुक्ल पक्ष
23 जुलाई सप्तमी गुरुवार
6:17 प्रातः तक
26 जुलाई दशुमी रविवार
1:01 दिन से
28 जुलाई द्वादशी भौमवार
1:52 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष
22 अक्टूबर नवमी गुरुवार
11:59 दिन से
1:29 दिन तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष
1 नवम्बर षष्ठी रविवार
3:46 दिन से
8 नवम्बर द्वादशी रविवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष
12 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
3:42 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष
6 दिसम्बर दशमी रविवार
3:31 दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष
21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष
25 फरवरी तृतीया गुरुवार
12:24 दिन से
1 मार्च सप्तमी भौमवार
3:52 दिन तक
3 मार्च नवमी गुरुवार
6:05 सायं से
6 मार्च द्वादशी रविवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष
15 मार्च सप्तमी भौमवार
8:19 प्रातः से
11:12 दिन तक
17 मार्च नवमी गुरुवार
9:32 दिन से

नया वाहन खरीदने के मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

26 मार्च सप्तमी गुरुवार
1 अप्रेल द्वादशी बुधवार
2:45 दिन से
2 अप्रेल त्रयोदशी गुरुवार
12:47 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

6 अप्रेल द्वितीया सोमवार
10 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 अप्रेल चतुर्थी बुधवार
3:49 दिन से
23 अप्रेल पंचमी गुरुवार
11:16 दिन तक
24 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
12:05 दिन से
29 अप्रेल एकादशी बुधवार
30 अप्रेल द्वादशी गुरुवार
4 मई पूर्णिमा सोमवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

6 मई द्वितीया बुधवार
12:40 दिन तक
8 मई चतुर्थी शुक्रवार
9:12 दिन से
1:03 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई द्वितीया बुधवार
22 मई चतुर्थी शुक्रवार
27 मई नवमी बुधवार
2:35 दिन से
28 मई दशमी गुरुवार
29 मई एाकदशी शुक्रवार

शुद्ध आषाढ़ कृष्ण पक्ष

4 जून द्वितीया गुरुवार
5 जून तृतीया शुक्रवार
6:14 सायं तक

शुद्ध आषाढ़ शुक्ल पक्ष

20 जुलाई चतुर्थी सोमवार
1:00 दिन से
22 जुलाई षष्ठी बुधवार
23 जुलाई सप्तमी गुरुवार
1:51 दिन तक
29 जुलाई त्रयादशी बुधवार
31 जुलाई पूर्णिमा शुक्रवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

9 सितम्बर द्वादशी बुधवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

14 सितम्बर प्रतिपदा सोम॰

आश्विन शुक्ल पक्ष

14 अक्टूबर प्रतिपदा बुधवार
19 अक्टूबर षष्ठी सोमवार
22 अक्टूबर नवमी गुरुवार
11:59 दिन से
1:29 दिन तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष

2 नवम्बर सप्तमी सोमवार
4:25 दिन तक
6 नवम्बर दशमी शुक्रवार
9 नवम्बर त्रयोदशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

12 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
13 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
18 नवम्बर सप्तमी बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
30 नवम्बर पंचमी सोमवार
7 दिसम्बर एकादशी सोम०

मार्ग शुक्ल पक्ष

14 दिसम्बर तृतीया सोमवार
3:01 दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

21 जनवरी द्वादशी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

27 जनवरी तृतीया बुधवार
9:55 दिन तक
28 जनवरी चतुर्थी गुरुवार
11:57 दिन से
29 जनवरी पंचमी शुक्रवार
3 फरवरी दशमी बुधवार
5 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

17 फरवरी दशमी बुधवार
19 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

24 फरवरी द्वितिया बुधवार
25 फरवरी तृतीया गुरुवार
4 मार्च दशमी शुक्रवार

फाल्गुन शक्ल पक्ष

17 मार्च नवमी गुरुवार
18 मार्च दशमी शुक्रवार

हमारी संस्कृति के प्रतीक :-

जननाशौच - मरणाशौच

अपने परिवार में नव शिशु के जन्म होने पर प्रायः तीन दिन तथा सहगोत्र में किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर दस रात्रि का अशौच माना गया है। अशौचावस्था में देवकार्य पितृकार्य, वदोध्ययन (वेदों का अध्यन) तथा गुरूजनों का अभिवादन आदि करना निषेध माना गया है। यहां तक कि देव मन्दिर में प्रवेश तथा पूजन आदि करना भी वर्जित है। स्त्रियों के लिये प्रायः मास में एकबार विशेष अवस्था आती है जिसमें वह रजस्वला हो जाती है। इसमें तीन रात्रि तक उनकी आशौचावस्था रहती है।

उदङ्मुखस्तु देवानां पितृणां दक्षिणामुखः॥

(स्कन्दपुराण, प्रभास० २०६ । १८)

देव पूजा उत्तरमुख होकर और पितृ पूजा दक्षिणमुख होकर करना चाहिये।

'मुखेन न धमेद् बुधः'

(कर्मपुराण, उ० १६ । ७७)

अग्नि को कभी मुख से नहीं फूँकना चाहिये।

ईस्वी 2015-16 के लिए

यात्रा मुहूर्त

यात्रा के लिए शुभ नक्षत्र	अश्विन, पुनर्वसु, अनुराध, तिष्य, मृग, रेवती, हस्त, धनिष्ट।
यात्रा के लिए अशुभ नक्षत्र	भरण, कृति, आर्द्रा, अश्ले, मघा, चित्र, स्वात, विशाख।
यात्रा के लिए शुभ योग	आनन्दः, ध्वजः, श्रीवत्सः, छत्रम्, मैत्रम्, सिद्धः, अमृतम्, गजः।
यात्रा के लिए मध्यम नक्षत्र	रोहिनी, उफा, उषा, उभा, पुफा, पूषा, ज्येष्ठ, मूल, शतभि।
यात्रा के लिए अशुभ योग	कालदण्डः, धौम्यः, ध्वांक्षः, उन्मूलं, मुसुलम्, मुद्गरम्, काण्डः, क्षयः, शूलम्।

वार दोष निवारण के लिए :- रविवार को पान खाकर यात्रा को जायें, सोमवार को दूध अथवा खीर, भौमवार को ऑवला अथवा कांजी खट्टी पदार्थ, बुधवार को मीठा, गुरुवार को दही, शुक्रवार को कच्चा दूध, शनिवार को तहर या पीले चावल खकर यात्रा पर जायें।

चैत्र शुक्ल पक्ष

21 मार्च पश्चिम उत्तर
25 मार्च उत्तर विना
26. मार्च पूर्व पश्चिम
28 मार्च पूर्व विना
29 मार्च पूर्व उत्तर
1 अप्रेल उत्तर विना
2:45 दिन से
2 अप्रेल पूर्व पश्चिम
3 अप्रेल पश्चिम विना
4 अप्रेल पूर्व विना

वैशाख कृष्ण पक्ष

8 अप्रेल उत्तर विना
9 अप्रेल पूर्व पश्चिम
10 अप्रेल पश्चिम विना
11 अप्रेल पूर्व विना
12 अप्रेल पूर्व उत्तर
15 अप्रेल पूर्व पश्चिम
16 अप्रेल पूर्व पश्चिम

वैशाख शुक्ल पक्ष

19 अप्रेल पूर्व उत्तर
3:09 दिन तक
21 अप्रेल पूर्व दक्षिण
11:57 दिन से
22 अप्रेल उत्तर बिना
23 अप्रेल पूर्व पश्चिम
11:16 दिन तक
24 अप्रेल पश्चिम विना
12:05 दिन से
25 अप्रेल पूर्व विना
26 अप्रेल पूर्व उत्तर
3:53 दिन तक

29 अप्रेल उत्तर विना
30 अप्रेल पूर्व पश्चिम
2 मई पूर्व विना
6:27 प्रातः तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

5 मई पूर्व दक्षिण
11:50 दिन से
6 मई उत्तर विना
7 मई पूर्व पश्चिम
8 मई पश्चिम विना
9 मई पूर्व विना
11 मई पूर्व विना
12 मई पूर्व यात्रा
13 मई पूर्व पश्चिम
16 मई पूर्व विना

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

19 मई पूर्व दक्षिण
20 मई उत्तर विना
8:45 रात तक
21 मई पूर्व पश्चिम
9:08 रात से
22 मई पश्चिम विना
23 मई पूर्व विना
26 मई पूर्व दक्षिण
27 मई उत्तर विना
28 मई पूर्व पश्चिम
29 मई पश्चिम विना
2:12 दिन तक
1 जून पूर्व विना
7:20 सायं से

शुद्ध आषाढ़ कृष्ण पक्ष

3 जून उत्तर विना
4 जून पूर्व पश्चिम
5 जून पश्चिम विना
6 जून पूर्व विना
7 जून पूर्व उत्तर
8 जून पश्चिम उत्तर
9 जून पूर्व यात्रा
10 जून पूर्व पश्चिम
12 जून पश्चिम विना
9:40 दिन से
13 जून पूर्व विना
8:25 प्रातः तक
16 जून पूर्व दक्षिण
7:35 सायं से

अ० आषाढ़ शुक्ल पक्ष

17 जून उत्तर विना
5:41 प्रातः तक
18 जून पूर्व पश्चिम
6:01 प्रातः से
19 जून पश्चिम विना
20 जून पूर्व विना
8:31 प्रातः तक
22 जून पूर्व विना
1:21 दिन से
23 जून पूर्व दक्षिण
25 जून पूर्व पश्चिम
29 जून पूर्व विना
30 जून पूर्व दक्षिण
1 जुलाई उत्तर विना
2 जुलाई पूर्व पश्चिम

अ० आषाढ़ कृष्णपक्ष

4 जुलाई पूर्व विना
5 जुलाई पूर्व उत्तर

6 जुलाई पश्चिम उत्तर
7 जुलाई पूर्व यात्रा
8 जुलाई पूर्व पश्चिम
9 जुलाई पूर्व पश्चिम
10 जुलाई पश्चिम विना
2:09 दिन तक
12 जुलाई पूर्व उत्तर
1:00 दिन से
13 जुलाई पूर्व विना
14 जुलाई पूर्व दक्षिण
1:05 दिन तक

शुद्ध आषाढ़ शुक्ल पक्ष

19 जुलाई पूर्व उत्तर
9:06 रात से
20 जुलाई पूर्व विना
21 जुलाई पूर्व दक्षिण
22 जुलाई उत्तर विना
23 जुलाई पूर्व पश्चिम
6:17 प्रातः तक
26 जुलाई पूर्व उत्तर
1:01 दिन से
27 जुलाई पूर्व विना
28 जुलाई पूर्व दक्षिण
29 जुलाई उत्तर विना
30 जुलाई पूर्व पश्चिम
31 जुलाई पश्चिम विना

श्रावण कृष्ण पक्ष

1 अगस्त पश्चिम उत्तर
2 अगस्त पूर्व उत्तर
4 अगस्त पूर्व यात्रा
5 अगस्त पूर्व पश्चिम
6 अगस्त पूर्व पश्चिम
7:40 सायं तक
8 अगस्त पूर्व विना
6:26 सायं से
9 अगस्त पूर्व उत्तर
10 अगस्त पूर्व विना
7:01 सायं तक
11 अगस्त पूर्व दक्षिण
12 अगस्त उत्तर विना
13 अगस्त पूर्व पश्चिम
6:49 सायं तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

18 अगस्त पूर्व दक्षिण
23 अगस्त पूर्व उत्तर
24 अगस्त पूर्व विना
25 अगस्त पूर्व दक्षिण
26 अगस्त उत्तर विना
27 अगस्त पूर्व पश्चिम
29 अगस्त पश्चिम उत्तर

भाद्र कृष्ण पक्ष

30 अगस्त पूर्व उत्तर
31 अगस्त पश्चिम उत्तर
1 सितम्बर पूर्व यात्रा
2 सितम्बर उत्तर विना
5 सितम्बर पूर्व विना
6 सितम्बर पूर्व उत्तर
8 सितम्बर पूर्व दक्षिण
9 सितम्बर उत्तर विना
13 सितम्बर पूर्व उत्तर
12:11 दिन से

भाद्र शुक्ल पक्ष

14 सितम्बर पूर्व विना
15 सितम्बर पूर्व दक्षिण

7:39 सायं तक
20 सितम्बर पूर्व उत्तर
21 सितम्बर पूर्व विना
22 सितम्बर पूर्व दक्षिण
23 सितम्बर उत्तर विना
24 सितम्बर पूर्व पश्चिम
25 सितम्बर पूर्व उत्तर
3:36 दिन से
26 सितम्बर पश्चिम उत्तर
27 सितम्बर पूर्व उत्तर

आश्विन कृष्ण पक्ष

29 सितम्बर पूर्व यात्रा
3:00 दिन तक
30 सितम्बर उत्तर विना
12:21 दिन तक
2 अक्टूबर पश्चिम विना
8:27 प्रातः से
3 अक्टूबर पूर्व विना
4 अक्टूबर पूर्व उत्तर
7:13 प्रातः तक
5 अक्टूबर पूर्व विना
7:44 प्रातः से
7 अक्टूबर उत्तर विना
10:58 दिन तक
9 अक्टूबर पश्चिम विना
4:18 दिन से
10 अक्टूबर पूर्व विना
11 अक्टूबर पूर्व उत्तर

आश्विन शुक्ल पक्ष

19 अक्टूबर पूर्व विना
20 अक्टूबर पूर्व दक्षिण
21 अक्टूबर उत्तर विना
22 अक्टूबर पूर्व पश्चिम
23 अक्टूबर पूर्व उत्तर
25 अक्टूबर पूर्व उत्तर
26 अक्टूबर पश्चिम उत्तर
27 अक्टूबर पूर्व दक्षिण

कार्तिक कृष्ण पक्ष

29 अक्टूबर पूर्व पश्चिम
6:37 सायं से
31 अक्टूबर पूर्व विना
3:57 दिन तक
1 नवम्बर पूर्व उत्तर
3:46 दिन से
2 नवम्बर पूर्व विना
3 नवम्बर पूर्व दक्षिण
5:52 सायं तक
6 नवम्बर पश्चिम विना
7 नवम्बर पूर्व विना
8 नवम्बर पूर्व उत्तर
9 नवम्बर पूर्व विना
8:10 प्रातः से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

12 नवम्बर पूर्व पश्चिम
3:42 दिन से
13 नवम्बर पश्चिम विना
14 नवम्बर पूर्व विना
18 नवम्बर उत्तर विना
19 नवम्बर पूर्व पश्चिम
20 नवम्बर पूर्व उत्तर
21 नवम्बर पश्चिम उत्तर
22 नवम्बर पूर्व उत्तर
23 नवम्बर पश्चिम उत्तर

मार्ग कृष्ण पक्ष

26 नवम्बर पूर्व पश्चिम
27 नवम्बर पश्चिम विना
29 नवम्बर पूर्व उत्तर
30 नवम्बर पूर्व विना
3 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
4 दिसम्बर पश्चिम विना
6 दिसम्बर पूर्व उत्तर
3:31 दिन तक
10 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
3:24 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

12 दिसम्बर पूर्व विना
13 दिसम्बर पूर्व उत्तर
14 दिसम्बर पूर्व विना
17 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
18 दिसम्बर पूर्व उत्तर
20 दिसम्बर पूर्व उत्तर
21 दिसम्बर पूर्व विना
23 दिसम्बर उत्तर विना
2:52 दिन से
24 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
25 दिसम्बर पश्चिम विना
12:14 दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

26 डिसम्बर पूर्व विना
11:29 दिन से
27 दिसम्बर पूर्व उत्तर
28 दिसम्बर पूर्व विना
11:49 दिन तक
30 दिसम्बर उत्तर विना
2:58 दिन से
31 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
1 जनवरी पश्चिम विना
2 जनवरी पूर्व विना
7 जनवरी पूर्व पश्चिम
8 जनवरी पश्चिम विना

पौष शुक्ल पक्ष

11 जनवरी पूर्व विना
12 जनवरी पूर्व दक्षिण
16 जनवरी पश्चिम उत्तर
17 जनवरी पूर्व उत्तर
20 जनवरी उत्तर विना
21 जनवरी पूर्व पश्चिम
8:17 रात तक
23 जनवरी पूर्व विना

माघ कृष्ण पक्ष

27 जनवरी उत्तर विना
28 जनवरी पूर्व पश्चिम
29 जनवरी पूर्व पश्चिम
30 जनवरी पूर्व विना
7:45 प्रातः तक
2 फरवरी पूर्व दक्षिण
4:15 दिन से
3 फरवरी उत्तर विना
4 फरवरी पूर्व पश्चिम
5 फरवरी पश्चिम विना
6 फरवरी पूर्व उत्तर
7 फरवरी पूर्व उत्तर
8 फरवरी पूर्व विना
8:09 रात से

माघ शुक्ल पक्ष

9 फरवरी पूर्व यात्रा
10 फरवरी पूर्व पश्चिम
11 फरवरी पूर्व पश्चिम

16 फरवरी पूर्व दक्षिण
17 फरवरी उत्तर विना
19 फरवरी पश्चिम विना
20 फरवरी पूर्व विना

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

23 फरवरी पूर्व दक्षिण
7:22 प्रातः से
24 फरवरी उत्तर विना
25 फरवरी पूर्व पश्चिम
1 मार्च पूर्व दक्षिण
2 मार्च उत्तर विना
4 मार्च पश्चिम विना
5 मार्च पूर्व विना
6 मार्च पूर्व उत्तर
7 मार्च पश्चिम उत्तर
8 मार्च पूर्व यात्रा
10:34 दिन तक

फाल्गुन शक्ल पक्ष

10 मार्च पूर्व पश्चिम
11 मार्च पूर्व उत्तर
12 मार्च पूर्व विना
1:15 दिन तक
15 मार्च पूर्व दक्षिण
16 मार्च उत्तर विना
7:47 प्रातः तक
17 मार्च पूर्व पश्चिम
7:52 प्रातः से
18 मार्च पश्चिम विना
19 मार्च पूर्व विना
9:49 दिन तक
21 मार्च पूर्व विना
1:46 दिन से
22 मार्च पूर्व दक्षिण
23 मार्च उत्तर विना

चैत्र शुक्ल पक्ष

24 मार्च पूर्व पश्चिम
28 मार्च पूर्व विना
7:05 प्रातः से
30 मार्च उत्तर विना
31 मार्च पूर्व पश्चिम
1 अप्रेल पश्चिम विना
2 अप्रेल पूर्व विना
4 अप्रेल पश्चिम उत्तर
5 अप्रेल पूर्व यात्रा
6 अप्रेल पूर्व पश्चिम
8:37 रात तक
7 अप्रेल पूर्व पश्चिम

卐 卐 卐 卐 卐

कपूर प्रज्वलित देवी देवताओं की आरती क्यों की जाती है?

प्राचीनकाल से ही हमारे देश में देशी घी के दीपक से और कपूर से देवी देवताओं की आरती करने का प्रचलन चला आ रहा है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार देवी देवता आरती करने से प्रसन्न होते हैं और साधक की मनोकामना पूर्ण करते हैं। कपूर जलाने से देवदोष तथा पितृदोष का शमन होता है। कपूर दहन में बाहरी वातावरण को शुद्ध करने की अद्भुत क्षमता है। कपूर जलाने से घर का वातावरण शुद्ध रहता है क्योंकि इसमें जीवाणुओं, विषाणुओं (वायरस आदि) को नष्ट करने की क्षमता होती है, शरीर पर बीमारियों का आक्रमण आसानी से नहीं होता। इस तरह वैज्ञानिक कारणों से भी कपूर जलाना उचित हैं।

मेष राशि का मासिक फल

अप्रेल:- मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति से मालूम होता है कि इस मास में आप की सभी इच्छायें पूर्ण होने का योग है। इस मास में आपका स्वास्थ भी ठीक रहेगा। मित्रों से मेलजोल बढ़ने का भी योग है। नौकरी पेशा के लिए यह मास सफलता का ही है।

मई:- ग्रहों की स्थिति को ध्यान में रखकर यही मालूम होता है कि यह मास भी हर प्रकार से शन्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा, प्रायः हर काम में सफलता होगी। इस मास में शुक्र, सूर्य तथा बुध अपनी राशि बदलेंगे जिस से अधिक धन की प्राप्ति का योग बनेगा।

जून:- फलित शास्त्रों के अनुसार यह मास सामूहिक रूप से अशान्ति तथा दौड़धूप के वातावरण में ही गुज़रेगा। आप का शरीर प्रायः अस्वस्थ रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को इस मास पढाई सम्बन्धित हर काम में उलझनें तथा रुकावटों के कारण सानसिक अशन्ति बनी रहेगी।

जुलाई:- इस मास में आरम्भ किये हुए हर काम में सफलता मिलने का योग प्रबल है। 16 जुलाई 2015 को सूर्य के कर्कट राशि में प्रवेश करने से मास के अन्तिम दो सप्ताहों में अत्याधिक खर्च होने की संभावना है।

अगस्त:-आप के लिए इस मास में यात्रा करना कष्टदायक होगी। यदि आप नौकरी करते हैं तो वेतन में वृद्धि या किसी और दिशा से अकस्मात् धन मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास सफलता का है।

सितम्बर:- इस मास में हर आरम्भ किये हुये काम में संघर्ष के बाद ही सफलता होगी। यदि आप विद्यार्थी है, तो पढने लिखने से सम्बन्धित हर काम में रुकावट के बाद ही सफलता प्राप्त होगी, इस लिए इस मास में आप को कठोर परिश्रम करना चाहिए।

अक्टूबर:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार नौकरी पेशा वर्ग तथा व्यापारी वर्ग किसी तर्की या लाभ की आशा न रखें अपितु अपने काम के विषय में सावधान रहिये, अकस्मात् हानि की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। यदि आप कोई वाहन या भूमि खरीदना चाहते हैं तो विजयेश्वर जन्त्री के मुहूर्त प्रकरण में दिये गए मुहूर्तों पर ही ऐसे कार्य करने का निश्चय करें।

नवम्बर:- फलित शास्त्रों के आधार पर इस मास में सूर्य तथा शुक्र की स्थिति शुभ मानी गई है। जिस से अकस्मात् कोई तामीरी काम या जाईदाद बनाने के प्रोग्राम को असली रूप दिये जाने का योग है। गृहस्थी होने पर किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धी चिन्ता

बनी रहेगी। विद्यार्थी वर्ग इस मास में विद्या सम्बन्धित कार्यों में कम दिलचसपी लेंगे।

दिसम्बरः- इस मास वैष्णव रहें, गृहस्थी होने पर ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करें, यदि आप स्वयं वाहन चलाते हैं तो सावधानी से ही सफर करें। इस मास में आप पर शुत्रओं का अधिक दबाव रहेगा।

जनवरीः- इस मास में तर्की या तबदीली का योग है। घरेलू वातावरण भी शान्त रहने की सम्भावना है। इस मास में यात्रा का योग बनेगा जो आप के लिए लाभदायक रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को सावधान रहना चाहिए।

फरवरीः- इस मास में कोई महोत्सव रचाने का परोग्राम बनेगा जिस में आप का विशेष योगदान होगा। विद्यार्थी वर्ग को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता मिलेगी। मित्रों के साथ मेलमिलाप में वृद्धि तथा धार्मिक कार्यों में भी रुचि बड़ने की सम्भावना है।

मार्चः- यदि आप का जाईदाद सम्बन्धित कोई झगडा चल रहा है तो इस मास में उसके सुलझने की सम्भावना है। यदि आप कोई महोत्सव रचाने का विचार रखते हैं तो इसी मास में सम्पन्न करें, वह महोत्सव आप की शान व मान को बढ़ाने का कारण बनेगा।

वृष राशि का मासिक फल

अप्रेलः- गोचर चक्र के अनुसार इस मास में घर में हर प्रकार से शान्त वातावरण बना रहेगा। कारोबार, आमदनी आदि की दृष्टि से यह मास आप के लिए उत्तम रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास परेशानी का रहेगा।

मईः- इस मास में आप अपने शरीर के विषय में आप को विशेष ध्यान रखें। विद्यार्थियों के लिए यह मास भी परेशानी तथा दौड़धूप का ही रहेगा। आपने यदि कोई इन्टरव्यू या परीक्षा देनी हो अथवा कोई परिणाम निकलनेवाला हो तो उसमें अवश्य सफलता मिलेगी।

जूनः- ग्रहों की दृष्टि तथा उनकी स्थिति को ध्यान में रखकर यही मालूम होता है यह मास शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा, प्रायः हर काम में सफलता होगी। गृहस्थी होने पर स्त्री की ओर से सुख तथा शान्ति मिलेगी। नौकरी पेशा होने पर अफसरों तथा सम्बन्धित कार्यकर्ताओं से मेल जोल का वातावरण बना रहेगा। व्यापारी होने पर आप इस मास में डट के काम में लगें रहिये, आशा से अधिक लाभ मिलेगा।

जुलाईः- यद्यपि इस मास के आरम्भ में ग्रहों की स्थिति ठीक नहीं है जिस के प्रभाव से 18 जुलाई तक यह मास परेशानी के वातावरण में ही गुज़रेगा, कोई भी काम उलझन के बिना सिद्ध नहीं होगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए भी आरम्भ के लगबग 18 दिन दौड़धूप में ही

गुज़रेंगे परन्तु मास के दूसरे भाग में विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी।

अगस्त :- यह मास आप के लिए हर प्रकार से शुभ फलदायक होगा। शरीर सुख उत्तम रहेगा, इस मास के सभी दिन सुख शान्ति के वातावरण में व्यतीत होगें, घर में प्रायः खाने पीने, खिलाने के प्रग्राम बनते रहेंगे, भाई बन्धुओं मित्रों, रिश्तेदारों के आने में वृद्धि होगी।

सितम्बर :- अगर आप नौकरी अथवा व्यापारी वर्ग से सम्बन्धित हैं तो इस मास में कोई ऐसी उलझन आ घेरेगी जो आप की मानप्रतिष्ठा के लिए ठीक नही होगी। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है।

अक्टूबर:- इस मास की ग्रह स्थिति को विचार कर यह ज्ञात होता है कि इस मास में शरीर के विषय में सावधान रहिए, यदि आप गाड़ी आदि खुद चलाते है तो मंगलवार को दक्षिण दिशा की ओर लम्बी यात्रा पर न जायें, अक्समात् चोट लगने का अन्देशा है।

नवम्बर:- फलित गोचर के आधार से मालूम पडता है कि यह मास संघर्ष, दौड़धूप तथा परन्तु मानसिक शान्ति के वातावरण में ही व्यतीत होगा। धन लाभ अर्थात आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। व्यापारी वर्ग तथा नौकरी पेशा वर्ग के लिए यह मास उत्तम रहेगा। घर में किसी सदस्य के शरीर की परेशानी बनी रह सकती है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे विद्या प्राप्ति के लिए सोमवार के दिन भगवान् शंकर पर दूध सहित जल चढ़ाया करें।

दिसम्बर:- इस मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति आप के पक्ष में नहीं है। अतः आप को हर समय सावधान रहने की आवश्यकता है। भौम की अच्छी स्थिति में न होने की वजह से वह आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है। मास के अन्त में यदि यात्रा का योग बने तो वह आप के लिए लाभदायक रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास कडे संघर्ष का होगा।

जनवरी :- इस मास में आप की आर्थिक स्थिति को और सुदृढ तथा हर प्रकार की रुकावटों को दूर करने में शुक्र ग्रह सहायक रहेगा। इस मास में हर आरम्भ किये काम का परिणाम लाभदायक होगा। शुभ कामों पर खर्च करने की योजना बनेगी। गृहस्थी होने पर गृहस्थ पक्ष से हर प्रकार से शान्ति रहेगी।

फरवरी:- यह मास सामूहिक रूप से सुख शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा। शरीर सुख उत्तम रहेगा, आर्थिक स्थिति सुदृढ रहेगी। आदर व मान में वृद्धि होगी, प्रायः हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता होगी।

मार्च:- यद्यपि इस मास के ग्रहों की स्थिति अच्छी है फिर भी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। चन्द्रमा की अच्छी स्थिति में न होने से मानसिक अशान्ति के साथ साथ परिवार में झगडा, प्रायः हर कार्य में असफलता आदि का सूचक है। यदि आप नौकरी वर्ग से है तो दफतर का माहौल आप के प्रतिकूल ही होगा।

मिथुन राशि का मासिक फल

अप्रेल :- इस मास में शरीर के विषय में सावधान रहिये, यदि आप विवाहित हैं तो कोई न कोई घरेलू परेशानी घेरे रखेगी। यदि आप व्यापार से सम्बन्धित हैं तो अकस्मात् हानि की सम्भावना है, नौकरी पेशा होने पर आफीसरों से अनबन होने के कारण उन्नति में अड़चन पड़ सकती है। विद्यार्थी वर्ग के लिए विद्या सम्बन्धित हर एक काम के लिए लाभदायक रहेगा।

मई:- इस मास में भी आप की ग्रहचाल में कोई सुधार नही हुआ है। धन की परेशानी आप को घेरे रखेगी, शरीर के बारे में सावधान रहिये, गृहस्थी होने पर स्त्री या पति के शरीर का विशेष ध्यान रखिये, ससुराल की तरफ से भी परेशान होने की संभावना है, नौकरी पेशा होने पर लाभ की अथवा तरक्की की आशा न रखें।

जून:- इस मास के अन्तिम सप्ताह आप के लिये लाभदायक रहेंगे। राज्य अर्थात् राजकीय वर्ग से लाभ, सरकारी कार्यों को सम्पन्न करने में सफलता समाज में ऊचे वर्ग के लोगों से परिचय तथा घनिष्ठता व विवाद में विजय तथा शत्रुओं को पराजित करने में सफलता मिलेगी।

जुलाई:- इस मास में शुक्र का प्राभाव आप पर अधिक रहेगा। यदि आप नौकरी करते हैं, तो तबदीली का योग बनेगा जो इच्छानुसार नही होगी। ऐसे ही भौम की स्थिति भी आप को शान्ति का दम लेने नही देगी। कोई भी काम विना रुकावट के हल नहीं होगा। यदि यात्रा का योग बने तो यात्रा में अवश्य लाभ होगा। विद्यार्थियों की पढ़ाई की ओर दिलचस्पी कम रहेगी, ईश्वर का कृपा पात्र बन जाने के लिए शनिवार को किसी अपाहिज की सहायता करें।

अगस्त:- यह मास आप के भविष्य की सुख शान्ति की तरफ इशारा करता है। आप जो काम हाथ में लेंगें सफलता निश्चित है, परिवार तथा धन की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा, शुभ कामों पर धन सार्थक खर्च होगा। मान व प्रतिष्ठा से भी यह मास मध्यम है। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर कार्य में सफलता मिलेगी।

सितम्बर:- इस मास में ग्रहों की दृष्टि को ध्यान में रखते हुये ज्योतिष गोचर में यही मालूम होता है कि आपका यह मास शान्त वातावरण में ही गुज़रेगा। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर कार्य में सफलता होगी, यदि आप को ट्रेनिंग आदि करने की योजना है तो इस मास में ड़ट कर परिश्रम कीजिए।

अक्टूबर:- इस मास में धार्मिक कामों में दिलचस्पी बनी रहेगी। यह मास यद्यपि दौडधूप तथा संघर्ष में ही गुज़रेगा परन्तु हर काम में सफलता होगी, खाने खिलाने तथा धन का व्यय अधिक मात्रा में होगा, रिश्तेदारों तथा मित्रों से मेलमिलाप में वृद्धि होगी, व्यवसाय में मनोनुकूल लाभ मिलेगा। विद्यार्थियो के लिए यह मास विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता देने वाला होगा।

नवम्बर:- फलित गोचर के आधार से मालूम पडता है कि यह मास संघर्ष, दौड़धूप तथा मानसिक अशान्ति के वातावरण में ही व्यतीत

होगा। घर में किसी सदस्य के शरीर की परेशानी बनी रह सकती है।

दिसम्बरः- इस मास में आप के रुके काम बिना किसी उलझन के सुलझ जायेगें, घर में किसी शुभ काम के रचाने का प्रोग्राम बनेगा। इस मास में आपकी सामाजिक कामों में रुचि बढ़ेंगी, पूजापाठ में भी अच्छा मन लगेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए चेतावनी है कि वह परिश्रम करें अन्यथा परिणाम उनके विपरीत होंगे।

जनवरी :- यह मास सामूहिक रूप से सुख शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा। यदि आप विवाहित हैं तो स्त्री की ओर से परेशानी बनी रहेगी। परिवार का वातावरण भी अशान्त ही रहेगा।

फरवरीः- इस मास क़ी ग्रहों की स्थिति आप के आर्थिक संकट को दूर करने में सहायक सिद्ध हो गी। कुछ शुभ तथा शुभ योगों से इस मास में अकस्मात् लाभ, मानसिक शान्ति, प्रत्येक आरम्भ किये कार्य में सफलता, मित्रों तथा रिश्तेदारों से मेल मिलाप की सम्भावना है। परन्तु शत्रुओं से आप को सावधान ही रहना चाहिए।

मार्चः- नौकरी तथा व्यापारी वर्ग को इस मास में शत्रुओं से परेशानी ही होगी। यदि आप का कोई तरक्की आदि का केस विचाराधीन है तो वह भी ज्यूं का त्यों लटकता रहेगा, यदि आप विवाहित है तो स्त्री के स्वास्थ्य का ख्याल अवश्य रखें। विद्यार्थियों के लिए यह मास सफलता का नही होगा, परिणाम आप के विपरीत भी हो सकते हैं।

कर्कट राशि का मासिक फल

अप्रेलः- इस मास में आप अपने शरीर के विषय में आप को विशेष ध्यान रखें। विद्यार्थियों के लिए यह मास भी परेशानी तथा दौड़धूप का ही रहेगा। अपने यदि कोई इन्टरव्यू या परीक्षा देनी हो अथवा कोई परिणाम निकलनेवाला हो तो उसमें अवश्य सफलता मिलेगी।

मईः- ग्रहों की स्थिति को ध्यान में रखकर यही मालूम होता है कि यह मास भी हर प्रकार से शन्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा, प्रायः हर काम में सफलता होगी।

जूनः- ग्रहों की दृष्टि तथा उनकी स्थिति को ध्यान में रखकर यही मालूम होता है यह मास शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा, प्रायः हर काम में सफलता होगी। गृहस्थी होने पर स्त्री की ओर से सुख तथा शान्ति मिलेगी। नौकरी पेशा होने पर अफसरों तथा सम्बन्धित कार्यकर्ताओं से मेल जोल का वातावरण बना रहेगा। व्यापारी होने पर आप इस मास में डट के काम में लगें रहिये, आशा से अधिक लाभ मिलेगा।

जुलाईः- यद्यपि इस मास के आरम्भ में ग्रहों की स्थिति ठीक नहीं है जिस के प्रभाव से 18 जुलाई तक यह मास परेशानी के वातावरण में ही गुज़रेगा, कोई भी काम उलझन के बिना सिद्ध नहीं होगा। पहले 18 दिन व्यतीत होने पर अकस्मात् लाभ के द्वार खुलेंगे। यदि आप

व्यापार करते हैं तो हर काम में सफलता होगी।

अगस्त:- अगर आप नौकरी अथवा व्यापारी वर्ग से सम्बन्धित हैं तो इस मास में कोई ऐसी उलझन आ घेरेगी जो आप की मानप्रतिष्ठा के लिए ठीक नही होगी। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो इस मास में ज़रा सी दौड़धूप करने से सफलता आप के पक्ष में होगी।

सितम्बर:- यह मास आप के लिए हर प्रकार से शुभ फलदायक होगा। शरीर सुख उत्तम रहेगा, इस मास के सभी दिन सुख शान्ति के वातावरण में व्यतीत होगें, घर में प्राय: खाने पीने, खिलाने के प्रग्राम बनते रहेंगे, भाई बन्धुओं मित्रों, रिश्तेदारों के आने में वृद्धि होगी।

अक्टूबर:- इस मास की ग्रह स्थिति को विचार कर यह ज्ञात होता है कि इस मास में शरीर के विषय में सावधान रहिए, यदि आप गाड़ी आदि खुद चलाते है तो लम्बी यात्रा स्वयं वाहन न चलाये। उपाय के रूप में इस मास की मंगलवार को पीले चावल तहॅर बनाकर पक्षियों को डालें।

नवम्बर:- फलित गोचर के आधार से मालूम पडता है कि यह मास संघर्ष, दौड़धूप तथा मानसिक अशान्ति के वातावरण में ही व्यतीत होगा। परन्तु धन लाभ अर्थात आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। व्यापारी वर्ग तथा नौकरी पेशा वर्ग के लिए यह मास उत्तम रहेगा। घर में किसी सदस्य के शरीर की परेशानी बनी रह सकती है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे विद्या प्राप्ति के लिए सोमवार के दिन भगवान् शंकर पर दूध सहित जल चढ़ाया करें।

दिसम्बर:- इस मास में आप की आर्थिक स्थिति को और सुदृढ तथा हर प्रकार की रुकावटों को दूर करने में शुक्र ग्रह सहायक रहेगा। इस मास में हर आरम्भ किये काम का परिणाम लाभदायक होगा। शुभ कामों पर खर्च करने की योजना बनेगी। तामीरी काम, वाहन अथवा ज़मीन की खरीद पर धन खर्च करना हो तो इस मास की बुधवार तथा शुक्रवार ही इन कार्यों के लिए चुनें।

जनवरी:- यह मास सामूहिक रूप से सुख शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा। शरीर सुख उत्तम रहेगा, आर्थिक स्थिति सुदृढ रहेगी। आदर व मान में वृद्धि होगी, प्राय: हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता होगी।

फरवरी:- इस मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति आप के पक्ष में नहीं है। अत: आप को हर समय सावधान रहने की आवश्यकता है। भौम की अच्छी स्थिति में न होने की वजह से वह आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है। मास के अन्त में यदि यात्रा का योग बने तो वह आप के लिए लाभदायक रहेगी।

मार्च:- यद्यपि इस मास के ग्रहों की स्थिति अच्छी है फिर भी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। चन्द्रमा की अच्छी स्थिति में न होने से मानसिक अशान्ति के साथ साथ प्राय: हर कार्य में असफलता आदि का सूचक है। यदि आप नौकरी वर्ग से है तो दफतर का माहौल आप के प्रतिकूल ही होगा।

सिंह राशि का मासिक फल

अप्रेल:- यह मास शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा, प्रायः हर काम में सफलता होगी। गृहस्थी होने पर स्त्री की ओर से सुख तथा शान्ति मिलेगी। नौकरी पेशा होने पर अफसरों तथा सम्बन्धित कार्यकर्ताओं से मेल जोल का वातावरण बना रहेगा। व्यापारी होने पर आप इस मास में डटके काम में लगें रहिये, आशा से अधिक लाभ मिलेगा।

मई:- यद्यपि इस मास के आरम्भ में ग्रहों की स्थिति ठीक नहीं है जिस के प्रभाव से यह मास परेशानी के वातावरण में ही गुज़रेगा, कोई भी काम उलझन के बिना सिद्ध नहीं होगा। यदि आप व्यापार करते हैं तो हर काम में सफलता होगी।

जून:- गोचर चक्र के अनुसार इस मास में घर में हर प्रकार से शान्त वातावरण बना रहेगा। कारोबार, आमदनी आदि की दृष्टि से यह मास आप के लिए उत्तम रहेगा। परन्तु विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास परेशानी का रहेगा।

जुलाई:- इस मास में आप अपने शरीर के विषय में आप को विशेष ध्यान रखें। विद्यार्थियों के लिए यह मास भी परेशानी तथा दौड़धूप का ही रहेगा।

अगस्त:- अग़र आप नौकरी अथवा व्यापारी वर्ग से सम्बन्धित हैं तो इस मास में कोई ऐसी उलझन आ घेरेगी जो आप की मानप्रतिष्ठा के लिए ठीक नही होगी। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में संफलता निश्चित है, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो इस मास में ज़रा सी दौड़धूप करने से सफलता आप के पक्ष में होगी।

सितम्बर:- यह मास आप के लिए हंर प्रकार से शुभ फलदायक होगा। शरीर सुख उत्तम रहेगा, इस मास के सभी दिन सुख शान्ति के वातावरण में व्यतीत होगें, घर में प्रायः खाने पीने, खिलाने के प्रग्राम बनते रहेंगे, भाई बन्धुओं मित्रों, रिश्तेदारों के आने में वृद्धि होगी।

अक्टूबर:- इस मास में शरीर के विषय में सावधान रहिए, यदि आप गाड़ी आदि खुद चलाते है तो मंगलवार को दक्षिण दिशा की ओर लम्बी यात्रा पर न जायें, अक्समात् चोट लगने का अन्देशा है।

नवम्बर:- फलित गोचर के आधार से मालूम पडता है कि यह मास संघर्ष, दौड़धूप तथा मानसिक अशान्ति के वातावरण में ही व्यतीत होगा। परन्तु धन लाभ अर्थात आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। घर में किसी सदस्य के शरीर की परेशानी बनी रह सकती है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे विद्या प्राप्ति के लिए सोमवार के दिन भगवान् शंकर पर दूध सहित जल चढ़ाया करें।

दिसम्बर:- इस मास में आप की आर्थिक स्थिति को और सुदृढ तथा हर प्रकार की रुकावटों को दूर करने में गुरु व शुक्र ग्रह सहायक रहेंगे। इस मास में हर आरम्भ किये काम का परिणाम लाभदायक

होगा। शुभ कामों पर खर्च करने की योजना बनेगी। गृहस्थी होने पर गृहस्थ पक्ष से हर प्रकार से शान्ति रहेगी।

जनवरी :- यह मास सामूहिक रूप से सुख शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा। शरीर सुख उत्तम रहेगा, आर्थिक स्थिति सुदृढ रहेगी। आदर व मान में वृद्धि होगी, प्रायः हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता होगी। किसी झगडें अथवा उलझन में आप के फंसे रहने की सम्भावना है, परन्तु इस मास के अन्त तक हर झगडे तथा हर उलझन का समाधान शान्त वातावरण में ही होगा।

फरवरी:- इस मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति आप के पक्ष में नहीं है। अतः आप को हर समय सावधान रहने की आवश्यकता है। भौम व शनि की अच्छी स्थिति में न होने की वजह से वह आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है। मास के अन्त में यदि यात्रा का योग बने तो वह आप के लिए लाभदायक रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास कडे संघर्ष का होगा।

मार्च:- यद्यपि इस मास के ग्रहों की स्थिति अच्छी है फिर भी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। मानसिक अशान्ति के साथ साथ परिवार में झगडा, प्रायः हर कार्य में असफलता मिलेगी। यदि आप नौकरी वर्ग से है तो दफतर का माहौल आप के प्रतिकूल ही होगा।

कन्या राशि का मासिक फल

अप्रेल:- इस मास में आरम्भ किया हुआ तामीरी काम बहुत देर तक लटकता रहेगा। यदि आप किसी लडके अथवा लडकी का विवाह सम्बन्ध निश्चित करने का प्रयत्न कर रहें हैं तो इस मास में न करें, यदि यात्रा का योग बनें तो वह यात्रा आप के लिए लाभदायक रहेगी।

मई:- इस मास का अधिक भाग रिश्तेदारों, भाई बन्धुओं तथा मित्रों के मेल मिलाप में ही व्यतीत होगा। मास के अन्त में यदि यात्रा का योग बने तो वह आप के लिए लाभदायक रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास कडे संघर्ष का होगा।

जून:- यह मास सामान्यतया आप के लिए शुभ ही रहेगा। आपकी आथिक स्थिति भी मज़बूत बनेगी। परन्तु शत्रुओं का ज़ोर तथा उनमें वृद्धि, कोई भी रोग लगने का भय रहने की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता।

जुलाई:- यह मास आप के लिए हर प्रकार से लाभदायक तथा सफलता देने वाला रहेगा। शरीर सुख भी उत्तम रहेगा, इस मास के

लगबग सभी दिन सुख शान्ति के वातावरण में व्यतीत होगें।

अगस्त:- यदि आप व्यापार करते हैं तो आप के लिए ग्रह अनुकूल हैं। आप को इस मास में आशा से अधिक आर्थिक सफलता मिलेगी। धार्मिक कार्यों में धन खर्च होने का भी योग है।

सितम्बर:-यह मास वृष राशि वाले जातकों के लिए कोई शुभ फलदायक नहीं है। घर में किसी सदस्य के शरीर की परेशानी बनी रह सकती है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे विद्या प्राप्ति के लिए सोमवार के दिन भगवान् शंकर पर दूध सहित जल चढ़ाया करें।

अक्टूबर:- इस मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति अच्छी है। अचानक चोट लगने का खतरा है, यदि आप का शरीर स्वस्थ रहेगा फिर भी स्त्रीपक्ष से आप परेशान रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा।

नवम्बर:-यह मास संघर्ष के वातावरण में ही गुज़रेगा। किन्तु शरीर प्रायः स्वस्थ रहेगा। विद्या सम्बन्धित हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता निश्चित है।

दिसम्बर:- इस मास के आरम्भ में बुध, शुक्र ग्रह आप के हित में हैं। शेष सभी गहों का अशुभ होना अशान्ति का सूचक है। इस कारण यह मास गत मास की तरह संघर्ष के वातावरण में ही गुज़रेगा।

जनवरी :- इस मास के शुभ और अशुभ ग्रहों को देखते हुए विदित होता है कि यह महीना कुछ-कुछ शन्ति के माहोल में ही गुज़रेगा, आपकी आमदनी में वृद्धि न होने पर भी आप कुछ शान्ति अनुभव करोगे। फज़ूल खरची में बहुत अन्तर आएगा।

फरवरी :- इस मास के अन्तिम दो सप्ताह आप के लिए लाभदायक रहेंगे। इस मास के ग्रहों से लाभ उठाएं. आप जो भी काम करते हैं उसमें जुट जाएं, सफलता अवश्य मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास सन्तोष जनक नही है। पढ़ाई की ओर अल्प प्रवृति रहेगी।

मार्च:- इस मास में आपके खर्च का योग बलवान है। परन्तु खर्च प्रायः शुभ कामों पर ही होगा, भाई बन्धुओं व रिश्तेदारों से मिलने जुलने का सुअवसर मिलेगा, व्यापारी वर्ग भी लाभ में रहेगा अथवा उन के काम को लाभ के साथ साथ कारोबार को भी बढावा मिलेगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो इस मास में यह समस्या हल होगी।

तुला राशि का मासिक फल

अप्रेल:- इस मास वैष्णव रहें, गृहस्थी होने पर ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करें, यदि आप स्वयं वाहन चलाते हैं तो भौवार को सावधानी से ही सफर करें। इस मास में आप पर शुत्रओं का अधिक दबाव रहेगा।

मई:- इस मास में तर्की या तबदीली का योग है। घरेलू वातावरण भी शान्त रहने की सम्भावना है। इस मास में यात्रा का योग बनेगा जो आप के लिए लाभदायक रहेगा।

जून:- इस मास में कोई महोत्सव रचाने का परोग्राम बनेगा जिस में आप का विशेष योगदान होगा। विद्यार्थी वर्ग को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता मिलेगी। मित्रों के साथ मेलमिलाप में वृद्धि तथा धार्मिक कार्यों में भी रुचि बड़ने की सम्भावना है।

जुलाई:- यदि आप का जाईदाद सम्बन्धित कोई झगडा चल रहा है तो इस मास में उसके सुलझने की सम्भावना है। यदि आप कोई महोत्सव रचाने का विचार रखते हैं तो इसी मास में सम्पन्न करें, वह महोत्सव आप की शान व मान को बढ़ाने का कारण बनेगा।

अगस्त:- इस मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति अच्छी नहीं है। अचानक चोट लगने का खतरा है, यदि आप का शरीर स्वस्थ रहेगा फिर भी स्त्रीपक्ष से आप परेशान रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा।

सितम्बर:-यह मास संघर्ष के वातावरण में ही गुज़रेगा। किन्तु शरीर प्रायः स्वस्थ रहेगा। विद्या सम्बन्धित हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता निश्चित है।

अक्टूबर:- इस मास के आरम्भ में बुध, शुक्र ग्रह आप के हित में हैं। शेष सभी गहों का अशुभ होना अशान्ति का सूचक है। इस कारण यह मास गत मास की तरह संघर्ष के वातावरण में ही गुज़रेगा।

नवम्बर:- इस मास के शुभ और अशुभ ग्रहों को देखते हुए विदित होता है कि यह महीना कुछ-कुछ शन्ति के माहोल में ही गुज़रेगा, आपकी आमदनी में वृद्धि न होने पर भी आप कुछ शान्ति अनुभव करोगे। फज़ूल खरची में बहुत अन्तर आएगा।

दिसम्बर :- इस मास के अन्तिम दो सप्ताह आप के लिए लाभदायक रहेंगे। इस मास के ग्रहों से लाभ उठाएं आप जो भी काम करते हैं उसमें जुट जाएं, सफलता अवश्य मिलेगी। विद्यार्थी

वर्ग के लिए यह मास सन्तोष जनक नही है। पढ़ाई की ओर अल्प प्रवृति रहेगी।

जनवरी:- यह मास शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा, प्राय: हर काम में सफलता होगी। गृहस्थी होने पर स्त्री की ओर से सुख तथा शान्ति मिलेगी। नौकरी पेशा होने पर अफसरों तथा सम्बन्धित कार्यकर्ताओं से मेल जोल का वातावरण बना रहेगा। व्यापारी होने पर आप इस मास में डटके काम में लगें रहिये, आशा से अधिक लाभ मिलेगा।

फरवरी:- यद्यपि इस मास के आरम्भ में ग्रहों की स्थिति ठीक नहीं है जिस के प्रभाव से यह मास परेशानी के वातावरण में ही गुज़रेगा, कोई भी काम उलझन के बिना सिद्ध नहीं होगा। यदि आप व्यापार करते हैं तो हर काम में सफलता होगी।

मार्च:- गोचर चक्र के अनुसार इस मास में घर में हर प्रकार से शान्त वातावरण बना रहेगा। कारोबार, आमदनी आदि की दृष्टि से यह मास आप के लिए उत्तम रहेगा। परन्तु विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास परेशानी का रहेगा।

वश्चिक राशि का मासिक फल

अप्रेल:- मिलेजुले योग के अनुसार यह मास शान्त वातावरण में ही गुज़रेगा, आर्थिक दृष्टि से भी यह मास उत्तम रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास सफलता का ही है परन्तु दौडदूप के साथ साथ कुछ मानसिक अशान्ति भी बनी रहेगी।

मई:- यह मास भी सामूहिक रूप से आप के लिए लाभदायक रहेगा। यदि आप किसी परेशानी या मुक्दमा आदि में फंसे हैं तो ऐसी समस्याओं का हल स्वयं निकल आयेगा, लाभ की दृष्टि से यह मास बहुत ही उत्तम है, यदि आप कोई वाहन आदि खरीदना चाहते हैं तो इन की खरीद इस मास में लाभदायक रहेगी परन्तु जाईदाद आदि बेचना हानिकारक होगा।

जून:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार अचानक किसी आर्थिक संकट की संभावना है। इस मास आप अपनी पूंजी की रक्षा के विषय में सावधान रहिये, शरीर सुख मध्यम रहेगा।

जुलाइ:-यदि आप किसी लडकी या लडके की शादी के प्रयत्नशील हैं तो ऐसे कामों में सफलता अवश्य मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास ठीक नहीं है, विद्या सम्बन्धित कार्यों में असफलता की सम्भावना है परन्तु आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम ही रहेगा।

अगस्त:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार आर्थिक संकट के साथ साथ मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। शत्रु पक्ष के प्रभावी होने की भी सम्भावना है। अगर आप व्यापार करते है तो इस मास किसी भी कार्य में निवेश न करें या कोई भी नया कार्य आरम्भ न करें।

सितम्बर:- इस मास में हर प्रकार से सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आरम्भ किये हुये प्रायः हर काम में सफलता होगी। गृहस्थी होने पर गृहस्थपक्ष से शुभ सन्देश मिलेगा अथवा घर में लडके का जन्म होगा।

अक्टूबर:- यदि आप व्यापार करते हैं और अपने व्यापार को बढाना चाहते हैं तो यह मास आप के लिए लाभदायक रहेगा। विद्यार्थी होने पर इन्टरविव हो या कालेज का प्रवेश आदि हो तो किसी परिणाम की प्रतिक्षा हो, हर क्षेत्र में सफलता होगी।

नवम्बर:- इस मास में मानसिक शान्ति के साथ साथ गृहस्थ में भी सुख और शान्ति का वातावरण बना रहेगा। अगर आप विद्यार्थी वर्ग से सम्बन्धित हैं तो विद्या के क्षेत्र में इस मास में बहुत सी बाधायें आऐंगी अतः कड़े परिश्रम के पश्चात ही सफलता की आशा रखें।

दिसम्बर:- यदि आप ने अपने घर में कोई शुभ काम आरम्भ करना हो तो जहां तक हो सके इस मास में आरम्भ कीजिए चन्द्रमा की अच्छी स्थिति होने से आप को हर काम में सफलता होगी।

जनवरी :- गोचर से लग्न में सूर्य तथा बुध की अच्छी स्थिति में न होने से इस मास में आपका स्वासथ्य कुछ ठीक नहीं रहेगा। आथर्कि दृष्टि से यह मास आप के लिए उत्तम ही है। विद्यार्थियों के लिए भी यह मास कडे संघर्ष का होगा। इस मास में कर्कट राशि वाले जातकों को उपाय के रूप में भौमवार को पीलेचावल (तहर) बना कर पक्षियों को डालना चाहिए।

फरवरी:- यदि आप व्यापार करते हैं तो इस मास में आपके व्यापार में कुछ कठिनाईयों तथा कठोर परिश्रम के पश्चात ही सफलता प्राप्त होगी। कोई वाहन आदि खरीदना चाहते हैं तो इस मास में ऐसे कामों का श्रीगणेश अवश्य शुभ मुहूर्त देखकर करें। इस मास में आप अधिक अतिथि सेवा में लगे रहेंगे। रिश्तेदारों और मित्रों का आना जाना अधिक रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को कडे परिश्रम के पश्चात भी इच्छा अनुसार सफलता मिलेगी।

मार्च:- इस मास में आप शत्रुओं से सावधान ही रहिये। आप के शत्रु आप पर विजय प्राप्त करने की जी तोड़ कोशिशें करेंगे। अगर आप व्यापार करते हैं तो इस मास में किसी भी नये कार्य के लिए निवेश न करें। अगर यात्रा का योग बने तो उस में बहुत कष्ट होगा। बहुत खर्च करने पर ही यात्रा सफल होगी।

धनु राशि का मासिक फल

अप्रेल:- इस मास में आप को आराम कम परन्तु संघर्ष अधिक रहेगा। सहयोगी भाग्य वर्धक साबित होंगे, रिश्तेदारों एवं मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ग को इस मास में मानसिक अशान्ति के वातावरण में ही गुज़ारना होगा।

मई:- इस मास में शरीर स्वस्थ रहेगा। नौकरी पेशा होने पर अफसरों के साथ यह मास शान्त वातावरण में व्यतीत होगा। इस मास में विद्यार्थियों को चाहिए कि वे विद्या प्राप्ति के लिए सोमवार तथा शनिवार के दिन भगवान् शंकर पर दूध सहित जल चढ़ाया करें।

जून:- मास के आरम्भ पर प्रथम भाव में सूर्य व बुध के एक साथ होने से इस मास में आप ग्रहस्थी जीवन सुख व शान्ति से व्यतीत करेंगे। शरीर भी स्वस्थ रहेगा। नौकरी पेशा होने पर अफसरों के साथ यह मास शान्त वातावरण में व्यतीत होगा।

जुलाई:- इस मास में सूर्य, गुरु तथा बुध की अच्छी स्थिति में होना आप की आर्थिक स्थिति मज़बूत होने का सूचक है। परन्तु केतु व भौम का शुभ घर में होना आप के शरीर के लिए ठीक नहीं है। शरीर सम्बन्धित चिन्ता अचानक आ घेरेगी वह परेशानी घर के किसी सदस्य को भी हो सकती हे। इस मास में अचानक धन लाभ से भी इन्कार भी नहीं किया जा सकता।

अगस्त:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार अफसरों तथा प्रतिष्ठित लोगों से मिलने जुलने के अवसर मिलेंगे। घर में मंगल कार्य तथा धार्मिक उत्सव रचाने के प्रोग्राम बनेगें या घर में बच्चें का जन्म होगा, ज़मीन दार होने पर भूमि से लाभ मिलगा।

सितम्बर:- इस मास की ग्रह स्थिति को अध्यन करने से विदित होता है कि यह मास मानसिक अशान्ति तथा परेशानी के वातावरण में ही गुज़रना होगा। इस मास में आपकी आमदनी से अधिक खर्चा होने की सम्भावना हे। शुभ कामों पर धन का आशा से अधिक खर्च, सिनेमा, कल्बों तथा मनोरंजनक स्थलों में भी अधिक धन खर्च होगा।

अक्टूबर :- इस मास में ग्रहों की स्थिति प्रायः हानिकारक है। शरीर सुख मध्यम रहेगा। इस मास में शरीर कष्ट की भी सम्भावना है, यदि आप गृहस्थी है तो स्त्री की परेशानी रहेगी, घरेलू वातावरण अशान्त रहेगा, आमदनी की दृष्टि से यह मास अच्छा रहेगा, खर्च का योग भी बलवान् है। खाने पिलाने और पार्टियों में सम्मिलित होने का व्यर्थ खर्च बरदाश्त करना होगा।

नवम्बर:- गोचर फलित शास्त्रों के अनुसार यह मास धन के लिए हानिकारक है अर्थात् धन प्राप्ति में रुकावट पडने की सम्भावना इस मास में हो सकती है। भौम की स्थिति के कारण शत्रुओं में वृद्धि होगी। गृहस्थी होने पर गृहस्थ में अशान्ति रहती है।

दिसम्बर:- मास के आरम्भ की ग्रहस्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास धनु राशि वाले जातकों के लिए शुभ फल का सूचक है। शरीर सुख उत्तम रहेगा। यदि ग्रहस्थी है तो गृहस्थ पक्ष से

मानसिक शान्ति रहेगी।

जनवरी:- इस मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति को दृष्टि को ध्यान में रखते हुये ज्योतिष गोचर में यहीं मालूम होता है कि यह मास भी आपका शान्त वातावरण में ही गुज़रेगा, शरीर सुख उत्तम रहेगा। यदि गृहस्थी है तो गृहस्थ पक्ष से शान्ति का योग है और सन्तान पक्ष से भी मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

फरवरी:- इस मास में श्रेष्ठ पुरुषों से मेलमिलाप होगा, यदि आप कोई तामीरी काम करना चाहते है या कोई ज़मीन जाएदाद खरीदना चाहते है तो यह मास एसे कामों के लिए उत्तम है।। नौकरी पेशा होने पर लाभ अथवा तरक्की की आशा सुदृढ़ होगी। व्यापारी होने पर व्यापार से भी अक्समात् लाभ रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को इस मास में विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता अवश्य मिलेगी।

मार्च:- यह मास संघर्ष तथा दौडधूप में ही व्यतीत होगा। गृहस्थी होने पर गृहस्थपक्ष से मानसिक अशान्ति भी बनी रहेगी। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी यदि इस मास में विद्या सम्बन्धित कोई भी यात्रा बने वह यात्रा भी आप के लिए लाभदायक रहेगी।

मकर राशि का मासिक फल

अप्रेल:- इस मास धन की परेशानी आप को घेरे रखेगी, शरीर के बारे में सावधान रहिए, गृहस्थी होने पर स्त्री के शरीर का विशेष ध्यान रखिये। नौकरी पेशा होने पर लाभ की अथवा तरक्की की आशा न रखें बल्कि यह मास भी दौडधूप में ही गुज़रेगा।

मई:- ग्रहों की स्थिति को ध्यान में रखकर यह मालूम होता है कि यह मास हर प्रकार से शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा। प्रायः हर काम में सफलता होगी। यदि इस मास में यात्रा का योग बने तो आप अवश्य यात्रा पर जायें।

जून:- ग्रह चाल के अनुसार इस मास में अचानक लाभ मिलेगा। व्यापारी होने पर इस मास में खरीद आधिक करें, वह खरीद आगे आने वाले मासों में लाभदायक रहेगी। व्यापारी, नौकरी पेशा वर्ग तथा विद्यार्थी वर्ग को इस मास वैष्णव रहना चाहिए।

जुलाई:- यह मास संघर्ष तथा अशान्ति के वातावरण में ही आप को गुज़ारना पडेगा। आपका शरीर भी प्रायः अस्वस्थ रहेगा। भौम तथा बृहस्पति की अच्छी स्थिति न होने की वजह से जाइदाद सम्बान्धित परेशानी की भी सम्भावना है।

अगस्त:- इस मास के आरम्भ पर सुख और आनन्द की प्राप्त होगी। शरीर भी स्वस्थ रहेगा। आरम्भ किये हुए हर काम में सफलता

होने का योग भी प्रबल है। मास के अन्तिम दो सप्ताहों में अत्याधिक खर्च होने की संभावना है।

सितम्बर:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार यह मास सामूहिक रूप से दौडधूप के वातावरण में ही गुज़ारना होगा। आपका शरीर प्रायः अस्वस्थ रहेगा। शनि की अच्छी स्थिति में न होने की वजह से जाईदाद सम्बन्धित परेशानी की भी सम्भावना है।

अक्टूबर:- इस मास में यदि आप कोई तामीरी काम आरम्भ करना चाहते हो तो अवश्य किसी शुभ मुहूर्त को देख कर करें। विद्यार्थी वर्ग को इस मास में पढाई सम्बन्धित हर काम में उलझने तथा रुकावटों के कारण मानसिक अशान्ति बनी रहेगी।

नवम्बर:- फलित शास्त्रों के अनुसार बृहस्पति की अच्छी स्थिति से इस मास में हर आरम्भ किये हुए काम में सफलता मिलेगी। यदि आप विद्यार्थी वर्ग से है तो यह मास आपके लिए वर्ष का सर्वोत्तम मास है।

दिसम्बर:- आमदनी की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा। जिस काम को आप हाथ में लेंगे चाहे वह कितना भी कठिन हो सफलता अवश्य होगी। शरीर सुख उत्तम रहेगा।। घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा अथवा किसी घनिष्ठ सम्बन्धी के शुभ उत्सव में सम्मिलत होने का अवसर मिलेगा।

जनवरी:- यदि आप कोई तामीरी काम करना चाहते हैं तो इस मास में उस तामीर सम्बन्धित कुछ सामान खरीदकर रखें वह आपके लिए शुभ रहेगा। आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा। धार्मिक अथवा सामाजिक कामों मे भी आपकी दिलचस्पी बनी रहेगी। विद्यार्थियों के लिए यह मास विशेष सफलता का नहीं है।

फरवरी:- आमदनी की दृष्टि से यह मास भी उत्तम रहेगा। यदि आप कोई वाहन आदि खरीदना चाहते हैं तो यह मास आपके लिए शुभ रहेगा।

मार्च:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार अफसरों तथा प्रतिष्ठित लोगों से मिलने जुलने के अवसर मिलेंगे। घर में मंगल कार्य तथा धार्मिक उत्सव रचाने के प्रोग्राम बनेगें।

कुम्भ राशि का मासिक फल

अप्रेल:- इस मास की ग्रहों की स्थिति आप के आर्थिक संकट को दूर करने में सहायक सिद्ध हो सकती है। कुछ शुभ और अशुभ योगों से इस मास में अकस्मात् लाभ, मानसिक शान्ति, प्रत्येक आरम्भ किये कार्य में सफलता, मित्रों तथा रिशतेदारों से मेल मिलाप की सम्भावना है।

मई:- हर आरम्भ किये कार्य में सफलता होने का योग है। इस मास में यात्रा भी होगी जो आप के लिए लाभ दायक रहेगी। आमदनी भी इच्छा अनुसार ही बनी रहेगी।

जून:- इस मास में शत्रुओं से आप को सावधान ही रहना चाहिए। यदि आप विद्यार्थी वर्ग से है तो आपको एक एक क्षण का लाभ उठाना चाहिए।

जुलाई:- यह मास कुम्भ राशि वाले जातकों के लिए अशुभ फलदायक ही सिद्ध होगा। मानसिक अशान्ति के साथ साथ आर्थिक संकट तथा धनहानि होन की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता।

अगस्त:- इस मास में आप का शरीर स्वास्थ रहेगा। गृहस्थी होने पर घरेलू वातावरण भी शान्त रहेगा। यदि आप को मातृपक्ष से कोई परेशानी है तो उपाय के रूप में इस मास हर भौमवार को तहर बनाकर पक्षियों को डाललें परन्तु उस तहर (पीले चावल) में नमक के बदले गुढ या चीनी डालें।

सितम्बर:- सामूहिक रूप से अगर देखा जाये तो आप के लिए यह मास शुभ फलदायक ही रहेगा, अगर माता पिता या स्त्री आदि की शीर सम्बन्धित कोई परेशानी है तो ग्रहों के प्रभाव से एसी समस्याओं का स्वयं समाधान होगा।

अक्टूबर:-यदि इस मास में आप कोई तामीरी काम या वाहन, भूमि आदि खरीदनने का प्रोग्राम है तो ऐसे मास में ऐसे कार्यों को स्थगित करके नवम्बर मास में कार्य सम्पन्न कर सकते है।

नवम्बर:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार आप का मन हर समय अशान्त बना रहेगा। यदि इस मास कोई यात्रा का योग व्यापार, विद्या या नौकरी सम्बन्धित बने तो उस यात्रा पर अवश्य जाएें। जाते समय भगवान् शंकर का ध्यान अवश्य करें।

दिसम्बर:- दिसम्बर का यह मास यद्यपि संर्घष तथा दौडधूप में ही गुज़रेगा परन्तु मान प्रतिष्ठा की रक्षा में बृहस्पति रक्षक रहेगा। यदि आप नौकरी करते हैं तो बुध के प्रभाव से नौकरी में अकस्मात् तर्की का योग बनेगा।

जनवरी :- गोचर फल से विदित होता है कि यह मास सुख शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा। आय की दृष्टि से यदि इस वर्ष कोई काम नये सिरे से आरम्भ करना हो अथवा कारोबार का बढावा देने का विचार हो तो इस मास को ऐसे कार्य के लिए आप अवश्य चुने।

फरवरी:-इस मास के ग्रह अच्छी स्थिति में नहीं हैं परन्तु आय की दृष्टि से इस वर्ष का यह मास एक समरणीय मास होगा। आप काम में जुट जाये, हर काम में आप को सफलता मिलेगी, विशेषतया यदि आप खाद्य पदार्थो दवाई इत्यादि का व्यापार करते है तो आप शान व मान से सफल होंगे।

मार्च:- इस मास के अन्त तक आर्थिक संकट बना रहेगा। अगर आप को जाईदाद सम्बन्धित अथवा माता की ओर से कोई चिन्ता है तो यह चिन्ता मिट जायेगी। यदि आप किसी झगडे में उलझे हैं

तो उस का समाधान इस मास में होगा। धार्मिक कामों की और अधिक प्रवृति बनी रहेगी। शुभ कामों पर भी धन खर्च होता रेगा।

मीन राशि का मासिक फल

अप्रेल:- यद्यपि इस मास की ग्रहचाल गोचर फलित के आधार से अनुकूल है परन्तु शरीर की दृष्टि से यह मास शान्तिप्रद नहीं होगा। यदि दैव योग से आप शरीर की परेशानी से बचे रहेंगे तो भी घर के किसी सदस्य के शरीर की चिन्ता आपको अवश्य घेरे रखेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए इस मास के ग्रह अनुकूल हैं। यदि आपने कोई परीक्षा देनी हो अथवा इन्टरविव आदि में सम्मिलित होना हो तो ऐसे कामों के लिए यह मास सफलता का है।

मई:- इस मास की ग्रह स्थिति भी आप के लिए ठीक नहीं है। शरीर सुख आप का मध्यम रहेगा, इस लिए शरीर के विषय में आप को सावधान ही रहना चाहिए। अचानक चोट लगने की भी सम्भावना है।

जून:- इस मास में आपके आर्थिक संकट के साथ साथ घरेलू समस्याए दूर होने का उत्तम योग है। यह मास प्रायः शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा। इस मास में अच्छे पुरूषों से मेल मिलाप होगा। धर्मिक कामों में भी दिलचस्पी बनी रहेगी।

जुलाई:- शरीर सुख मध्यम रहेग, यदि आप गृहस्थी है तो शरीर कष्ट अथवा स्त्री की ओर किसी प्रकार की मानसिक अशान्ति रहेगी, शरीर के विषय में अगर आप उपाय करना चाहें तो तहर पक्षियों कों अवश्य शनिवार को डाला करें।

अगस्त:- यह मास यद्यपि संघर्ष तथा दौड़धूप में ही व्यतीत होगा फिर भी यह मास हर काम में सफलता देने वाला होगा। गृहस्थी होने पर गृहस्थपक्ष से मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। यदि आप नौकरी पेशा हैं तो यह मास शान्त वातावरण में ही व्यतीत होगा।

सितम्बर:- इस मास में शरीर के विषय में सावधान रहिये, यदि आप विवाहित हैं तो कोई न कोई घरेलू परेशानी घेरे रखेगी। इस मास में धार्मिक कामों में दिलचस्पी बनी रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए विद्या सम्बन्धित हर एक काम के लिए लाभदायक रहेगा।

अक्टूबर:- इस मास में भी आप की ग्रहचाल में कोई सुधार नही हुआ है। धन की परेशानी आप को घेरे रखेगी, शरीर के बारे में सावधान रहिये, गृहस्थी होने पर स्त्री, बच्चों के शरीर का विशेष ध्यान रखिये।

नवम्बर:- यह मास भी सामूहिक रूप से आप के लिए लाभदायक रहेगा। यदि आप किसी परेशानी या मुक्दमे आदि में फंसे हैं तो ऐसी समस्याओं का हल स्वयं निकल आयेगा, लाभ की

दृष्टि से यह मास बहुत ही उत्तम है।

दिसम्बर:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार अचानक आर्थिक संकट की संभावना हो सकती है। इस मास आप अपनी पूंजी की रक्षा के विषय में सावधान रहिये, शरीर सुख मध्यम रहेगा।

जनवरी:- गोचर चक्र के अनुसार सूर्य तथा बुध की अच्छी स्थिति में न होने से इस मास में आपका स्वास्थ कुछ ठीक नहीं रहेगा। गृहस्थ पक्ष से मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। आर्थकि दृष्टि से यह मास आप के लिए उत्तम ही है। यदि आप व्यापार करते हैं तो आपके व्यापार में कुछ कठिनाईयों तथा कठोर परिश्रम के पश्चात ही सफलता प्राप्त होगी।

फरवरी:- यदि आप सीमेन्ट अथवा किसी मिशीनरी से सम्बन्धित व्यापार करते हैं तो इस मास से आप के कारोबार का सुनहरी समय आरम्भ होगा और आप का शरीर स्वस्थ तथा मानसिक शान्ति बनी रहेगी। इस मास में आप शत्रुओं से सावधान ही रहिये। आप के शत्रु आप पर विजय प्राप्त करने की जी तोड़ कोशिशें करेंगे। विद्यार्थी वर्ग के लिये यह मास कुछ डावाँडोल ही रहेगा। कडे परिश्रम के पश्चात भी सफलता नहीं मिलेगी।

मार्च:- फलित शास्त्रों के अनुसार इस मास में शरीर अस्वस्थ, मानसिक अशान्ति, भाई बन्धुओं से अनबन, घरेलू अशान्ति, स्त्री की और से परेशानी व्यापार में हानि आदि का सूचक है। यह मास वश्चिक राशि वाले जातकों के लिए इस साल का सब से मनहूस महीना मानना चाहिए।

In the **Ramcharitmanas** Sant Tulsidas has said that a devotee wins over the confidence of God through devotional songs & hymns. In response, God ensures success and happiness for His devotees also.

In the **Padampuran,** Uttarakhand, 14/23, it is said:

नाहं वसामि वैकुंठेयोगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ।।

O Narad! I reside nither in Vaikunth, nor in the hearts of devotees. I reside where my devotees form a loving companionship to sing devotional songs and hymns. I reside within their ultimate motive.

In the religious texts it is also said:

मुक्तिः ददति कश्चित् न भक्तियोगम् ।

God makes salvation easily accessible to those who sing devotional songs and hymns. However, He does not give devotion to everyone.

In the **Bhagavad Gita,** 9/30, it is said

अपि चेत्सुदूराचारो भजते मामनन्यभाक् ।
साधुरेव स मन्तात्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ।।

Even if a wicked sinner worships Me with pure devotion, he should be considered a saint because he has correctly resolved that there is nothing better than devoted worship of God.

नवग्रहों के लगु मंत्र

'सूर्य' ओ३म् रं रवये नमः।

'चन्द्र' ओ३म् सौं सोमाय नमः।

'भौम' ओ३म् भौं भौमाय नमः।

'बुध' ओ३म् बं बुधाय नमः।

'गुरु: ओ३म् गुं गुरवे नमः।

'शुक्र' ओ३म् शुं शुक्राय नमः।

'शनि' ओ३म् शं शनैश्चराय नमः।

'राहु' ओ३म् राम् राहवे नमः।

'कुतु' ओ३म् कैं केतवे नमः।

बारह राशियों के मंत्र

मेष: ओ३म् ह्रीं श्रीं श्रीलक्ष्मीनारायाणाय नमः।

वृष: ओ३म् गोपालाय उत्तरध्वजाय नमः।

मिथुन: ओ३म् क्लीं कृष्णाय नमः।

कर्क: ओ३म् ह्रीं हिरण्यगर्भाय अव्यक्तरूपिणे नमः।

सिहं: ओ३म् क्लीं ब्रह्मणे जगदाधाराय नमः।

कन्या: ओ३म् पीं पीताम्बराय नमः।

तुला: ओ३म् तत्त्वनिरंजनाय तारक रामाय नमः।

वृश्चिक: ओ३म् नारायणाय सूरसिंहाय नमः।

धनु: ओ३म् श्रीं देवकृष्णाय ऊर्ध्वजाय नमः।

मकर: ओ३म् श्रीं वत्सलाय नमः।

कुम्भ: ओ३म् श्रीं उपेन्द्राय अच्युताय नमः।

मीन: ओ३म् क्लीं उद्धताय उद्धारिणे नमः।



साढ़सती

✓ ✓ ✓

तुला वृश्चिक धनु

तुला राशि तुला राशि की साढ़सती नवम्बर 2017 को समाप्त होगी जिसके फलस्वरूप घरेलू समस्यायें व उलझनें,. आथिक संकट व्यापार में उत्तार चढ़ाव, शरीरिक कष्ट आपकी अशान्ति का कारण बन सकता है। वाहन व सुखसाधनों पर धन खर्च होगा। वर्ष के उत्तरार्ध में आर्थिक स्थिति में सुधार होने के संकेत हैं किन्तु लेनदेन के मामले में सावधानी बरतें।

वृश्चिक राशि वृश्चिक राशि वालों की साढ़सती 24 जनवरी 2020 को समाप्त होगी। मानसिक तनाव, क्रोध अधिक रहेगा। काफी दौडधूप के पश्चात आय के स्रोत खुलेंगे किन्तु आय की अपेक्षा व्यय अधिक रहेगा। शारीरिक कष्ट व चोट आदि का भय रहेगा। प्रापर्टी सम्बन्धित कार्यो संघर्ष या थकावट, बनते कार्यों में रूकावटों के पश्चात ही सफलता प्राप्त होगी।

धनु राशि धनु राशि वाले जातकों की साढ़सती 02 नवम्बर 2014 से शरू हुई है अतः यह आपकी आर्थिक स्थिति को प्रभावित करेगा, संघर्ष के पचात् ही धन लाभ की सम्भावना, पारिवारिक चिन्ता के कारण मानसिक तनाव, फज़ूल की दौडधूप आय की अपेक्षा व्यय अधिक, घरेलू उलझनें बढेगी। 14 जुलाई 2015 के बाद ग्रहों में थोडा फेर बदल होने के कारण धार्मिककार्यों की ओर रूचि बढेगी।

ढैय्या मेष ✓ सिंह ✓

मेष मेष राशि वालों की ढैय्या 02 नवम्बर 2014 को शुरू हुई है जिसके फलस्वरूप राजदरबार से परेशानी, घरेलू उलझनें, व्यावसायिक स्थिति ढावांडोल, पढ़ाई की ओर कम रूचि या थकावट, शरीर कष्ट, रोग, मानसिक तनाव, आय की अपेक्षा व्यय अधिक, घरवालों या रिश्तेदारों के साथ वाद विवाद।

सिंह सिंह राशि वाले जातकों की ढैय्या 02-11-2014 से प्रारम्भ हुई है। दूसरे स्थान में राहु का संचार होने से आर्थिक परेशानियों का सामना करना पडेगा, बनते कार्यों में अडचनें किन्तु 14 जुलाई 2015 के बाद गुरू का संचार होने से घर में कोई मंगल कार्य सम्पन्न होगा, निर्वाह योग्य आमदनी के साधन बनते रहेंगे। इस राशि को शनि का पाया ताम्र होने से शुभ फल प्राप्त होगा। उच्च विद्याप्राप्ति का योगा, धन का लाभ, विवाह सन्तान सुख, नौकरी में तरक्की, स्वास्थ्य सुख व धन लाभ प्राप्ति का योग है।

नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में बाएं हाथ में धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए। पेंडन्ट धारण करें तो भी शरीर को स्पर्श करे।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें।

بھَوُ رؤپ گربھ

नम: स्वच्छन्दभैरवाय

اوم نماہ، سوچھَند بھیراوئے

ब्रह्मादिकारणातीत स्वशक्त्यानन्दनिभरम्।
नमामि परमेशानं स्वच्छन्दं वीरनायकम।।१।।

(۱) برہمادِ، کارنا، تی تم، سوشکھتیا، ننَد، نِربھرم
نمامی، پرمے شانم، سوچھندم، دِیر، نائکیم

कैलासशिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुम्।
पप्रच्छ प्रणता देवी भैरवं विगतामयम्।।

(۲) کیلاس، شکھرا، سی نم، دیو، دیے دم، جگت، گوروم
پہ پرچھ، پرنتا، دیوی، بھیروم، وِگتامہ یم

श्रीदेव्युवाच

شِری دیوی اُوواچہ

प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु समयोल्लङ्घनेषु च।
महाभयेषु घोरेषु तीव्रोपद्रवभूमिषु।।३।।

(۳) پرایش، چہ تے شُو، سرویے شُو، سم یو لنگھنے شُو، چہ
مہا بھیئے شُو، گھوریے شُو، تبھر وپہ، دَرو، بھُومی شُو

छिद्रस्थानेषु सर्वेषु सदुपायं वद प्रभो।
येनायासेन रहितो निर्दोषश्च भवेन्नर:।।४।।

(۴) چھدر ستھانے شُو، سرویے شُو، ست اُوَپایم، ود پربھو
یے نا، یاسیے نہ، رہتو، نِردوشچہ، بھوِت، نِراہ

श्रीभैरव उवाच

شری بھیرو اُو واچہ

श्रृणु देवि परं गुह्यं रहस्यं परमाद्भुतम्।
सर्वपापप्रशमनं सर्वदुखनिवारणम्॥

(۵) شرنُو، دیوی، پرم، گوہیم، رہیم، پرمات بھُوتم
سرو، پاپہ، پرشمہ نم، سرو، دُوکھ، نورانم

प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु तीव्रेष्वपि विमोचनम्।
सर्वछिद्रापहरणं सर्वार्तिविनिवारकम्॥६॥

(۶) پرائشچِہ تیے شُو، سرویے شُو، تہ بریشوپی، وِموچنم
سرو، چھدراپہ ہرنم، سروارتی، وِنی وارکم

समयोल्लङ्घने घोरे जपादेव विमोचनम्।
भोगमोक्षप्रदं देवि सर्वसिद्धिफलप्रदम्॥७॥

(۷) سم یو لنگنے، گھورے، جپات یے و، وِموچہ نم
بھوگہ، موکھ پردم، دیے وی، سروسدھی پھلہ پردم

शतजाप्येन शुद्धयन्ति महापातकिनोऽपि ये।
तदर्थं पातकं हन्ति तत्पादेनोपपातकम्॥८॥

(۸) شتہ جاپے یہ نہ، شُودھیہ نتی، مہاپاتہ کہ نوپی یے
تت اردھم، پاتہ کم، ہن تی، تت پادے، نوپہ پاتہ کم

कायिकं वाचकं चैव मानसं स्पर्शदोषजम्।
प्रमादादिच्छया वापि सकृज्जाप्येन शुद्धयति॥९॥

(۹) کا یکم، واچہ کم، چَیو، مانہ سم، سپرش، ووشجم
پرماوات، یچھ یا، واپی، سہ کرت، جاپے نہ، شُو دھیتی

यागारम्भे च यागान्ते पठितव्यं प्रयत्नत:।
नित्ये नैमित्तिके काम्ये परस्याप्यात्मनोऽपि वा॥१०॥

(۱۰) یاگا ربھے، چہ، یاگانتے، پٹھِ تویم، پرتینہ تاہ
نتے، نیمتکے، کامیے، پرسیا، پیا تمنوپی، واہ

निश्छिद्रकरणं प्रोक्तं स्वभावपरिपूरणम्।
द्रव्यहीने मन्त्रहीने यज्ञयोगविवर्जिते॥११॥

(۱۱) نشچھدر، گرنم، پروکتم، سوبھاؤ، پر پُورنم
درویہ، ہی نے، منتر، ہی نے، یگیہ یوگ، ووِرجتے

भक्तिश्रद्धाविरहिते शुद्धिशून्ये विशेषत:।
मनोविक्षेपदोषे च चिलोपे पशुवी-क्षते।।१२।।

(۱۲) بھکتی، شردھا، ورہتے، شُودھی، شُونیے، وشے شہ تاہ
منو دِکھیہ پہ، دوشیے چہ، دلو پے، پشُو، وکھیہ تی

विधिहीने प्रमादे च जप्तव्यं सर्वकर्मसु।
नात: परतरो मन्त्रो नात: परतरा स्तुति:।।१३।।

(۱۳) وِدھی، ہی نے، پرماوے چہ، جپ تہ ویم، سرو، کرمسُو
ناتاہ، پرترو، منترو، ناتاہ، پرترا، سُتوتی

नात: परतरा काचित्सम्यक्प्रत्यङ्गिरा प्रिये।
इयं समयविद्यानां राजराजेश्वरीश्वरि।।१४।।

(۱۴) ناتاہ، پرترا، کاچت، سمیک، پرتنگرا، پریے
یی یم، سمیہ، وِدیانام، راجہ، راجیشوری، شوری

परमाप्यायनं देवि भैरवस्य प्रकीर्तितम्।
प्रीणनं सर्वदेवानां सर्वसौभाग्यवर्धनम्।।१५।।

(۱۵) پرما، پیایہ نم، دیوی، بھیروسے، پرکِرتہِ تم
پری نہ نم، سرو، دیوا نام، سرو، سوبھاگیہ، وررِدھنم

स्तवराजमिमं पुण्यं शृणष्वावहिता प्रिये।।१६।।

(۱۶) ستہ وراجیم، یہ مم، پُونیم، شرنوشا، وہی تا، پرِیے

अस्य श्रीबहुरूप भट्टारकस्तोत्रस्य, वार्म देव ऋषि: अनुष्टुप्छन्द:
श्रीबहुरूपभट्टारको देवता, आत्मनो वाङ्मन:
कायोपार्जितपापनिवारणार्थ चतुर्वर्गसिद्धयर्थे पाठे विनियोग:।

اِسے شری، بہُو، رُوپہ، بٹارکہ، سُتوترسے، شری وامہ
دیو رشی، انُوشٹُوپ چھندہ، شری بہُو روپ، بٹارکو، دیوتا
آتمنو، وانگھ مناہ، کایو پارجِتہ، پاپہ، نِوارنارتھم، چُوتر،
ورگہ، سِدھرتھے پاٹھے، وِنیہ یوگاہ

अघोरमन्त्रण न्यासं कृत्वा प्राणायाम:।

اکھور منتر ینہ نیاسم کرتہِ دا، پرانا یامم

अथ ध्यानम् اَتھ دھَیانم

ओम् अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यश्च

सर्वत: शर्व सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्य:।।१०८।।

"اوم، اگھوریے بھیو، اتھ، گھوریے بھیو، گھور گھور ترے بھیشچہ

سروتاہ، شرد، سرویے بھیو، نمس تے، رُودر، روپی بھیاہ"

ओं नम: परमाकाशशायिने परमात्मने।

शिवाय परसंशान्तनिरानन्दपदाय ते।।१।।

(۱) اوم، نماہ، پرماکاشہ، شایِہ نے، پرماتمنے

شِوائے، پرسم شانتہ، نرانند، پدائے، تے

अवाच्यायाप्रमेयाय प्रमात्रे विश्वहेतवे।

महासामान्यरूपाय सत्तामत्रैकरूपिणे।।२।।

(۲) اواچایا، پرمے یائے، پرماترے، وِشوہیے تہ وے

مہا، سامانیہ، رُوپائے، ستا، ماتریکہ، رُوپی نے

वामे खेटकपाशशाङ्र्गं विलस द्दण्डं च वीणाण्टिके।

बिभ्राणं ध्वजमुद्‌गरौ स्वनिभदे व्यङ्कं कुठारं करे।।१।।

दक्षेस्यङ्कुशकन्दलेषुडमरू न्वज्रत्रिशूलाभयान्।

रुद्रस्थं शरवक्त्रमिन्दुधवलं स्वछन्दनाथं स्तुम:।।२।।

وامے، کھٹیہ مِکہ، پاشہ، شارنگہ، وِلست ونڈم، چہ، دینا ٹکے

بِھر انم، دوجہ، مُد گرو، سونہِ بھدے ویَنکم، کُوٹھارم، کرے

دکھیے، سینکُوشہ، کندلے شُو، ڈمہ رُون وجر، ترشولا بھیان

رُودر ستھم، شر، وکترم، یندو، دھَولم سوچھند، ناتھم، ستُو ماہ

ॐ बहुरूपाय विद्‌महे कोटराक्षाय धीमहि तन्नोऽघोर: प्रचोदयात्।।३।।

تین بار پڑھیے: "اوم بہُو روپائی، دِومہیے، کوٹرا کھیایہ، دھی مہی،

تنو، اگھوراہ، پرچودِیات۔"

घोषादिदशधाशब्दबीजभूताय शम्भवे।
नमः शान्तोग्रघोरादिमन्त्रसन्दर्भगर्भिणे॥३॥

(۳) گھوشادِ، دَشہ دا، شبد، بیج، بھُوتایہ، شمبھووے
نماہ، شانتوگر، گھورادِ، منتر، سندربھہ، گربھِینی

रेवतीसङ्गविस्रम्भसमाश्लेषविलासिने।
नमः समरसास्वादपरानन्दोपभोगिने॥४॥

(۴) ریے دتی، سنگہ، وِسرٗمبھ، سماشیلشہ، ولاسی نے
نماہ سمہ، رسا سِواد، پرانندوپہ، بھوگہِ نے

भौगपाणे नमस्तुभ्यं योगीशैः पूजितात्मने।
द्वयनिर्दलनोद्योगसमुल्लासितमूर्तये॥५॥

(۵) بھوگہ پانے، نمنس تو بھیم، یوگی شیۓ، پُوجتاتمنے
دویہ، نرٕدلنو، ویوگ، سمُولا ستہ، مُورتہ یۓ

थरत्प्रसरविक्षोभविसृष्टाखिलजन्तवे।
नमो मायास्वरूपाय स्थाणवे परमेष्ठिने॥६॥

(۶) تھرت، پرسر، وکھیوبھ، وِسرشٹا، کھَلہِ، جن تہ ویے
نمو، مایا، سُورُوپاۓ، ستھا نہ ویے، پرمیشٹھنے

घोरसंसारसंभोगदायिने स्थितिकारिणे।
कलादिक्षितिपर्यन्तपालिने विभवे नमः॥७॥

(۷) گھور، سنسار، سمبھوگ داینے، ستھتہ کارِ نے
کلا، وِ، کھیتی، پرنیتہ پالِنے، وِبھ وے، نماہ

रेहणाय महामोहध्वान्तविध्वंसहैतवे।
हृदयाम्भोजसंकोचभेदिने शिवभानवे॥८॥

(۸) رہہ نائے، مہا موہہ، دھوانتہ، وِدھونسہ، ہیے تہ وے
ہردیا مبھوجہ، سنکوچہ، بھیدنی، شِو بھانہ وے

भोगमोक्षफलप्राप्तिहेतुयोगविधायिने।
नमः परमनिर्वाणदायिने चन्द्रमौलये॥९॥

(۹) بھوگ، موکھ، پھلہ، پراپتی، ہیے تُو، یوگ، وِدھایہِ نے
نماہ، پرمہ، نرٕوانہ، داینے، چندر، مولہ لۓ

घोषाय सर्वमन्त्रणां सर्ववाङ्मयमूर्तये।
नमः सर्वाय शर्वाय सर्वपाशापहारिणे॥१०॥

(۱۰) گھوشائے، سرومنترانام، سرو، وانگھیئے، مُورتیے
نماہ، سروائے، شروائے، سروپاشایہ، ہارِنے

रवणाय रवान्ताय नमस्ते रावराविणे।
नित्याय सुप्रवुद्धाय सर्वान्तरतमाय ते॥११॥

(۱۱) رَونائے، روانتائے، نمستے، راو، راوِنے
نِتیائے، سُو پربُودھائے، سروانتر تمائے، تے

घोषाय परमान्दान्तश्चराय खचराय ते।
नमो वाक्पतये तुभ्यं भवाय भवभेदिने॥१२॥

(۱۲) گھوشائے، پرناندانتہ، چرائے، کھرائے، تے
نمو، واک پتیے، تُوبھیم، بھوائے، بھَو، بھیئے دِنے

रमणाय रतीशाङ्गदाहिने चित्रकर्मणे।
नमः शैलसुताभर्त्रे विश्वकर्त्रे महात्मने॥१३॥

(۱۳) رمہ نائے، رتی شانگہ، واہنے، چترا، کرمہ نے
نماہ، شیلہ، سُوتا، بھرترے، وِشوکرترنے، مہاتمنے

नमः पारप्रतिष्ठाय सर्वान्तपदगाय ते।
नमः समस्ततत्त्वाध्वव्यापिने चित्स्वरूपिणे॥१४॥

(۱۴) نماہ، پار، پرتشٹھایہ، سَروانتہ، پدگایہ، تے
نماہ، سمتہ، تتوادھو، ویاپنے، چِت، سورُو، پنے

रेवद्वराय रूद्राय नमस्ते रूपरूपिणे।
परापरपरिस्पन्दमन्दिराय नमो नमः॥१५॥

(۱۵) ریے وت، ورائے، رُدرائے، نمستے، رُوپہ، رُوپنے
پراپر، پرسپند، مندرائے، نمو نماہ

भरिताखिलविश्वाय योगिगम्याय योगिने।
नमः सर्वेश्वरेशाय महाहंसाय शम्भवे॥१६॥

(۱۶) بھرتا، کھِلہ، وِشوائے، یوگہ، گمیائے، یوگنے
نماہ، سرویشوریے شائے، مہاہنسائے، شمبھویے

चर्च्याय चर्चनीयाय चर्चकाय चरायते।
रवीन्दुसन्धिसंस्थाय महाचक्रेश ते नमः॥१७॥

(۱۷) چرچائے، چرچہ نی یائے، چرچکائے، چرائے تے
روِندُو، سندھی، سنستھائے، مہاچکرشیہ، تے، نماہ

सर्वानुस्यूतरूपाय सर्वाच्छादकशक्तये।
सर्वभक्षाय शर्वाय नमस्ते सर्ववेदिने॥१८॥

(۱۸) سَروانُو، سیُوتہ، رُوپائے، سرواچھادکہ، شکھتیئے
سَروبکھشایہ، شروائے، نمستے، سرووِیے دِنے

रम्याय बल्लभाकान्तदेहार्धाय वियोगिने।
नमः प्रयत्नदुष्प्रापसौभाग्यफलदायिने॥१९॥

(۱۹) رمیائے، وِلبھا، کرانتہ، دیے ہار، دھائے، وِیوگِنے
نماہ، پرَیتنہ، دُوشپرایہ، سَوبھاگیہ، پھلہ دائینے

तन्महेशाय तत्त्वार्थवेदिने भवभेदिने।
महाभैरवनाथाय भक्तिगम्याय ते नमः॥२०॥

(۲۰) تن، مہیئے شائے، تتوارتھ، دیے دِنے، بھو، بھید نے
مہابھیرو، ناتھائے، بھگتی، گمیائے، تے، نماہ

शक्तिगर्भप्रबोधाय शरण्यायाशरीरिणे।
शान्तिपुष्ट्यादिसाध्यार्थसाधकाय नमोऽस्तु ते॥२१॥

(۲۱) شکھتی، گربھ، پربودھائے، شرنیایا، شری رِنے
شانتی، پوشٹیادِ، سادھیارتھ، سادھکائے، نموستُو تے

रवत्कुण्डलिनीगर्भप्रबोधप्राप्तशक्तये।
उत्स्फोटनापटुप्रौढपरमाक्षरमूर्तये॥२२॥

(۲۲) روت، کنڈل نی، گربھ، پربودھ، پراپت، شکھتیئے
اُدت، سفوٹنا، پٹُو، پَروڈھ، پرماکھیر، مُورتیئے

समस्तव्यस्तसंग्रस्तरश्मिजालोदरात्मने।
नमस्तुभ्यं महामीनरूपिणे विश्वगर्भिणे॥२३॥

(۲۳) سمست، ویست، سم گرستہ، رشمی جالو، دَراتمنے
نمس، تو بھیم، مہامینہ، رُوپی نے، وِشو گربھنے

रेवारणिसुमुद्भूतवह्निज्वालावभासिने।
घनीभूतविकल्पात्मविश्वबन्धविलापिने॥२४॥

(۲۴) ریے دا، رنی، سمُوت بھُوت، وٙنی، جوالاوِ بھاسنی
گھنی، بھُوت، وِکلپاتمہ، وِشو، بندھ، وِلاپنی

भोगिनीस्यन्दनारूढिप्रौढिमालब्धगर्विणे।
नमस्ते सर्वभक्ष्याय परमामृतलाभिने॥२५॥

(۲۵) بھوگی نی، سیَندنا، رُوڈِھ، پرَوڈِھ، مالبدھ، گروِنے
نمستے، سروبکھشیائے، پرمامرتہ، لابھنے

नफकोटिसमावेशभरिता खिलसृष्टये।
नमः शक्तिशरीराय कोटिद्वितयसङ्गिने॥२६॥

(۲٦) نفہ، کوٹی، سماویے شہ، بھرتا کھِلہ، سرشٹیئے
نماہ، شکھتی، شری رائے، کوٹی، دُویتیَ، سنگھنی

महामोहमलाकान्तजीववर्गावबोधिने।
महेश्वराय जगतां नमः कारणबन्धवे॥२७॥

(۲۷) مہا، موہہ، ملاکرانتہ، جیو، ورگاوَ، بودھی نے
مہیشَ، شورائے، جگہ تام، نماہ، کارن بندھ دے

स्तेनोन्मूलनदक्षैकस्मृतये विश्वमूर्तये।
नमस्तेऽस्तु महादेवनाम्ने परस्वधात्मने॥२८॥

(۲۸) سیتے نون، مُولنہ، دکھیۓ کہ، سمرتہ ئے، وِشو مُورتیۓ
نمس تے ستُو، مہادیونا میۓ، پربوداھا تمنے

रुग्द्राविणे महावीर्यरुरुवंशविनाशिने।
रुद्राय द्रविताशेषबन्धनाय नमोऽस्तुते॥२९॥

(۲۹) روگ، دراوِنے، مہاویریہ، رورُو، وںش، وِناشِہ نے
رُودرائے، دراوِتا، شے شہ، بندھنائے، نموستو تے

द्रवत्पररसास्वादचर्वणोद्युक्तशक्तये।
नमस्त्रिदशपूज्याय सर्वकारणहेतवे॥३०॥

(۳۰) دروت، پر، رسا، سواد، چروَنو، دیُوتہ، شکھتیۓ
نمس، ترِدش پُوجیائے، سردکارن، ہیے تہ دے

रूपातीत नमस्तुभ्यं नमस्ते बहुरूपिणे।
त्र्यम्बकाय त्रिधामान्तश्चारिणे चात्रचक्षुषे।।३१।।

(۳۱) رُوپاتی تہ، نمس تو بھیم، نمستے، بہُو رُوپی نے
ترمبھ کائے، ترِدھامانتہ، چارِنے، چہ ترچکھشُو شے

पेशलोपायलभ्याय भक्तिभाजां महात्मनाम्।
दुर्लभाय मलाकान्तचेतसा तु नमो नमः।।३२।।

(۳۲) پیش، لو پایہ، لبھیائے، بھکتی بھاجام، مہاتمنام
دُورلبھیائے، ملا کرانتہ، چے تہ سام، تو، نمو نماہ

भवप्रदाय दुष्टानां भवाय भवभेदिने।
भव्यानां तनमयानां तु सर्वदाय नमो नमः।।३३।।

(۳۳) بھو پرواۓ، دوشٹا نام، بھواۓ، بھیو بھیے دِنے
بھویانام، تن میانام، تو، سروداۓ، نمو نماہ

अणूनां मुक्तये घोरघोरसंसारदायिने।
घोरातिघोरमूढानां तिरस्कर्त्रे नमो नमः।।३४।।

(۳۴) انُو نام، مُوکھتیئے، گھور، گھور سنسار، دائِی نے
گھوراتی گھور، مُوڈھانام، ترِسکرترے، نمو، نماہ

इत्येवं स्तोत्रराजेशं महाभेरवभाषितम्।
यौगिनीनां परं सारं न दद्याद्यस्य कस्यचित्।।१।।

(۱) یتی دم، ستوتر، راجیے شم، مہابھیرو، بھاشتم
یوگنی، نام، پرم، سارم، دویات، لیس کِسی چِت

अदीक्षते शठे कूरे निःसत्ये शुचिवर्जिते।
नास्तिके च खले मूर्खे प्रमत्ते विप्लुतेलसे।।२।।

(۲) اِدی کھِتے، شٹھے، کُرورے، نہ ستیئے، شُوچی، وَرجِتے
ناستکے، چہ، کھلے، مُورکھے، پرمہ تے، وِپ لُوتے لہ سے

गुरुशास्त्रसदाचारदूषके कलहप्रिये।
निन्दके चुम्भके क्षूद्रेऽसमयज्ञे च दांभिके।।३।।

(۳) گوروشاستر، سَداچار، دُوشہ کے، کلہہ، پریئے
نِندکے، چمبھُوکے، کھُودرے، سمیہ یگیہ، چہ، دانبھ کے

दाक्षिण्यरहिते पापे धर्महीने च गर्विते।
भक्तियुक्ते प्रदातव्य न देयं परदीक्षिते॥४॥

(۴) داکھنیہ ،رہیہ تے ،پاپے،دھرمنہ، ہی نے، چہ، گروتے
بھکتی، یُوکہ تے، پر داتو دیم، نہ، دی یم، پردِی کھتے

पशूनां सन्निधौ देवि नोच्चार्यं सर्वथा क्वचित्।
अस्य वैस्मृतिमात्रेण विघ्ना नश्यन्त्यनेकशः॥५॥

(۵) پُشونام، سِنہ دَھو، دیوی، لوچچاریم، سروتھا، کوچت
اسی، ویئے، سمرتی، باترینہ، وِگھنا، نشن تی، نے کشاہ

गुह्यका यातुधानाश्च वेताला राक्षसादयः।
डाकिन्यश्च पिशाचाश्च क्रूरसत्त्वाश्च पूतनाः॥६॥

(۶) گوہُیکا، یاتو واناسچہ، دیے تالا، راکھسا دیاہ
ڈاکہ، نشچہ، پشاچشچہ، گردا، ستواشچہ، پوتاناہ

नश्यन्ति सर्वे पठितस्तोत्रस्यास्य प्रभावतः।
खेचरी भूचरी चैव डाकिनी शाकिनी तथा॥७॥

(۷) نشن تی، سردیے پٹھتس، توتر ساسہ، پربھاوتاہ
کھیچری، بوھوچری، چیو، ڈاکنی، شاکنی، تتھتا

ये चान्ये बहुधा भूता दुष्टसत्त्वा भयानका।
व्याधिदौर्भिक्षदौर्भाग्यमारिमोहविषादयः॥८॥

(۸) یے، چانیے، بہوُدھا، بھُوتا، دُوشٹہ، ستوا، بھیانہ کاہ
ویادِھی، دَور، بکھیہ، دَوربھاگیہ، ماری موہہ وِشا دیاہ

गजव्याघ्राश्च ये घोरा पलायन्ते दिशो दश।
सर्वे दुष्टाः प्रणश्यन्ति चेत्याज्ञा पारमेश्वरी॥९॥

(۹) گجہ دیا گراشچہ، یے گھورا، پلاین تے دِشو، دشہ
سرویے، دُوشٹا، پرنہ، شیتی، چے تیاگیا پرمیشوری

इति श्रीललितस्वच्छन्दे
बहुरूपगर्भस्तोत्रराजः संपूर्णः।

یتی، شرِللہ تہ، سوچھندے
بہُو رُوپ، گربھس توتر، راجا سمپُورناہ

दुर्गा शरणागति स्तुतिः دُرگا شرناگتِہ ستوتی

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे, नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।
नमस्ते जगद्वन्द्य पादारविन्दे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥१॥

نمستے، شرینے، شِوے سانو کمپے
نمستے جگت دیاپہ کے، وِشو رُوپے
نمستے، جگت وندیہ، پادارِ وِندے
نمستے جگت تارِنے، تراہی دُورگے

नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे, नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥२॥

نمستے جگت چِنتیہ مانہ، سُو رُوپے
نمستے، مہایوگِہ نی، گیانہ رُوپے
نمستے نمستے سدانند رُوپے
نمستے جگت، تارِنی، تراہی دُورگے

अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य, भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥३॥

اناتھ سے، دی نہ ستی، ترشنا تورُ سے
بھ یار تہ سی، بھی تہ سی، بدھ سی، جن توہ
توم، ایے کا، گتِر دیوی، نِستار کرتری
نمستے، جگت تارِنی، تراہی، دُورگے

अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥४॥

اریے، رنے، دارُونے، شترو، مدھیے
نہ ستے، ساگرے، پرانترے، راجہ، گے ہے
توم، ایے کا، گتِر، دیوی، نِستار، نَوکا
نمستے جگت تارِنی، تراہی دُورگے

अपारे महा दुस्तरेऽत्यन्तघोरे, विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम्।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतुः नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥५॥

اَپارے، مہا، دُوسترے، تیِنتہ، گھورے
وِپت، ساگرے، مہ جہ تام ویے ہہ بھاجام
توم ایکا، گتر دیوی، نِستار، ہیے تُو
نمستے جگت تارِنی، تراہی دُور گے

नमश्चण्डिके चण्डदुर्दण्डलीला समुत्खण्डिताखण्डलाशेषशत्रोः।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारबीजम् नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥६॥

نمس، چنڈِ کے، چنڈ، دُور ونڈلی لا
سمُوت، کھنڈِتا، کھنڈلا، شے شہ، شترُو
توم، ایکا، گتر دیوی، نِستار، بی جم
نمستے جگت تارِنی، تراہی دُور گے

त्वमका सदाराधिता सत्यवादिन्यनेकाखिला क्रोधना क्रोधनिष्ठा।
इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्ना च नाढ़ी नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥७॥

توم ایے کا، سدارادِھتا، ستیہ وادی
نیہ نے کا کھِ لا، کر ودھنا، کرودھ، نِشٹھا
یِڈا، پنگلا، توم، سُوشمنا، چہ ناڑی
نمستے جگت تارِنی، تراہی دُور گے

नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे, सदा सर्वसिद्धि प्रदात्रि स्वरूपे।
विभूतिः सतां कालरात्रिः सती त्वम्, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥१॥

نمو دیوی، دُور گے، شِوے، بھی مہ نادے
سدا، سرو، سِدھی، پرداتری، سُوُروپے
وِبھُوتی، سہ تام، کالہ راتری، ستی، توم
نمستے جگت تارِنی، تراہی دُور گے

☆☆☆

Sharda alphabets

𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳

Sharda alphabet Consonants

𑆑	𑆒	𑆓	𑆔	𑆕	𑆖	𑆗	𑆘	𑆙	𑆚	𑆛	𑆜	𑆝	𑆞	𑆟
ka	kha	ga	gha	ṅa	ca	cha	ja	jha	ña	ṭa	ṭha	ḍa	ḍha	ṇa

𑆠	𑆡	𑆢	𑆣	𑆤	𑆥	𑆦	𑆧	𑆨	𑆩	𑆪	𑆫	𑆬	𑆮
ta	tha	da	dha	na	pa	pha	ba	bha	ma	ya	ra	la	va

𑆯	𑆰	𑆱	𑆲	𑆑𑇀𑆰	𑆠𑇀𑆫	𑆘𑇀𑆚
śa	ṣa	sa	ha	kṣa	tra	jña

Vowel diacritics

𑆃	𑆄	𑆅	𑆆	𑆇	𑆈	𑆉	𑆍	𑆎	𑆏	𑆐	𑆃𑆁	𑆃𑆂
a	ā	i	ī	u	ū	ṛ	e	ai	o	au	aṅ	aḥ
क	का	कि	की	कु	कू		के	कै	को	कौ	कं	कः
ka	kā	ki	kī	ku	kū		ke	kai	ko	kau	kaṅ	kaḥ

Numerals

𑇑	𑇒	𑇓	𑇔	𑇕	𑇖	𑇗	𑇘	𑇙	𑇑𑇐
akh	zeh	trih	chōr	pānch	sheh	sath	aiṭh	nav	dah
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10

Note : For promotion and learning of Sharda script get a free Sharda Booklet from:

Vijayeshwer Jyotish Karyalay (Regd.)
Borhi Patta (Near Matador Stand)
Jammu (J&K) - 180002
Phone: - 0191-2555064
e-mail:- vijayeshwer@yahoo.com

Vijayeshwer Jantrie available at

1. **Gupta Stationery Mart**, City Chowk
2. **Teen Bhai Stationery Store**, Pacca Danga
3. **Thaploo General Store**, Janipur
4. **Rajinder Electronics,** Tope Masjid, Subash Nagar
5. ***Ram & Sham Departmental Store,*** *Subash Nagar*
6. ***R. K. News Agency,*** *Sarwal, Jammu*
7. ***Bhat general store,*** *main Chowk Janipura*
8. ***Durga Printing Press***, *Old Janipur*
9. ***Mahesh Traders,*** Opp. Fire Brigade, Roop Nagar
10. **Bindroo Gen. Store**, Opp. Tope Quarters
11. **Sharma Stationery Store**, Rehari
12. **Bhat General Store,** Subash Nagar
13. **Shiv Shakti General Store,** Janipur
14. **Shamboo Gen. Store,** Patoli Near Soap Factory
15. **Raina General Store**, Shastri Nagar
16. **Kachroo General Store**, Gangyal.
17. **Shiv Shankar Gen Store** Lower Roopnagar
18. **Sharma Stationery Store**, Bhori, Anand Nagar
19. **R.S Traders,** Anand Nagar, Borhi
20. **Koul Provisional Store,** Gole pully
21. **Bushan Lal Koul,** Durga Nagar
22. **Bitoo General Store,** Durga Nagar
23. **Sathie News Agency,** Durga Nagar
24. **Neha General Store,** Bantalab
25. **M.K Communication,** Bantalab
26. **V.V General Store,** Muthi Village
27. **Pamposh General Store,** Muthi
28. **Appu General Store,** Bharat Nagar, Talabilllo
29. **Pt. Vimal Mukhi,** Brij Nagar, Mira Sahab
30. **Shri Avtar Krishan Kaul,**
    Muthi, Jammu Mob : 9469084747
31. **Shri Manish Ji,** D-185,S Sector11, Vijay Nagar,
    Ghaziabad (U.P) Cell No : 09971328428
32. **DURGA MASALA STORE**
    Shop No 131-132, INA Market,
    New Delhi, Ph 24602813, Mob: 9811110186

Editor: Dr. Manmohan Jyotshi **Publisher: Vijayeshwer Publishers**

Printed and Published by **Puneet Jyotshi** for and on behalf of **Vijayeshwer Jyotish Karyalay**, Bhori Jammu. Printed at Intellectual Offset Printers, Jalandhar.

संसारे भारतं सारं तत्रापि च हिमालयम्, तत् मध्ये च काश्मीरं तत्रापि च विजयेश्वरम्।।



स्व. ज्यो. आप्ताभ शर्मा
प्रवर्तक विजयेश्वर जन्त्री



स्व. ज्यो. काशीनाथ शर्मा
संस्थापक

।। ओ३म् ।।

COMPUTERISED

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय (रजि.)

कार्यालय : बोहड़ी पट्टा, चुंगी (समीप मैटाडोर स्टैण्ड)
जम्मू-180002 दूरभाष 0191-2555064
निवास : विजयेश्वर भवन, अजीत कालोनी, गोल गुजराल,
जम्मू-180002 दूरभाष 0191-2552625
Email : vijayeshwer@yahoo.com



सम्पादक
डॉ. मनमोहन ज्योतिषी